# अढार दूषण निवारक.

रचनार

शेठ. अनोपचंद मलुकचंद.

छपावी प्रसिद्ध करनार

शेठ. अनोपचंद मलुकचंद

संघ तरफथी भरुच.

अमदावाद

निर्मळ प्रिन्टिंग प्रेस मदनगोपालनी हवेलीमा लल्लुभाई

ईश्वरदास त्रिवेदीए छाप्युं

संवत १९६०. सन १९०३.

कीमत रु. ०—६—०.

## प्रस्तावना.

आ ग्रंथमां प्रथम आस्तिक मतनी सिद्धि करी छे, ने नास्तिक मतनुं खंडन कर्युं छे, तेथी वांचक वर्गने वांचवाथी आस्तिक मतनी श्रद्धा दृढ थशे. पछी अढार दूषण सहित संसारी जीव छे तेनु वर्णन कर्युं छे, अने ते दूषणथी केम लेपाय छे ने केम मुक्त थाय छे तेनुं वर्णन करेलुं छे, अने तेनी साथे अढार दूषण रहित वीतराग छे ते दर्शाववामा आव्युं छे. आ रूपनो वर्णन जूदो नहीं होवाथी शास्त्रना आधारथी भव्य जीवना हितने अर्थे केटलाएक प्रिय बंधुनी प्रेरणाथी लख्यो छे. पाछळना भागमां जैनो केम सुधरे तेनुं वर्णन करेलु छे आ पुस्तकमां मारी मतिना दोषथी काइ शास्त्र विरुद्ध लखायुं होय तो शास्त्र जोइ शुद्ध करवा विनंती करुं छुं आ ग्रंथनो केटलोएक भाग आचार्य श्री विजयानंदसूरि महाराजना शिष्यानुशिष्य परम पूज्य मुनि महाराज श्री हंसविजयजी महराज शोध्यो छे. तेमज केटलुंक शुद्ध करवानी मेहेनत अमदावादना शा. हीराचंद ककलभाइए लीधी छे तेथी ते बंने पुरुषोनो उपकार मानुं छुं. आ ग्रंथ तइयार करवामां जे ज्ञानानुरागी भाइओए प्रथमथी मददने माटे रुपीआ मोकली दीधा छे तेओ साहेबना नाम उपकार साथे नीचे जणावुं छुं

२५) शा वीरचद कशनाजी श्री पुनावासी अति उत्कंठाथी आपी गया छे

२५) श्री कलकत्ता बदर निवासी बाबु लक्ष्मीचंदजी शीपाणीए पोताना पत्नी छगनकुंवर तरफथी ज्ञान वृद्धिने अर्थे मोकल्या छे

५) मूर्शिदाबाद निवाशी बाबु साहेब कालुरामजी किरतचंदजी ना मालेक माजी साहेबनी तरफथी

५) श्री. मीआंगामना शेठ. दलीचंद पीतांबरदास जे धर्मना काममां घणा मददगार हता, तेमना पुन्यने अर्थे तेमना भाइ नेमचंद पीतांबरदास ज्ञानवृध्धिने अर्थे आपी गया छे

) भरुचनां बाइ मोतीकोर शा. रुपचंद झवेरचंदनां दीकरीए पोताना आत्माहितार्थे आप्या छे.

) भरुचनां बाइ हरकोर उर्फे नाथी शा. नरोतम वीरचंदनी दीकरी

) शा. मगनलाल परसोतमदास.

आ प्रमाणे उपर मुजब पोतानी उत्कंठाथी आ पुस्तक छ-ववामां मदद मळी छे, तथा प्रथम प्रश्नोत्तर—रत्नचिंतामणि छ-ववामां जे मदद मळी हती तेमांनो वधारो पण आ पुस्तक पाववामां वापर्यो छे. तेथी मुनि महाराजोने तथा साध्वीजी महाराज विगेरेने मफत आपवामां आवशे. तेमां हरकत पडशे नही कमत पण लागत करतां ओछी राखी छे. माटे जे जे मुनिराज था साधवीजी महाराजने खप होय तेमणे मंगाववी. हुं मोकली ापीश. आ ग्रंथ लखवाने देशावरना केटलाक भाइओए पण प्रेशा करेली तेनो उपकार मानुंछुं. तथा मने जे जे पुरुषोए सम्यक ाध कर्यो छे, अने हरिभद्रादि आचार्य महाराजना ग्रंथो जोवाथी ाध थयो अने जेथी आ ग्रंथ लखायो तेथी ते सर्वे उपकार ते मान् पुरुषोनो छे तेमां वीतरागनी आज्ञाथी विरुद्व जे कांइ लायुं होय तेनुं मिछामि दुक्कडं देउंछुं. शंवः

---

ज्ञानाचार, ते ज्ञानाचार संपूर्ण तो अनंत ज्ञान प्रगटे त्यारे ते रूप लाभ मलशे अने तेना कारण रूप मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मनःपर्यवज्ञान ए चार प्रगट थाय त्यारे चारनो लाभ थयो तेटलो लाभांतराय नथी तूट्यो तो मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान प्राप्त थाय छे. अथवा मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, मन पर्यवज्ञान थाय छे. तेवा पण लाभातराय कर्म, नथी क्षय थया ने थोमो क्षयोपशम थयो छे तो मतिज्ञान, श्रुतज्ञान वेज प्रगटे छे तेटलो लाभ थयो. अने तेनी साथे समकितनो पण लाभ थाय कारण जे समकित विना मति श्रुत अज्ञान कह्या छे. तेथी पण कर्मी क्षयोपशम थयो होय तो समकित रहित ज्ञान ते रूप लाभ थाय. तेथी बुध्धिमा कुशल होय, ससारी काममा हुशीयार थाय पण आत्मीक ज्ञान न थाय आत्माना कल्याणरूप ज्ञान तो सम्यक्त्वज्ञान छे ते काम लागे सम्यक्त्वज्ञानरूप लाभ थाय. ते ज्ञान कोईने द्वादशागरूप ज्ञान थाय छे, तेटलो लाभातराय तुटे तो मुक्तिने घणा नजीक थाय. कोईने चौद पूर्वनु ज्ञान थाय ते चवद पूर्वना नाम १ उत्पाद पूर्व, जेमा द्रव्यना पर्यायना उत्पादनुं स्वरूप छे २ अग्रायणी पूर्व जेमा सर्व द्रव्य सर्व पर्यायनुं परिमाण दर्शाव्युं छे ३ वीर्य प्रवाद पूर्व तेमां कर्म सहित जीवना, कर्म रहित जीवना तथा अजीवना वीर्य एटले शक्ति तेनुं विस्तारे स्वरूप छे ४ अस्ति नास्ति प्रवाद पूर्व ते मध्ये धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय, जीवास्तिकाय, पुद्गलास्तिकाय, काल ए छए द्रव्य स्वस्वरूपे अस्ति पर स्वरूपे नास्ति आदे वर्णन छे. ५ ज्ञान प्रवाद पूर्व, जेमा पांच ज्ञाननुं विस्तारे वर्णन छे ६ सत्य प्रवाद पूर्व. तेहमा सत्य संजम वचन ए त्रण वस्तुनुं विशेष स्वरूप दर्शाव्युं छे. ७ आत्म प्रवाद पूर्व तेहमा आत्माजीव तेनुं अनेकनय मत भेदे करीने वर्णव्यु छे ८ कर्म प्रवाद पूर्व, तेहमा आठ

कर्म जे ज्ञानावर्णी, दर्शनावर्णी, वेदनी, मोहनी, आयु, नाम कर्म, गोत्र कर्म, अंतराय कर्म ए आठे कर्मनी प्रकृति बंध, स्थिति बंध, रस बंध, प्रदेश बंध. ए चारे प्रकारना बंधनुं स्वरूप अतिशय करी दर्शाव्युं छे. ए प्रत्याख्यान प्रवाद पूर्व, त्याग जोग्य वस्तुनुं तथा त्यागनुं स्वरूप कथन छे. १० विद्या प्रवाद पूर्व. तेहमां अनेक आश्चर्यकारी विद्यानुं स्वरूप छे. ११ पूर्वनुना कल्पा पूर्व छे पाठांतर अवंध्य पूर्व. एटले फल वांझीयुं नथी. ज्ञान तप संजमादिकनुं शुभ फल. प्रमादादिकनुं अशुभ फल एवा शुभाशुभ फल बताव्यां छे. १२ प्राणायु पूर्व, तेमां दशप्राण जे पांचइंद्रि, त्रण बल, श्वासोश्वास अने आयु ए प्राणनुं वर्णन छे. १३ क्रिया विशाल पूर्व, तेमां कायकी आदे क्रियानुं स्वरूप संजमक्रिया, छंदक्रिया, विगेरेनुं वर्णन छे. १४ लोक बिंदुसार पूर्व जेहमां लोकमां अक्षरोपर बिंदुसार भूत छे. तेम सर्वोत्तम सर्व अक्षरना मेलाप लब्धिनो हेतु तेनुं वर्णन छे. ए चौद पूर्वनां नाम कह्यां. एनो विस्तार एक एक पूर्वनी पदनी संख्यानुं मान एक एक पूर्वनुं ज्ञान लखवानी शाहीमां मेश केटली जाय. ए सर्व वर्णन नंदी सूत्रनी टीकामां छपेली प्रतमां पाने ४७२ मे छे त्यांथी जाणी लेवुं. पहेलुं पूर्व लखतां एक हाथीपुर मेशनो ढगलो जोइए. पछी बमणा बमणा लेवा. ते चौदमा पूर्वमां ८१९२ हाथीपूर काजलनो ढगलो थाय. तेमां पाणी रेडी साही करी लखे तो लखाय एटलुं चउद पूर्वनुं ज्ञान छे. पाछो तेना अर्थनो तो पार नथी. एक बीजा चउद पूर्वधर ज्ञानीना वचमां अनंतगुणी हानी वृद्धि होय छे. जे पुरुषने जेटलो लाभांतरायनो क्षयोपशम थयो होय एटला अर्थ ज्ञाननो लाभ थाय. कोइ मुनिने एटलो लाभांतराय न तूट्यो होय तो नवुं पूर्वनुं ज्ञान थाय. कोईने एक पूर्वनुं, कोईने बे पूर्वनुं, कोईने त्रण एम जावत् चउद पूर्वनुं थाय. वर्त्तमान काले पूर्वनुं ज्ञान कोइने थाय नहि. वहु ज्यारे अ-

तिशय ज्ञानी थाय तो सूत्र जे पीस्तालीश आगम तेनुं ज्ञान थाय. तेमांना अग्यार अंग हालमा छे वारमुं अंग विछेद गयुं छे आचाराग सुयगडाग ठाणाग समवायाग ज्ञगवतीजी ज्ञातासूत्र उपाशक दशाग अंतगड दशाग अनुत्तरोववाइ प्रश्नव्याकरण विपाकसूत्र.

ए अग्यार अग गणधर महाराजे रचेलां छे जेम श्रीमत् महावीर स्वामीए प्ररुप्या तेम गणधर महाराजे सांज्ञलीने गुथ्यां एटले गाथारूप वनाव्या. पण त्यारवाद वार दुकाली घणी वखत पडी तेमा दरेक अंगमाथी घणो ज्ञाग विछेद गयो. ने जे थोडो ज्ञाग रह्यो ते देवर्द्धिगणि क्षमाश्रमण महाराजे लखाव्यो तेथी नंदीजी समवायागजीमा जेटली सख्या पदनी कही छे तेटली रही नथी एक पदमा ५१०८८६८४० श्लोक होय ए एक श्लोकना अठावीश अक्षर कह्या छे ए अधिकार सेन प्रश्नमां पाना ३२ मे छे तेमा अनुजोगद्वारनी टीकानी साख आपी छे तिहाथी जोई लेवुं. उपांग १२ (वार) तेना नाम १ उवाईसूत्र. २ रायपशेणीसूत्र ३ जीवाज्ञिगमसूत्र ४ पन्नवणासूत्र ५ सुरपन्नतीसूत्र ६ जंबुद्विपपन्नतीसूत्र ७ चंदपन्नतीसूत्र नोरीयावलीसूत्रमा पाचते. ८ कप्पीया ९ कप्पवडंसीयासूत्र १० पुप्फीआसूत्र. ११ पुप्फचुलीकासूत्र. १२ वन्हीदशांगसूत्र ए रीते वार उपाग छे.

दश पयन्ना तेनां नाम

१ चउसरण पयन्नो. २ आउरपच्चखाण पयन्नो
३ महापच्चखाण पयन्नो ४ ज्ञत्तपच्चखाण पयन्नो
५ तंडुलवीयाली पयन्नो ६ गणीवीज्ञ पयन्नो
७ चंदावीजय पयन्नो. ८ देविंद्रस्तव पयन्नो
९ मरणसमाधि पयन्नो. १० संस्थारक पयन्नो
छ छेद चार मूल सूत्र वीगेरे

१ दशाश्रुत स्कंध.　　२ बृहत्कल्पसूत्र.
३ व्यवहारसूत्र.　　४ जीतकल्पसूत्र.
५ नीशीथसूत्र.　　६ महानीशीथसूत्र. ए ६ छेद ग्रंथछे.
१ आवश्यकसूत्र.　　२ दशवैकालीकसूत्र.
३ उत्तराध्ययनसूत्र.　　४ पींमनिर्युगतीसूत्र.
१ नंदीसूत्र.　　२ अनुजोगद्वारसूत्र.

ए पीस्तालीश आगम, ए शिवाय पण केटलाएक पयन्ना प्रमुख छे. तेहनां नाम पण नंदीसूत्रमां तथा समवायांग सूत्रमां छे. पख्खी सूत्रमां पण छे. पण पीस्तालीशनी मुख्यता थवानुं कारण वलज्ञीपुरे पुस्तक लखायां. तिहां एटलांज लखायां तेथी ते पीस्तालीश आगम कहेवायां. पण वीजा देशमां वीजां लखायां. ते पण हाल कालमां वर्ते छे एम दीपकवि एक चोपमीमा लखे छे. तेमांथी में पण केटलांएक जोयां छे.

| | | |
|---|---|---|
| रीसीज्ञाषित सूत्र. | पौरसी मंमल. | वीतराग स्तव. |
| संलेखना सूत्र. | अंगविद्या. | ज्योतिष करंमक. |
| गछा चार. | तिर्थोदगारम. | उपदेशमाला. |
| सिद्ध पाहुम. | श्रावकनुं वंदीतु. | शत्रुंजय कल्पलघु. |
| शत्रुंजय कल्पमोटो. | शत्रुंजयकल्प. ज्ञद्रबाहुस्वामीकृत गाथा२५ | |
| शत्रुंजयकल्पवेरस्वामीकृत. | | शरावली पयन्नो. |
| वशुदेवहींम. | श्रावक पन्नती. | अंगचुलीआ. |
| वंगचुलीआ. | आराधना पताका. | |

आटलां सूत्र वर्तमानमां देखाय छे. एम दीपकवि लखे छे पण वीजा घणा देशोमां बधे कांई जोयां नथी. तो विशेष पण होय केमके नंदीसूत्रमां देवर्द्धिगणीक्षमाश्रमण महाराजे जे नाम आप्यां ते ते वखते हाजर होवां जोईए ए आगमोमांथी दश सूत्रनी निर्युक्ति ज्ञद्रबाहु स्वामी महाराजे करी छे. जे चउद पूर्व-

धर हता, एटले निर्युक्ति पण पूर्वधरनी करेली माटे सूत्र जेवी ज माने, जेमां सूत्रनो अर्थ युक्तिए सिद्ध कर्यो छे; तथा भाष्य पूर्वधर एवा जिनभद्रगणि क्षमाश्रमण महाराजजीए रची छे तेमा निर्युक्ति करता घणो विस्तारे अर्थ कर्यो छे तेमज चूर्णी पण पूर्वधरे रची छे, तेमा तेथी विस्तारे अर्थ छे, तथा आ शिवाय घणा ग्रंथो तथा टीका पूर्वधर विगेरे बहुश्रुत पुरुषोना रचेला छे, ते पण आगम जेहवाज छे एवा जैनना सर्व शास्त्रना तथा जे जे शास्त्रो बीजा दर्शनोमा रचेला छे ते तथा व्याकरण, न्याय शास्त्र, वैदक शास्त्र, नीति शास्त्र, अष्टांग निमित्त शास्त्र, अष्टांग योगना शास्त्र, ए सर्वे शास्त्रोनो बोध मेलवी सत्य असत्यनी परीक्षा करी, सत्यनी परीक्षा करी सत्यने अंगीकार करे तो एटलो ज्ञाननो लाभ थयो कहीए एवा लाभवाला पुरुषो ज्ञानना आचारनो आठ प्रकारे लाभ मेलवे छे ते काले कहेता जे जे सूत्र जे जे काले भणवाना वाचवाना कह्या छे तेज काले भणे, चार संध्या वर्जे, ते १सवारे सूर्य उदय थाय ते पहेली ने पछीनी अकेक घडी, एम २ मध्यान तथा ३ सध्या वखत तथा ४ मध्य रात्री ए चारे वखत बे घडी तजवी ए वखत कोई पण सूत्र वाचे नहि ए वखत दुष्ट देवो फरवा नीकले छे ते जैन मार्गना द्वेषी होय तो भणनारने छल करे तेथी ए वखत निषेध्य छे विनय ते ज्ञानवत पुरुषनु मुख जुवे के नमस्कार करे, वेगा होय ते उभा थाय, ज्या सुधी ज्ञानवत पुरुष उभा रहे त्या सुधी पोते वेसे नहीं, वली ज्ञानवंतने वेसवा आसन आपे पछी उचित रीते वंदना प्रमुख करीने वेसे, पण गुरुथी उंचा न वेसे तेम ज्ञानीनी आगल न वेसे, पाछा उभा थाय तो उभा थाय, चालता पण तेमनी आगल न चाले एवी रीते जेम जेम नीतिमा उचित होय तेम तेम साचवे तेमनुं जेम महत्पणुं वधे तेम करे.

तेमनुं वचन उल्लंघन न करे. ज्ञानवंतनी जे जे रीते पोताथी बनी शके ते तन मन अने धने करीने नक्ति करे. बीजा पासे नक्ति करावे, तेमज ज्ञाननां पुस्तक तेनो पण विनय करे. पुस्तक पासे होय तो लघु नीति, वमी नीति न करे. तेम पुस्तक होय ते ज-गोए पण ए काम न करे; तेम स्त्री आदिकना नोगादिक न करे. तेम पुस्तकनी पासे बेसी जमवुं, पाणी पीवुं न करे. ठेवट वस्त्र-नो पण अंतर राखे, तेम पुस्तक उशीके मूके नहि. वली पुस्तक लखावी ज्ञाननो वधारो करे, पुस्तक होय तो तेनो संन्नाल करे, वली ज्ञान नणवानो उद्यम करे, पोते नणेलो होय तो बीजाने नणावे, एवी रीते विनय करे, ज्ञानवंतनुं बहुमान करे. ते बाह्यथी केवल नहि पण अंतरंग प्रेमथी मनमां विचारे जे अहो! आ पुरुषनां ज्ञाननां आवरण घणां खपी गयां छे तेथी एमनो आत्मा निर्मल थयो छे. ए पुरुष मने ज्ञान आपे छे ए ज्ञानना प्रन्नावे महारो आत्मा निर्मल थशे. माहारे चार गतिमां रोलावुं बंध थशे. जन्म मरणना दुःख एमना प्रन्नावथी मटशे, माटे आवा ज्ञानवंत पुरुषनां जेटलां बहुमान न करुं तेटलां उगां छे. जगत्ना जीवो जे उपकार करे ते पईसा आपे तो ते अल्प काल सुख थाय. शरीरने कोई शाता करे तो अल्प काल सुख थाय, अने ज्ञानी पुरुष तो ज्ञान आपे छे तेनुं सुख तो अनंतो काल पहोचशे, जेनो अंत नथी, तो एवा पुरुषनां केटलां बहु-मान करुं. एवा नावथी बहुमान करे. उवहाणे केहेतां उपधान ते ज्ञान नणवा सारु नवकारादिकनां उपधान जे तप करवानो महानीशीथ सूत्रमां कह्यो छे, तथा सूत्र नणवाने जोग वहे-वाना कह्या छे ते मुजब ते तपस्या करवी. जोगनी जे जे क्रि-याउ छे ते करवी. हवे इहां कोईने शंका थशे जे ज्ञान नणवामां -पस्या तथा क्रिया शुं करवा करवी जोईए तेनुं समाधान पुद्-

गलजाव उपरथी मोह उतरे त्यारे तपस्या थाय, वली मोह उतरे त्यारे आत्मानी विशुद्धि थाय, ने आत्मानी विशुद्धिथी ज्ञानावरणी कर्म नाश थाय छे तेथी ज्ञान सुखे आवमे. वली क्रिया छे ते तत्र जेवी छे तेथी सूत्रना अधिष्टायक साहाय्य करे जेमके मल्लवादी महाराजजीने एक गाथा देवीए एवी आपी के ते गाथाथी द्वादश सार नयचक्र रच्यो, अने वौध लोको साथे जय मेलव्यो, अने सोरठ विगेरेमा ज्या शिलादित्य राजानु राज्य हतुं त्याथी वौध लोकोने वाहार काढ्या. वली मुनिराजजी साहेव श्री आत्मारामजी महाराजजीने विशेषावश्यक नहि वेसतुं हतुं, तेथी पस्तावो करवा लाग्या. तेज रात्रे स्वप्नामा हेमचन्द्राचार्य महाराज मल्या ने जे जे अटकतुं हतु ते सर्व समजाई गयुं एमज कमलगछना आचार्य महाराज वर्धमान विद्या जणावी गया. एज रीते शासनदेवतानी सहायथी ज्ञाननो लाज्ञ थाय छे ते सारु जोगवहननी क्रिया वतावी गया छे ते अति हितकारी छे. विशेष हेतु जेम कोई शास्त्रमा कह्यो होय ते प्रमाणे जाणी लेवुं. अनीन्हवणे ते गुरुने उलववा नहि जे ज्ञानी पासे जणया होय तेनुं नाम पालटी बीजानु नाम देवुं नहि, ते पाचमो आचार. व्यंजन ते अक्षर शास्त्रमा लख्यो होय तेम शुद्ध बोलवो, अशुद्ध बोलवो नहि अर्थ ते जेवो गुरु महाराजे आप्यो होय तेवोज राखवो फेरफार करवो नहि, ते सातमो आचार. आठमो व्यजन तथा अर्थ वंने जेम शास्त्रमा कह्या होय तेम बोलवा एवी रीते ज्ञाननो आचार व्यवहारथी मन, वचन, कायाए करी पाले एथी विपरित वर्ते तो ज्ञानाचारमा दूषण लागे, ने ज्ञानावरणी कर्म बंधाय तेना जयथी सावधानपणे रहे. वली वहु जणयानो अहंकार आवे तो मनमा जावे जे हे चेतन ! तु अनंत ज्ञाननो धणी छे, जगतमा छ द्रव्य छे धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय,

आकाशास्तिकाय, जीवास्तिकाय अने काल ए पांच द्रव्य अरूपी एटले वर्ण, गंध, रस, स्पर्श रहीत तथा छठो पुद्गलास्तिकाय ते रूपी वर्ण, गंध, रस, स्पर्श सहीत, ए छए द्रव्यमां एक एक द्रव्यना अनंता गुणपर्याय छे, ते समय समय एक एक द्रव्यमां खटगुण हानी वृद्धि थइ रही छे. ते अनंत भाग हाणी, असंख्यात भागहाणी, संख्यात भाग हाणी, संख्यात गुण हाणी, असंख्यात गुणहाणी, अनंत गुणहाणी एम खट कहेतां छ प्रकारे हाणी तथा वृद्धि थई रही छे, तेवी छए द्रव्यनी वात गया कालनी आवता कालनी अने वर्त्तमानकालनी ते सर्वे केवल ज्ञानी महाराज एक समयमां जाणी रह्या छे, तेवीज आत्मा तारी शक्ति छे पण ते ज्ञान शक्ति ज्ञानावरणी कर्मे अवराई गई छे अने तने ज्ञान थतुं नथी, तो तारुं ज्ञान जतुं रह्युं ते लघुतानुं स्थानक छे, ते छतां महत्त्वता करे छे, ए तारी हे चेतन! केवी मूर्खता छे? वली पूर्वकाले चार ज्ञानी हता तेवां ज्ञान पण तने प्रगट थयां नथी, तो ए पण तारी लघुतानुं स्थानक छे, तो तुं शुं अहंकार करे छे. पूर्वे त्रण ज्ञानी हता तेवां ज्ञान पण तने प्रगट्यां नथी तो ते तने पण लज्जानुं कारण छे, तो तुं शुं अहंकार करे छे? वली बे ज्ञानी पण चउद पूर्वधर बार अंगना जाणकार हता, तेवुं ज्ञान पण तने नथी ते छतां शी बाबतनो तुं उत्कर्ष करे छे? वली जंग ज्ञानी एक पूर्वधर हता, ते पण तने ज्ञान नथी, तो शी बाबतमां फुलाय छे? वली हालमां पण वर्त्तमानकालमां आगम, निर्युक्ति, भाष्य, चूर्णि, टीका, ग्रंथो वीगेरे छे, अने अन्य दर्शनीयोनां शास्त्र छे तेनुं पण तने ज्ञान नथी, तो हे चेतन! शी बाबत अहंकार करे छे? वली एमांथी जुज शास्त्र तुं भण्यो छे, ते पण बधुं याद नथी. वली गुरु पासे शास्त्र सांभल्या ते पण तने याद नथी, तो शी बाबतनी महोटाई करे छे? वली देश देशनी

भाषा तथा जूदी जूदी लिपि तेनुं पण तने ज्ञान नथी वली स-
म्मति तत्त्वार्थ विगेरे न्यायनां शास्त्र छे, ते कोई ज्ञानी समजावे
तो ते पण समजवानी तारामा शक्ति नथी, अने अहंकार करे
छे, ते केवी अज्ञानता ? वली तुं जे जे धर्म क्रिया करे छे ते स
र्वेना हेतुनु ज्ञान पण तने नथी, ते छता तु फोकट शुं मद करे छे ?
अनेक प्रकारनी नीतिना ग्रथो छे, अनेक प्रकारनी हिसावनी री-
ती छे तेनुं तने ज्ञान नथी ते छता जीव तु अहंकार करे छे, ते
अहंकार करवा जोग छे के कर्मनी निंदा करवा जोग छे ते तुं
आत्माथी विचार कर. वली पूर्वे मुनिसुंदरसूरि महाराज जेवा
पुरुषो एक हजार ने आठ अवधान करता हता ते शक्ति पण ता-
रामा नथी हालमा पण १०८ अवधानना करनार छे, ते पण
शक्ति तारामा जागी नथी, तो शी बाबत तु गर्व करे छे ? हाल
कालमा आत्मारामजी महाराज थई गया ते रोजना ३०० श्लो-
क मुखे करता हता अने तने तो पाच गाथा पण मोढे करवा-
नी शक्ति नथी, तो चेतन तुं वहु विचार कर ने खोटा गर्व न
कर पूर्व पुरुषो शास्त्रमाथी उद्धरीने अनेक ग्रंथ करी गया छे ने
करे छे तो शुं एवी शक्ति तारामा छे ? तें नवा ग्रंथो केटला
रच्या के फोगट भूलथी मनमा आनंद माने छे ? वली पूर्वना
पुरुषोए सोनाना अक्षरे ज्ञान लखाव्या तो तें शाहीना अक्षरथी पण
सर्वे शास्त्र लखाव्या के अहकार करे छे ? ते भणीने आत्मवि-
चारणा केटली करी ? वली वीजा जीवोने पूर्वना शास्त्र केटला
भणाव्या के मदोन्मत्त थई फरे छे ताराथी घणा पुरुषो हालमां
आत्म साधन करता थया के अहंकार करे छे ? तारी लघुता थाय
एवी करणी तु करे छे माटे फोगट तुं ज्ञानावरणी कर्म बांधे छे
माटे एक अंशमात्र ज्ञाननो क्षयोपशम थयो तेथी मनमा
ज्ञानी बनीने वेसे छे आवी भावना भावो आत्मज्ञानमा मग्न था-

य छे. पोताना आत्मानो ज्ञान गुण छे ते प्रगट करवाना उद्यम-
मां तत्पर रहे, ते ज्ञानाचार जाणवो. एवो ज्ञानाचार पाळवाथी
परंपराए सर्वे ज्ञान प्रगट करे छे.

दर्शनाचार—दर्शन शब्दे देखवुं ते. जे जे पदार्थ जेवी रीते
होय तेवीज रीते देखवुं एटले मानवुं. शुद्ध देवनेज शुद्ध देव
मानवा. शुद्ध गुरुनेज शुद्ध गुरु मानवा. शुद्ध धर्मनेज शुद्ध धर्म
मानवो. शुद्ध धर्म ते आत्मानो स्वभाव, तेज धर्म. भगवतीजीमां
कह्युं छे जे "वत्थु सहावो धम्मो". एटले वस्तुनो स्वभाव ते धर्म.
त्यारे आत्म स्वभावमां रहेवुं तेज धर्म अने तेनी श्रद्धा करे. आत्मा
शरीरमां रह्यो छे त्यां सुधी जड प्रवृत्ति करे छे, ते पोतानो धर्म
जाणे नहि. आत्मानो स्वभाव अवरायो छे ते प्रगट करवानां का-
रणोने कारण धर्म माने. धर्मना निमित्त कारणरूप देव गुरु ते-
ने निमित कारण माने. व्यवहारनये धर्मना कारणने धर्म कह्यो
छे ते अपेक्षाए धर्म माने. जे जे देव गुरु उपकारी पुरुष छे ते पु-
रुषनी सेवा भक्ति शास्त्रमां कही छे ते प्रमाणे प्रवर्ते, तेनो वि-
स्तार प्रश्नोत्तर रत्न चिंतामणिमां कह्यो छे ते मुजब करे ते द-
र्शननो आचार. ए आचार आठ प्रकारे छे. निसंकीय कहेतां प्रथम
जे अढार दूषण कह्यां छे तेथी रहित जे देव तेमना वचनमां शंका
न करे, कारण के जे देवने राजा अने रंक बे सरखा छे, कोइनो
पक्षपात नथी; जेने धननी, स्त्रीनी ममता नथी, जेने मान अप-
मान सम छे एवा पुरुषने असत्य बोलवानी जरुर रहेती नथी, एवां
लक्षण छे के नहि. तेमना चरित्र जोवाथी खात्री थाय. ते खात्री
करीने ज देव मानवा. पछी तेना वचनमां शंका करवी नहि.
कारण के अरूपी पदार्थ छे ते चक्षुथी निरधार थतो नथी. कोइ
कहेशे के बुद्धिथी निरधार करीए, पण संपूर्ण प्रगट थइ होय
तो शास्त्र जोवानी जरुर पडती नथी. बुद्धिनी कसूर छे तेथी

शास्त्र जोइ गुरुनो समागम करी बुद्धि प्राप्त करवानो उद्यम क-
रीए छीए, माटे बुद्धिनी कसर सिद्ध थाय छे केटलीएक वाबतो
नथी समजाती ते पण बुद्धिनी कसर छे ते कसर नीकली जशे
एटले यथार्थ समजाशे संसारी काममा बुद्धि प्रगट थवी सहेल
छे अने आत्मतत्त्व उलखवानी बुद्धि आववी कठण छे, माटे वी-
तरागना वचनमा शका करवी नहि निकंखा ते कुमतिनी वांछा,
कुमति ते कुबुद्धि आत्माने विषे अनादिनी छे, तेना प्रभावे वि
षयादिकना अभिलाष थया करे छे; जे जे दुःखना कारण छे ते
सुखनां कारण भासे छे; आत्मानी स्वरिद्धि सामी दृष्टिज नथी
वली एवी कुबुद्धि वाला देव गुरुनी वांछा थाय छे ते कंखा दूषण
कहीए ते जेहने टल्युं छे, तेने जरा पण कुमतिनी वांछा थती नथी

निर्वितिगिच्छा ते धर्मना फलनो संशय, ते संशयथी रहित
ते निर्वितिगिच्छा आचार जाणवो ए आचार लाभांतराय तूटवाथी
थाय छे खरी आत्मिक वस्तुनी तथा आत्मिक वस्तु प्रगट थवा-
ना कारणोनी चोकस खात्री थाय छे तेथी फलनो शंसय रहेतो
नथी अमूढदृष्टि ते मूढपणुं गयुं छे मूढपणे वस्तुने अवस्तु
माने, जेमके दुनीयामा वेदीआ ढोर कहेवाय छे, ते आत्मानी वातो
करे पण विषय कषायमा मग्न रहे, कोइपण प्रकारे संसारथी
उदास थाय नहि; देवगुरुनी भक्ति ने व्रत नियमने विषे प्रवर्ते नहि
एहवी जे दशा ते मूढ दृष्टीपणुं कहीए, ते न होय जे जे रीते
प्रभुजीए जे जे अपेक्षाए धर्म वताव्यो छे ते प्रमाणे श्रद्धा करे
विषय कषाय अव्रत जेटला जेटला ओछा थाय ते करे जे न टले
ते टालवानी वांछा वनी रही छे एवो जे आचार ते अमूढ दृष्टि
कहीए उववूह गुण ते साधु साध्वी श्रावक श्राविका प्रमुख
उत्तम पुरुषना गुणनी प्रशंसा करवी ते. थीरीकरण गुण, ते साधु
साध्वी श्रावक श्राविका चतुर्विध संघरूप उत्तम पुरुष धर्मथी न-

सायमान थता होय, तेमने धर्म समजावीने स्थीर करवा. तन, मन ने धन ए त्रणे प्रकारथी जे जे रीतनी एवा पुरुषने हरकत होय ते ते हरकत दूर करी स्थिर करवा ते स्थिरीकरण गुण. वच्छलता ते सरखा धर्मी, पोताथी गुणे अधिक वा उंग पण गुणवाला होय तेनी, जेवी जेवी शक्ति होय ते शक्ति प्रमाणे आहार पाणी वस्त्र आभूषणादिके करी सेवा करवी. ज्ञान, दर्शन, चारित्र जेम वृद्धि पामे एवा प्रकारे भक्ति करवी ते वच्छलता गुण. प्रभावना गुण ते जिन शासननी वहुमानता बीजा लोक करे, अने वली ते कृत्य जोइ बीजा जीवो धर्म पामे, जेम के प्रभुना मंदीरमां उच्छव आदिक करवे करी, तथा तीर्थ जात्राए धनवान पुरुषो होय ते संघ काढीने जाय, अने संघनुं रस्तामां रक्षण करे, जेम संघना माणसो निर्विघ्नपणे पोतानो आत्मिक धर्म साधी शके एवी धर्मनी साहाय्य करे. जैनधर्म जेम दीपे एम करे. वली महंत पुरुषो आठ प्रकारे प्रभुनुं शासन शोभावे छे. प्रथम प्रवचनी ते प्रवचन जे आगम, प्रभुनां प्ररूपेलां अंग, उपांग, छेद, आदिक सूत्र, निर्युक्ति, भाष्य, चूर्णि, टीका ए सर्व शास्त्र वर्तमानकालमां वर्तता होय ते सर्वे स्वसमय कहीए, अने परसमय ते खटे दर्शनना शास्त्र तेना पारगामी होय तेना प्रभावे जे शास्त्रनुं जेने समजवुं होय ते समजावी शके, जे जे शास्त्रनो अर्थ पूछे तो ते बतावी शके, तेथी घणी जैन शासननी प्रशंसा थाय. बीजो प्रभावक धर्म कथी ते धर्मोपदेश देवामां अतिशय कुशल होय, जेना मुखमांथी वचन एवां नीकले के सांभलनारने तेमना वचनमां शंका पडे नहि. सांभलनारनुं मन संसारथी उदास थाय अने पोतानुं आत्मतत्त्व प्रगट करवा तत्पर थाय, मोहनी आधीनता अनादि कालनी छुटी जाय, मिथ्या हठवाद रहे नहि, संसारी सुख तो दुःख जेवां लागे, आत्मिक

सुख तेज सुख माने ज्ञान, दर्शन, चारित्र, गुण आत्मानो ते प्रगट करवाना काम थाय, विषयादीकना अन्नीलाप शात थइ जाय, कामन्नोगनी वाठाउनो नाश थाय, कुबुद्धि कुशास्त्रनी बुद्धि टली जाय, एवा उपदेशक पुरुष उपदेश करीने शासनने शोन्नावे. त्रीजो वादी प्रन्नाविक ते जे जे खोटा मतवादी वाद करवा आवे, अनेक प्रकारना कुतर्को करे तेहना जवाब एवा आपे के कुतर्को नाश थाय, जेमके मल्लवादीजी महाराजे बौद्ध साथे वाद कर्यो तेमा बौद्धवालाथी जवाब न देवायो तेनी फिकरमा ते विचारो मरण पाम्यो. एवा वाद करवानी कुशलताथी जिन शासन शोन्ने. चोथो नैमित्तिकि ते निमित्त शास्त्र जे ज्योतिष शास्त्र तेनो पारगामी होय तेथी जे जे निमित्त कहे ते सत्य थाय; जेम न्नद्रबाहु स्वामीए राजाने कह्युं के सातमे दीवसे तमारो पुत्र मरण पामशे, तेज प्रमाणे थयुं अने वराहमिहिरे सो वर्षनुं आउखुं कह्युं हतुं ते खोटुं थयुं एवा न्नद्रबाहु स्वामी जेवा निमित्त शास्त्रना जाण ते एवी शासननी प्रन्नावनाने अर्थे निमित्त प्ररूपी शासननी प्रन्नावना करे. पाचमो तपस्वी ते अहंकार ममकार रहित शात स्वन्नावी आकरी तपस्याउ करे, पोताना आत्मानो अणहारी गुण प्रगट करवाने मोटी मोटी तपस्याउ करे तेने जोइने बीजा पुरुषने तपस्या करवानी बुद्धि जागे तपस्यानुं अजीर्ण क्रोध जगतमा कहेवाय ठे ते जेनामा नथी, शांत रसनो समुद्र ठे, तेने जोइने घणा लोक प्रशसा करे, ते तपस्वी नामा प्रन्नाविक कहिये. ठठो विद्याप्रन्नाविक ते जेम वज्र स्वामी महाराजे विद्याना प्रन्नावे श्री देवीना न्नुवन वगेरेथी फुल लाव्या, जेथी बौद्ध धर्मनो राजा चमत्कार पाम्यो ने जैन धर्म अंगीकार कर्यो. एवी रीते शासननी शोन्ना करे ते विद्याप्रन्नाविक. सातमो अंजनसिद्ध प्रन्नाविक जेम कालीकाचार्य म-

हाराजे अंजन योगथी आखो इंटोनो पजावो चुरण नाखी सुवर्णनो बनावी दीधो, अने गर्धन्नील्ल राजाने जीती पोतानी बेन सरस्वतीने छोमावी. एहवां शासननां काम करी शासन शोन्नावे. आठमो नवां काव्य वगेरे रचवामां कुशल ते कविनामे प्रन्नाविक; जेम सिद्धसेन दिवाकर माहाराजे वीक्रमराजा आगल नवां काव्य रचीने चार दीशाए चार काव्य कह्यां ते एकेक काव्य केहतां एकेक दिशिनुं राज आव्युं, एम चार दीशानुं राज आव्युं पण एतो निस्पृही पुरुष छे ते राज्य लीधुं नहि, पण एवी कुशलताथी शासननी प्रन्नावना थाय, घणा जीवो धर्म पामे अने पोतानुं आत्म तत्त्व साधे तेथी नपकार थाय. एवी रीते आठे प्रकारे शासननी प्रन्नावना निस्पृहीपणे करे, कोइ प्रकारे कंइपण वांछा राखी करे नहि, ते प्रन्नाविक गुण कहीये. ए आठ प्रकारे दर्शननो आचार पामे, ते लान्नांतराय टुटवाथी थाय छे, अने जेने दर्शननो लान्नांतराय होय तेने ए आचारथी विपरीत वर्तना होय. देवगुरु धर्मनी निंदा करे, धर्ममां कुतर्क करी शंका करे खोटा मत सारा लागे, लोकोने खोटा धर्ममयी बुद्धि करे, जिनराजनी न्नक्ति करी तेनो अहंकार करे जे हुं विधि युक्त न्नक्ति करुं छुं. हुं जिन न्नक्तिमां धन वापरुं छुं तेवुं जगतमां कोइ वापरतुं नथी, हुं नत्साह सहित करुंछुं तेवुं कोइ करतुं नथी एवा अनेक प्रकारना अहंकार करे ते अनाचार जाणवो. तेवा अनाचार सेववाथी दर्शननुं लान्नांतराय कर्म नपार्जे.

चारित्राचार आठ प्रकारे छे. इर्यासमिति ते चालवुं, वेसवुं, नठवुं, सुवुं, पासु फेरववुं ए सर्वे काम यतना पूर्वक करवां. प्रथम रजोहरण वा मुहपति वमे करी पुंजवुं वा दृष्टिथी जोवुं. ने पछी चालवादिकनी वर्तना करवी. एम करवाथी कोइ पण जीवने दुःख थाय नहि. केमके परजीवने दुःख नहि करवाथी स्व-

दया ते पोताना आत्मानी दया थाय. केमके परजीवने दुःख दे-
वाथी कर्मबंध थाय, तेथी पोतानो आत्मा मलीन थाय, आवी
भावना सदा बनी रही छे तेथी कोइ जीवने दुःख थाय एवी
वर्तना करता नथी, तेथी सेहेजे परजीवनी दया थाय छे भाषा
समिति ते प्रथम तो मुखे हाथ अथवा वस्त्र मुहपति राखीने बोले
छे जेथी मुखना श्वासथी जीव हणाय नही कारण उघाडे मुखे
बोलतां केटलीएक वखत मछर, माख वगेरे जीव मुखमां आवी
जाय छे ते गलामां उतरी जवाथी वकारी वीगेरे पोताने कष्ट था-
य छे ने ते जीवनो विनाश थाय छे. ते सारु भगवतीजीमा गौ
तम स्वामी महारजना प्रश्ननो उत्तर भगवाने कह्यो छे के हाथ
राखी बोले छे तो ते निरवद्य भाषा छे, ने उघाडे मुखे बोले छे
ते सावद्य भाषा छे एम भगवतीजीमा छपेल पाना १३०१मे छे मा-
टे मुनि तो उघाडे मुखे नज बोले. वली गृहस्थने पण उघाडे
मुखे न बोलवुं जोइए हवे मुख ढाकीने बोलवुं, ते पण सत्य
बोलवु वली कोईनु छिड खुले, कोईनी निंदा थाय, एवुं वचन बो-
लवु नहि जे वचन बोलवाथी सामो जीव पाप प्रवृत्ति करे, जे
वचनमा मकार चकारनी भाषा बोलवाथी कोई जीवने दुःख
थाय, तेनु मन दुभाय एवु वचन न बोलवुं अर्थात् साधुना वा
श्रावकना धर्ममा बोलवानी भगवते मना करी होय एवुं वचन
बोलवुं नहि जे वचन बोलवाथी सामा जीवने वा कोई पण
जीवने तथा आत्माने लाभ न थाय ते वचन पण बोलवुं नहि;
ते भाषासमिति कहिये. वली पुद्गलीक जे जे पदार्थ छे ते सारु
आत्मामा उपयोग करे, जे आ देह प्रमुख जे जे पुद्गलीक पदा-
र्थ छे ते मारा नथी पण मात्र वहेवारथी केहेवा मात्र कहुं छुं;
एवा उपयोग सहित बोलवु ते भाषासमिति सदाकाल स्वदशा-
माज उपयोग छे. जे बोलवाथी आत्मा मलीन थाय ते वचन

बोले नहि. एषणा समिति ते निर्दोष एटले बेंतालीश दोष रहित आहार पाणी वस्त्र पात्रां वीगेरे जे कांइ जोइए ते एवां ले के जे लेवाथी कोईपण आपनार तथा तेना कुटुंब आदिकने कोईने पण दुःख न थाय वली कोईने दुःख थाय, हिंसा थाय, एहवा आहार ले नहि; कोई पण जीवनी हिंसा करवी नथी तेथी पोते करीने खाय नहि, कोई पासे करावे नहि; कोईए मुनिने सारु आहार कर्यो एम जाणवामां आवे, ते पण ले नही; तेना बेंतालीश दोष दशवैकालीक सिद्धांतमां घणे ठेकाणे कह्या छे. ते दोषनी मतलब एवी छे के आहार आपनारने तथा आहारना जीवने एमना निमित्ते कांई पण दुःख थाय एवा आहारने दोषित आहार कह्यो छे; तथा स्वाद करीने खावो नहि; तेम रांधेली वस्तु सारी होय तो राजी न थवुं, तेम नवली होय तो दीलगीर न थवुं, तेमज रांधनारे सारी रांधी होय तेनां वखाण करवां नहि, तेम नवली रांधी होय तेने वखोडवी नहि; दानना आपनार तथा नहि आपनार उपर राग द्वेष करे नहि, बधा उपर समवृत्ति राखे एवी रीतना दोषो विस्तारे बताव्या छे, ते टालीने आहार पाणी वस्त्र पात्र लेवां, ते एषणा समिति. आदानभंडनिक्षेपणासमिति, ते पात्र, पाट, पाटला वीगेरे जे कांइ चीज ले ते प्रथम दृष्टीथी जुए, पछी तेने पूंजे, पछी ले, वली मुके, ते पण जमीन निर्जीव जोइ पुंजीने तीहां मुके. पारिठावणिया समिति ते मल, छल्लो, मात्रु, लींट, थुंक, शरीरनो मेल जे जग्याए नांखे ते जग्याए कोई पण जीव होय, तेम पछी पणतेमां जीव उत्पन्न थाय तो पण कोईथी विनाश न थाय, एवी जगोए परठवे. गंदकी वाली जग्याए वा गंदकी थाय एवी जग्याए परठवे नहि, तेम कोई पण माणसने दुःख थाय, दुगंछा थाय, तेवी जग्याए परठवे नहि, तेम माणस देखे एवी जगोए झाडे जवा बेसे नहि, ए

रीते पारिठावणिया समिति पाले, ए पांच समिति. हवे त्रण गुप्ति तेमां, मन गुप्ति ते मन कांई पण पापना काममां प्रवर्तावे नहि, वधारे शुद्ध पुरुषो तो पोताना आत्म तत्त्वमां मन प्रवर्तावे, तेवी शक्ति न जाणी होय तो जेथी पोतानो आत्मतत्त्व प्रगट थाय ने तेमांज रमण थाय तेवा शास्त्र वांचे, वंचावे, सांभले, संभलावे, अने तेमां मन परोवे, पण संसारी वावतमां मन प्रवर्तावे नहि ध्याननी शक्ति वाला ध्यान करे, ते ध्याननुं स्वरूप प्रश्नोत्तर रत्नमालामांथी जोई लेवुं अने ध्याननो लक्ष वधारे करवो, तेथी मन गुप्ति थाय छे. आर्त्त रौद्र ध्यानमां मनने प्रवर्ताववुं नहि जोईए तेथी मन गुप्तिवाला मुनि महाराजने कोई पण रीतनी शरीरादिक तथा धनादिकनी इच्छा नथी, तेम कुटुंबनी पण इच्छा नथी, तेथी कोई वस्तु मली वा न मली ते संबंधी राग द्वेष नहि तेथी मनथी आर्त्तरौद्र ध्यान सेहेजे थतुं नथी पोताना आत्माना सहेज स्वरूपमांज सदा मग्न रहे छे, कोई पण रीतनी परपरणतिमां मनने वर्तावता नथी सद्चिदानंद स्वरूपमां मनने प्रवर्तावे छे आत्मानुं स्वरुप अरूपी, अक्रोधी, अमानी, अमायी, अलोभी, अशरीरी, अखंड, अगोचर, अलख, अविनाशी, अकल, अगम, अतींद्रीय, अजर, अरागी, अद्वेषी, अपर, अमरी, अणाहारी अनोपम, एवा स्वरूपमां मग्न थई रह्यो छे, तेमां शरीरे रोग थाय, कोई उपद्रव करे, कोई कडुवा वचन कहे, कोई मारे, कूटे तो पण तेमां मनने प्रवर्तावता नथी ते मन गुप्ति कहीए. तेमज वचन गुप्ति पण पाले छे वधारे विशुद्धि करवा ध्यानादिक करे छे एटले कांइ पण बोलवुं परूतु नथी श्रीमत् श्री महावीर स्वामी भगवाने अभिग्रह धारण कर्यो हतो जे केवल ज्ञान प्राप्त थता सूधी कोई साथे वचन बोलवुज नहि, तेम बोलेज नहि, तेवी शक्ति नथी

तो कोई पण जीवने दुःख थाय एवां वचननी गुप्ति करे, एवां वचन बोले नहि, वली बोले ते पण एवुं बोले के सांभलनारने वचन गुप्ति थाय. पोताने वचनगुप्ति थाय एवां वचन शास्त्र आधारे बोले, केमके मौनपणुं धारण करे ते मुनि, माटे जेम परभावमां मौनपणुं थाय एवो उद्यम करे. लाभ सिवाय फोगट वाद विवादमां वचन प्रवर्तावे नहि, केवल वचनरहितपणुं अजोगी गुणस्थानमां अने सिद्धपणामां छे. संसारमां रहेला जीवने आवा अवसरमां प्रभुनो मार्ग मळ्यो, तेथी जेम बने तेम वचन योगनुं गोपववुं थाय एम करे, ते वचन गुप्ति. काय गुप्ति ते कायानी प्रवृत्तिने रोकवी. बीलकुल कायगुप्ति तो चउदमे गुणस्थाने थाय छे, ते गुणस्थान नथी पाम्या त्यां सुधी पापना काममां कायाने प्रवर्ताववी नहि. कायगुप्ति थाय एवा कारणोमां काया प्रवर्ताववी. जेटली जेटली कायानी प्रवृत्ति रोकाय एम रोके, ते कायगुप्ति कहीए. जेम बने तेम आत्म भावमां वर्ते ने कायानी चपलता छोडे. स्वस्वभाव सन्मुख थाय तेमां जेटलो चेतन स्वभाव प्रगटे एटली गुप्ति थाय. ए रीते पांच समिति अने त्रण गुप्ति मली आठ चारित्रना आचार व्यवहारथी मन, वचन, कायानी प्रवृत्ति प्रभुनी आज्ञाए करवी, जेथी आत्माना स्वभावनो आचार शुद्ध थाय. निश्चे चारित्राचार शुं छे ? आत्मा आत्म स्वभावमां स्थिर थाय, देहना स्वभावमां वर्ते नहि, कर्मनो नाश थाय, आत्मा जेटलो जेटलो शुद्ध थाय तेटलो तेटलो चारित्राचार प्रगटे, ए चारित्राचार सर्व प्रकारे प्रगटे त्यारे सर्व कषाय जे क्रोध, मान, माया, लोभ छे ते नाश थाय, अने यथाख्यात चारित्र प्रगटे. ए लाभ चारित्राचारनो अंतराय तुटे छे त्यारे प्राप्त थाय छे, अने जे जीवो चारित्रवंत पुरुषनी निंदा करे छे, अने बोले छे के खावापीवा न मळ्युं, वेपार करतां न आवड्यो, त्यारे साधु थईने बेठा; एवुं

बोलवाथी, अथवा कोई दिक्षा लेनार पोतानो सगो छे तेना मोहथी साधुनी निंदा करे छे, तेने दीक्षा लेवा देता नथी, वली बोले छे के साधुपणामा पण शुं फायदो छे, आवुं बोले छे, ज्ञावे छे, केटलाएक नामज्ञानी बनी बोले छे, के ए करवाथी काई लाज्ञ नथी, ज्ञानथी लाज्ञ छे एम कही विषय कषायनी प्रवृती छोकता नथी, छोमनारनी लघुता करे छे, एवुं करवाथी जीव चारित्रना लाज्ञनो अतराय कर्म बांधे, माटे चारित्राचार जेथी प्रगटे एवा कारण सेववा, के कोई दीक्षा लेतो होय तेमा बनती मदद आपवी, तेना कुटुंबना माणसने आजीवीकानुं छुख होय तो आपणी शक्ति होय ते प्रमाणे छुःख ज्ञागवुं के तेथी तेने दिक्षा लेवामा हरकत पमे नहि कोई पण रीते संजमनी मदद थाय एम करवुं. सजम लेवानी सदा ज्ञावना ज्ञाववी कोई संजमवंतनी निंदा करतो होय तो तेनी निंदा टालवानो उद्यम करवो, जेमके राजग्रही नगरीमा ज्ञीखारीए दीक्षा लीधी तेने सारु लोक निंदा करता हता, पछी अज्ञयकुमार मंत्रीश्वरे सवाक्रोम सोनैयानो बजारमां ढगलो कर्यो अने आखा शहेरमा ढंढेरो फेरव्यो के जे माणस पृथ्वीकाय ते माटी प्रमुख, अपकाय ते पाणी, तेउकाय ते अग्नी, वायुकाय, वनस्पतिकाय, त्रसकाय ते जे हालता चालता जीव, ए छ कायनी हिंसानो त्याग करे, तेने आ सवाक्रोम सोनैया आपु. पछी काइए पण सोनैया लीधा नहि. सर्व माणसो विचार करे जे संसारि सुख हिंसा कर्या विना बनतुं नथी, तो पइसाथी शुं करवुं? एम विचारी कोई पण सोनैया लेवाने आव्यु नहि; पछी अज्ञयकुमार मंत्रीश्वरे बजारमां लोकने आवी एकठा कर्या ने पुछ्यु जे आ सोनैया केम लेता नथी, त्यारे सर्वे कहे जे ए सोनैया लइने शुं करवुं ? संसारमा खावुं, पीवु, पहेरवुं, उढवुं, गामी घोमा दोमाववा ते सर्वे काम हिंसा विना थता नथी,

ने ए संसारी सुखनी इच्छा अमारी गइ नथी, एटले सोनैयाने शुं करीए? पछी अभयकुमारे कह्युं जे तमो सवाक्रोड सोनैया लइ हिंसानो त्याग करता नथी, तो आ भीखारीए तो वगर पैसे हिंसानो त्याग कर्यो तेनी तमे केम निंदा करो छो? एवुं समजाववाथी बधाए ते संजम लेनार भीखारीनां बहुमान करवा लाग्या. तेमज जे संजम ले तेनां बहुमान थाय एम करवुं. वली जे वखते थावच्चा कुमारे दिक्षा लीधी ते अवसरे कृष्ण वासुदेवे आखी द्वारिका नगरिमां उद्घोषणा करावी के जे कोई थावच्चाकुंवर साथे दिक्षा लेशे तेनां छोकरां मा बाप वगेरे जे कोई हशे तेनी हुं प्रतिपालना करीश, अने पछी तेमज कर्युं. आम करवाथी सेहेज संजम लेनारनां संजम लेवामां विघ्न होय छे ते दूर थाय छे, माटे आवी रीते संजमनां बहुमान करवाथी संजमनो लाभांतराय तूटे एवो उद्यम करवो. आ सर्वे अधिकार सर्व संजमनो कह्यो. तेमज देश चारित्र श्रावकना बार व्रत रूप, तेनो पण एज रीते आचार देशथी जाणवो. केमके व्रत देशथी छे, तेम आचार पण देशथी जाणवो, ते पण अंतराय कर्म होय त्यां सुधी देश विरति लेइ शकता नथी. सामायक पौषधमां तो मुनी जेवाज आठ आचार पालवा छे; ते पाली न शके अने ज्यारे अंतराय तुटे त्यारे पाली शके छे; जेमके सुव्रत शेठे पौषध लीधो हतो अने मकाननी पाछल आग लागी तो पण पौषधथी चलायमान थया नहि, अने ते मकानमांथी रात्रीए नीकल्या नहीं तो धर्म दृढता जोई देवताए सहाय करी, अने पोते जे मकानमां हता तेनी आगल पाछलनां मकान बली गयां, पण ए मकानने हरकत थइ नहि. माटे पौषध सामायकमां मुख्यपणे चारित्राचार पालवो, अने पालवानी भावना राखवी. जेम जेम चारित्राचार पालवानी उत्कंठा थाय छे, तेम तेम चारित्राचारना लाभनो अंतराय तुटे

छे. सदाकाल एज भावना भाववी के क्यारे आ संसाररूप बंदीखानामांथी छुटुं आ संसारमा अज्ञानपणे सुख मान्युं छे, पण विचार करता कांई पण सुख नथी. अग्निमां लोहनो गोलो जेवो तपी रह्यो छे तेवो आ संसारमा रात दिवस विकल्परूप ताप लागी रह्यो छे धननो विकल्प, वेपारनो विकल्प, कुटुंबनो विकल्प, खावा पीवानो, पहेरवानो, उठवानो, सुवानो, सर्व कुटुंबनो विकल्प, एवा अनेक प्रकारना विकल्परूप तापे तपी रह्यो छुं, ते हुं क्यारे छुटीश, एम भावीने बने छे तो संसारने छोडे छे, नथी बनतुं तो संसार छोडवानी भावना रात दिवस भावी रह्या छे; एवी भावना भाववाथी जीव हलको थाय छे वली कदापि चारित्र अंगीकार करी मनमा अहंकार धारण करे छे के माहारा जेवो चारित्रनो पालनार कोण छे ? त्यारे भाववुं जे अरे जीव श्रीमान् महावीर स्वामीए केवा उपसर्ग सहन कर्या छे ? बे पग वच्चे अग्नि सलगावी खीर राधी ए आदे संगम देवताए हजारो मणनुं माथे चक्र मुक्युं, जेथी घुटण सुधी भूमीमा पेसी गया तो पण समभाव छोड्यो नहि एवा तें कया उपसर्ग सहन कर्या ? जे तुं अहंकार करे छे अरे चेतन ते सूर्यनी आतापना लीधी ? वा चार महिना सुधी कुवाना टोडा उपर काउस्सग्ग ध्यानमा पूर्वना मुनिओ रहेता तेम ते कर्युं छे ? ढढण मुनिने छ मास सूधी आहार न मल्यो तो पण पोतानो अभिग्रह छोड्यो नहि एवुं तें शुं मोटुं संजम पाल्युं ? के तुं अहंकार करे छे एवा मुनिओना उत्कृष्ट कृत्य विचारी पोताना अहंकारनो नाश करे छे, अने आत्माने आत्म स्वभावमा स्थिर करे छे परभावमा अनादिनी स्थीरता थई रही छे, ते लशेमीने स्वपरणतिमा स्थिर थाय छे ते लाभ लाभांतरायना क्षय थवाथी थाय छे

तपाचार ते आत्मानो अणाहारी गुण छे आहार करवो ते

आत्मानो धर्म नथी, ते छतां आहारमां अनादि कालनो पुद्गलनी संगे आहारनी आकांक्षा थयां करे छे, ते दशा छोरुवाने सारु तप करे छे. आत्मानां छ लक्षण कह्यां छे. तेमां आत्मानुं तप पण लक्षण छे. ते तपनुं अंतराय कर्म बांध्युं छे, त्यां सुधी तपगुण प्रगट थतो नथी. तपनुं अंतराय जीव हमेश बांधी रह्यो छे. तपस्वी पुरुषोनी नींदा करे छे, तपमां कांइ गुण नथी, खावा न मले एटले तप करे, एवी रीते बोले, कुटुंबी माणस तपस्या करतां होय, तेने कंई शरीरे फेरफार थाय तो तपने दुषण दे, पण एम वीचारे नहि के पूर्वे अशाता वेदनीय कर्म बांध्युं छे तेथी रोग थयो. कंई पण रोग पूर्वना कर्मना उदय सिवाय थतो नथी, तो पूर्वे अज्ञानताए तपस्या करवाना भाव थया नहीं, अने तपस्या करी नहि, विषय कषायमां मग्न रह्यो, तेथी आ अशाता वेदनी कर्म बांध्युं, ते उदये आव्युं छे. तपस्यानो पण अंतराय करेलो तेथी अंतराय कर्मनो उदय थयो, तेथी तपस्या थती नथी, एवी वीचारणा न करे, वली तप करी अहंकार करे जे म्हारा जेवो तपस्वी कोण छे ? बीजाथी तपस्या न थती होय तेनी निंदा करे, पोते तप कर्यो छे तेनी म्होटाई करवा लोक आगल पोतानी प्रशंसा करावत्रा तप करेलो जणावे, पण एम न विचारे के में शुं तप कर्यो छे ? पूर्वे मुनिउ तप करता हता ते इंद्रियोना विषय मंद पाम्या करता हता. शरीरनां हाडकां खखडतां हतां, तेनुं दृष्टांत भगवतीजीमां आप्युं छे के पातरानुं भरेलुं गाडुं होय ते चाले त्यारे खखडे. तेम जे मुनि महाराजे तपस्या करी पोतानुं शरीर गाली नांख्युं तेवी रीते शरीर गाली नांखवाना भाव नथी; कारण के शरीर नरम पडे छे तो शरीर पुष्ट करवानो उद्यम सदा करी रह्यो छे. पूर्वेना पुरुषो देहने विदेह मानता हता एटले देहने पोतानो मानताज नहोता तो तेवो भा-

व थयो नथी, त्या सुधी तारो तप केहेवा मात्र छे. वली तपस्या करी खावानी कोई प्रकारनी इछा करता नहोता, ने तुं तो इछा करे छे. तारी इछाउं रोकाई नथी तो तुं तपनो शी बाबत अहंकार करे छे ? एवी ज्ञावना करे नहि, ने अहंकारमां मची रहे तेथी पण तपनुं अंतराय कर्म जीव बांधे छे. तेथी तप करवानो ज्ञाव थतो नथी. हवे जेने तपना लाज्ञनो लाज्ञांतराय टुट्यो छे ते पुरुषोने तपस्या करवानो ज्ञाव थाय छे, ते रूडी रीतना तपनो आचार पाले छे, बारे प्रकारे तप करवामां अग्लान ज्ञाव करे ग्लानज्ञाव ते आ तप केम थाय, महाराथी थई न शके, छती शक्तीए उत्साह न करे, वली तप करे तो मांदा जेवा ज्ञाव धारण करे, एहवी रीतनी ग्लानता धारण करे नहि, जे जे तपस्या करे ते ते उत्साहे करे, मन पण प्रसन्न रहे के आज मारो धन्य दिवस के आत्मानुं तप लक्षण प्रगट करवानो माहारो ज्ञाव थयो, वली ए उद्यममा प्रवर्तवानो वखत मळ्यो. हवे जेम मारा आत्मानो तपगुण प्रगट थाय एम हुं वर्तुं, एवी रीते करे वली अणाजीवी ते तपस्याए करी आजीवीकानी इछा नथी, एटले हुं तपस्या करुं तो मने बधा लोक मान आपशे, वा धन आपशे, वा पुद्गलीक सुख आ लोक तथा परलोकमां मलशे एवी आजीवीकानी इछा नथी. केवल आत्माने कर्मथी मुक्त करवाने सारुज उद्यम करे. वली कुशलदीठी एटले तीर्थंकर महाराजे तप करवानो कह्यो छे, अने पोते करी बताव्यो छे, ने कर्म खपावी मोक्षे गया छे, तेम हुं पण तप करी कर्म खपावुं. एवी ज्ञावनाए ते तप करे, ते तपनो आचार. एवी रीते तपाचार कह्यो जे शरीरने दुःख सुख थाय ते गणे नहि, तेथी शरीरनी संज्ञाल रहे नहि. त्यारे शरीर पडी जाय तो धर्म साधन शी रीते करी शके ? आवी शंका थाय तेनुं समाधान ए के

पूर्वे जेमणे तपनुं अंतराय कर्म बांध्युं छे तेमनुं शरीर नरम पडे छे, ने धर्म साधन थई शकतुं नथी, तो तेउ शक्ति माफक तपनो उद्यम करशे. वली शरीर नरम हशे तो सर्वथा आहार छोडी नहि दे, पण विषय छोडवा तेमां कांई शरीरना बलनी जरुर नथी, तेथी शरीरे जेम टकाव रही शके तेटलो आहार लेशे; पण बत्रीशे रसोईना स्वाद लेवाना भाव न राखे, मात्र जे वस्तु निरवद्य एटले पाप रहित मली तेज चीजथी निर्वाह करे. एक चीजथी शरीर नभे छे तो वधारे वस्तु शुं करवा ले, एवा वीचारथी आहार करे छे, तो पण तेने आहारनी इच्छा नथी. तपस्वी छे अने तप करे ने तपने दीवसे तथा बीजे दीवसे खावानी भावनाउ करे, तो एने ज्ञानीए तप गण्यो नथी, कारण जे इच्छाना रोधने ज्ञानी तप कहे छे, माटे हरेक प्रकारे इच्छा रोकाय एम करवुं, वा रोज तप करुं, तपनो अभ्यास करुं तो ते अभ्यासथी मारी इच्छा रोकाशे, एवा विचारथी तप करे तो ते पण कोई दीवस इच्छा रोकशे, माटे इच्छा रोकवानो उद्यम करवो ते सारो छे. जे जे रीते आत्मानो गुण प्रगट थाय एवो उद्यम करवो. जेम बने तेम इंद्रियोना विषयनी वांछा घटवी जोइए तोज साचुं ज्ञान कहेवाय; केम के जे आत्मानुं स्वरूप जाणे छे के, जाणवुं देखवुं ए आत्मानो धर्म छे. तो जे जे खावानुं मल्युं ते फक्त जाणी लेवुं छे तेमां विषय बुद्धि करवी नथी ए आत्मानुं काम छे, तेवा विचारथी ते आहार करे छे तो पण तपस्वीज छे, केमके आत्मभाव कायम रह्यो. तप कांई आहारना त्यागमां नथी. इच्छाना रोधमां छे. इच्छा रोधनां साधनोने पण तप कह्यो छे तेथी बार भेद कह्या छे, माटे जे भेदनो तप करवाथी पोतानी स्वदशा प्रगट थाय ते तप करवो. बारे प्रकारनुं तप उपयोग सहीत करे तो ज्ञानी माहाराजे निर्जरानुं कारण

कह्युं छे, एटले कर्म खपाववानुं कारण कह्युं छे, कारण के जीवने गाढ कर्मनां दलीआ बंधाया छे माटे सर्वथी वेदनी कर्मने पुद्गल वधारे भाग आपे छे, केमके वेदनीयनुं प्रगटपणुं छे. हवे जे जे तप करे तेमा अशाता वेदनी थया सिवाय रहेती नथी, ते अशाता तप गुणनो अंतराय तुट्यो होय तेटली समभावे भोगवे छे. समभाव रहेवानुं बीज कोणछे ? वीर्य छे वीर्य अंतराय तुटवाथी फोरायमान थाय छे, ते वीर्य जे जे आचारमा जीव प्रवर्ते ते ते आचारमा फोरायमान थाय छे ने जे जे वीर्यना फोरायमानथी तप थाय छे ते प्रसन्नताथी थाय छे, अहर्निश तेमा हरख थाय छे, अने ज्यारे कोइना आग्रहर्थ वा शरमथी थाय छे त्यारे प्रसन्नता न होय त्या वीर्य फोरायमान न थी थतुं, त्यारे अशाता अवसरे समभाव पण जीवनो रही शकते नथी, जे पुरुषोने स्वपरनुं ज्ञान थयुं छे तेमनो भाव तो पोतान आत्मदशामा रहेवानो बनी गयो छे, पण आत्मभावमा वरत शकतो नथी, केम के तप गुणना लाभनो लाभांतराय तुट्यो नथी ते जेटलो जेटलो तुटतो जाय छे तेटलो तेटलो उगे थतो जा छे, अने तेटली वर्त्तना करे छे वर्त्तना करता अशाता थाय छे त्यां बालजीव विचारे छे के में तप कर्यो तेथी मने अशाता वेदनी थई पण ज्ञानी पुरुष तो विचारे छे जे कर्म नाश करवा तप कर्यो छे, वेदनी कर्मना उदयथी वेदनी थई छे वेदनी कंई तप करवाथी थती नथी तप करवाथी भगवान् श्री महावीरस्वामी प्रमुखे वेदनी कर्म वीगेरे खपाव्याछे, तेम खपे छे, ने निकाचीत कर्म तपस्यानी वखते उदये आव्याछे, तो ते तपस्या समभावे आदरी छे, माटे समभावे ए कर्म पण भोगवाशे, तेथी कर्म निर्जरा विशेष थशे, तेम विचारी अशाता वेदनीथी बीहता नथी अशाता वेदनीनी उदीरणाज करी छे तो उदये आवे तेमा बीहे नहि, एवा भाव जेम जेम वृद्दि पामे

छे तेम तेम वीर्यांतराय तुटतो जाय छे. अने वीर्य फोरायमान थतुं जाय छे. वली वधारे विशुद्धिवंतने तो आवा विचार करवा पम्ताज नथी ते तो पोतानी आत्म दशा जाणवा देखवानी छे ते रूप वेदनीने जाण्या करे छे तेमां राग द्वेष करताज नथी. एवी समभाव दशा अप्रमादी मुनिने बने छे, ते तो पोतानी अप्रसाद दशामां रही आनंदमां वर्ते छे. हवे प्रमाद गुणस्थानवंत वीगेरे तो पोताने समभाव दशा केटलीएक थई छे, केटलीएक नथी थई, ते वधारवा सारु बारे प्रकारे तप करे छे. ते अनशन एटले अन् एटले रहित अने अशन एटले अनाज प्रमुख खावुं, ते अनशन तप कहीए. आहार करवो ते आत्मानो धर्म नथी, पण पुद्गलनो साथे संबंध थवाथी आहार जाणे आत्माज करे छे, एवी दशा अनादीनी बनी गई छे; पण ज्ञान थवाथी जाण्युं जे आहारना पुद्गल शरीरमां प्रणमे छे, आत्मा अरूपी छे तेमां कांई प्रणमता नथी, तेम छतां मदारे आहार करवो मानुं छुं, ते अज्ञान दशा छे, पण माहारी तथा प्रकारे जोईए एवी विशुद्धि थती नथी. एटले आहारनी इच्छा थाय छे तो पण जेटली जेटली रोकाय तेटली रोकुं के अभ्यासथी सर्वथा रोकाई जाय. एम भावीने नवकारशी एटले बे घमी दीवस चम्ता सुधी, पोरशी एटले प्रहोर दीवस चम्े त्यां सुधी, साढ पोरसि ते दोढ पहोर दिवस चम्े त्यां सुधी, पुरिमड्ढ ते बे पहोर दिवस चम्े त्यांसुधी अवड्ढ ते त्रण पहोर दिवस जाय तीहां सुधी, वा बे वार खावुं, वा एकासणुं ते दिवसमां एकज वार खावुं, वा आंबिल ते छए विगय रहीत एक वार खावुं, उपवास तो सर्वथा खावुंज नहि, ते जेटला उपवास बने एटला दिवस आहारनो त्याग करवो; तेमां कोई चारे आहारनो त्याग करे, कोई त्रण आहारनो त्याग करी पाणी मोकलुं राखे, एहवी रीते तप करवो, वा मर-

ण वखते सर्वथा आहारनो त्याग करी सर्व वस्तुनो अने शरी-
रनो त्याग करवो, ते अनशन तप जाणवो.

हवे उणोदरी तप ते उणुं खावु, एटले सर्वथा खावुं नही
एवो आत्मानो धर्म छे, पण अनादी जरुनी संघाते करी जीव
जरु क्रीयाने पोतानी मानी रह्यो छे तेम देहने पोतानुं माने छे,
ते जोर अज्ञानतानुं छे, ते अज्ञानताना जोरथी मने जूख लागी
छे, माहरे खावुं माहारे पीवु छे एम कहे छे, वली देहमा रह्यो छे
ते देह जरु पदार्थ छे ते जरु पदार्थनो धर्म शरुण, परुण, वि-
ध्वंसण छे, एटले विनाश धर्म छे. आहारनो पुद्गल मले तोज
टकी रहे. हवे आहारना पुद्गल बे प्रकारे मले छे, एक रोम आ-
हार ते रुवे रुवे आहारना पुद्गलनो शरीरमां समये समये आ-
हार करी रह्यो छे ते, तथा एक कवल आहार ते कोलीउ करी
मुखमा मुकीए ते; हवे रोम आहार तो पोताना उपयोग सहीत
तथा उपयोग रहीत पण लेवाय छे, ते तो जीहा सूधी शरीर
छे त्या सूधी लेवानो बंध जीवने थतो नथी, तो पण ते आहार
शी शी रीते लेवाय छे? जे पवन आवे छे ते ठंरुो आवे छे तो
ठंरुक लागे छे, गरम आवे छे तो गरमी लागे छे, वरसाद वखत
होय त्यारे सरदी लागे छे, आ बधुं गरमी प्रमुख श्याथी जाणे
छे? शरीरमा प्रणमे छे तेथी, तो तेज आहार छे पण ते
कई स्ववशपणुं नथी, तेथी तेनो त्याग ग्रहणमा उपयोग रहे
छे ने नथी रहेतो, एटले वीरती पण थनी नथी तो पण ज्ञानी
पुरुपो छे ते तेमा राग द्वेप नथी करता. फक्त आत्मानो जाणवानो
धर्म छे तेथी जाणे छे के आ गरमीना पुद्गल, आ शीतना पुद्ग-
ल लेवानो कर्म उदय छे तेम लेवाय छे, एम उपयोग सदाकाल
रहे छे, ते पुरुपने इछानो रोध थयो ते तप छे, पण एटलो गुण
प्राप्त थयो नथी तेथी ठरुी गरमीमां जाणवा रूप रही शकतो

नथी, तो पण कंईक ज्ञान थयुं छे, ने कंईक फरस ज्ञान थयुं छे; तेना प्रभावथी कंईक समभाव राखे छे; तो जेटलो राग द्वेष ओछो थयो ए पण उणोदरी तपनुं लक्षण छे, माटे जेम राग द्वेषनी परणती ओछी थाय एम उत्तम पुरुषे करवुं. हवे बीजो कवल आहार छे, ते सर्वथा जेहनी इच्छा उठे छे तेनो त्याग करे छे, ते अनशन तपमां गणाय छे. हवे सर्वथा आहार विना तो शरीर रहेतुं नथी त्यारे आहार आपवो जोइए, पण आहार लेवानो धर्म नथी तेथी इच्छा थती नथी पण शरीरने टकाववा आहार आपवो. ते उणुं ओछुं खाय तो पण शरीरनो टकाव, रहे रोगादीकनी उत्पत्ति न थाय तेथी आहार ओछो ले अने इच्छा नथी वा इच्छा छे तो ते ओछी थइ, एटलो आत्मा निरमल थयो ने इच्छाना रोधरूप उणोदरी तप सहेजे थयो. वली जेनी एटली विशुद्धि नथी थई ते पण हमेशना खोराक करतां पांच कोलीआ वा तेथी वधारे ओछा खावानो अभ्यास करे, तेथी पछी सेहेजे इच्छानो रोध थई जाय. वली बीजी रीते खावानी वस्तुओ छे, तेमांथी जेटली वस्तु ओछी ले तेटलो उणोदरी तप थाय. वली ओछी वस्तु ग्रहण क्यारे थाय. के कंइक खावाना विषय घट्या होय तो वा विषय घटवानो अभ्यास छे. केमके आहार लेवानो आत्मानो धर्म नथी, तो जेम बने तेम पोतानो आत्म धर्म प्रगट करवानो जीवने अभ्यास करवो जोईए. जेम जे जे कला शीखवी होय ते ते कला अभ्यास करवाथी शीखाय छे तेम. आत्म धर्मनी वर्तना अनादी काल थयां जाणतो नथी, तथा वर्ततो नथी. ते अभ्यास करवाथी वर्तना थाय तो ते अभ्यासमां जेम बने तेम अयोग्यनो त्याग करवो. आहार बहु जातना छे, तेमांथी जे आहार लेवाथी घणा जीवनी हिंसा थाय छे ते आहार शाकादिक तथा अभक्षादिकनो न करे ते बावीश अभक्ष्नां नाम मारा करे-

ला प्रश्नोत्तर चिंतामणीमा छे, तथा जोगशास्त्रादिक ग्रंथोमा छे तेमाथी जोई त्याग करवो, ते पण ऊणोदरी तप छे, तथा जे आहार रसवती नक्ष्य छे ते रसवतीमाथी थोमी चीजोथी निर्वाह थाय छे, तो पण निर्वाह करता वधारे चीजो जीव विषयने सारु वापरे छे तेथी आत्मा वधारे लेपाय छे. एम जेणे जाण्युं छे तो खाती वखत निर्वाह जेटली वस्तु ग्रहण करी बीजी वस्तु उपरथी इच्छा उतारवी ते पण ऊणोदरी तप छे; माटे जेम बने तेम निर्वाह उपर लक्ष आपवो केटलाएक विषय घटया नथी तेथी वधारे वपराय, तो ते वीपे पण जीव निंदा गर्हा सहित जो वापरे तो विषयना कर्म आकरा न बंधाय, तो ते कर्मना रस जेटला ऊंचा पम्या ते पण ऊणोदरी तपनुंज फल पामे वृत्ति संक्षेप तप ते, जे वृत्तिज वर्ती रही छे, तेनो संक्षेप करवो, एटले मरजादमा आववु; जेम के श्रावकने चौद नियम धारवा, मुनिने द्रव्य, क्षेत्र, काल, नाव आ चारे प्रकारमाथी हर कोई प्रकारनी आहारादिक वस्तु संबंधी धारणा करवी, रोटली अथवा हरकोई पदार्थ धारे के ए वस्तु मले तो लेवी, वा फलाणुं माणस आपे तो लेवुं वा आटला कलाके मले तो लेवु वा हाव नावे आपे तो लेवु, एवी रीतना अभिग्रह धारण करे एहवी धारणा करवानी मतलब शुं छे के एवी रीतनो जोग न बने ने तप बने तो सारुं पूर्ण चित्त तप करवानुं ग्रतु नथी, त्यारे आवा अभिग्रह धारण करी आहारादिकनी इच्छाने शांत करे पुद्गल नावमा वृत्ति ऊंची थई रही छे ते आवा अन्यास करीने वृत्तिने रोके, ए वृत्तिसंक्षेप तप कहीए

रस त्याग तप केहता चार महाविगय ते मध, माखण, मांस, मदीरा आ चार विगयनो श्रावक तथा मुनि महाराजने सदा त्याग होय, केमके ए वस्तुउ खाता त्रसकाय जीवनो नि-

नाश थाय छे, ते वातनो योगशास्त्रमां हेमचंद्र आचार्य महा-
राजे विस्तारे निषेध करेलो छे. एटलुंज नहि, पण हरिभद्र सूरि
महाराजे पंचाशक वगेरे ग्रंथोमां मांसादिकनो निषेध कर्यो छे.
मांसाहारी जीव छे तेने निर्दयपणुं तो अवश्य होय. जो दयाना
परिणाम होय तो जेमां घणा जीवनी हिंसा थाय एवी वस्तु
वापरवाना भाव थायज नहि. पन्नवणाजीमां जघन्य श्रा-
वक कह्या छे, ते ए चार महाविगयना त्यागीज कह्या छे,
वली उपाशक दशांगमां आणंदजीए मांसादीकनो त्याग कर्यो
छे. वली मांसना आहारथी मीजाज चीडायेलो थाय, एवुं हाल-
ना डाकटरो पण कहे छे, वली मदीरा थकी आत्मानी ज्ञानश-
क्ति अवराई जाय छे. डाह्यो होय ते गांडो थाय अने ते गांडा-
इथी धन धान्यादिकना वेपारमां पण नुकशान थाय, वली ज-
गतमां पण निंदानुं स्थानक थाय छे, वली परलोके नरकादिक
गति पामे, तेथी उत्तम पुरुषो, साधु, तथा ग्रहस्थ एनो त्याग करे
छे. वली हालना वखतमां इंग्रेजो तथा पारशीउ पण केटलाक
मांसाहारनो त्याग करे छे, केटलाक उडी टेव थाय तेम करे छे,
आम अनार्य लोक ज्यारे त्याग करे छे तो आर्य लोकने त्याग होय
तेमां शी नवाईनी वात छे, माटे महाविगयनो त्याग कह्यो छे.
बीजी छ विगय ते दुध, दही, तेल, गोल, पकवान तथा घी,
ए छ विगयमांथी जेटली विगय त्याग थाय एटली करे; कार-
ण के विगय खावाथी विकारनी वृद्धि थाय छे, तेथी काम दीप्त
थाय छे, माटे मुनि महाराजो विगयनो त्याग करे छे. पण हाल
कालमां विगय वापर्या विना शरीर टकी शके नही तेथी शरी-
र निभाव जेटली वापरी बाकीनी विगयनो त्याग करे. श्रावक छे
ते पण रोज एक एक विगयनो त्याग करे, कारण के मुनि महाराज
तो सर्व कामना त्यागी छे तेथी बने तो सर्वथा त्याग करे, पण

गृहस्थथी वनवु दुर्लज्ञ छे गृहस्थ एने तो जेटली मूर्छा काम उपरथी उतरे ते मुजब विगयनो त्याग करे ज्ञावथी जेटला पुद्गल जंग ग्रहवामा आवशे एटलो कर्म बंध नहि थाय, एम ज्ञावी मुनि तथा गृहस्थ विगयनो त्याग करे. पोतानो अणहारी गुण प्रगट करवारूप वीर्य फोरायमान थाय एज आत्मानो तप गुण प्रगट थाय, ते रसत्याग तप कहीये.

कायक्लेश तपः—ते जेटलुं जेटलुं समज्ञावे कायानुं कष्ट ज्ञोगववामां आवे छे ते कायक्लेश तप. मुनिमहाराज लोचादिक कष्ट सहन करे छे, विहारमा चालवाना कष्ट सहन करेछे, सूर्यनी आतापना ले छे,ते मुनि महाराज शुं ज्ञावी कष्ट सहन करे छे के पोताना आत्मानुं स्वरूप जाण्युछे,जम्नु स्वरूप जाण्युं छे तेथी जम्ड जे शरीर तेने पोतानुं जाणता नथी, पोताना तेवा ज्ञाव रहे छे के नहि, एम विचारवुं. जे वखत लोच करे ते वखत कष्ट पम्डे छे ते कष्ट पम्डता जे पुरुषोनु मन वगम्डतु नथी ने समज्ञावमां रहे छे तो एवा कष्ट स्वज्ञाविक रोगादीकना आवे त्यारे पण समज्ञावमा ते पुरुष रही शके छे, अने समज्ञावे रहेवाथी ते कर्म ज्ञोगवाय छे तेज वखते आत्मानी अशुद्ध परिणती टले छे,ते निर्जरामा गणाय छे, अने आत्मा शुद्ध थाय छे हवे जे माणसो जाणीबुजीने एवा कष्ट सहन करता नथी तेने रोग ज्ञोगवी वा बीजा कुटुंबनां वेपारना काम करी कष्ट ज्ञोगववा जोइशुं अनादि कालनो जीव संसारमा रोलाय छे तेमा मोहने वश अशाता वेदनी कर्म, अंतराय कर्म बांधेला छे ते ज्ञोगव्या विना छुटको नथी, माटे उत्तम पुरुषो जे प्रमाणे समज्ञावमा रही शके छे ते प्रमाणे कष्ट ज्ञोगवी पोतानां कर्म खपावे छे, ते कायक्लेश तप छे समज्ञाव सिवायनां कष्ट ज्ञोगवे छे ते निर्जरामा ज्ञानी गणता नथी, कारण जे एक कर्म ज्ञोगवी पाछां हजारो कर्म नवा उपार्जन करे छे, माटे ते दुःख

भोगवेलां काम लागता नथी. तेथी तेने सकाम निर्जरामां गणाता नथी. दरेक धर्ममां समजीने काम करवाथी लाभ वताव्यो छे, तेमज जे जे कष्ट भोगववुं ते समजीने भोगववुं तेथी आत्माने लाभज थशे. कष्ट भोगवतां आत्मानुं वीर्य जागे छे, तोज समभाव रही शके छे, नहिं तो समभाव रहेतो नथी. ते आत्म वीर्यना अंतराय टुटया विना वीर्य फोरायमान थतुं नथी. माटे समभावमां रही जे जे बनी शके ते रीते कायाने कष्ट भोगवी कर्म खपाववां ते कायक्लेश तप जाणवो.

संलीनता ते मुनि महाराज करी शके छे. जेम कुकडी शरीर संकोचीने सुवे छे तेम मुनि महाराजो सुवे छे. एवी रीते सुवाथी अंगोपांग वधाने जागृति आवे छे, अने निद्रामां लीन थवातुं नथी, ने आत्मज्ञान अवराई जतुं नथी. जेम सख्त निद्रा आवे तेम उपयोग लोपाई जाय छे तेथी जेम आकरी निद्रा न आवे तेम मुनि महाराज सुवे. वली जोग संलीनता पण तपमां कही छे, परंतु ते अभ्यंतर तप गणी शकाय. तेम वचन कायाना जोग जेम बने तेम आत्म स्वभावथी बहार वर्त्तता रोकीने नीज स्वभावमां थीर करवा, ते जोग संलीनता तप छे, ए घणो ज श्रेष्ट तप छे. ए रीते संलीनता तप कह्यो छे.

ए छ प्रकारे बाहाज तप कह्यो, तेनुं कारण जे ए तप करनारने जोईने आ तपस्वी छे एम ओलखी शके. बाकी वस्तुपणे तो कर्म खपाववाना भावथी ए बाहाज तप करे, ते पण आत्मा निर्मल करे. अने अभ्यंतर तपथी पण आत्मा निर्मल थाय. हवे ते अभ्यंतर तप ते शाथी ? तो के बाहारथी देखीने तपस्वी कोई नहि कहे, पण आत्मा निर्मल करे तेथी अभ्यंतर तप कह्यो. ते पण छ प्रकारे छे.

१. प्रथम विनय तप ते देवनो, गुरुनो, धर्मनो, ए त्रणनो

विनय करवो. देव ते अरिहंत, जेमणे ज्ञानावर्णी कर्म क्षय करी केवलज्ञान उपार्जन कर्युं छे जे ज्ञाने करी लोकालोकना न्नाव ते स्वर्ग, मृत्यु, पाताल ए त्रणमा जीव अजीव पदार्थ रह्या छे ते पदार्थनी वर्णना थई रही छे, समे समे अनंता परजायनो उतपात, व्यय, अने ध्रुव थई रह्यो छे, ने गया कालमा वर्त्तना थई, आवते काले थशे अने वर्तमानमां थाय छे, ते सर्व न्नाव एक समयमा जाणी रह्या छे तेनु नाम केवलज्ञान, एवुं ज्ञान जेने प्रगट थई रह्युं छे. दर्शनावर्णी कर्म क्षय करी अनत दर्शन गुण प्रगट थयो छे, तेथी ( सामान्य वोधरूप ) केवल दर्शन प्रगट थयुं छे. मोहनीय कर्म क्षय करी चारित्र गुण प्रगट थयो छे, ते आत्म स्वन्नावमा स्थीर थाय, ते चारित्र गुण जाणवो. अंतराय कर्म क्षय थवाथी अनत वीर्यादीक गुण प्रगट थयो छे एवा अरिहंत न्नगवानना विनय करवो केमके आत्मानुं स्वरूप अरूपी छे ते केवलज्ञान प्रगट थया विना प्रत्यक्ष थतुं नथी ते केवलज्ञानथी सर्व जीवना आत्मानुं स्वरूप प्रत्यक्ष देखाय छे तेथी ते स्वरूपनुं वर्णन प्रन्नुए कर्युं, वली आत्मा मलीन शाथी थाय छे ते स्वरूप वताव्युं, वली आत्मा निर्मल शाथी थाय छे ते वताव्युं. पुन्य पाप वाधवानां कारण वताव्या छे, तो तेथी आपणे आपणा आत्मानु स्वरूप जाणी शकीए छीए माटे प्रन्नु मोटा उपकारी छे तेथी तेमनो विनय जेम वने तेम करवो. शक्ती गोपववी नहि

सिद्ध महाराज जेमने आठे कर्म क्षय थवाथी आत्माना संपूर्ण गुण निष्पन्न थया छे, शरीरथी रहित थया छे, मोक्ष स्थानमां रह्या छे, जेमने फरी संसारमा आववुं नथी, केवल आत्माना गुणमाज लीन छे, नथी राग, नथी द्वेष, नथी क्रोध, नथी मान, नथी माया, नथी लोन्न, नथी विषय, अक्षय, अमर, अजर, अकल, अगोचर, अरूपी आदे अनंत गुण रह्या छे, ते सिद्ध

ज्ञगवाननुं रूप जोई आपणी सिद्ध दशा प्रगट करवानी बुद्धि जागवानो हेतु छे; वली गुणवंतना गुण गातां आपणो आत्मा पण गुणी थाय अने अनादीनी ज्ञुलथी परवस्तु पोतानी मानी वर्ते छे ते ज्ञाव पलटाववानुं साधन छे, माटे सिद्ध महाराजनो विनय पण जेटलो बनी शके एटलो करवो. ए बंनेनो विनय करवो ते देवनो विनय जाणवो. हवे आ क्षेत्रमां अरिहंत सिद्ध महाराज कांई पण विचरता नथी, तो तेमनी मूर्त्तिन्नो पण विनय करवो. कारण जे गुणवंत पुरुषोनी मूर्त्तिमां पण जे जे ज्ञगवाननी मूर्त्ति छे ते ते ज्ञगवानना गुणनो आरोप करवो छे, ने ते गुणनो विनय करवो छे, एटले ज्ञगवंतनोज विनय छे. हवे तेमां प्रथम शो विनय छे ? के ते पुरुषोए जे जे हुकम फरमाव्या छे ते ते हुकम अंगीकार करीने पोतानो आत्मा शुद्ध करवाना उद्यमी थवुं अने उद्यम करवाथी आत्मा शुद्ध थशे. जे जे अंशे प्रज्ञुजीना हुकम प्रमाणे समज्ञावमां रहीशुं ए मुख्य विनय छे. पछी तेना कारण रूप पांच प्रकारे विनय छे "ज्ञक्तिवाह्यज प्रणीपतीथी" एटले पंचांग प्रणाम करवा जे खमासमणुं देईने पांचे अंग एकठां करी नमस्कार ज्ञगवंतने वा ज्ञगवंतनी मूर्त्तिने करवा. वली अष्ट द्रव्यथी, सत्तर द्रव्यथी, एकवीश द्रव्यथी, वा १०० द्रव्यथी ज्ञगवंतने पूजवा ते पण ज्ञगवंतनो विनय छे. "रुदय प्रेम बहुमान" हृदयमां ज्ञगवंतना गुण ज्ञगवंतनो उपकार अत्यंत विचारी हरखथी रोमराय विकस्वर थई जाय. आणंदनो पार रहे नहि. एवो अंतरमां हरख थाय, अने प्रज्ञु उपर अतिशय प्रीति जागे. तेमज प्रज्ञुनो परूपेलो जे धर्म जे आगममां कह्यो छे ते आगम सांज्ञली अहो प्रज्ञुए शो मार्ग बताव्यो छे ते विचारीने हरख थाय. वली प्रज्ञुनां चरित्र सांज्ञली प्रज्ञुजीनी वर्तना जोई अहो आश्चर्यकारी ज्ञगवंतनुं वर्त्तवुं छे ते जोई हरख थाय अने प्रज्ञुना

भगवाननुं रूप जोई आपणी सिद्ध दशा प्रगट करवानी बुद्धि जागवानो हेतु छे; वली गुणवंतना गुण गातां आपणो आत्मा पण गुणी थाय अने अनादीनी भुलथी परवस्तु पोतानी मानी वर्ते छे ते भाव पलटाववानुं साधन छे; माटे सिद्ध महाराजनो विनय पण जेटलो बनी शके एटलो करवो. ए बंनेनो विनय करवो ते देवनो विनय जाणवो. हवे आ क्षेत्रमां अरिहंत सिद्ध महाराज कांई पण विचरता नथी, तो तेमनी मूर्त्तिनो पण विनय करवो. कारण जे गुणवंत पुरुषोनी मूर्त्तिमां पण जे जे भगवाननी मूर्त्ति छे ते ते भगवानना गुणनो आरोप करवो छे, ने ते गुणनो विनय करवो छे, एटले भगवंतनोज विनय छे. हवे तेमां प्रथम शो विनय छे ? के ते पुरुषोए जे जे हुकम फरमाव्या छे ते ते हुकम अंगीकार करीने पोतानो आत्मा शुद्ध करवाना उद्यमी थवुं अने उद्यम करवाथी आत्मा शुद्ध थशे. जे जे अंशे प्रभुजीना हुकम प्रमाणे समभावमां रहीशुं ए मुख्य विनय छे. पछी तेना कारण रूप पांच प्रकारे विनय छे "भक्तिबाह्याज प्रणीपतीथी" एटले पंचांग प्रणाम करवा जे खमासमणुं देईने पांचे अंग एकठां करी नमस्कार भगवंतने वा भगवंतनी मूर्त्तिने करवा. वली अष्ट द्रव्यथी, सत्तर द्रव्यथी, एकवीश द्रव्यथी, वा १०० द्रव्यथी भगवंतने पूजवा ते पण भगवंतनो विनय छे. "रुदय प्रेम बहुमान" हृदयमां भगवंतना गुण भगवंतनो उपकार अत्यंत विचारी हरखथी रोमराय विकस्वर थई जाय. आणंदनो पार रहे नहि. एवो अंतरमां हरख थाय, अने प्रभु उपर अतिशय प्रीति जागे. तेमज प्रभुनो परूपेलो जे धर्म जे आगममां कह्यो छे ते आगम सांभली अहो प्रभुए शो मार्ग बताव्यो छे ते विचारीने हरख थाय. वली प्रभुनां चरित्र सांभली प्रभुजीनी वर्तना जोई अहो आश्चर्यकारी भगवंतनुं वर्त्तवुं छे ते जोई हरख थाय अने प्रभुना

भगवाननुं रूप जोई आपणी सिद्ध दशा प्रगट करवानी बुद्धि जागवानो हेतु छे; वली गुणवंतना गुण गातां आपणो आत्मा पण गुणी थाय अने अनादीनी भुलथी परवस्तु पोतानी मानी वर्ते छे ते भाव पलटाववानुं साधन छे; माटे सिद्ध महाराजनो विनय पण जेटलो बनी शके एटलो करवो. ए बंनेनो विनय करवो ते देवनो विनय जाणवो. हवे आ क्षेत्रमां अरिहंत सिद्ध महाराज कांई पण विचरता नथी, तो तेमनी मूर्त्तिनो पण विनय करवो. कारण जे गुणवंत पुरुषोनी मूर्त्तिमां पण जे जे भगवाननी मूर्त्ति छे ते ते भगवानना गुणनो आरोप करवो छे, ने ते गुणनो विनय करवो छे, एटले भगवंतनोज विनय छे. हवे तेमां प्रथम शो विनय छे ? के ते पुरुषोए जे जे हुकम फरमाव्या छे ते ते हुकम अंगीकार करीने पोतानो आत्मा शुद्ध करवाना उद्यमी थवुं अने उद्यम करवाथी आत्मा शुद्ध थशे. जे जे अंशे प्रभुजीना हुकम प्रमाणे समभावमां रहीशुं ए मुख्य विनय छे. पछी तेना कारण रूप पांच प्रकारे विनय छे "भक्तिबाह्यज प्रणीपतीथी" एटले पंचांग प्रणाम करवा जे खमासमणुं देईने पांचे अंग एकठां करी नमस्कार भगवंतने वा भगवंतनी मूर्त्तिने करवा. वली अष्ट द्रव्यथी, सत्तर द्रव्यथी, एकवीश द्रव्यथी, वा १०८ द्रव्यथी भगवंतने पूजवा ते पण भगवंतनो विनय छे. "हृदय प्रेम बहुमान" हृदयमां भगवंतना गुण भगवंतनो उपकार अत्यंत विचारी हरखथी रोमराय विकस्वर थई जाय. आणंदनो पार रहे नहि. एवो अंतरमां हरख थाय, अने प्रभु उपर अतिशय प्रीति जागे. तेमज प्रभुनो परूपेलो जे धर्म जे आगममां कह्यो छे ते आगम सांभली अहो प्रभुए शो मार्ग बताव्यो छे ते विचारीने हरख थाय. वली प्रभुनां चरित्र सांभली प्रभुजीनी वर्तना जोई अहो आश्चर्यकारी भगवंतनुं वर्त्तवुं छे ते जोई हरख थाय अने प्रभुना

उपकार संभारी अंतरंगमां राग उपजे ते पण प्रभुनो विनय छे.

"गुणनी स्तुति".—ते प्रभुना गुणनी स्तुति करवी ते स्तोत्र, श्लोक, दुहा, छंद इत्यादि प्रभु आगल उभा रहीने केहेवा; वा चैत्यवंदन, नमुथ्थुणं, स्तवन, थोय विगेरे कहेवुं; वा प्रभुना चरित्र सांभल्या छे ते चरित्रमा जे गुण वर्णव कर्या छे ते गुण याद करी पोते स्तवी वा बीजा आगल कही प्रभुना रागी करवा ते पण गुण स्तुति छे अवगुणनु ढाकवुं—ते प्रभुमा तो कोई प्रकारे अवगुण नथी पण कल्पित कोई अवगुण कहेतुं होय तो तेने समजावीने अवगुण बोलता बंध करवा. प्रभुजीनी प्रतिमाजी छे ते प्रतिमानी पूजा न करता होय तो तेमने समजावी प्रभुनी पूजा करता करवा जोइए. प्रतिमाजीना अवर्णवाद बोलता होय तो तेने पण समजावी अवर्णवाद बोलता बंध करवा जोइए केमके प्रभु अने प्रभुनी स्थापना बे सरखी भगवते कही छे. श्री अनुयोगद्वार सूत्रमां तथा आवश्यक सूत्रमा पण स्थापना निक्षेपो कह्यो छे. हालमा सामान्य गृहस्थनी पण यादगीरी कायम राखवा सारु फोटोग्राफ ( छबी ) तो घणा लोक करावे छे, वली मोटा होद्देदारो वा राजानी वा शाहुकारनी मूर्तीउ ( बावला ) पण मरनारना मान खातर बेसारुवामा आवे छे तो एवा माणसनां बहुमान करे, अने देवनी मूर्तिना बहुमान करावंवानो विचार न राखे, तो पोताना देव उपर पोतानो राग नथी एम खुल्लु समजाय छे, ने न्यायनी बुद्धि जेने थई होय तेने सेहेजे समजाय के भगवंतनी मूर्त्ति जोईने भगवान याद आवे अने भगवान याद आव्या के तेमना चरित्र याद आवे, तेमनु अद्भुत चरित्र याद आवे तो प्रभु केवा गुणवत छे ते गुण सांभरे, गुण सभारता, प्रभुए मोक्ष मार्ग बताव्यो छे तेमा जीवने केम चालवुं, ते याद आवे, ते याद आवता आपणे भगवतना हुकमथी

विरुद्ध चालीए छीए ते याद आवे छे अने ते याद आववाथी आप-णी भूल सुधारवानी बुद्धि थाय, वली भगवाननो उपकार याद आवे तो भक्ति करवाना भाव थाय, कारण के उपकारीनी जेटली भक्ति नहि करीए एटली उणी छे; माटे भगवाननी यथाशक्ति भक्ति करवानो भाव जागे ए प्रभुनो विनय छे. जे जे अवर्णवाद बोलता होय ते बंध थाय ते लाभ समजावनारने छे, ने तेज प्रभुनो खरो विनय छे.

"आशातननी हाण" एटले भगवान विचरता होय ते वखते छद्मस्थ अवस्थाए एटले जीहां सुधी केवलज्ञान पाम्या नथी, तेनी अगाउना वखतमां केटलीएक प्रशंसा थती होय ते अज्ञानी मत्सरी जीव सहन करी शकता नथी, तेवा जीव अव-र्णवाद बोलता होय वा पीडा करता होय तो आपणी शक्ति फो-रवीने ते पीडा टालवी. मुखेथी बोलतो होय तेने पण समजा-वीने तेने दूर करवो, वा प्रभुने केटलाएक देवता पण परीक्षा जोवा पीडा करे छे तो ते देवताने पण पोतानी शक्तिथी दूर क-रवो. वा मिथ्यात्वी जीव प्रभुनां प्ररूपेलां ज्ञान संबंधी वगर दू-षणने दूषण कही निंदा करे तो ते पण प्रभुनी आशातना छे, तेने पण समजावीने थीर करवो. वली आपणामां शक्ति न होय तो बीजा कोई शक्तिवान होय तेने विनंती करी तेनी शक्ति फोरवी तेनी शक्तिथी आशातना दुर करवी. तेमज जिनबिंबनी एटले मूर्त्तिनी आशातना करतो होय ते टाले. हवे जिन भुवनने विषे चोरासी आशातना टाले तेनां नाम.

१ बलखो वा थुक नांखवुं. २ हींचोलो बांधीने हिंचका खावा. ३ कलेश करवो एटले लडाई करवी. ४ धनुर्विद्या शी-खवानो अभ्यास करवो एटले बाण साधतां ताकेली जग्योए जाय ते. ५ पाणी पीने कोगला करवा. ६ तंबोलादिक

पान सोपारी खावा वा खाईने जवुं. ७ तंबोल खाधेलुं होय अने तीहा थुकवुं ८ सामाने गालो देवी, जदवा तदवा बोलवुं वा श्राप देवा. ए मूत्र विष्टानु नाखवुं वा करवु. १० शरीर धोवुं एटले नहावु ११ नीमाला देरासरमा नाखवा १२ नख नाखवा १३ लोही नाखवुं १४ सुखडी प्रमुख खावुं १५ शरीरनी चामडीनुं नाखवुं १६ पीत्त वमन करवु, एटले उकवु १७ सामान्य वमन करवुं १८ दात नाखे वा समारे १ए थाक्या होय तो विसामो लेवो २० गाय प्रमुख ढोरनु बाधवु २१ दातनो मेल नाखे २२ श्राखनो मेल नाखे २३ नख उतारे वा उतरावे २४ गंडस्थलनो मेल उतारे वा नाखे २५ नाकनो मेल नाखे २६ माथुं समारे. २७ काननो मेल नाखे २८ शरीर समारे २ए मित्रने मले ३० नामुं लखे, वा कागल लखे, ( पोतानुं संसारी ) ३१ काई वेचवानुं करे. ३२ थापण मुके ३३ माठे श्रासने वेसे ३४ ढाणा थापे ३५ लुगडा सुकवे ३६ पापड सुकवे ३७ वडीउ करे वा सुकवे ३८ राजाना जयथी नाशीने देरासरमा संताई रहे ३ए धान्य सुकवे ४० देरासरमा संसारी सगा साजरवाथी रुदन करे ते श्राशातना, पण जगवानना गुणनुं बहुमान करता हरखनां श्रासु श्रावे ते अशातना नथी ४१ विकथा करे एटले राज कथा, देश कथा, स्त्री कथा, वा जोजननी कथा एवी वातो देरासरमां करवी ते श्राशातना ४२ शस्त्र घडे एटले बनावे ४३ जनावरो देरासरमां बांधवानुं करे ४४ तापणी करी तापे ४५ रसोई राधे. ४६ रुपीया सोनैया पारखे ४७ निसिहि कही संसारी काम देरासरमा करवा निषेध कर्यां छे, ते छता करीने निसिहिनो जग करे ते दोष व्रत जग जेवो समजवो ४८ देरासरमा छत्र पोताना उपर धरावे ४ए खासडा देरासरमा मुके ५० चामर धरावे ५१ मननी एकाग्रता न करे ५२ शरीरे तेल चोलावे ५३ स-

चित्त भोग तजे नहि. ५४ अयोग्य अचित पदार्थ तजे नहि. ५५ शस्त्र मुके. ५६ प्रभु दीठे हाथ न जोडे. ५७ एक साडी उतरासन नांख्या विना देरासरमां जाय. ५८ मुगट पाघडी उपर पहेरी देरासरमां जाय. ५९ पाघडीनो अविवेक करे. ६० फुल तोरादीक खोशीने देरासरमां जाय. ६१ होड करे एटले सरत बके. ६२ दडे रमे वा दडाथी रमे. ६३ गेडीनी रमत करे. ६४ देरासरमां जुहार करे वा सलाम करे. ६५ कोईने टुंकारा करे, वा हलका शब्द कहे. ६६ लांघणे बेसे. ६७ कुस्ते एटले बाथा-बाथी लडे. ६८ भांड चेष्टा करे. ६९ चोटला समारवानुं करे. ७० पलांठी आसने बेसे. ७१ पावडी पेहेरीने देरासरमां जाय. ७२ लांबा पग करीने बेसे. ७३ पीपुडी वगाडे. ७४ देरासरमां कादव करे. ७५ शरीरनीरज उडाडे. ७६ मैथुन सेवे वा ए संबंधी चेष्टा करे. ७७ जुगार (जुगटुं) खेले. ७८ पाणी पीए, भोजन करे. ७९ मल्ल युद्ध करे. ८० वैद्य कर्म करे एटले नाडी जुए, दवा आपे. ८१ वेपार हरकोई जातनो देरासरमां करे. ८२ सुवानी पथारी पाथरे. ८३ खावानी वस्तु देरासरमां मुके. ८४ देरासरमां नाहे (स्नान करे).

आ रीतनी चोराशी आशातना छे, ते कोईए पण करवी नहि, ने कोई करतो होय तो तेने रोकवो; ए सिवाय देरासरना पईसा खाई जवा, वा देरासरना पैसाथी नफो उपार्जन करवो, वा घरमां वापरवा, देरासरनी चीज लावीने वापरे, ते सर्वे आशातनामां समजवुं; ने देवद्रव्य भक्षणनुं दूषण लागे, माटे कोई पण चीज देरासरनी पोताना काममां वापरवी नहि. ए पांच प्रकारे देवनो विनय कह्यो; तेमज देवनो भाषेलो धर्म आगममां लख्यो छे, माटे आगमनो विनय करवो ते आगमनुं ज्ञान करवुं, आगम एटले शास्त्र तेने लखाववां, लखाववाना काममां पै-

सा खरचवा, जे आगम लेवु ते नमस्कार अथवा खमासण दईने लेवु, मुकवुं ते वखत पण नमस्कारादिक करवा, आगमनां पुस्तक होय त्या वडीनीत एटले झाडो, लघुनीत ते पेसाव, ते करवा नहि, पग नीचे वा माथा नीचे मुकवुं नहि, तेमज आहार पाणी पण पुस्तक होय त्या करवा नहि, तेम मैथुन तथा मैथुननी क्रीया पण करवी नहि, तेमज हास्यविनोद करवो नहि, ए प्रमाणे प्रजुना ज्ञाननो विनय करवो ते प्रजुनोज विनय छे. मुख्य विनय तो ए छे जे प्रजुनो हुकम छे के पोताना आत्मजावमा रहेवुं जे जे सुख दुःख थाय छे तेनां कर्म पूर्वे वा वर्त्तमानमा बाध्या छे, ते प्रमाणे सुख दु ख थाय छे, अने आत्मानो स्वजाव जाणवानो छे ते जाणी लेवो, पण मने सुख थयुं तेवो हरख करवो, मने दु.ख थाय छे एम मानी दिलगीर थवुं तेम करवुं न जोईए. एवा विचारमा रहेवाथी नवा कर्म नथी बंधातां, एम प्रजुजीए कह्युं छे एम विचारवुं एज प्रजुनो विनय छे, आत्मानुं हित थवानुं कारण छे ए आदे विनयनु स्वरूप प्रजुजीए शास्त्रमां घणी रीते बताव्युं छे विनय अध्ययन उत्तराध्ययनजीमा छे ते सांजली ते अनुसारे विनय करवो गुरु महाराजनो विनय करवो, ते गुरु महाराज कोने कहीये ? जे पुरुषे सर्वथा हिसानो त्याग कर्यो छे कोई पण जीवने हणवो नथी, तेम कोई जीवने दु ख देवु नथी, तेमज असत्य एटले जूठुं बोलवुं नथी, तेमज कोई पण प्रकारनी चोरी करवी नथी, तेमज कोई पण स्त्री साथे मैथुन सेववुं नथी, तेमज स्त्रीने अडकवुं पण नथी, तेमने पाचमुं व्रत जे धन धान्यादिक नव प्रकारनो परिग्रह तेमां कोडी मात्र पण जेने राखवी नथी, एवा पच महाव्रते करी युक्त मुनि महाराज जे प्रजुनी आज्ञा मस्तक उपर चडावीने विचरे छे, प्रजुजीनी आज्ञा वहार वर्तता नथी, पोताना आत्मगुणमा

आनंदितपणुं छे, विषय कषाय जेने सेववा नथी, एथी मुक्त थया छे, कांईक अंश रह्यो छे तेथी मुक्त थवाना कामी छे, शांत रसनाज उद्यमी छे, शत्रु अने मित्र तुल्य छे, एवा आचार्य, उपाध्याय अने साधुजी महाराज, पर जीवना उपकार करवा पृथ्वी उपर विचरे छे, ने धर्म उपदेश देईने जगतना जीवने अधर्मथी छोडावे छे. केटलाएक नथी छोडता, पण छोडवाने सन्मुख थाय छे; एवा उपकारना करनारा पुरुषो छे, तेज गुरु कहेतां मोहटा छे माटे तेमनो विनय करवो. गुरु पासे जवुं तो सचित पदार्थ लईने जवुं नहि, तेमज गुरु दीठे हाथ जोडी नमस्कार करवा. वली गुरुजीने बे खमासमण एटले पंचांग प्रणाम करी इच्छकार सुहराइ (सुहदेवसी) सुखतप शरीर निराबाध सुख संजम जात्रा निर्वहो छोजी स्वामी शाता छेजी भात पाणीनो लाभ देजोजी, पछी कहेवुं जे-इच्छाकारेण संदिसह भगवन् अब्भुठ्ठिओहं अब्भिंतरं देवसिअं खामेउं एम कही गुरुनी आज्ञा मागी गुरु आज्ञा आपे जे खामेह, पछी पंचाग प्रणाम पूर्वक अब्भुठ्ठिओहं अब्भिंतर खामवो एटले कहेवुं. प्रतिक्रमणनी चोपडीमां छे ते मुजब खामवुं. इच्छकार कही साता पूछी अब्भुठ्ठिओ खामवाथी कंइ गुरुनी आशातना थई होय, तेनी माफी मागी हवे जेटला बोल अब्भुठ्ठिओमां आवे छे, एटला बोल करवाथी गुरुनी आशातना थाय छे माटे एटला बोल वर्जवाथी गुरुनो विनय थाय छे, तेथी अब्भुठ्ठिओ खमावी विचार राखवो, जे रखेने एहवी भूल थाय. वली द्वादशावर्त्त वंदन गुरुने करवुं, ए पण गुरु महाराजनो विनय छे, ते वंदन पण प्रतिक्रमणनी अर्थवाली चोपडीमां अर्थ सहित छे, माटे ते अर्थ समजीने ते प्रमाणे वर्तवुं. वली अरिहंत भगवंतनो विनय पांच प्रकारे बताव्यो छे तेज रीते करवो; एवीज रीते गुरु पासे जईने वंदन करवुं, पछी त्यां गुरु कथा करता होय ने

त्यां सन्ना उभराई होय तो सन्नामा बेठेला श्रावक श्राविकाने प्रणाम करवा, तेमज सन्नामा बेठेला करता आवनार विशेष गुणवंत वा धर्मी होय वा धनवंत होय तो तेने बेठेला लोक पहेलो प्रणाम करे, ने सामान्य होय तो आवनार प्रथम करे, एनी मतलब एज छे के चतुर्विध संघनो विनय करवानो छे, ते प्रथम विशेषनो सामान्य वालो विनय करे, अने विशेष होय ते पछी करे, आ मर्यादा समजवी वली गुरु पासेथी जाय त्यारे पाछा गुरुने वंदन करीने जाय वली गुरु घेर पधारे तो तेमनी सन्मुख जवुं, गुरुने बेसवाने आसन आपवुं, तेमज गुरु दीठे नमस्कार करवा, गुरुने जे कंई खप होय ते हाजर करवुं, कीमती चीज होय वा अल्प मुलनी चीज होय तो ते पण गुरुने अर्पण करवी, रस्तामा गुरु मले तो पण नमस्कार करवा गुरुनी तेत्रीश आशातना छे ते वर्जवी ते नीचे मुजब

१ गुरु महाराजनी आगल बेसवुं, २ गुरुनी आगल उभा रहेवुं, ३ गुरुनी आगल चालवु ४ गुरु महाराजनी पाछल नजीकमां बेसवु ५ तथा उभा रहेवुं ६ तेमज चालवुं. ७ गुरु महाराजनी बे पासे नजीकमा बेसवुं ८ गुरुनी बराबरीमा चालवुं ९ तेमज उभा रहेवुं आ नव आशातनानीमतलब एवी छे के नजीकमा बेसता, उभा रहेतां, आपणी छींक बगासु अधोवानु सरवु वगेरेनो तथा श्वासनो गुरुने स्पर्श थाय, माटे जेम स्पर्श न थाय तथा थुक वगेरेना छांटा न उडे, तेम बेसवु जोईए आगल अने सरखाईमां बेसता गुरुनी मोटाई शी रीते सचवाय ? माटे बराबरीमां तथा आगल बेसवाथी पण आशातना थाय छे १० पोताथी विशेष पुरुषनी साथे थंडील जाय, ने तेमनी अगाउ आवे तो पण आशातना ११ बहारथी आवेला गुरु साथे शिष्य गुरुथी पहेला रस्ताना दोष आलोवे तो आशा-

तना. १२ रात्रीए गुरुमहाराज बोलावे जे कोण सुतो छे, कोण जागतो छे, ने पोते जागतां छतां हुं जागुं छुं एम न कहे तो आशातना. १३ उपाश्रयमां श्रावक आवे तेने गुरु वा पोताथी अधीक पुरुषे बोलाव्या पहेलां बोलावे तो गुरु होय तो गुरुनी, वा अधीक होय तो अधीकनी आशातना. १४ आहार लावीने पोताथी अधीक साधुजीने आहार बताव्या विना बीजा साधुने बतावे तो आशातना. १५ आहारादिकनी निमंत्रणा गुरुने न करतां बीजाने पहेली करे तो आशातना. १६ गुरु महाराजने पुछ्या विना बीजा साधुने आहारनी निमंत्रणा करे तो आशातना. १७ गुरु महाराजने पूछ्या विना बीजाने आहार आपे तो आशातना. १८ सरस अने स्वादीष्ट आहार पोते वापरे ने गुरुने न आपे तो आशातना. १९ गुरुनां वचन सांभळ्या छतां गुरुने जवाब न आपे तो आशातना. २० गुरु जेवा वडीले बोलाव्या छतां आकरा वचनथी जवाब आपे, कंई पण अवज्ञा थाय एवो जवाब दे ते आशातना. २१ गुरुए बोलाव्या छतां पोताने आसने बेशी रहे ने जवाब दे पण तरत पासे आवे नहि ते आशातना. २२ गुरुए पुछ्या छतां आसने बेठां कहे जे शुं आज्ञा आपोछो ते पण आशातना. २३ गुरुने वा वडीलने टुंकारे बोलावे, एटले तुं कोण हमने कहेनार, आदे शब्द बोले ते आशातना. २४ गुरु कहे तेवीज रीतनुं अविनय वचन बोली जवाब आपे ते आशातना. २५ गुरु महाराज, साधु साध्वी ग्लान एटले रोगी, तेनी सार संभाल करवा कहे त्यारे गुरुने कहे जे तमेज सार संभाल करो, एम करी गुरुनी अवज्ञा करे ते आशातना. २६ गुरु महाराज धर्म कथा कहे ते शुन्य चित्ते सांभले; कदापि सांभले तो सांभलीने गुरुनां बहु मान करवां जोईए, के अहो गुरुजी शास्त्रना परमार्थ आप शुं बतावो छो ! एवी रीते बहु मान न करे ते

आशातना. २७ गुरु महाराज वा रत्नाधिक धर्म उपदेश कहे, त्यारेकहे जे आ अर्थ तमे बराबर करता नथी, तमने अर्थ करता आवडतो नथी, एवु कहेवु ते आशातना २८ गुरु कथा करता होय ते कथानो भंग करी पोते बीजा सांभलनार आगल कथा कहे ने समजावे ते आशातना २९ गुरु कथा करता होय अने ते कथा करता गुरुने तथा सभाने कथाथी आनंद थई रह्यो छे, ने चित्त लीन थई गयु छे तेवु जाणया छता शिष्य गुरुने कहे जे महाराज गोचरीनो वखत थई गयो छे माटे कथा बंध करो पछी गोचरी मलशे नहि, एवी रीते कहेवाथी चढती धारा होय ते टुटी जाय, ने व्याख्याननो छेद थाय ते आशातना ३० गुरु महाराजे जे जे अर्थ कह्यो छे तेज अर्थ व्याख्यान उठया पछी शिष्य सभाने विस्तारी पोतानी बहादुरी जणाववा व्याख्यान करे ते आशातना ३१ गुरु महाराजना संथाराने वा गुरु महाराजना पगने पगे करी फरसीने पाछो गुरुने खमावे नही ते आशातना. ३२ गुरु महाराजना संथारा उपर वा आसन उपर उभो रहे, अथवा बेसवा सुई रहेते आशातना ३३ गुरु महाराजथी उंचा आसने बेसे ते आशातना तथा गुरुना बराबरीना आसने बेसे ते आशातना.

आ बावतनी गुरु महाराजनी तेत्रीश आशातना पोते करवी नहि, तेम कोई करतो होय तो तेनी पासे टलाववानो उद्यम करवो, आ आशातना पोतानामा अहंकार दशा हशे त्या सुधी थशे, अने अहंकार टली गयो हशे तो सहेजे आशातना टलशे, माटे मुख्यपणे हुं गुरुथी बहु ज्ञानी छु, एवो अहमेव होय ते टालवो, कारण जे वधारे ज्ञान पण वखते होय तो ते गुरु महाराजनी कृपाथी थयुं छे, तो जेमनी कृपा छे तेमनी मोटाई न आवे त्या सुधी ज्ञान भण्या होय पण फरछ ज्ञान थयु नथी,

फरश ज्ञान थयुं होय ते तो उपकारीनो उपकार भूले नहि, माटे कदापी उपकार भूली गयो होय तो याद करीने आत्मानी भूल सुधारवी, ने गुरु महाराजनी मोटाई चित्तमां लावीने विनय करवो ने आशातना टालवी, एज आत्माने हितकारी छे. वली गुरुने द्वादशावर्त वंदन करतां बत्रीश दोष लागे छे. छपेला प्रवचन सारोद्धारमां पाना ३९ मां छे ते उपरथी लखुं छुं, माटे ते दोष टालीने गुरु वंदन करवुं.

१ अणाढा दोष कहे छे. आदर विना गुरुने वंदन करवुं, जेमके पोताने वंदन करवानो हरख नथी, पण एक कुल मरजादथी करवानी रीती छे, ते करवुं पण वंदन करवाथी महानिर्जरा थशे, आवा महा पुरुषने वंदन करवानो मने वखत मळ्यो, एहवा भाव आवे नहि त्यां सुधी आदर थाय नहि, माटे महा हरख सहित अने आदर सहित वंदन करवुं के अणाढा दोष टली जाय. २ स्तब्ध दोष. तेमां द्रव्यथी स्तब्ध ते, गुरु महाराजने वंदन करवानो भाव छे, पण शुल आदिक रोगनी पीडामां चित्त गुम थई जवाथी प्रफुल्लित चित्त थाय नही. भाव स्तब्ध ते द्रव्य थकी क्रिया करे छे पण अंतरगनो उपयोग बीलकुल वंदनमां नथी, ते भाव स्तब्ध कहीए, माटे द्रव्यने भाव बे प्रकारे स्तब्धता टालवी. ३ प्रवीध दोष. ते जेम भाडुत प्राणीने कोई पण कामे लगाड्या छतां भाडा उपर लक्ष राखी काम करे अने जेम तेम काम करीने चाल्यो जाय तेम वंदन करतां व्यवस्था रहित वंदन पुरु कर्या विना चाल्यो जाय ते. ४ सपींड दोष. ते आचार्य, उपाध्याय अने साधु सर्वेने एकठा वांदे तेनुं नाम सपींड दोष. ५ टोलक दोष-ते जेम तीड पक्षी अहीं तहीं फर्या करे ने स्थीर न रहे, तेम वंदन करतां आघो पाछो फर्या करे, तेने पांचमो टोलक दोष कहीए. ६ अंकुश दोष ते जेम महावत हाथीने अंकु-

श वमे पोतानी मरजी प्रमाणे फेरवे छे तेम गुरुने फेरवे आचार्य
ऊना होय वा बेठा होय वा कोई कार्यमा होय, तेम छतां गुरुनुं
कपडु पकडी आसन ऊपर बेसाडीने वंदन करे ते. ७ कच्छपदोष
ते वंदन करता काचबानी पेरे आगल पाछल जोता वादे, एटले
केवल गुरु महाराजमा ऊपयोग नहि ते कच्छप दोष ८ मछ दोष
ते मछ जेम स्थीर न रहे तेम शरीरनी अस्थीरताए वंदन करे,
विचित्र प्रकारे शरीरने चलाचल करे ए मनप्रदुष्ट दोष ते पो-
ताने अर्थे अथवा बीजाने अर्थे गुरु द्वारे कार्य सिद्धि न थवाथी
तेना मनमा द्वेष छतां वादे ते १० वेदीका बंध दोष ते बे हाथ
घुटण ऊपर मुकीने वंदन करे वा बे हाथनी वचमां पोताना घुं-
टण राखी वादे, एक घुटण बे हाथनी वच्चे राखी वदन करे,
खोलामा हाथ राखीने वंदन करे बेहु हाथ खोलामां राखे, ए
पाच प्रकारे वेदीका दोष ११ भय दोष.—वादणुं देता भय राखे
जे नहीं वादु तो गुरु महाराजने द्वेष थशे, ने मने कहाडी मु-
कशे, एवा भयथी वादवा ते भय दोष १२ भजंत दोष ते बी-
जा साधुउ आचार्यने भजे छे ने हुं नही आवुं ते ठीक नहि, एवा
विचारथी भजवुं ते भंजत दोष १३ मित्र दोष·—गुरुने वादीश
तो गुरु साथे मित्रता थशे, एवुं धारीने वांदवा ते मित्र दोष १४
गारव दोषः—मने समाचारी जाणवाथी लोक पंडीत कहेशे, वली
वीनीत जाणशे, एवा हेतुए वंदन करवुं ते गारव दोष १५ का-
रण दोषः—ते गुरु महाराजने वंदन करीश तो गुरु महाराज पा-
सेथी कंबल वस्त्रादीक इछित मलशे १६ स्तैन्यनामा दोष ते गुरुने
छानोमानो वादे प्रगट न वादे कारण जे वधा देखता वादीश तो
हुं एमनाथी नानो कहेवाईश, गुरुनी मोटाई थशे एवु विचारी
वंदन करे ते स्तेन्य कहेता चोर दोष १७ प्रत्यनीक दोष ते आ-
हार पाणी गुरु करता होय ते वखते वंदन करे ते प्रत्यनीक दोष

१७ रुष्ट दोषः—ते कषाए धम धमतो वंदन करे वली गुरुने कषाय उपजावे ते रुष्ट दोष. १९ तर्जीत दोष ते गुरु तो कोप पण करता नथी, तथा प्रसाद पण करता नथी, काष्टनी पुतली जेवा छे, वा आंगलीए मस्तके करी तर्जना करवी ते तर्जीत दोष. २० शठ दोष ते गुरुने वंदन करीश तो गुरु तथा श्रावक महारो विश्वास करशे, तो मारुं इच्छित थाशे. २१ हीलना दोष ते गुरुने कहे जे हे आर्य! हे जेष्ट! हे वाचक! हुं तने प्रणाम करुं छुं, एवी रीते हीलना करतो वांदे ते हीलना दोष. २२ कुंचीत दोष ते वंदन करतां वचमां विकथा करे. २३ अंतरीत दोष ते साधु प्रमुखने अंतरे रह्यो वांदे, वा अंधाराने विषे रही वांदे, एटले कोई देखे नहि एम वंदना करे. २४ व्यंग दोष ते गुरुनुं सन्मुखपणुं मुकीने डावी अथवा जमणी बाजुपर वांदे ते. २५ कर दोषः—जेम राजानो कर आपवानो होय तेम मनमां विचारे के भगवाने कह्युं छे तेथी वांदवा पडशे; ए वेठ छे ते उतारवी, एवुं धारी वांदे ते कर दोष. २६ मोचन दोष ते संसारना करथी मुकाया पण अरिहंतना करथी मुकाया नथी, तेथी वंदन करवुं पडशे एम विचारी वांदे. २७ आश्लिष्ट अनाश्लिष्ट दोष ते वंदन करतां रजोहरणने हाथथी फरसे पण हाथ मांथाने फरसे नहि, मस्तके फरसे पण रजोहरणे फरसे नहि, रजोहरणे हाथ न लगाडे ने मस्तके पण न लगाडे ते दोष. २८ न्यून दोष ते वंदनना अक्षर ओछा बोले, वा बहु उतावलपथी वंदन करी ले, तेथी अवनमनादिक ओछां करे वा करे नहि; प्रमादे करी जेम तेम करे तेमां जे न्यून थाय ते न्यूननामा दोष. २९ चूलिका दोष ते वंदन कर्या पछी मोटा शब्दे करीने " मत्थएण वंदामि " कहे ते चूलिका दोष. ३० मूक दोष ते-मूगानी पेठे मुखेथी शब्द बोल्या विना वांदे ते. ३१ ढढ्ढर दोष ते मोटा स्वरवडे वांदणांनुं सूत्र उच्चार करे ते ढढ्ढर दोष. ३२ चूड-

लिका दोष ते-रजोहरण झालीने आमुं अवलुं फेरवतो वादे ते.

ए रीते ३२ दोष वंदनना टालीने गुरुने वंदन करवुं, ए विनय छे. गुरुनी आशातना करी विनय करवो ते योग्य नथी, माटे जेम बने तेम गुरुनी आशातना करवी नहि गुरुनी निंदा करवाथी, हीलना करवाथी, गुरु सलववाथी, गुरुने पीमा थाय एटले मन दुजाय एवुं करवाथी ज्ञानावरणी कर्म बांधे, एम पहेला कर्मग्रंथमा कह्यु छे, माटे जेम गुरुनी आशातना न थाय एम वर्तवुं, ने जेटली मन वचन कायाए करी नक्ति थाय तेटली करवी, के जेथी ज्ञानावरणी कर्मनी निर्जरा थाय.

धर्मनो विनय ते-ज्ञान, दर्शन, चारित्र रूप धर्म अंगीकार करवो ते. तेमा जेटलो जेटलो धर्म अंगीकार करवामा आवे तेटलो तेटलो विनय थाय. ज्ञान अंगीकार करवुं ते आत्मानो ज्ञान गुण छे ते गुण प्रगट करवो, वा प्रगट करवानां कारणो सेववां. ज्ञान एटले जाणवुं, माटे जे जे वर्तना थाय ते जाणी लेवी, पण तेमा राग द्वेष न करवो, एवी ज्ञान दशा वनाववाथी संपूर्ण केवलज्ञान प्रगट थाय छे हवे एवी दशा नथी थई त्या सुधी एवी दशा प्रगट थाय एवा गुरुनी पासे ज्ञान नणवु, सानलवुं, निर्णय करवो, शक्ति होय तो पोते वाचवुं, पोताने जेटलुं ज्ञान थयुं होय ते बीजाने नणाववुं, ए पण ज्ञाननो विनय छे वली पुस्तक लखाववा, ज्ञानवंत पुरुषनो ने ज्ञान जे पुस्तक तेनो विनय करवो, वंदन नमनादीक करवुं, तथा पुस्तकनी संनाल राखवी, ज्ञानवृद्धि थवाना काममा इव्य होय ते अनुसारे खरचवुं, शरीरनी शक्तिथी ज्ञानवृद्धि थाय एहवी मदेनत करवी, बीजाने पण ज्ञाननो विनय करवामां जोमवा, ए सर्वे ज्ञाननो विनय छे. तेमज दर्शननो विनय करवो ते ते सम्यक्त्व अंगीकार करवुं, शुद्ध श्रद्धा करवी, वीतरागना वचनमा शंका न करवी, ए-

वा श्रद्धावंत पुरुषनो साधु, साध्वी, श्रावक, श्रावीका तेमनो उचित विनय करवो के जेथी उत्तम पुरुषनी कृपा थाय ने कृपाथी आपणी श्रद्धामां कसर होय ते नीकली जाय, ने शुद्ध थाय. एनो विस्तार गुरु विनयमां लख्यो छे ते प्रमाणे करवुं.

चारित्रनो विनय ते—मुख्यपणे आत्मानो चारित्र गुण छे, जे आत्माने आत्म स्वभावमां स्थिर थवुं. जे विभावमां अनादि कालनो आत्मा स्थिर थयो छे त्यांथी पलटावीने पोताना गुणमां स्थिर थवुं. जेटलुं जेटलुं परभावनुं प्रवर्तन रोकाशे तेटलो तेटलो चारित्र गुण प्रगट थशे, एज चारित्रनो विनय छे. हवे एवा गुण प्रगट नथी थया ते प्रगट करवाने सारु पंच महाव्रतरूप चारित्र अंगिकार करवुं. ते न बनी शके तो श्रावके बार व्रतरुप देशविरति चारित्र अंगिकार करवुं, ए अंगिकार करवाथी अंतरंग चारित्र प्रगटशे. वली तेटली दशा लाववा सारु एवा सर्व चारित्रवंत तथा देश चारित्रवंतनो विनय करवो, तेनी संगत करवी के उत्तम पुरुषना संगथी उत्तमता आवे माटे चारित्रवंत पुरुषनो विनय शास्त्रमां विस्तारे कह्यो छे ते मुजब करवो, ते चारित्र विनय. तेमज तप धर्मनो विनय करवो एटले तप अंगिकार करवो तथा तपस्वीनो विनय करवो ते पण धर्मनो विनय छे.

ए रीते देव, गुरुने धर्मनो विनय करवो ते विनयनामा अभ्यंतर तप कह्यो.

वैयावच्च तप ते—गुणवंत पुरुष जे अरिहंत महाराज सिद्ध महाराज, आचार्य, उपाध्याय, तपस्वी, साधुजी, कुल, गण, संघ, नवदीक्षित, ग्लान (जे रोगी साधु) ए आदि पुरुषोनी वैयावच्च करवी. आहार, पाणी, वस्त्र, पात्र, रहेवाने मकान, संथारा विगेरे पाट पाटलादि धर्म उपगरण आदि वस्तु उत्तम पुरुषने हीतकारी जे जे जोईए ते ते आपवुं, वा बीजा पासे अपाववुं तथा पोते

जाते एवा उत्तम पुरुषनी पगचपी विगेरे करवी, तथा एवा उत्तम पुरुषनी स्थापना होय ते मुर्तिनी भक्ति, नमन, विलेपना दिकथी करवी, ते पण वैयावच्च छे आ उपर कहेला पुरुषो उपगारी छे. ते उपगारी पुरुषोए आत्माने कर्मथकी मुक्त थवानो उपाय बताव्यो छे, वली जेम जेम सेवा भक्ति करीशु तेम तेम आपणामा योग्यता आवशे, अने तेम तेम गुरु विशेष बतावशे, तेथी विशेष बोध थशे, तेमज गुण प्रगट थवामा सहायकारी थशे. आ उपगार करनार पुरुषनी जेटली वैयावच्च करी तेटलो आत्मा सफल थाय छे, केमके उपगारीनो उपगार भूलवो एज मिथ्यात्व छे; ने मिथ्यात्व गया विना आत्मानुं काम थवानुं नथी, माटे जेटली जेटली वैयावच्च करीशुं तेटलुं तेटलु मिथ्यात्व टलशे, ने समकित शुद्ध थशे सम्यक्त्व शुद्ध थयुं एटलो आत्मगुण प्रगट्यो, माटे वैयावच्चरूप लाभ थवानो अंतराय तुट्यो नथी त्यां सुधी वैयावच्च करवानुं मन थशे नहीं, अने एम करतां मन थशे तो पण अंतरायना जोगथी एवा पुरुषनो जोग बनशे नहीं, जोग बनशे तो आलस विगेरे वचमा विघ्न आवशे ने वैयावच्च बनशे नहि, पण उद्यम करता करता अंतराय तुटशे माटे बनती शक्तिये वैयावच्च करवामा वीर्य फोरववुं, एज कल्याणकारी छे

सज्झाय तप ते—सझाय ध्यान करवु ते पाच प्रकारे छे. वाचना ते गुरु महाराज शास्त्र वाचना आपे तेथी गुरुने वाचना आपवारुप वाचना तप थाय, शिष्यने ते वाचना लेवाथी वाचना तप थाय, पृच्छना ते पोते भणेला होय तेमां शंका पडे ते गुरुने पुछीने तेनो यथार्थ निर्णय करवो ते पृच्छना कहीए, पण कोई पुरुषने खष्ट करवा पुछवु नही, ने पुछे तो ते पृच्छना तप न कहीये. परावर्त्तना ते भणेलुं फरी संभारवुं के जेथी भूली न जवाय, तेम खोट पडे नही, माटे जे भण्या होय ते हमेश संभा-

रवुं, रोज संभारवानो वखत न मले तो आंतरे आंतरे पण संभारवुं, नवुं भणवुं थाय, ने जुनु भुली जवाय ते जाणी बुजीने ज्ञानने आवर्ण लागवानुं थाय, माटे जेम भणेलुं भुली न जवाय तेम करवुं जोईए. चोथी अनुप्रेक्षा ते भणेली वा सांभलेली वस्तुनो तत्त्व विचार करवो, अने वस्तुना परमार्थनो अनुभव गम्य निर्णय करवो, एमां वधारे अनुमान शक्ति होय तो थई शके छे, ने जेणे भगवंतनां वचननो अनुभव गम्य-निर्णय कर्यो छे, ते माणसने पछी शंका रहेती नथी, तेमज कुबुद्धिवाला तेनुं मन तत्त्वनिर्णयथी फेरवी शकता नथी, आ अनुप्रेक्षा सज्झाय ध्यान जेने सम्यक्त्व प्राप्त थयुं होय तेज पुरुष करी शके छे, ने एज करवानी जरुर छे. अनुप्रेक्षा ज्ञानवालाने आत्मा अरूपी छे तो पण ते साक्षात आत्मा देखतो होय एवो निर्धार थई जाय छे. हरेक वांचीने विचार करवो तेज अनुप्रेक्षा छे ने तेम कर्या विना वांचेला भणेलानुं फल बराबर मली शकतुं नथी, पण ज्यारे ज्ञानावर्णी कर्मनो क्षयोपसम थाय त्यारे बनी शके छे. घणाये भणेला जोईए छीए, क्रिया करता जोईए छीए, पण आ शुं कह्युं, मारे शुं करवा केहेवुं ते जाणता नथी. आ क्रिया शुं करवा करी ते जाणता नथी, तेनुं कारण के निर्णय करवानी बुद्धि जागी नथी, पण ते बुद्धि जगाववानी जरुर छे. दुनियामां कहेवत चाली छे के भण्या पण गण्या नही, माटे तेम थवुं न जोईए. हरेक बाबतनो निर्णय करवानी बुद्धि राखवी. एवी बुद्धि जागी छे तेथी हरेक वस्तु अनुभव गम्य करे छे, ते अनुप्रेक्षा कहीये. एवा अनुभववाला पुरुषो धर्म उपदेश करे छे, तेनुं नाम पांचमी धर्मकथा कहीये. धर्म कथा करवाथी परजीव संसारनी उपाधीथी मुकाय, विषय कषाय शान्त थाय, तत्त्वज्ञान थाय, पोतानुं आत्मतत्त्व प्रगट कर-

वानो कामी थाय, वा प्रगट करे, एहवो उपदेश देवो, वा वार्ता करवी, वा सान्नलवी तेनुं नाम धर्मकथा कहीये जे कथा तथा वार्ता करवाथी विषयनी वृद्धि थाय, तृष्णानी वृद्धि थाय, मोहनी वृद्धि थाय, हिंसा, जूठ, चोरी, प्रमुखनी वृद्धि थाय तेनुं नाम धर्म कथा न कहीये, पाप कथा कहीये आ पाचे प्रकारना सझाय ध्याननुं नाम तो ज्ञान छे, एनुं नाम तप केम कह्यु ? एम शंका थाय तेनो परमार्थ तो प्रथम अभ्यंतर तपनु वर्णन कर्युं छे, त्या दर्शाव कर्यो छे तेनो लक्ष देवाथी समजाशे वली तेहेज आ स्थले पण दरशाव करुं छुं. तप कोनुं नाम छे ? कर्मने तपावे तेने तप कहीये, तो वाचना प्रमुख करवाथी महा अज्ञानरूप जे कर्म ते कर्मनो नाश थई जाय छे, नाश करवानी सन्मुखता थाय छे, वली अज्ञानपणे कर्म खपता नथी ज्यारे ज्ञान दशा थाय त्यारेज कर्म खपे छे. बाह्य तप साथे पण ज्ञान होय तो कर्म खपे छे, तो ज्ञानमांज वर्त्ते तेमां कर्म खपे एमा कंई नवाई जेवुं नथी, माटे जेम बने तेम सझाय ध्यानमां काल काढाम्वो, ए थकीज सर्वे वस्तुनी प्राप्ति थशे

हवे पाचमो ध्यान नामा तप, ते ध्यान कोने कहीये. मन, वचन, कायानी एकाग्रता जेमां थाय तेहने ध्यान कहीये तेमां धन, कुटुंब, वेपारादिक पुद्गलीक पदार्थमा एकाग्रता थाय तेहने अशुन्न ध्यान कहीए, ते तजवु जोईए ते तो सदाकाल जीवने थई रह्यु छे, ते ध्यान छोमीने आत्म तत्त्वने विषे एकाग्रता करी तेमां लीनपणे वरतवुं ते ध्यान तपमा गवेप्युं छे. ते ध्यान घणा प्रकारनुं छे, तेमा मुख्य–धर्म ध्यान शुक्ल ध्यान कह्यां छे, ने जे ध्यान ध्यावबुं ते अभ्यंतर तप छे एनुं स्वरुप माहारा करेला प्रश्नोत्तररत्नचितामणि नामा ग्रंथमा विस्तारे छे त्याथी जोई लेवु. अहीं आं सामान्य प्रकारे कह्यु छे

प्रथम धर्म ध्यान तेना चार पाया छे. पहेलो पायो आज्ञा विचय ते, परमात्मानी आज्ञानुं वीचारवुं, जेवी जेवी आज्ञा छे तेम वर्त्तवानुं ज्ञाववुं.

बीजो पायो अपाय विचय ते—आत्मानुं जे स्वरुप छे ते स्वरुप नथी वर्ततुं तेनुं कारण जे मिथ्यात्वादीक ते त्याग करवामां एकाग्रता करवी.

त्रीजो विपाक विचय ते—कर्मनुं स्वरूप विचारवुं कर्मथी मुकाववानुं विचारवुं.

चोथो संस्थान विचय ते—चौद राज लोकनुं स्वरूप विचारवुं. आ रीते धर्म ध्यान तेमज शुक्ल ध्यानना चार पाया नीचे प्रमाणे.

(१) प्रथक्त्व वितर्क सप्रविचार. (२) एकत्व वितर्क अप्र विचार. (३) सूक्ष्म क्रिया प्रतिपाती. (४) उछिन्न क्रिया निवृत्ति. ए शुक्ल ध्यानना चार पाया मधेथी प्रथमना बे पाया केवल ज्ञान पामतां अगाउ प्रगट थाय छे, ने बीजा छेल्ला बे पाया केवल ज्ञान पाम्या पछी सिद्धि जवाना लगभग वखत प्राप्त थाय छे. पहेला पायामां. भेद ज्ञान थाय छे. बीजा पायामां अभेद ज्ञान थाय छे, त्रीजा पायामां बादर जोग रुंधाय छे अने चोथा पायामां सूक्ष्म जोग रुंधाय छे. एवी रीते वर्त्तना थाय छे.

आजना कालमां शुक्ल ध्यान तो थाय एम नथी, कारण के पूर्वनुं ज्ञान होय तेने थाय छे, पण हालमां धर्म ध्यान बनी शके छे. वली समाधि प्रमुख छे ते पण ध्यानने लगतां साधनो छे. ते समाधि छे ते हठ समाधि छे तेथी वाह्यनां घणां कारणो रोकाय छे; ने विषयथी विमुख थया वीना समाधि बनती नथी. ए कामनो अभ्यास करती वखतथी खाटा, खारा, तीखा विषय रूप स्वादनुं रोकाण करवुं जोईए छे, स्त्रीना विषयनो पण त्याग करवो जोईए छे तथा वाह्यनां गप्पां विगेरे नकामी वातो कर-

वानी तेनो पण त्याग करवो जोईए छे  ए आदी बधा कारणो रोकीने तथा श्वासोश्वास रोकीने एक परमात्म पदमा लीन थयो ने तेमाज उपयोग रहे छे माटे ए समाधि उत्तम छे  वली सहज समाधि थाय, ते तो बहु  उत्तम  छे  केमके सेहेजे बीजा जड भावमा उपयोग रहेतो  नथी, ने आत्मभाव स्थिर थई जाय छे, ए समाधी तो धर्म ध्यानना पेटामाज छे  वली केटलाएक अक्षरोनुं ध्यान करवानी रीत छे, ते पण योगशास्त्रमा हेमचन्द्राचार्य महाराजे बतावी छे, ते उपरथी प्रश्नोत्तर रत्न चिन्तामणिमा लखेली छे, तेथी अहीया विस्तार कर्यो  नथी, पण मुक्तिनुं  निकट ॱॱधन छे, माटे आत्मार्थीए ध्याननो लक्ष करवो  बहुज उत्तम ॱॱ जेम पाघडीने छेडे तोरो कसबनो शोभे छे,  तेम सर्व  धर्म साधनमा ध्यान छे ते तोरा रूप छे  माटे  ते  साधननो अभ्यास करवानी घणी जरुर छे, पण ध्यानने  अटकावनार  उपाधीनां कारणो छे, ते कारणो ज्या सुधी छे त्या  सुधी सेहेज  समाधी बनशे नहीं, केमके एकाते विचार करवामा ते कारणो याद आवशे एटले जे ध्यानमा स्थिर थवु हशे तेमा थवाशे नहीं, माटे ध्यान करवानी इच्छावालाए जेम  बने तेम  बाह्यना  कारणोनो त्याग करवो जोईए, ने घणा माणसनो परिचय पण त्याग करी एकातमा मुख्यत्वे करीने रहेवुं  जोईए  त्यारे ए ध्यान  बनवुं सुगम पडे छे, अने विशुध्धता थया पछी तो एकातनी पण जरुर पडती नथी  जे पुरुषनुं चित्त जड भावथी खशी जाय छे,  ने पोताना स्वभावमा स्थिर थई जाय छे, तेवा पुरुष तो सदाकाल जगतनो तमाशो जुवे छे  आत्मानो ज्ञान गुण छे ते  जाणवानो छे, पण ज्या सुधी मिथ्यात्व भाव गयो नथी त्या सुधी राग द्वेष सहित जुवे छे, ने जे जे जुवे छे तेमा राग अथवा  द्वेष बेमांथी एक थया विना रहेतो नथी, पण मिथ्यात्वनी वासनाज खशी

गई ठे, ने जड अने चेतन बे पदार्थनुं यथार्थ ज्ञान थयुं ठे, अने वस्तु धर्मनुं ज्ञान थयुं ठे, तेना प्रभावे जे पदार्थनो जे स्वभाव ठे ते जाणे ठे, एटले पठी रागद्वेष थतो नथी; ए दशा पाम्या ठे तेउने तो एकांत अने वस्ती बधुंए सरखुं ठे. तेमने कंई ध्यान करवाने जूदुं स्थानक जोईतुं नथी. ए ध्यान तपनुं स्वरूप कह्युं.

ठहो काउसगनामा तप. ते कायाने वोसरावीने एक स्थानमां रहेवुं ने जेटली वारनी स्थिरता होय तेटली वार प्रभुनुं स्मरण करवुं ते.

ए मुजब ठ प्रकारनो अभ्यंतर तप कह्यो. बन्ने मलीने बारे प्रकारे तप कह्यो ठे ते तपनो लाभांतराय मटवाथी तपना आचारनी प्राप्ति थाय ठे, ते तपनो अंतराय शाथी थाय ठे ? ज्यारे तप करतां कंई शरीर नरम पडे त्यारे माणसना मनमां एवुं आवे के तप कर्यो तेथी मने पीडा थई हवे तप नहीं करुं; आवो भाव आववाथी जीव तपनुं अंतराय कर्म बांधे ठे तो फरी तप करवाना भाव थता नथी, पण खरुं कारण तो अशातावेदनी कर्म पूर्वे बांध्युं ठे ते वेदनी कर्म उदय आवे ठे, त्यारे शरीरे पीडा थाय ठे. जेणे असातावेदनी कर्म बांध्युं नथी ते तो घणो तप करे ठे, पण तेने रोग अथवा पीडा थती नथी, माटे तप कर्यो ठे ने कदापी शरीरे वेदनी थई, तो ज्ञानी पुरुष तो विचारे ठे के में कोई जीवने तप करतां अंतराय कर्यो हशे के मने वेदनी कर्मनो उदय तपस्यामां आव्यो, तेथी तपस्यानी वृद्धि बनशे नहीं; हवे तो हुं वेदनी कर्म खपाववाने तत्पर थयो ठुं, माटे वेदनी कर्म समभावे भोगववुं के फरी नवुं कर्म न बंधाय, एम समभावमां रहीने तपस्यामांथी चित्तने खसेडता नथी, तेवा पुरुषने तपनो अंतराय तुटे ठे, ने तप्पाचारनो लाभ थाय ठे.

अने जे एम भावे ठे के तप करवाथी शरीरे पीडा थई ते

आकरां कर्म बांधे छे तेना दाखला तरीके ( छपेली अर्थ दीपिकाना पाना ७१ मामा रुक्मा आर्या[1])नी कथा छे ते नीचे मुजब.–

ज्ञद्र आचार्यना गछमा पांचसो साधुजी अने बारसो साध्वि छे. तेमना गछमा एक कांजीनुं पाणी, बीजुं ज्ञातनुं उसामण, त्रीजु त्रण उकालानुं पाणी, ए त्रण जातनां पाणी सिवाय बीजुं कोई जातनुं पाणी वापरता नथी, एम करतां कर्म जोगे रुक्मा साध्वीनुं शरीर गलत कोढे बगड्युं, ते वारे बीजी साध्वीउए कह्युं के उक्कर उक्कर ! एवुं सांज्ञलीने रज्जा साध्वीए कह्यु के–ए शु मने कहोछो ? ए प्रासुक पाणीए करीनेज मारुं शरीर बगड्युं छे एवा साध्वीना वचन सांज्ञलीने बीजां साध्वीजीउना मनमां आव्युं जे आपणने पण प्रासुक पाणीथी गलत कोढ थशे एवी बीक लागी, तेथी विचारवा लाग्या जे आपणे पण प्रासुक पाणी पीवुं नही; पण तेमा एक साध्वीजीना मनमा आव्युं जे हमणा अथवा पछी मारुं शरीर शडीने कटका थई जाय तो पण मारे तो उष्ण जलज पीवुं उष्ण जल पीवाथी शरीरनो विनाश थाय नही, परंतु पूर्वज्ञव कृत अशुज्ञ कर्मना उदयथीज शरीरनो विनाश थाय छे, वा रोग थाय छे. एम विचार करी खेद करवा लाग्या के धिक्कार होजो ए पापणीने के जे न बोलवा योग्य वचन ए साध्वी बोली जेथी पोते कर्मबंध कर्या ? ने बीजाने कर्मबंधनी कारणीक थई, एम ज्ञावता शुद्ध अध्यवसायनी गाथा चिंतवता घाती कर्म नाश करीने केवल ज्ञान पाम्या, ने केवल ज्ञानना प्रज्ञावे सर्व साध्वीउना संदेह टाल्या. पछी रुक्मा आर्याने संदेह पूछ्यो जे एने शा थकी रोग थयो ते वारे केवली साध्वीए कह्यु के ए बाईए करोलीया सहित स्निग्ध आहार कर्यो तेना प्रज्ञावे रक्त पीत्तनो रोग थयो. वली सचित्त

---

१ साध्वी

पाणी लइने श्रावकनी दीकरीनुं मुख धोयुं तेथी शासन देवीए ए रक्षा साध्वी उपर क्रोधायमान थईने शीखामण आपवाने आहारनी मांहे कोरू रोग थाय तेवुं चुरण नाख्युं तेथी कोरू रोग थयो; पण प्रासुक पाणीथी कोरू रोग थयो नथी. आवुं केवल ज्ञानी साध्वीजीनुं वचन सांभलीने रक्षा साध्वीए कह्युं के, हे भगवती ! मुजने आलोयण आपो के शुद्ध थाउं, तेवारे केवलज्ञानी साध्वीए कह्युं के तुं शुद्ध थाय एवुं कोई प्रायश्चित नथी, कारण के तें क्रुर वचन कह्यां तेथी निकाचित कर्मनो बंध थयो छे, ते कर्मे करीने कुष्ट, भगंदर, जलोदर, स्वास, अतीसार, कंठमाल आदी महा दुःखो अनंता भव सुधी तारे भोगववां पडशे. एवी रीते कहीने बीजां साध्वीजीने आलोयणा आपी, तेथी सर्वे साध्वीउ शुद्ध थयां. आ साध्वी घणा भव भ्रमण करशे, ते जेम पाणीनुं दूषण काढ्युं तेमज तपनुं दूषण समजवुं. दुःख सुख सर्व कर्म आधीन छे, ने तेमज कर्म आधीनता विचारवाथी एक साध्वी केवल ज्ञान पाम्यां. एक साध्वीए कर्म विचार न करतां पाणीनुं दूषण चिंतव्युं ने निकाचित अशुभ कर्म उपार्जन कर्युं. माटे आ कथा सारी पेठे लक्षमां राखवी.तप छे ते तो कर्म खपावनार छे, तेने अज्ञानपणे अवले रस्ते जोडवाथी अवलुं थाय छे, माटे तेम जीवे करवुं नहीं. शरीरना निर्बलपणाथी तप न थाय तो भाववुं जे मारुं तप अंतराय कर्म क्यारे तुटे के हुं तप करुं, एवी भावनाथी अंतराय कर्म तुटशे, अने तपाचारनो लाभ थशे ए रीते बार प्रकारे तपाचार कह्यो छे.

वीर्याचारनो अंतराय तुटवाथी वीर्याचारनो लाभ थाय; तेथी बीजा चारे आचारमां वीर्य फोरायमान थाय, तेथी जे जे धर्म करणी करे ते उत्साह सहित तथा हर्ष सहित करे, वेठरुप नही थाय, अने जेने वीर्यना लाभनो अंतराय होय, ते वीर्य श-

क्ति होय तो पण धर्म करणीमां वीर्य फोरवी न शके धर्म करणी करती वखत कहेशे जे महारामां शक्ति नथी ने ससारी काम करवुं होय तेमा तत्पर थाय जेम के तमासो जोवो होय तो वे कलाक ऊन्नो रही तमासो जुवे, ने प्रतिक्रमण ऊन्ना ऊन्ना करवुं कह्युं छे, तेम करवामा गलीयो वलद थई वेठां वेठा करे के मारी शक्ति नथी, ने शास्त्रमा तो वेठा वेठा पडीक्कमणु करनारने आंबिलनुं प्रायश्चित कह्युं छे, ते जाणता छता पडिक्कमणुं वेठा वेठा करे छे गुरु कहे तो पण प्रमाद छोडे नही गुरुने वदन करवुं, प्रभुने वदन करवुं, खमासमण देवाना जेम कह्या छे तेम न देवा, देवा तो तेमा सत्तर जग्याए पुंजवानु पोताने अंगे कह्युं छे तेम पुंजवुं नही, पौषध सामायकमा ध्यान करवु ते न करे, पडिक्कमणुं जणाववु होय तो कहेशे जे वधुं माराथी जणावी नही शकाय, एवी रीते प्रमाद करे वली ज्ञान अभ्यास करवो होय तो प्रमाद करे अने जणे नही, वाचे नही, वा कोई सम्नलावे तो सान्नले नही ए सर्वे वीर्याचारना लाभना अतरायनो उदय छे वली एवी रीते प्रमाद करवाथी अथवा वीजो धर्मनो उद्यम करतो होय तेने रोकवाथी पण अतराय कर्म नवु बंधाय छे, तेमज देरासर, धर्मशाला, स्वामीवत्सल, विद्याशालाना काम करवा होय तेमा प्रमाद करे, अने संसारी काममा ततपर थाय, ए पण अंतरायनाज फल छे, ने जेने अतराय तुट्यो छे ते तो जे जे काममां आत्मानुं कल्याण थाय, आत्मगुण प्रगटे, तेमा वीर्य फोरवे, अने अति प्रसन्नताये जेम देव गुरुनो हुकम होय तेम धर्म करणी यथार्थ करे, वीर्य शक्ति गोपवे नही, जे जे काम करवा छे तेमा मननी वलीष्टतानी जरुर छे तपस्या करवी ए दुकर काम छे, केमके तपस्यामां शरीर थोडु के घणुं नरम पड्या विना रहेतु नथी, पण तपस्या करवामां वीर्य शक्ति फोरायमान थाय छे तो तेथी मन वलीष्ट

रहे छे. तेथी कष्ट उपर लक्ष जतुं नथी. सुखे तप थाय छे, माटे मननी बलीष्टता होय तो जे जे तप करवो होय ते ते करी शकाय छे. मन जो निर्बल होय ने शरीर बलवान होय तो पण ते मासास तपस्या करी शकतो नथी; पण ए सर्व क्यारे थाय छे के वीर्याचारनो लाभांतराय तुट्यो होय तोज धर्म कार्यमां वीर्य फोरवी शकाय छे. कदापी वीर्य शक्ति होय पण ते संसारी कामनां फोरवे छे, केमके धर्मकार्यना लाभनो अंतराय तुट्या विना धर्म कार्यमां वीर्य फोरवातुं नथी. हवे ए लाभांतराय सद्गुरुनी संगतथी तुटे छे, माटे प्रथम तो उत्तम पुरुषोनी संगत करवामां वीर्य फोरायमान करवुं जोईए, ते प्रथम तो घुणाक्षर न्याये थशे. जेम के केटलेक ठेकाणे लाकडामां अक्षर कोतरेला जोवामां आवे छे, पण ते मनुष्यना कोतरेला नथी, पण स्वाभाविक घुणा नामना जीवो लाकडामां उपजे छे, ने तेने योगे अक्षर जेवो आकार पडे छे, तेम सहेजे एवा पुरुषोनो भवितव्यताने योगे संजोग बने छे, ने कंई पण कारणसर जतां आवतां प्रथम तो बाह्यनी प्रीति थाय छे, पछी तेमनी अमृत जेवी वाणी सांभलतां जो मिथ्यात्व मार्ग आपे छे, तो विशेष प्रीति उत्पन्न थाय छे, अने एवी प्रीतिथी शीथील अंतराय होय तो ते तुटी जाय छे; वली संसारमां वीर्य फोरवतो होय त्यांथी प्रावृतमान थई जाय छे, ने धर्ममां वीर्य फोरवाय छे, तेम तेम अभ्यासथी कर्म पण तुटे छे. एवी रीते वीर्याचारनी वृद्धि थाय छे. ते प्रमाणे वीर्याचारनुं स्वरूप कह्युं. आ पांच आचारमां जे जे आचारनो लाभांतराय तुट्यो होय, ते आचारना लाभनी प्राप्ति थाय छे. संपूर्ण आचारनी प्राप्ति ज्यारे क्षायक भावे सर्व प्रकारे अंतराय कर्म तुटे त्यारे प्राप्त थाय छे, ने केवल ज्ञान पामे छे. तेनी पहेलां क्षयोपशम भावे अनुक्रमे बार गुण-

स्थानननी प्राप्ति थाय छे, अने तेमा अनुक्रमे आचारनी वृद्धि पामे छे.

दान अने शील ए बेनुं स्वरूप कह्युं. हवे तप ते तपनु स्वरुप तपाचारमा विस्तारे कह्युं छे, एटले अहींया फरी दर्शाव करतो नथी

चोथो ज्ञाव ते ज्ञाव पांच प्रकारे छे

उपशम ज्ञाव, क्षयोपशम ज्ञाव, क्षायक ज्ञाव, परिणामिक ज्ञाव, ऊदयीक ज्ञाव, आ पाच ज्ञाव छे, तेना ५३ ज्ञेद छे ते मारा करेला प्रश्नोतररत्नचितामणिमा पाना १४० मामा कहेला छे, त्याथी जोई लेवु वली ए ज्ञावप्रकरणनामा ग्रंथ छे तेमा गुणस्थानमा फोरवेला छे तेमा जोवा इहा तो नाम मात्र कर्मग्रथना आधारथी तथा अनुयोगद्वार सूत्रमा पण एनो विस्तार छे ते सर्वे उपर लक्ष राखी लखु छुं

प्रथम उपशम ज्ञाव ते मिथ्यात्व तथा अनंतानुबंधी कषायना दलीया उदय आवेलां खपावे, उदय नथी आव्या ते कर्मना दलीया उदीरणा करी उदय लावीने खपावे उदीरणाथी पण उदय आवे नहीं, एवा कर्मने अध्यवसायनी विशुद्धिथी उदय नहीं आवे एवा करी मुके छे हवे प्रथमना त्रणे ज्ञावमां कर्मनां दळीया उदय आवेला खपाववा, उदीरणा करी उदय लावी खपाववा, विशुद्धिथी उदय नही आववा योग्य करवा, उपसमाववा ए सर्वे वावतोनुं थवुं कृत्रिम नथी, पण स्वज्ञाविक आत्मानी विशुद्धताथी सेहेजे वनी जाय छे खपवा जोग्य वीगेरे वावतो आत्मानी विशुद्धि थवाथी थई जाय छे परमात्माना बनावेला नव तत्वनी श्रद्धा थईने जम ज्ञाव उपरथी मोह जेम जेम उतरे छे, तेम तेम आत्म स्वरूपनुं ज्ञान थाय छे, ने ते ज्ञानने प्रज्ञावे आत्माना सुखनुं आस्वादन थाय छे, अने ते सुखनुं आस्वादन थवाथी धन कुटुंव स्त्री शरीर उपरथी मारापणानो

समत्वभाव हठी जाय छे. शत्रु मित्र उपर पण समदृष्टी थई जाय छे. विषयथी उदास वृत्ति थाय छे, एवी विशुद्धि थवाथी मिथ्यात्व अनंतानुबंधीनो उपसम थाय छे, एटले अंतरंग शुद्धि थई जाय छे. आत्म विचार सिवाय बीजी वस्तु उपर राग थतो नथी. आत्मामां रमवुं ते सिवाय बीजुं सुख मनने रुचतुं नथी. मन अति निर्मल थई जाय छे, ते उपशम भावना समकितनो काल अंतर मुहूर्त्तनो छे. उपशम भावनुं चारित्र पण थाय छे, ते आठमाथी ते अगीआरमा गुणस्थानमां थाय छे. तेनो पण काल अंतर मुहूर्त्तनो छे, पछी उपशम चारित्र रहेतुं नथी. एटलीवार वीतराग दशाने पामे छे. राग द्वेष रहित थाय छे. एवा जे स्वभाविक विशुद्ध भाव ते उपशम भाव एवा पण शुद्ध भाव भव चक्रमां पांचवार थाय छे. एवा भावनी प्राप्ति लाभांतराय कर्मना क्षयोपशमथी थाय छे.

बीजो क्षयोपशम भाव ते पण जे जे कर्म उदय आव्यां छे ते खपावे छे, ने उदय नही आवेलां पण उदय आववा जेवां होय तेने उदीरणा करी उदयमां लावीने खपावे छे. जे उदीरणाथी पण उदय आवी शके नही, एवां छे तेने उपशमावे छे. एनुं नाम क्षयोपशम भाव. ए क्षयोपशम भाव चार कर्म (ज्ञानावरणी कर्म, दर्शनावरणी कर्म, मोहनी कर्म अने अंतराय कर्म )नो क्षयोपशम थवाथी आत्मानी विशुद्धि थाय छे; जेम वादलथी सूर्य ढंकायो होय छे ने जेम जेम वादल खसे छे, तेम तेम प्रकाश थतो जाय छे; ए रीते ज्ञानावरणी कर्मनां आवरण जेम जेम खसतां जाय छे, तेम तेम ज्ञाननो प्रकाश विशेष उपयोग रूप थतो जाय छे, तेमज दर्शनावरणी कर्मना आवरण खसवाथी सामान्य उपयोगरूप दर्शन तेनो उपयोग निर्मल थाय छे. मोहनी कर्मनी बे प्रकृति छे. दर्शन मोहनी अने चारित्र

मोहनी. तेमां ज्यारे दर्शन मोहनीनो क्षयोपशम थाय त्यारे समकीत जे शुद्ध यथार्थ श्रद्धा थाय छे, अने तेने आवरण लागवाथी विपरीत श्रद्धा थाय छे, ते आवरण जेम जेम खसे छे तेम तेम शुद्ध श्रद्धा थाय छे. वस्तुनो निर्णय पण यथार्थ थाय छे. वली चारित्र मोहनीनो क्षयोपशम थवाथी इन्द्रीउ रोकाती जाय छे, कषायनी परिणति शांत थाय छे, विरति प्रमुखना भाव जागे छे, जे जे वस्तु त्याग करे छे तेना उपरथी इच्छा खशी जाय छे, अंशे अंशे आत्म भावमां स्थीरता थाय छे, यावत् पाचमा गुणस्थानथी ते दशमा गुणस्थान सुधी क्षयोपशम भावनुं चारित्र छे. ए रीते मोहनी कर्मनो क्षयोपशम थाय छे, त्यारे अंशे अंशे वीर्यादी शक्ति आत्मानी जागे छे तेना प्रभावे आत्मानुं वीर्य आत्मधर्म प्रगट करवाना काममां फोरायमान थाय छे, मलीन क्षयोपशमथी शंसारी काममा शक्ति फोरवाय छे, ए रीते ज्यारे कर्मनो क्षयोपसम भाव थाय छे, ते क्षयोपसम शुद्ध थवाथीज आत्मानी परणती जागे छे अने ते जागवाथी जे जे धर्म करणी थाय छे ते भाव सहित थाय छे पछी भावना भेद घणा छे संजमना असंख्याता स्थानक छे तेमाथी जेटलो जेटलो क्षयोपसम भाव थाय तेटलां संजमस्थानक प्रगट थाय छे ए रीते अल्प मात्र क्षयोपशम भावनुं स्वरूप लख्युं

क्षायक भाव ते तो कर्मनो बंध, कर्मनो उदय, कर्मनी सत्ता ए त्रणे प्रकारे कर्मनो नाश करे छे, ए क्षायक भावनुं प्रथम समकित ज्यारे प्राप्त थाय छे, त्यारे अनंतानुबंधी क्रोध, मान, माया, लोभ, समकितमोहनी, मिश्रमोहनी, मिथ्यात्वमोहनी ए साते प्रकृतिनी सत्ता, उदे अने बंधमांथी नाश पामे छे, त्यारे क्षायक भावनुं समकीत प्रगट थाय छे ने ते आवेलुं जतुं नथी, पण तेवी वीशुद्धि तो उपशम भाव तथा क्षयोपशम भाव ए बन्ने भावथी विशुद्ध छे. त्या-

रबाद ज्यारे केवल ज्ञान पामवाना होय त्यारे ते पुरुष क्षपकश्रेणी एटले कर्म क्षपक करवानी पंक्ति, एक पठी बीजी प्रकृति खपावी अनुक्रमे चारे कर्मनो नाश करवो ते श्रेणी कोई चोथे, पांचमे, ठठे, सातमे, आठमे गुणस्थानकथी करे, ते बारमा गुणस्थानक सुधी क्षायक ज्ञावथी कर्म खपावता जाय ठे. क्षयोपशम ज्ञाव तो चलायमान थाय ठे ने पाठां कर्म बंधाय ठे. क्षायक ज्ञाव एटले जे कर्म खपाव्यां ते पाठां फरी बंधाय नहि. तेथी क्षायिक ज्ञावनी विशुद्धि ठे. माटे हरेक प्रकारे क्षायक ज्ञाव थाय तो कल्याण थाय. क्षायक ज्ञाव चार कर्मनो नाश करे ठे, त्यारे केवलज्ञान प्रगट थाय ठे. आठ कर्म नाश थाय ठे त्यारे कर्म रहित थईने सिद्धिने विषे बिराजमान थाय ठे. फरी संसारमां जेनुं आववुं थतुंज नथी, एवा शुद्ध पदने पामे ठे. ए त्रण प्रकारना ज्ञावमांथी जे कोई ज्ञाव प्रगट थाय ते ज्यारे ए ज्ञाव पामवानो लाज्ञांतराय तुट्यो होय त्यारे प्रगट थाय, अने जेने ए गुण प्रगट थवानो लाज्ञांतराय ठे त्यां सुधी ए ज्ञावमांनो ज्ञाव प्रगट थशे नहि. जो एमांनो कोई पण ज्ञाव आव्या विना जे जे धर्म करणी करशे ते द्रव्य क्रिया ठे अने ते द्रव्य क्रियाने प्रज्ञावे पुन्य बांधशे. संसारी सुख पामशे, पण मुक्तिरूप महेलमां रमवानुं तेनाथी नहि बने. ज्यारे क्षायक ज्ञाव आवशे त्यारेज मुक्तिरूप स्त्रीने आलींगन करशे. क्षयोपशम ज्ञाव क्षायिक ज्ञावना कारणरुप ठे तेथी पण कर्म नाश थशे ने उपसम ज्ञावथी पण कर्म क्षय थशे. ए बेमांथी एक पण ज्ञावनुं समकीत आववाथी मुक्ति तो निश्चे थशे ए ज्ञाव वालाने ठेवटे क्षायक ज्ञाव पण आववानो खरो, माटे ए ज्ञाव पण प्रगट थाय तो कल्याण थाय. ए त्रणे ज्ञावोमां समकीत पाम्या वीना पूर्व काले मेरु पर्वत जेटली होगा मुहपती धारण करी पण जीवने जे मुक्तिरूप कार्य करवुं हतुं ते थयुं नहि. वली ए

जाव विना शुज जावथी पण जीव नव ग्रैवेयक सुधी जाय छे ने पुद्गलीक सुख जोगवे छे. माटे पुद्गलीक सुख जोगववाना जाव आवे, पण मुक्ति सुख जोगववाना जाव आववा दुःकर छे. हवे मुक्ति सुख जोगववारूप जाव आव्यो के नहि तेनी नक्की परीक्षा तो नहि थई शके, पण आत्मीक जाव आववावालानां लक्षण शास्त्रमा वताव्या छे ते जोवाथी अनुमान थई शकशे.

आ त्रण जाव छे ते आत्माने निर्मल करनार छे हवे चोथो उदयिक जाव छे, ते कर्मना उदयथी प्राप्त थाय छे, तेना एकवीश जेद छे. ए जावथी अशुज कर्म वधाय छे. ने आत्मा मलीन थई मीथ्यात्व, अज्ञान, कषाय, लेश्या, अव्रत ए सर्व थाय छे ते जावनु इहा प्रयोजन नथी परिणामीक जाव छे, ते तो स्वजावीक छे, ते सुख के दुःख कंई करतो नथी. जावनी संपूर्ण प्राप्ति तेरमे गुणस्थाने आत्माने संपूर्ण लाजांतरायनो क्षय थयाथी थाय छे. ए प्राप्ति न थवाना कारण के, जीव पोताना अहंकारमां म्हाली आत्मीक गुण प्रगट करवानी इच्छा करतो नथी ने जे जीव आत्माना गुण प्राप्त करवाने सनमुख थया छे तेमने रोके छे, तेमनी निंदा हीलना करे छे एवा जीवो लाजांतराय कर्म बांधे छे. वली संसारमा धन वीगेरे कोई दातार कोईने आपतुं होय तेने आपवा न दे लेनारना दूषण छता अछता वतावीने तेने आपवामा अंतराय करे तेथी लाजांतराय कर्म उपार्जे जेम जीखारी मुठी जुवार सारु घेर घेर फरे छे, पण लाजांतरायथी मली शक्ती नथी, तेवीज रीते जे माणस एवा माणसने आपता अंतराय करे छे तेमने जीख मागता पण लाज मलशे नहि, माटे दरेक प्रकारे कोई पण जीव दुःखी होय तेने सुखी करवानी इच्छा करवी, ने जेटली शक्ति होय ते प्रमाणे तेने आपीने संतोष पमाम्वो. वली बीजा आपणा मेलापीने कहेवाथी तेनुं

दुःख नांगतु होय तो तेने कहीने तेनी पासे अपाववुं. वली सुपात्र पुरुष विषे दाननो उत्साह धरवो ने आपवुं, जेथी लान्न मलवो बहु सुलन्न थाय छे. एक राजा देखीए छीए ने एक रंक देखीए छीए ते फेर थवानुं कारण एटलुंज छे के तेणे पूर्व नवने विषे सुपात्रने देखीने दान दीधां छे तेथी मल्युं छे, ने जे जीव रंक फरे छे तेणे पाछले नव लान्नांतराय कर्म बांध्युं छे, तेथी लान्न मलतो नथी. केटलीएक वखत दातारना नाव, आपवाना थया छे, तो पण लेनारे लान्नांतराय कर्म बांध्युं छे, तेना प्रन्नावे लेवामां विघ्न आवे छे. ने लान्न मली शकतो नथी ए लान्नांतराय कर्मनुं फल छे; माटे जेम बने तेम लान्नांतराय तूटे एम करवुं, पण नवो बंधाय एम न करवुं.

३. हवे त्रीजा न्नोगांतरायनुं स्वरूप लखुं छुं.

न्नोगांतराय कर्म जीव अनादीनो बांधतो आव्यो छे तेना प्रन्नावे आत्माना स्वन्नावमां रहेवुं ते रूप न्नोग न्नोगवी शकतो नथी, ते न्नोगांतराय कर्म बारमे गुणस्थानना अंतेज क्षय थाय छे, त्यारे सदाकाल आत्मानाज न्नोगने न्नोगवे छे, तेना सर्वथा प्रकारे न्नोग अंतरायनो त्याग थई जाय छे. केमके विन्नाव वासना रहेती नथी. इहां कोईने शंका थशे जे केवलज्ञानी महाराज समोसरणमां बिराजमान थाय छे, देवकृत वीगेरे अतीशय प्राप्त थाय छे, आहार करे छे, सुंदर पवन वीगेरे आवे छे ए न्नोग छे के शुं छे? ते विषे जाणवुं जे तीर्थंकर महाराजे तीर्थंकर नाम कर्म बांध्युं छे ते पुन्यना प्रन्नावथी घणी वस्तुनी प्राप्ति थाय छे, पण तेमां न्नगवानने राग पण नथी ने द्वेष पण नथी. ज्ञानथी जाणे छे के सुन्नासुन्न कर्मनो उदय छे ते उदयना प्रन्नावथी थाय छे. ते मात्र कर्म न्नोगवी लेवा रूप छे, ए वस्तुमां अंशमात्र पण राग नथी. फक्त चार कर्म रह्यां छे ते न्नोगवीने निर्जराववा छे. माटे तिर्थं-

कर महाराजनो तथा केवलज्ञानी महाराजनो जे भोग छे ते भोग नहि जेवो छे अने छद्मस्थ जीवने जे जे पुद्गलना भोग करवा छे ते राग द्वेष सहित छे, तेमा तेमने कर्मबंधनु कारण रह्युं छे. तेथी आत्मीक भोग भोगवी शक्ता नथी आत्मीक भोग भोगववानो अंतराय कर्मनो उदय पण टाल्यो नथी, त्यांसुधी आत्मीक भोग भोगवी शक्ता नथी संसारी जीवने रात दीवस भोगनी इच्छाउ एटली वधी छे के जे जे पदार्थो जगतमां रूपी देखे छे वा सांभले छे तेनी इच्छा थाय छे पण ते पामवानुं अंतराय कर्म बाधेलुं छे एटले मली शक्ती नथी, अने जेने अंतराय कर्मनो क्षयोपसम थयो छे तेने ते मले छे, अने भोगवे छे. पण जो ते पर अतिराग धरे छे, ने अतिरागे भोगवे छे, तो तेथी पाछुं नवु भोगनु अंतराय कर्म बाधे छे, तेथी पाछा मलवामां हरकत आवशे केवी रीते? के भोगनी वस्तु हाजर छे पण कृपणता आववाथी ते वस्तु भोगवी नहि शके, अथवा तो शोक पमशे,तेने बदले भोगवी शके नहि, अथवा रोग थशे ने वैद ते वस्तु खावानी मना करशे ने भोगवी शकशे नहि, वा हरकोई प्रकारनुं कारण आवशे, जेथी इच्छा छे, वस्तुछे, पण भोगांतराय कर्मना उदयथी भोगवी शकशे नहि पण सम्यक् ज्ञानी पुरुषो छे ते पुरुषो तो एवा अंतराय आववाथी विचार करे छे के पूर्वे भोगांतराय कर्म बांध्युं छे ते उदय आव्यु छे, ते समभावे भोगवीश तो कर्म बंधाशे नहि एवी भावना प्रगट थइ छे तेना प्रभावे ते तो भोगांतराय कर्मनी निर्जरा करे छे, नवु बाधता नथी ने जेने एहवी दशा नथी जागी, ते जीवो बीचारा बीजाने भोग भोगवता जोई अनेक प्रकारना कर्म बाधे छे ए अज्ञानताना फल छे आ भवमां भोग मलता नथी, ने वली भोग भोगववाना विकल्प करी नवां कर्म बाधे छे तेने आवते भवे पण भोग मलशे नहि, एवा जी-

वनो मनुष्य जन्म पामेलो व्यर्थ जाय छे. वर्तमान भव अने आवतो भव बंने भव बगडे छे. विकल्प करवाथी, कोईनी अदेखाई करवाथी, कांई भोग तो मलतो नथी. ने फोकट मात्र कर्म बांधी दुर्गति जवानुं थाय छे, जो के रामचंद्रजी बलदेव, अने लक्ष्मण वासुदेव जेवाने पण भोगांतरायथी वनवास रहेवुं पड्युं, पांडव जेवाने पण वनवास रहेवुं पड्युं, ब्रह्मदत्त चक्रवर्त्तिने पण अंतराय हतो त्यांसुधी न्हासता फरवुं पड्युं;माटे कर्मबंध ते कोईने मुकतुं नथी. जे जे कर्म उदे आव्युं ते जीवने भोगव्या विना छुटको नथी. समभावे पण भोगववुं ने विकल्प करीने पण भोगववुं, तो समभावे भोगवाशे तो नवां कर्म नहि बंधाय. वली समभावना जोरथी शिथिल अंतराय कर्म हशे तो सेहेजे नष्ट थई जशे तो आ भवमां पण भोग मलशे, ने आवते भवे पण सेहेजे भोग मलशे. वली जेम जेम विशुद्धि थशे तेम तेम बाहिर जडना भोगनी इच्छा खससे. ने पोताना आत्म स्वभाविक भोगनी इच्छा थशे, ने तेना साधन पण करशे, ने संसार छोडी संजम लेशे तेमां पण तप संजम रुडी रीते पाली आत्मज्ञान मेलवी आत्माना ध्यानमां वर्त्ती धर्म शुकलध्यान पामशे, तेने पामीने सर्वथा अंतराय कर्म नाश करी केवलज्ञान पामशे. ते निज गुण भोगी थशे, त्यारे ज आत्मानुं कल्याण थशे. "उपभोगांतराय" ते जे जे वस्तु वारंवार भोगववामां आवे" ते उपभोग कहीए. घर, हाट, खाटला, पाटला, कोच, खुरशी, गादी, तकीआ, तलाई, पहेरवानां, ओढवानां कपडां सोना रुपाना आभूषण, हीरा, माणेक, मोती, स्त्री प्रमुख सर्वे वस्तुने पामवामां अंतराय कर्म बांध्युं होय, ते उदय आवे, त्यारे ए सर्व उपभोगना पदार्थ मली शके नहि. आ जीव अनादिना उपभोगांतराय बांध्या करे छे ने भोगव्या करे छे, ज्यारे जीव सुभ काम करे छे, सुद्ध अध्यवसाय थाय छे, त्यारे कांई अंतराय क-

र्मनो क्षयोपसम थाय छे, त्यारे तेटली वस्तु मले छे. धर्मनी वर्त्तना
अया शिवाय कर्म तुटतुं नथी वली ए अंतराय कर्म बंधाय छे शाथी?
तेनुं समजवुं के अधर्म प्रवर्तिथी, अधर्ममा पण मुख्य कोई जीव
उपभोगनी वस्तु कोईने आपतो होय, ते नही आपे एवी वातो
करवी, वा तेने समजाववो के नहि आप. वा आपनारनी हासी
मश्करी करवी, तेनी निंदा करवी, वा उपभोग करतो होय तेने
वीजु काई काम सोंपी ते काममा भंग करवो, एवा कारण क-
रवाथी, वा हिंसादीक काम करवाथी जे जे जीवना प्राण गया
तेने आ भव संबंधी उपभोगातराय थयो एवी रीतना काम क-
रवाथी उपभोगातराय कर्म जीव बाधे छे माटे प्रथम उपभो-
गातराय न बधाय एवी जीवने वर्त्तना करवी, अने पछी पूर्वेना
बाधेला क्षय थाय तेवो उद्यम करवो हवे ते उद्यम शो करवो
ते जणावुं छुं पूर्वे तीर्थकर महाराजे जे जे उद्यम पोते कर्यो छे
ते आगममा बताव्यो छे. जो बनी शके तो संजम लेवुं तेम बनी
न शके तो श्रावक धर्म अगीकार करवो, ते नहि बने तो सम्य-
क्त्व अगीकार करवु, ते नहिं बने तो मार्गानुसारीपणुं आरंभवुं,
जेटलो धर्म अगीकार करशे ते प्रमाणे तेना कर्म तुटशे उपभो-
ग वे प्रकारना छे १ पुद्गलीक अने २ आत्मिक ए बनेना अंतराय
छे, तेमा पुद्गलीक मलवा तो सेहेला छे पण आत्मीक मलवा
दुःकर छे ने तेना साधन पण मलवा दुःकर छे अने ज्यां सुधी
संसारी उपभोगनी लालसा छे त्या सुधी आत्मीक भोग म-
लवानो नथी माटे आत्मीक धर्म शु छे ते जाणीने ज्यारे
ससारी उपभोगनी इछा उठशे, त्यारे आत्मीक उपभोगनी
इछा थशे, अने प्रगट करवानुं मन थशे एनो उद्यम तप,
संजम आदिकनो एवो छे के इछा तो आत्मीक भोगनी
छे, पण ससारमा रह्या छो, त्या सुधी पुद्गलीक अने

आत्मीक बंने उपभोग मलशे, अने पुद्गलीक भोगनी इछाथी वे नहि मले, पुद्गलीकज मलशे, अने आत्मीक उपभोगनो अंतराय थशे, पोताना आत्मीक सुख छोडी जड सुखनी इछा करे एज विपरीत दशा छे; वली संसारीक उपभोग बांधीने जेम जेम आनंदीत थाय तेम तेम आत्मीक अने पुद्गलीक बंने उपभोगनो अंतराय थाय, माटे संसारी उपभोगमां आत्मार्थी जीवो आनंदीत थता नथी, ने ते भोगनी इछा पण करता नथी. पुद्गलीक सुखने तो ज्यारथी जीव समकित पामे छे त्यारथी सुखरूप मानता नथी. पूर्वनी पुण्यप्रकर्तीथी मळ्युं छे ते समभावे भोगवी ले छे, पण तेमां राग धरता नथी एवी रीते तीर्थंकर महाराज विगेरे वर्त्तीने आत्मार्थीने वर्त्तवानी आज्ञा फरमावी गया छे, ते प्रमाणे वर्त्तवुं के जेथी प्रथम उपभोगांतरायनो क्षयोपशम थाय, ने पछी वधारे विशुद्धिथी क्षय थाय ने केवलज्ञानादीक पोतानी आत्मीक रिद्धि प्रगट थाय, तेनाज उपभोग सदा अवस्थित थाय. उपभोगांतराय कर्म सत्ता बंध उदयथी क्षय थाय, त्यारे सहज स्वभावीक उपभोग थाय. जेनुं वर्णन करवा कोई शक्तिमान थाय नहीं. पांचमुं वीर्यांतराय कर्म तेना प्रभावथी जीवनी अनंती वीर्य शक्ति छे. ते अवराई गई छे तेथी जीव आत्म वीर्य, फोरवी शक्तो नथी. वीर्यांतरायना क्षयोपशमथी बाल वीर्य अने बालपंडीत वीर्य ए बे वीर्य प्रगटे छे. तेमां बाल वीर्य प्रगटे छे तेना प्रभावे संसारमां प्रवर्तवानी शक्ति आवे छे, संसारी काम करी शके छे. ए वीर्यनो क्षयोपशम पण विचित्र प्रकारे छे. जेमके कोई लडवामां वीर्य फोरवी शके छे, कोई वेपारमां वीर्य फोरवी शके छे, कोई विषयमां वीर्य फोरवी शके छे. कोई नाचमां फोरवी शके छे, कोई गावामां फोरवी शके छे, कोई लखवामां फोरवी शके छे, एवा अनेक प्रकारनी जुदी जुदी वीर्य शक्ति

प्रगटे छे तेमां जेने जे बाबतमां वधारे आवरण छे ते माणस ते बाबतमा वीर्य फोरवी शकतो नथी जे काम संबंधी आवरण टळ्यां छे, ते काममां शक्ति फोरवी शके छे. हवे तेमां पण केटलाएक जीवो मद करे छे के मारा जेवो कोण बलवान छे. दश माणसने हु एकलो मारी नाखु एवो मद करीने वीर्यांतराय कर्म पाछुं बांधे छे, ते जीवने फरी एटली पण वीर्य शक्ति नहि प्रगटे वळी जे जे कळामा जेनी शक्ति चाले छे ते ते बाबतनो मद अज्ञानी जीव करे छे, तेना प्रभावथी वीर्यांतराय कर्म बंधाय छे, अने एवी रीते अनादिकालथी जीव वीर्यांतराय कर्म बांध्याज करे छे ने ते कर्म भोगव्या करे छे, पण ज्यारे जीवनी भवस्थिति परिपाक थाय छे त्यारे मोक्ष पामवानो नजीक वखत आवे छे, त्यारे सारी नीतिमा वर्तवा सत्संग सद्गुरु प्रमुखनो जोग थाय छे ने धर्म साम्भलवानी जोगवाई मळे छे. ते साम्भलवामां जीव वीर्य फोरवे छे अने ते ज्ञान ग्रहण करे छे वीतरागना ज्ञान उपर प्रीति जागे छे अने धर्म सन्मुख थाय छे संसारमा वीर्य फोरववानी बुद्धि ओछी थाय छे त्यारे धर्ममा बुद्धि फोरवाय छे अने सम्यक् गुण तथा श्रावकपणाना गुण प्रगट करवा उजमाळ थाय छे त्यारे वीर्यनो क्षयोपशम थाय छे सम्यक्पणामा तथा श्रावकपणामा जे जे छांडवा जोग छे ते ते छांडे छे, आदरवा जोग जे आत्म धर्म ते आदरवामा वीर्य फोरायमान थाय छे. श्रावकना बार व्रत श्रावकनी अगीयार पडीमा अंगीकार करे छे, ते पाळवामा वीर्य फोरवे छे, तपस्या प्रमुखमा पण वीर्य फोरवे छे अने क्षयोपशमथी जेटलुं वीर्य प्रगट्यु छे तेने अनुसारे धर्ममा वीर्य फोरवे छे, पण संजम पाळवा जेवो वीर्यनो क्षयोपशम नथी थयो त्या सुधी संजम लेइ शकतो नथी, ने संजममां वीर्य फोरवी शकतो नथी; अने संसारमा रह्यो छे तेथी संसारमा वीर्य फोरवे छे माटे तेने

बाल पंमीत वीर्य कहीए. पंमीत वीर्य ज्यारे प्रगट थाय ढे त्यारे तो पुद्गलीक सर्वे वस्तु उपरथी मोह ऊतरी जाय ढे अने सर्वथा संसारथी नीकली एक आत्मगुण प्रगट करवामांज वीर्य फोरवे ढे अने निजस्वन्नावीक सुखमांज वर्तवानो कामी बनी सर्वथा प्रकारे वीर्यांतराय कर्मनो क्षय करी केवलज्ञान केवल दर्शन प्रगट करे ढे, तेमने वीर्यांतराय कर्म सत्ता, बंध, ऊदये, कोई रीते पण रहेतुं नथी. निज स्वन्नावमांज अनंत वीर्य गुण ढे ते प्रगट थाय ढे. न्नगवंते एवी रीते सर्वथा वीर्यांतराय कर्मनो क्षय करी आत्मीक गुण प्रगट कर्या अने मारो आत्मा तो वीर्यांतराय सहीतज रह्यो; माटे हे चेतन! जेम न्नगवंते वीर्यांतराय क्षय कर्युं तेमज क्षय करवाने तेऊए बताव्युं ढे माटे ते प्रमाणे हुं वर्तुं, एवी न्नावना लावीने आत्मगुण प्रगट करवानां कारणो (ज्ञान, दर्शन, चारित्र ने तप ) ऊत्साह सहित मेलववां. ऊत्साहे धर्मकरणी सफल थाय ढे अने वीर्यनां आवरण खपे ढे. वीर्य फोरायमान थाय ढे. जेम मुनि महाराज ऊत्साहे तप संजमादीक पाले ढे, तो तेना प्रन्नावे अठावीश लब्धी ऊत्पन्न थाय ढे, ते वीर्यांतरायना क्षयोपशमथी थाय ढे, एम योगशास्त्रमां हेमचंद्र आचार्य कहे ढे तेमज प्रवचन सारोद्धारना बालावबोधमां पाने ५३७ में अठावीश लब्धीऊ वीर्यना क्षयोपशमथी थायढे ते बतावी ढे तेम आ ग्रंथमां नीचे बतावुं ढुं.

प्रथम आमर्षौषधि लब्धीः लब्धी शब्दे शक्ति जाणवी. आ लब्धी जे मुनिने प्रगट थई ढे, तेना प्रन्नावे ते मुनि हाथनो फरस रोगीने करे के रोग नाश पामे, सर्वे रोगनी शांति थाय.

बीजी विप्रौषधीनामा लब्धी. तेना प्रन्नावे मुनिमहाराजनी विष्टाथी ने मूत्रथी पण रोगीना रोग शांत पामे ढे. आ तपना प्रन्नावनी शक्ति ढे.

त्रीजी खेलौषधिनामा लब्धी तेना प्रभावे मुनिनुं श्लेष्म ते थकी रोगीना रोग जाय

चोथी जलौषधिनामा लब्धी ते जे मुनिने उत्पन्न थई छे तेना प्रभावे दातनो, काननो, नासिकानो, नेत्रनो, जीभनो अने शरीरनो जे मेल ते मेल सुगंधीदार होय अने ते मेलथी रोगीना रोग जाय

पांचमी सर्वौषधीनामा लब्धी. जे लब्धीने प्रभावे लब्धीवंतना संग थएल नदीना पाणीथी सर्व रोग शात थाय. लब्धिवंतने फरसेलो पवन जेहने फरसे तेना पण रोग जाय. वली ए पवनथी विषे करी मुर्छित थएला प्राणीनुं विष जाय तथा विष संयुक्त अन्न होय ते पण निर्विष थाय. वली लब्धीवंतना वचन साभलवाथी वा तेनुं दरशन करवाथी पण रोग विष जाय ने नीरोगी थाय आवी प्रबल आत्मानी वीर्य शक्ति तपस्याथी थाय छे.

छठी सन्निभश्रोत लब्धी. ते लब्धीवालाने पाचे इंद्रीउना जुदा जुदा विषय छे ते छता लब्धीना प्रभावथी एक इंद्रिये करी पाचे इंद्रियोना विषय ग्रहण करे एटले जाणी शके जेमके आखो जोवानुं काम करे छे पण बीजी चार इद्रियोनुं काम करी शकती नथी, पण लब्धीवंतनी आखो पाचे इंद्रीउनुं काम करी शके छे. ते रीते बधी इंद्रियोए समजवुं वली चक्रवर्त्तिनी सेनाना कोलाहलना शब्द थई रह्या होय तेमा पण एकी वखत जे जे जातनो शब्द थतो होय ते सरवेने जुदा जुदा जाणी शके

सातमी अवधीज्ञान लब्धी तेना प्रभावथी इंद्रीयोना बल सिवाय रूपी पदार्थनु ज्ञान आत्माथी करी शके छे. नजरे जोवानी जरुर पडती नथी

आठमी ऋजुमती मन पर्यव लब्धी ते उपजवाथी अढी द्वी-

मां न्यून संज्ञी पंचेंद्रीना मनना चिंतवेला भावने सामान्य जाणे. पण घट चिंतवेलाना द्रव्य खेत्र, काल, भावथी विशेषे न जाणे.

नवमी विपुलमती मनःपर्यव ज्ञान लब्धी. ते लब्धीथी अढी द्वीपना संज्ञीना मनना चिंतवेला द्रव्य क्षेत्र काल भाव सरवे जाणे ने तद्भव मुक्ति पामे.

दशमी चारणनामा लब्धी. ते वीद्याचारण तथा जंघाचारण लब्धी; ए लब्धीने प्रभावे आकाश मार्गे जइ शके. तेमां विद्याचारण लब्धी विद्याना बलथी प्राप्त थाय छे ते लब्धीवंतने धीरे धीरे लब्धी वधे छे, तेथी पोताना स्थानथी प्रथम उतपाते मनुष्योत्तर पर्वते जाय छे, ने बीजे उतपाते आठमा नंदीश्वर द्वीपे जाय छे, अने त्यांथी पाछा आवतां एकज उतपाते पोताना स्थानके आवे छे; अने जंघाचारण लब्धी तपस्या तथा शुद्ध चारित्र पालवाथी उत्पन्न थाय छे. ए लब्धीवंतने प्रथम शक्ति वधे छे. पछी आवतां घटे छे. पहेले उतपाते तेरमा रुचकद्वीपे जाय छे. आवतां शक्ति घटे छे तेथी आवतां पहेले उतपाते नंदीश्वरद्वीपे जाय छे. तीहां वीसामो लइ बीजा उतपाते पोताना स्थानके जाय छे, आ लब्धीनो महिमा छे. वली ए लब्धिवाला मुनियो प्रतिमा वांदे छे ते बाबत भगवती सूत्रमां छे.

अगीयारमी आसीविष लब्धी. ते लब्धीना प्रभावे श्राप दे ते तेम थई शके.

बारमी केवलज्ञान लब्धी. जेथी सर्वे भाव जाणे.

तेरमी गणधर लब्धी. जेथी तीर्थंकर महाराज त्रीपदी कहे एटले द्वादशांगीनुं ज्ञान थई जाय अने भगवाननी पाटे तेज पटोधर थाय.

चउदमी पूर्वधर लब्धि. जेथी पूर्वधर पदवी पामे.

पंदरमी तीर्थंकर लब्धी. जेथी तीर्थंकर पदवी पामे.

सोलमी चक्रवर्त्तीनी लब्धी. जेथी छ खंडनो स्वामी थाय

सत्तरमी बलदेवनी लब्धी.

अढारमी वासुदेवनी लब्धी जेथी त्रण खंडनुं राज करे.

ओगणीशमी खीराश्रव लब्धी ते खीराश्रव लब्धीना प्रभावे वचन बोले ते दूध जेवुं लागे, तथा मध्वाश्रव लब्धी तेना प्रभावे ए पुरुषनुं वचन साकर जेवुं मीठुं लागे

वीशमी कोष्ट बुद्धि लब्धी तेना प्रभावे जे जे परोपदेशे सूत्र अर्थ धार्या छे तेनु विसरी जवुं थाय नहि, वगर संभार्ये पण याद रहे ए लब्धीनो प्रभाव छे.

एकवीशमी पदानुसारीणी लब्धी ए लब्धीना प्रभावथी आखा श्लोकनुं एक पद आगलुं वा पाछलुं जाणवामां आवे तो बीजा त्रणे पदनुं ज्ञान थाय जेम अभय कुमार प्रधान भगवानने वांदीने आवता हता ने विद्याधरआकाशे चडतो पडतो हतो, त्यारे अभयकुमारे पूछ्युं के केम आकाशे उडातुं नथी? त्यारे कह्युं जे विद्यानु एक पद जतु रह्युं छे पछी अभयकुमारे कह्युं जे विद्यानो पाठ बोलो ते पाठ बोल्यो एटले खुटतुं पद पोते पूर्ण करी आप्युं पोते प्रथम भणेला पण नहि हता, तो पण पोते पदानुसारीणी लब्धीना प्रभावथी पद पूर्ण कर्युं अने विद्याधर आकाश मार्गे चाल्यो गयो आ लब्धीनो प्रभाव जाणवो

बावीशमी बीजबुद्धि नामा लब्धी ते बुद्धिना प्रभावथी जेम बीज एक वावे छे ने घणा दाणा उत्पन्न थाय छे, तेमज ज्ञानावरणी कर्मना क्षयोपशमथी एक अर्थरूप बीजने सांभलवे घणा अर्थनु ज्ञान थाय जेम गणधर महाराजने भगवाने त्रीपदी कही एटले उतपात व्यय-ध्रुव ए त्रण पद सांभली आखी द्वादशागीनुं ज्ञान थयुं तेम ए लब्धीथी ज्ञान थाय. पदानुसारीणीमां एक पद जाणवाथी बीजा पदोनुं ज्ञान थाय अने बीज बुद्धिवा-

लाने एक पदार्थनुं ज्ञान थाय तो तेथी घणा पदार्थनुं ज्ञान थाय आ फेर छे.

तेवीशमी तेजोलेश्या लब्धी. तेना प्रज्ञावथी कोई जीव उपर खेद आवे ने तेजुलेश्या मुके तो सामा जीवने वालीने ज्ञस्म करे.

चोवीशमी आहारक लब्धी. तेना प्रज्ञावे आहारक शरीर मुंमा हाथ प्रमाणे करी श्रीसीमंधर स्वामी पासे वा वीचरता तीर्थंकर पासे पूछवा मोकले ने ते जवाव एटली शिघ्रताथी आपे के वाख्यान करता होय तेमां संशय पमे तो ते ज्ञगवान्ने पूछी आवे ने तेनी अंदर कहेवामां आवे ए आहारक लब्धीनो प्रज्ञाव छे.

पचीशमी शीतलेश्यानामा लब्धी. ए लब्धीना प्रज्ञावथी कोईये तेजोलेश्या मुकी छे तेना उपर शीतलेश्या मुकी शीतल करे. ने तेजोलेश्या हणाइ जाय.

छवीशमी वैक्रिय लब्धी. तेना प्रज्ञावे पोतानुं शरीर नानुं मोटुं जेवुं करवुं होय तेवुं करी शके. देवताने ज्ञव प्रत्ययी होय अने मुनिने तप चारित्रना प्रज्ञावथी थाय छे.

सत्तावीशमी अक्षीण माहानसी लब्धी. तेना प्रज्ञावे अल्प वस्तु होय, जेमां एक माणस जमी शके एटलो पदार्थ होय तेमां हजारो माणस जमी शके. जेम गौतम स्वामी महाराज एक पमघो खीरनो लाव्या तेमां पंदरसें तापसने जमाम्या ए लब्धीनो प्रज्ञाव.

अछावीशमी पुलाक लब्धी. तेना प्रज्ञावे कोई संघनुं कार्य होय तो चक्रवर्तीने पण चुरण करी नाखे.

आ मुख्यपणे अछावीश लब्धी कही छे. वली बीजी पण तपना प्रज्ञावथी लब्धीउ थाय छे. प्रकृष्ट ज्ञानावरणी वीर्यांतरायना क्षयोपशमे करी समस्त श्रुत समुह एक अंतर मुहूर्त्तमां अवगाहे तेने विषे जेनुं मन होय ते मनोवल लब्धी कहीये. तेमज

अंतरमुहूर्त्तमां सर्व श्रुतनो विचार करवानी जे शक्ति तेणे करी जे-सहित होय, वली पद वचन अलंकार सहित वचनने उंचे स्वरे नीरंतर बोलता थका पण तेनो घाटो रही जाय नहिं. ते वचन बल लब्धी, तेमज वीर्यांतरायना क्षयोपशमथी प्रगटपणे थयुं जे बल तेथी बाहुबल वरस दीवस सुधी काउस्सग्गे रह्या तो पण शरीर थाक्युं नहिं, तेम ए लब्धीवंत कायबल लब्धीना प्रभावथी थाके नहिं, ते कायबललब्धी. तेमज घणा कर्मोना क्षयोपशमथी प्रज्ञानो प्रकर्प होय जेथी चउद पूर्व भण्या विना पण कठण विचारोने विषे निपुण बुद्धि होय, अने तेने यथार्थ विचार थाय. ए आदे घणा प्रकारनी लब्धीओ योग शास्त्रमा हेमचंद्र आचार्य महाराजे दर्शावी छे हालमा इंग्लांड, अमेरिका तथा जरमनीमां घणा युरोपियनो योग शास्त्र वांचे छे ने हेमचंद्र आचार्यने सर्वज्ञनु बिरुद आपे छे ए पण ज्ञाननो क्षयोपशम छे वली हेमचंद्र आचार्य पण एक वखत कुमारपाल राजर्षिनी सभामा त्रण बाजठ मुकी तेना उपर वेशी देशना देता हता. राजानुं आववुं थयुं त्यारे बाजठ काढी नाखी अधर बेशीने धर्म देशना दीधी. आ पण योग साधननी शक्ति छे एवी अनेक प्रकारनी शक्तिओ वीर्यांतरायना क्षयोपशमथी थाय छे, ने ते शक्तिओ आत्माना हितना काममा वापरे. उपगार अर्थे वा शासन उन्नत्ति अर्थे फोरवे छे. पूर्ण वीर्यांतरायनो क्षय थाय छे, त्यारे पूर्ण वीर्य प्रगटे छे, तेने केवल ज्ञान प्रगटे छे. जेथी सर्व लोकना भाव एक समये जाणे छे. अतीत, अनागत अने वर्त्तमानना भाव पण जाणे छे आवी आत्मानी पूर्ण शक्ति जागे छे, माटे हरेक प्रकारे वीर्यांतरायनो क्षयोपशम वा क्षय थाय एवो उद्यम करवो. वीर्यनी रीत एवी छे के अभ्यास करता करतां वीर्य फोरायमान थाय छे, माटे वीर्य फोरववानो हमेश अभ्यास करवो. एक माणसने त्या

गाय विआइ. तेनुं वाछरडुं तेणे रोज एक वखत माल उपर लइने चडवा मांड्युं. एम रोज अभ्यास करवाथी बलद थयो तो ते पण उपाडीने चडवानी शक्ति थई तेम अभ्यास करवाथी शक्ति वधे छे. तप, संयम अने ज्ञाननो अभ्यास हमेश करवो, के वीर्यांतरायनो क्षयोपशम थशे, ने वीर्य वृद्धि पामशे अने जे जीव संसारमां वीर्य फोरवशे, ने धर्मना काममां प्रमाद करशे, तो वीर्यांतराय कर्म नवुं बांधशे ने आ भवमां वीर्य छे तेटलुं पण आवता भवमां मली शकशे नहि, अने अनादि कालनुं वीर्यांतराय बांधेलुं छे तेथीज आत्माना गुण प्रगट थता नथी, ते मोटो दोष छे. ए रीते पांचे प्रकारनां अंतराय कर्म भगवंते क्षय करी पोताना आत्मगुण प्रगट कर्या छे, ने आपणा जीवे तेवो उद्यम न कर्यो तेथी अनादिनो संसारमां रोलाय छे, अने जन्म मरणनां दुःख भोगवे छे ते दुःखथी मुकावा सारु भगवंतनी आज्ञा प्रमाणे वर्त्तवुं के जेथी आत्माना गुण प्रगट थाय. ए रीते पांच दूषण कह्यां.

छठु हास्यनामा दूषण तेथी रहित भगवान छे अने संसारी जीव ए दूषणे सहित छे. ए सेववाथी अनादिकालनो जीव संसारमां रोलाय छे, अने ज्यां सुधी हास्यथी मुकाशे नहि त्यां सुधी आत्मानुं काम थवानुं नथी. हास्य थकी संसारमां पण केटलां दुःख छे ते सघला माणस जाणे छे, तो पण जागृत करवा लखु छुं. केटली एक वखत हास्य करवाथी पोतानां माचां दुःखे छे. हास्यने रोकवा मागे छे तो रोकी शकातुं नथी. वली जेनुं हांसुं करीए ते वखते मुखे न बोले पण अंतरमां तेने केटलुं दुःख थाय छे! ते जो माणस पोते विचार करे के मारी हांसी करे छे, ते वखत मने अंतरंगमां केटलुं दुःख थाय छे? तेवी रीते सामा धणीने पण दुःख थाय माटे परने दुःख देवुं तेथी वधारे बुराइ शी

छे? वली ते माणस जोरावर होय तो लमाई भत्री थाय अने मारामारी वा गालागाली थाय तेथी नवुं वेर बंधाय आ दुःख प्रत्यक्ष छे. वली जेटली वार हास्यमा प्रवर्त्तिये एटली वार सात आठ कर्मनो बंध थाय, ते उदय आवे त्यारे तेनां दुःख भोगववां पमे छे जेमके कुमारपाल राजानी बेहेन तेमना भर्तारनी साथे सोकटा बाजी रमता हता तेमा सोकटी मारतां एटलुं बोलवुं थयुं के कुमारपालना मुमीआने मार, तेथी कुमारपालनी बेहेनने रीस चढी, ते रीसाइ कुमारपालने त्यां आवी, ने कुमारपालने हकीकत कही ते उपरथी कुमारपाल राजाने रीस चढी के महारा गुरुजीने आवु कह्युं, माटे जे जीभे बोल्यो छे ते जीभ कढावुं त्यारे छोरुं. एम विचारी युद्ध कर्यु ने बनेवीने हराव्या छेवट प्रधानोए समजाव्या त्यारे जीभ काढवी रहेवा देई जामानी पाछल जीभनो आकार काढवो ठराव्यो ए विना पण हास्यथी केटलुंएक नुकशान छे हास्य करवानी टेववाला लोकमां मश्करा कहेवाय छे वली आत्म स्वरूपनो विचार करतां ए आत्म गुणथी विपरीत प्रवृत्ति छे ए प्रवृत्तिमा वर्तवाथी आत्मा मलीन थाय छे वली आत्मा निर्मल करवाना कारण व्रतादीक तेमा अनर्थ दंम व्रतना दूषण आवे माटे जेम बने तेम आत्मा निर्मल करवावालाने हासीथी मुक्त रहेवुं, के जेथी आत्मा निर्मल थवानो उद्यम थाय सर्व हास्य मोहनीनो क्षय भगवाने कर्यो छे ते दशाने पामीए एवो उद्यम करवो

६ रतिनामा दूषण, ते दरेक पुद्गलीक पदार्थने विषे जेने अनुकुल मले तेमा राजी थवुं, प्रतिकुल मले तेमां दीलगीर थवुं ए अनादिनो जीवने जम्मनी सगतथी अभ्यास छे, तेथी जीव तेवी रीते वर्ते छे, अने कर्मबंध करे छे, अने तेज कर्मबंधथी अनादिनो जीव जन्म मरणना दुःख भोगवे छे. जे जे पदार्थने

जीव अनुकुल माने छे तेज अज्ञानता छे, कारण जे जे जड प-
दार्थ छे ते विनाशी छे, आत्मा अविनाशी छे, ते आत्मा अने जड,
बंने भीन्न पदार्थ थया तो भीन्न पदार्थने पोताना मानवा
एज मूढता छे. वली जे वस्तु जोई रति करे छे, ते वस्तु सदा-
काल रहेवी नथी. केटलाएक खावाना पदार्थ छे ते खावामां रति
करे छे, पण तेज पदार्थथी पुद्गलने उपाधी थाय छे, ने रोग थाय
छे, ने कर्मबंध थाय ते तो जूदो. एवीज रीते आभूषण पहेरीने
खुशी थाय छे, पण शरीरने भार लागे छे तेनो विचार नथी क-
रता, ए अज्ञानतानां फल छे. कुटुंबना संजोगथी राजी थाय छे,
पण एज माणसनी इछा प्रमाणे नहि वर्ताय तो शत्रुपणुं करशे
तो एवा अनित्य स्नेहथी राजी थवुं ते मूढता छे, तेमज धन छे
ते जोई राजी थाय छे, पण ए धन केटला काल थीर रहेशे तेनो
लक्ष करशे तो रति नहि थाय, केमके धन आपणुं केटली वखत
गयुं ने आव्युं. वली कदापी कोई माणसनुं हाल गएलुं न होय
तो बीजा केटलाएकनुं गएलुं जोवामां आवे छे, ते जोईए छीए.
माटे एना स्वभाव उपर लक्ष देवो जोईए. अथिर पदार्थ उपर
राजी थशे ने ते ज्यारे नष्ट थई जशे त्यारे दीलगीर थवुंज पडशे;
ने जे माणस धनना स्वभाव उपर लक्ष देशे ते राजी नहीं थाय,
अने तेथी ज्यारे जशे त्यारे तेने दीलगीर थवुं नहीं पडशे. धनने
आपणे मुकीने जईशुं, वा धन आपणने मुकीने जशे आ धननो
स्वभाव छे, माटे जे ज्ञानी पुरुषो छे ते धननो त्याग करी संजम
ले छे. संजम लइने धन कुटुंबादीक पदार्थनो त्याग करे छे; वली
शरीरमां रहे छे पण शरीरने मारुं जाणता नथी. तेथी शरीरना
सुख दुःखमां रति अरति नथी करता, तेमज वस्त्रादीक धर्म उपगर-
ण पुस्तकादीमां पण रति अरति न धरतां, एक पोताना आत्म
तत्त्वमां रमी, रति मोहनीनो नाश करी पोताना आत्माना गुण

प्रगट करे छे, अने अनुक्रमे सिद्ध सुखने जोगवे छे, तेमज आत्मार्थीए रति मोहनीनो नाश करवो एज कल्याणकारी छे.

७ अरति मोहनी, ते पण रति प्रमाणे छे, माटे आ जगोए जूदो विस्तार नथी लखतो. जेम रति सारु तेमज अरति सारु पण एमज विचार करी कोई रीते पण अरति न करवी जे जे अरतिना कारण मले छे ते ते जड पदार्थ छे, अने पूर्व जवे विषय कषाय तथा अरतिमा वर्तवाथीज कर्म बांधेला छे, तेथी अरतिनां कारण उत्पन्न थया छे. हवे ज्ञानी पुरुषोए तो कर्मनुं स्वरूप जाण्यु छे, तेथी जाणे छे जे पूर्व जवे अशुज कर्म बांध्यां छे, तेथी अरतिना कारण मल्या छे, पाछो विकल्प करीश तो एथी पण आकरां कर्म बंधाशे, ने अरति उत्पन्न थशे जेम कोईनुं देवु होय ने ते नहि आपीए तो ते फरियाद करे तो वधारे दुःख जोगववुं पडे माटे जे अशाता वगेरे दुःखना कारण उत्पन्न थया छे ते समजावे जोगववा, एवो विचार करी समजावमां रहे छे, ने तेथी वधारे विशुद्धि थाय छे, ने अरति मोहनीनो नाश करी पोताना आत्मस्वजाविक गुण प्रगट करे छे, तेज जगवान् थाय छे, अने तेवीज रीते थयेला छे, अने जेवी रीते जगवान् वर्त्या तेवीज रीते जे आत्मार्थी पुरुष वर्त्तशे ते जगवान् थशे अने अरति नाश थशे

८ जयनामा दोष. ए जय सात प्रकारे छे. आलोक जय, परलोक जय, आदान जय, अकस्मात् जय, आजीविका जय, मरण जय, अपकीर्ति जय, ए सात जयथीज जयजित संसारी जीव सदा रहे छे, अने परमात्माए तो पोते पोताना आत्मानुं स्वरूप जाण्यु छे के आत्मा अरूपी छे. आत्मानो विनाश थवानो नथी, तेथी कोई प्रकारनो जय राख्यो नहि, तेथीज पोतानुं आत्मपद पाम्या छे. हवे संसारी जीव सात प्रकारनो जय धा-

रण करी रह्या छे. आलोक भय एटले जे जीव जे गतिमां होय तेज गतिना बीजा जीवोथी भय ते आ लोक भय, जेमके पोते मनुष्य छे तो बीजा सरवे मनुष्य आ लोक गणवा.

बीजा मनुष्य मने मारशे, वा मारी नांखशे, वा फेर देशे, शस्त्र मारशे, वा मंत्रथी मारशे, वा मने रोग उत्पन्न करशे, एवी रीतना भय धारण करवा ते मनुष्यने आ लोक भय जाणवो. ए भय जीव अज्ञानपणे करे छे. जो ज्ञान थयुं होय तो समजाय के आत्मा अविनाशी छे. विनाश थशे तो पुद्गलनो थशे, ते पुद्गल मारुं नथी, तो मारे शी बाबतनो भय करवो? बीजी रीते पुद्गलनी स्थिति तथा विनाश पण कर्मना उदय प्रमाणे बनवानुं छे, माटे भय शी बाबत करवो. वली संसारमां पण जे माणस भयभीत थाय छे तेनाथी उद्यम बनी शकतो नथी, ने भयनां कारण हठावी शकतो नथी, पण जेनुं वीर्य फोरायमान थयुं छे ते वीर्यना बलथी हींमत राखी पोतानो आत्म धर्म साधी शके छे. माटे उद्यम करी जेम बने तेम भय संज्ञा हठाववी, केमके उद्यमथी हठी शके छे. आठ दृष्टीमां बीजी दृष्टी प्रगटे छे त्यारे चार संज्ञानो विष्कंभ थाय छे, एटले थंभी जाय छे; एम योगदृष्टि समुच्चयमां हरिभद्रसुरि महाराज कहे छे, माटे भयनी शांति थाय तेम करवुं. अनुक्रमे जेम जेम विशुद्धि थशे तेम तेम सर्व प्रकारे भय रहित थशे, एटले दूषण टलशे.

२ परलोक भय. ते तिर्यंचनो देवतानो भय. ते संबंधीनी चिंता फीकरमां रहे. रखे सर्प, वींछी, वाघ, तथा व्यंतरादि देव, पीडा करे, ए भयनुं स्वरूप उपर प्रमाणे आत्मार्थी पुरुष भावीने भय रहित थई, निज निर्भय गुण उत्पन्न करे छे.

३ आदान भय. ते पोताना घरमां जे जे पदार्थ, धन, आभूषण, वस्त्रादीक वस्तु छे, ते वस्तु रखे कोई लई जशे, चोर

श्रावी चोरी जशे, वा विनाश पामशे, वा कोईने व्याजे आपीश ते पाछा रुपीश्रा आपशे के नहि, वा वेपारमा खोट जशे, एवी रीतना नयनी चिंता करवी ते श्रादान नय एवो नय करवो तेनुं चिंतवन करवुं, तेने ज्ञानी पुरुषो आर्त्त ध्यान, तथा रोद्र ध्यान कहे छे, अने ए ध्यानथी जीव नरक, तिर्यंचनी गति बांधे छे, माटे ज्ञानी पुरुष होय ते तो विचार करे के, ए वस्तु मारी नथी. कर्मना संजोगथी अज्ञान दशा थई छे, ते अज्ञान दशाए करी ए वस्तु उपर ममत्व नाव थयो छे. ते ममत्व नावथी नय थया करे छे, ए मारे करवा जोग नथी. एवी नावना नावी, नय संज्ञा उतारे छे, के ए धनादीक वस्तुनो स्वनाव अथीर छे, ज्यां सुधी पुन्य बलवानछे त्या सुधी जवानुं नथी, अने ज्यारे पापनो उदय थयो त्यारे राखी मुकेलुं धन रहेवानुं नथी, माटे जीव शा सारु ममत्व नाव करे छे, एवी रीते नावी, नय संज्ञाथी निर्नय थाय छे विशेष ज्ञान थाय छे, त्यारे संसारनो त्याग करे छे, सजम ले छे तेथी एवी वस्तु त्याग करवी, एटले नय रहेवानो नथी अने पोतानी पासे धर्म उपगरण तथा पुस्तक होय छे, तेनो पण नय राखता नथी पोताना श्रात्माने नावे छे, ने पोताना श्रात्माने नाववाथी सर्वथा नय सज्ञानो नाश करे छे, अने श्रात्माना गुण संपूर्ण प्रगट करे छे

४ अकस्मात् नय ते वाह्य कारण विना, अकस्मात् मनमा नयभ्रात थाय, मर लागे, ए कर्मना उदयना प्रनावथी छे एवा नय पण कर्मनी बोदोलताथी थाय छे. जेने श्रात्म गुण प्रगट थया छे तेमने एवा नय लागता नथी.

५ श्राजीवीका नय समवायागजीमा कह्यो छे, अने ठाणागजीमां वेदना नय कह्यो छे माटे ते नयनुं स्वरूप लखु छु पोतानी पेट पुरणी पुरी श्रथवा संबधी जीव नय करी रह्यो छे, पण

दुनियामां गरीब अने धनवान कोई पण अन्न खाधा विना रहेता नथी. आजीवीका पुरी थवी छे ते तो पूर्वना कर्मने अनुसरतुं बनवानुं छे, पण ते कर्मनुं ज्ञान नथी तेथी फीकर करे छे. दरेक काम उद्यमथी बने छे माटे उद्यम करवो पण भय धारण करवो ते मूढता छे, अने ए मूढताए करी काम करवानुं करी शकतो नथी, अने नवा नवा विकल्प करी कर्मबंध करे छे. वली धनवान पुरुष छे तेमने आजीविकानी कांई कसर नथी, तो पण आगला काल संबंधी विचित्र प्रकारनी चिंता कर्या करे छे. वरसाद तणायो तो शुं खाइशुं? वरसाद न आव्यो तो शुं खाइशुं? रसोईयो जतो रह्यो तो शुं खाइशुं? कोई चीज मोंघी थई तो शुं खाइशुं? एवा विचित्र प्रकारना आजीवीका संबंधी भय धारण करी कर्म बांधे छे. धनवान माणसने नवली वखतमां ने सारी वखतमां धने करी सर्व चीज बनी जाय छे, ते छतां पण अज्ञानताने लीधे भयभीत रहे छे, ने ज्ञानवंत पुरुषोने तो थोडुं ज्ञान थयुं छे पण स्वपर ज्ञान थयुं छे. ते ज्ञानने प्रभावे प्रथम तो कर्मनी खातरी छे, तेथी तेमने भय रहेतो नथी. बीजी रीते अशुभ कर्मनो उदय थयो, अने आजीविकामां हरकत पडे छे, तो विचारे छे के पूर्वे कर्म बांध्यां छे तेनां फल छे. विकल्प करवाथी शुं फायदो छे? एम विचारी भय राखता नथी, अने बनतो उद्यम करे छे, अने अतिशे विशुद्ध छे ते तो जरा पण भय राखता नथी. पोतानो आत्म भावना विचारे छे. जेम ऋषभदेव स्वामीने वर्ष दिवस सूधी आहार मल्यो नहि, पण तेनो विकल्प नथी, तेने करी वरसी तप थयो, अने अंते भय मोहनी क्षय करी निर्भय गुण प्रगट कर्यो, तेम आत्मार्थी पुरुषे करवुं, के भय मोहनी नाश थाय. हवे वेदनी भय ते रोग आवेथी दुःख सहन न थाय एटले अनादिनो भय छे ते प्रगट थाय, जे रोग वधे नहि, रोग

न होय तो रोग आववानो भय, एवा भय बदल तपस्या प्रमुख करे नहि तपस्या करवाथी नवुं वेदनी कर्म उदय आववानुं ते क्षय थाय छे अने ते बदल अवला विचार करे ते मूढतानुं लक्षण छे, अने आत्मार्थी जीवो तो वेदनाथी बीता नथी. वेदना थाय तो विचारे छे, के पूर्वे जे जे वेदनी कर्म बाध्या छे ते आवा बोधना (ज्ञानना) वखतमा उदय आवशे तो समभावे भोगवीश, अने घणा काल दुःख भोगववानु ते थोडा कालमा भोगवई जशे नवो कर्म बंध थशे नहि वली विशेष विशुद्धिवंत तो जाणे छे के वेदना थाय छे ते शरीरने थाय छे, मारा आत्माने थती नथी, एवीज रीते महावीर स्वामी भगवानने सखत उपसर्ग संगम देवे तथा व्यंतरीए कर्या पण जराए भय धारण कर्यो नहि, ने वेदनानुं दुःख धारण कर्युं नहि, तो पोताना आत्मानो केवल ज्ञान गुण प्रगट कर्यो, तेमज जेने पोताना आत्मानुं कल्याण करवुं छे तेणे पण महावीर स्वामी भगवाननो मार्ग धारण करवो, के पछी कोई तरेहनो भय रहेशे नहि, ने निर्भय दशा प्रगट थशे.

६ मरण भय ते प्रसिद्ध छे. अनादि कालनी मरण थवानी संज्ञा चाली आवे छे, तेने प्रभावे देवता पण आवता भवनो, छ मास अगाउ बंध करे त्यारथी झूरे तेमज मनुष्यनी समजणनी उमर थाय त्यारथी मरण भयनी विचारणा थया करे छे. हवे जे ज्ञानी पुरुषो छे ते अंश मात्र पण मरणनो भय करता नथी, कारण के आत्मा मरतो नथी मरे छे ते पुद्गल छे तो जेटली आउखानी स्थीति छे त्या सुधी आ शरीरमां रहेवुं छे, तो भय शा माटे करवो कदापी संज्ञाथी चित्तमां आवे तो विचारे जे आउखानी चंचलता छे. तो धर्म साधन करवामा प्रमाद न करवो, कारण जे धर्म साधन मोक्षनुं करवुं छे तेतो मनुष्यनी गतिमा थई शके छे. बीजी गतिमा एवुं साधन थवानुं

नथी, माटे जेम बने तेम अप्रमादपणे धर्म करवामां तत्पर रहेवुं. आवते काले करवानो विचार करीश, पण आवते काले शुं थशे ते खबर नथी, माटे जेम उत्तराध्ययनजीमां कह्युं छे के हे गोयम! समय मात्र प्रमाद म कर, ते उपदेश धारण करी जेम आत्मानी निर्मलता थाय तेम उद्यम करवो, ने तप संजम साधतां शरीर नरम पडे छे वा देवतादिकना उपसर्ग थाय छे तो पण मरणनो भय करता नथी, आत्माने भावता विचरे छे. परिसहनी फोजथी बीता नथी. पोतपोताना ध्यानमां तत्पर रहे छे. तेवीज रीते आत्मार्थीए रहेवुं. भगवंत ए भय क्षय करी सिद्धि सुखने पाम्या छे, तेम तेमनी आज्ञा छे. तेवीज रीते वर्त्तिशुं तो मरणनो भय नाश थशे.

७. सातमो अपकीर्ति भय. ए शक्ति उपरांत कीर्त्तिनी इच्छा करे, काम अपकीर्त्तिनां करे छे, कीर्ति ते क्रियाथी थाय. जो लुच्चाई, दोंगाई, चोरी, जूठु बोलवुं, परदारा गमन, पारकी निंदा, परने दुःख देवुं, पारकुं खाई जवुं, वेपारमां अन्यायथी बोलवुं, वांकु बोलवुं, आ कृत्यो जे नहि करे, अने दुःखीने सुखी करवो, पारकुं काम करवामां तत्पर रहेवुं, धनने अनुसरतुं दान देवुं, वली केटलाएक तो दान एवी रीते करे छे के पोते खाय नहि, बीजाने आपवा तत्पर थाय, एवी वर्तना करे तो सहेजे कीर्ति थाय. पण छतुं धन होय ने भीखारी बूम पाडीने मरे तो जराए दान न आपे, अने अपकीर्तिनो भय करे. अपकीर्तिनो भय राखी माठी आचरणा न आचरे तो उत्तम छे. अज्ञानताए अपकीर्ति थाय एवुंज कारण सेवे, पण ज्ञानी पुरुषो तो पोताना आत्माना दानादीक गुण छे, ते प्रगट करवामां उद्यमवंत थया छे. केटलाक गुण प्रगट थया छे, तेमां पण कीर्तिनी इच्छा नथी, अने अपकीर्तिनो भय नथी. तेमज जेम उत्तम पुरुषे कोई जीवने दुःख थाय एवी वर्त्तना करी

नथी, तेवीज रीते कोई जीवने डुःख थाय एवी वर्त्तना करवी नहि के सहेजे अकीर्त्तिनो नय टली जशे आ रीते साते नयने जाणीने जेम महात्मा पुरुषोए निर्भय दशा प्रगट करी तेम करवुं आत्म गुण प्रगट कर्यो के ते गुण जवानो नय राखवो पमतोज नहि, ते नित्य गुण छे. अनित्य गुणनो मोह छे त्यां सुधी जीवने नय रहेशे वास्ते त्याग करवो, एटले सहेजे नय टली जशे.

१० शोकनामा दूषण. ते संसारी जीवने रात दिवस लागी रहुं छे. कुटुंबमाथी मान्दु थाय वा कोई मरी जाय तो माणस शोक एटलो करे छे के, केटलाएक माणस अती शोके मरी जाय छे, वा मादा पमे छे, शरीर सुकाइ जाय छे, केटलीएक स्त्रीउ गतीमाथी लोही काढे छे, केटलीएकनी गतीमा दरद थाय छे, आवी उपाधि शरीरने थाय छे, तेना उपर लक्ष न देता ते काम कर्या जाय छे, आवा फल पामवानुं कारण अज्ञानता छे वली बजारनी अंदर महोटा चकला उपर पण एवी तरेहथी कूटवाथी बीजा जीवने पण ए डुःख जोई दीलगीरी थाय छे. हालना राजकर्त्ताउने ते वात पसंद नथी तेमज राजद्वारीना अधिकारीउने पण ते वात पसंद नथी, तेम उतां आ काम करे छे. वली केटलीएकना मनमा तो एवुं पण रहे छे के, आपणे कूटशुं नहि तो लोकमा शोना नहीं रहे, एटले कूटीने पण लोकमा शोना लेवी छे आ केटली बधी मुर्खता? विद्वानोने पण बहु दीलगीरि आवे छे आ नुकशान तो आ लोक संबंधी छे, वली परनवने विषे ए पापने लीधेज नरक, तिर्यंचनी गतिने पामे छे, तो आवा काम करवाथी आलोक तथा परलोकमा बे ठेकाणे डुःख नोगववानां थाय छे वली ज्ञानवंत पुरुषो तो एटलो विचार करे छे के, जे चीजनो संजोग तेनो वियोग छे ज कांतो आपणे कुटुंबने मुकीने जइए, अथवा कुटुंब आपणने मुकीने जाय. आ बेमाथी एक रीते

विजोग थवानो छे. जे जे वस्तुनो जे जे स्वभाव छे, ते जाणीने जराए शोक करता नथी. वली धन जाय छे, गुमास्तो जाय छे, वस्त्र जाय छे, घर जाय छे, एवी इछित वस्तुना जवाथी शोक करे छे, तेमां विचारवालुं के इछित वस्तु पूर्वना पुन्यथी थीर रहे छे, पुन्य पुरुं थयुं के विजोग थाय छे. पछी गत वस्तुनो शोक करवाथी कांई फायदो नथी. केटलाएक माणसने अपमान थवाथी शोक थाय छे, पण अपमान तो नहि करवा योग काम करवाथी वा नहि बोलवा योग बोलवाथी थाय छे, वा पुन्यनी खामीथी अपमान थाय छे, माटे ते काम तजे तो अपमान थाय नही, शोक करवाथी फायदो नथी, ते छतां शोक करे छे, एवी रीते जे जे बाबतनो शोक करे छे ते ते बाबतथी पाप कर्म बंधाय छे, शोक थकी शरीर नरम थाय छे, बुद्धिनी पण हानि थाय छे, शोकनां कारण हठवानो पण उद्यम थतो नथी, तेथी वधारे शोक उत्पन्न थाय छे. आ प्रमाणे प्रत्यक्ष फलने पण अज्ञानपणे जीव विचारता नथी, अने जे ज्ञानी पुरुष छे तेमने शोकनां कारण उत्पन्न थाय छे, तो तेमां भावे छे के मारा आत्मा शिवाय बीजो मारो पदार्थ नथी. जे पुद्गलीक वस्तु छे तेतो संजोग विजोग संजुक्त छे, एटले मारे शी बाबतनो शोक करवो. जे जे बने छे ते पूर्वे कर्म बांध्यां छे, तेने अनुसरतुं बने छे. माटे जे जे कर्म उदय आव्यां ते ते समभावे भोगववां, एटले ते कर्मनी निर्जरा थाय अने आत्मा निर्मल थाय, एवी दशा बनी जाय तो जीवने शोक थाय ज नहि. भगवान तो आत्मगुण सिवाय बीजी परभाव दशा जे जे जगभावनी वर्त्ते तेमां रागद्वेष करे ज नहि, तेमणे शोक मोहनी कर्मनो नाश करी पोताना आत्माना गुण प्रगट कर्या. वली जेने आत्माना गुण प्रगट करवा होय तेणे तेमज वर्त्तवुं के आत्माना गुण प्रगट थाय.

११ डुगंछा ते कांई खुशवोवाली चीज जोईने प्रसन्न थाय ने खराब खुशवो जोई दीलगीर थाय, वली जे जे पदार्थ पसंद नहीं आवे ते पदार्थ डुगछनीक लागे छे ए प्रवृत्ति जीवने अनादिनी बनी छे, पण ज्ञानवंत पुरुषे तो वस्तुनो स्वज्ञाव जे जे रह्यो छे ते ते जाण्यो छे, एटले कोई पण वस्तुनी डुगछा करता नथी जे जे कारण मले छे ते पूर्वना कर्मना उदय प्रमाणे मले छे, तेथी समज्ञावमा रही तेना विकल्प करता नथी, तेमना मनथी तो जे जे जम पदार्थ आत्माने घात करता छे, तेना उपर सहेजे डुगंछा थाय छे अने अज्ञानी जीव जेने जे पसंद पमे तेमा राजी थाय छे, खुशी थाय छे, पण विषयादिकना फल विचारता नथी, के नरकमा एना केवा डुःख ज्ञोगववा पमशे? तेवी ज रीते जन्म मरणना केवा डुःख ज्ञोगववा पमशे? प्रत्यक्ष ढेढनी जातीने जुवो के तमे जेनी डुगछा करो बो, तेवी वस्तु लई माथे मुकीने ज्या फेकवानी जगा होय त्या फेंकवी, आ काम शाथी करवुं पमे छे के पाछले ज्ञवे जे काम नहीं करवा योग, ते काम कर्या तेना फल छे तो आपणने पण विषय नहि सेववा ज्ञगवंते कह्यु छे ने जो ज्ञोगवशे, तेने एवा डुःख ज्ञोगववां पमशे, तो ए विषयादि डुगंछनीक जाणी त्याग करवाने आत्माना गुणमां वर्त्तवुं ज्ञगवंते एवी रीते वर्त्ति डुगछा मोहनीनो नाश करी पोताना सहज स्वज्ञावीक गुण प्रगट कर्या, तेम आपणा पण प्रगट थाय

१२ कामदोष ए दोष सर्व माही सरदार छे कामने वश पमीने जीव महा पुरुष थवाय एवी तक पामीने पाछा पमी जाय छे संसारी जीव अनादि कालना कामने वश पमया छे, तेनी संज्ञा चाली आवी छे, बालक अवस्थामां पण कामनी चेष्टा करे छे ससार ज्रमणनुं कारण काम छे कामने वास्ते मातानो, पितानो, ज्ञाइनो, छोकरानो, मित्रनो नातीनो

सर्वेनो संबंध जीव तोमे छे. धननो पण ए विषयादिक कामने वश पमवाथी नाश थाय छे, शरीर पण निर्बल थाय छे, आयुष्यनी पण हानी थाय छे, आटला दुःखनो जीवने प्रत्यक्ष अनुभव थाय छे पण जीव अनादि कालनो कामने आधीन रहेवाथी कामांध थयो छे, ते अंधपणे करी कोई पण नुकशान के दुःख जोतो नथी. केटलाएक राजाउ कामने लीधे राज भ्रष्ट थाय छे, ते नजरे जोवामां आवे छे, पण जीवने भान थतुं नथी. केवी आश्चर्यनी वात छे! के कर्म केवा प्रकारे नचावे छे, कामांधपणे केटलाएक पोतानी छोकरी, पोतानी बहेन, पोतानी मा, तेनो पण विचार राखता नथी, तो बीजी स्त्रीनो तो शुं विचार राखे. केटलीएक माता कामने वश पमी पोताना पुत्रनो नाश करे छे, पोताना धणीनो नाश करे छे. आवी कामनी दशा पीमे छे, ने तेथी आ लोकनां दुःख आवी रीते अनेक प्रकारे भोगवे छे अने परलोकनां दुःख सांभलवां होय तो सुगमांग सूत्रथी जोई लेवुं. भवभावना ग्रंथथी जुउ नरकने विषे परमाधामी लोढानी धगधगती पुतलीए बकामे छे, नरकमां पग मुकवानी जगो छे ते एवी छे के जेवी रीते तरवारनी धार उपर पग मुकवो तेवी रीते छे, उष्ण वेदना एवी छे के हजारो मण बलता काष्टनी चेहेमां सूवे ते करतां पण वेदना वधारे थाय छे सीत वेदना एवी छे जे टाढनो जोमो नथी, गमे एटली अग्नीए करी शरीर शेके तो पण टाढ नीकलती नथी. जन्मनी जगा एवी छे के राइ राइ जेवा कमका करीने उपजवानी जगोमांथी बाहार काढे. वैक्रिय शरीरनो स्वभाव एवो छे के, बधा ककमा एकठा थया के पारो जेम मली जाय छे तेम शरीर उभुं थाय, एटले पाछा परमाधामी अनेक प्रकारनी वेदना करे छे. आवां दुःख टुंकां आउखां मनुष्यनां तेमां अल्प काल सुख मानीने, मोटा सागरोपमना आउ-

त्यां सुधी दुख भोगववानां छे, एवुं केटलाएक जीवो जाणे छे पण कामावपणे दु:खनो लक्ष न आवतां ए काममा अंध थई रहे छे जे पुरुष अथवा स्त्रीने ते भव स्थिती परिपक्व थई छे, ते पुरुष ससारनो त्याग करी पोताना आत्म स्वरूपमा आणंदपणे रहे छे. केटलाएक बाह्यथी स्त्रीनो त्याग करे छे पण अंतरंगमाथी चित्त खसतुं नथी, तो पाछा संसारमा आवे छे केटलाएक संसारमा आवता नथी पण चित्त वगमेलुं रहे छे, केटलाएकने राग रहे छे, ने ज्यारे स्त्रीनुं मुख जोवे त्यारे शांत चित्त रहे छे, एवी अनेक प्रकारनी कामनी विटंबना छे पण दृढ अनुराग आत्मतत्त्वमां जेनो थई गयो छे, एवा सुदर्शन शेठ जेने अभयाराणीए शरीरे विचित्र प्रकारे फरस कर्यो. अवाच्य प्रदेशने बहु विटंबना करी तो पण काम दीप्त न थयो. राजाए जेने शूलीए भोंकवा मोकल्या तो शीलना प्रभावथी शूली मटी सिंहासन थयुं, आ महिमा काम जीतवानो छे. चक्रवर्त्ती राजा जेने एक लाख बाणुं हजार स्त्री छे तेना भोगना करनार पण ज्यारे ज्ञान दशा जागे, त्यारे स्त्रीना सामुं पण जोता नथी, एवी रीते काम जीते छे तेमज भगवाने सर्वथा कामने जीत्यो, तेथी कामनामा दूषण नष्ट थयुं. ने भगवान् थया छे, तेम जेमने आत्माना गुण प्रगट करवा होय, तेमणे कामनी इछाथी मुक्त थवानो अभ्यास करवो अभ्यासथी सर्व चीज बने छे, काम रोकवो ए जड धर्म छे, आत्म धर्म नथी. आत्माना स्वभावथी बहार वर्त्तवु नही, एवा भाव आववाथी सहेजे काम जीताई जाय छे कामने जेणे जीत्यो तेणे दुनीयामा सर्व जीत्यु पछी सर्व जीतवु सुलभ थाय छे. जे जे पुरुषोए काम जीत्यो छे, तेना चरित्र वाचवानो उद्यम करवो शीलोपदेशमाला वाचवाथी काम जीतवाना लाभ समजाशे नीकट मुक्तिनो उपाय काम जीतवो एज छे.

१३ अज्ञाननामा दोष. ए अज्ञान दोष पण अनादीनो छे तेथी करी आत्मा शुं चीज छे, शरीर शुं चीज छे, सुख दुःख शाथी आवे छे तेनुं ज्ञान यथार्थ थतुं नथी. शरीरना दुःखे दुःखीज थाय छे, कुटुंबना दुःखे दुःखीज थाय छे, सुगुरुने कुगुरु माने, कुगुरुने सुगुरु माने, कुदेवने सुदेव, ने सुदेवने कुदेव, सुधर्मने कुधर्म, ने कुधर्मने सुधर्म माने छे. शातानां कारणने अशातानां कारण माने छे, अशातानां कारणने शातानां माने छे. जे जे प्रवृत्ति जडनी करे छे अने पोतानी माने छे, धर्म प्रवृत्ति करे तो अधर्म थाय एवी करे छे. धन कुटुंब मले छे, ते पर वस्तु छे. ते छतां ते पोतानी मानी आनंद थाय छे, ज्ञानवंतने ज्ञानवंत जाणतो नथी, तत्त्वज्ञान थाय एवो उद्यम करतो नथी, अज्ञानना जोरथी पांच इंद्रिना त्रेविश विषय तेमां लुब्ध वर्त्ते छे. ज्ञानी पुरुषे बतावेल खट द्रव्य पदार्थ तथा तेना गुणपर्याय, तेनुं ज्ञान करतो नथी. नव तत्त्व तेनुं ज्ञान थतुं नथी, अष्ट कर्मनुं पण स्वरूप जाणतो नथी, केटलाएक धर्मवाला कर्म माने छे पण कर्म शुं पदार्थ छे, ते जाणता नथी. कर्म केम आवी बंधाय छे, कर्म केम उदय आवे छे, कर्म केम निर्जरी आत्मा निर्मल थाय छे, ते अज्ञाने करी जाणी शकतो नथी. आ माहात्म्य अज्ञाननुं छे. केटलाएक खोटां कर्मनां जोर प्रत्यक्ष छे, तो पण अज्ञानना जोरथी ते लक्षमां आवतां नथी. कोई पण जीवने मारी नांखे छे तो सरकार फांसी दे छे, ते प्रत्यक्ष जुए छे तो पण केटलाएक माणस फांसीए जवानी बीक राखता नथी अने एवां कृत्य करे छे. मृषा बोलवाथी खोटी प्रतिज्ञानुं काम चाले छे, चोरी करवाथी केदमां जाय छे, आवा प्रत्यक्ष दाखला बधा माणसना समजवामां छे. जार कर्मथी पण केदमां जाय छे पण अज्ञानपणे ते बाबतनो लक्ष थतो नथी, ने एवां खोटां काम कर्यां जाय छे. अज्ञानताए राज विरुद्ध आचरण पण

करे छे, ए अज्ञान खसेडवाना भाव थाय तो ज्ञान अभ्यास करवो. शास्त्र भणवाथी, सांभलवाथी, खट द्रव्यनुं ज्ञान थाय छे ते खट द्रव्य कहीए छीए.

१ धर्मास्तिकाय. ते अजीव द्रव्य, अरुपी, अचेतन, अक्रिय, चलन साह्य गुण ते जीव तथा पुद्गल चाले तेने सहाय करवानो धर्म छे. इहा शंका थशे के चाले तेने सहाय शुं करवी छे, ते विषे समजवुं के माछलुं पाणीमा तरे छे. हवे तरवानी शक्ति तो पोतानी छे पण पाणीनी सहाय जोईए छीए, पाणी विना तरी शकतुं नथी. तेम जीव तथा पुद्गल चाले तेने धर्मास्तिकायनी सहाय जोईए.

२ अधर्मास्तिकाय.एनो स्वभाव धर्मास्तिकायथी विपरीत छे, स्थिर रहेवाने सहाय करे छे. मनुष्य पाणी होय छे ने तरता आवडतुं होय तो तरे छे पण ते थाकी जाय, तो कोई टेकरी अथवा डुंगारानी सहाय मली आवे छे, तो स्थिर रही शके छे, पण जो एवी सहाय न मले तो स्थिर रही शकतो नथी. वली तडकेथी आवता जो थाकथा होय तो, झाड अथवा विसामानुं स्थानक मले छे तो बेसे छे. तेमज अधर्मास्तिकायनी सहायथी जीव पुद्गल थीर थाय छे, ए द्रव्यना पण चार गुण छे. अमूर्ति एटले रूप नहि, अचेतन एटले जीवरहित, अक्रिय एटले विभावीक काई पण क्रीया करवी नहि, अने स्थीर सहाय गुण ते उपर प्रमाणे स्थिर पदार्थने सहाय करे छे

३ आकाशास्तिकाय. ते लोक जेमां छ द्रव्य पदार्थ रह्या छे तेने लोक कहीए. अलोक जेमा आकाश सिवाय पदार्थ नथी. एवा लोकालोकमा व्यापीने आकाश द्रव्य रह्युं छे, तेना पण चार गुण छे अरुपी एटले रूप नथी, अचेतन ते जीव रहित, अक्रिय ते कोई जातनी क्रीया करवी नथी अने अवगाहना गुण

ते जीव पुद्गल पदार्थने रहेवाने जगो आपे छे. कारण आखा लोकमां जीव पुद्गल भरेला छे, तेमां जगो नथी ते आकाश जगो करी आपे छे. ईहां शंका थशे के जगो नथी, ते केवी रीते करी आपे छे, ते विषे जाणवुं जे भींतमां जरा पण जगो नथी होती पण खीलो मारीए तो दाखल थई शके छे, तेम आकाशा स्तिकाय जगो करी आपे छे.

४ कालद्रव्य तेमां प्रथम वर्त्तना काल सूर्यनी चाल उपरथी गणाय छे, जेमके सूर्य अस्त थाय छे अने उदय थाय छे, तेना उपरथी गणत्री थाय छे, ते गणत्री संबंधी काल छे. तेनुं माप सात श्वासोश्वासे एक स्तोक थाय, सात स्तोके एक लव थाय छे, सत्योतेर लवे एक मुहूर्त्त बे घडीरूप थाय छे, एवा ३० मुहूर्त्ते दिवस थाय छे, त्रीश दिवसे एक मास थाय छे, एवा बार मासे एक वर्ष थाय छे एवां पांच वर्षे युग थाय अने वीश युगे एकसो वरस थाय. दश सोए एक हजार थाय, एवा सो हजारे लाख थाय. एवा ८४ लाख वर्षे एक पूर्वांग थाय. एवा ८४ लाख पूर्वांगे एक पूर्व थाय. एक पूर्वना आंक ७०५६०००००००००० एवां चोराशी लाख पूर्वे करी एक त्रुटितांग थाय अने ८४ लाख त्रुटितांगे एक त्रुटित थाय. चोराशी लाख त्रुटिते एक अडडांग थाय. चोराशी लाख अडडांगे करी एक अडड थाय अने चोराशी लाख अडडे एक अववांग थाय. चोराशी लाख अववांगे एक अवव थाय. चोराशी लाख अववे करी एक हुहुकांग थाय. चोराशी लाख हुहुकांगे एक हुहुक थाय, चोराशी लाख हुहुके एक उत्पलांग थाय. चोराशी लाख उत्पलांगे करी एक उत्पल थाय, चोराशी लाख उत्पले करी एक पद्मांग थाय. चोराशी लाख पद्मांगे एक पद्म थाय, चोराशी लाख पद्मे करी एक नलीनांग थाय. चोराशी लाख नलीनांगे करी एक नलीन थाय. चोराशी लाख

नलीने करी एक नीपुरांग थाय चोराशी लाख नीपुरांगे एक अर्थ नेपुर थाय, अने चोराशी लाख अर्थ नेपुरे करी एक अयुताग थाय अने चोराशी लाख अयुतागे करी एक अयुत थाय चोराशी लाख अयुते करी एक प्रयुतांग थाय अने चोराशी लाख प्रयुतागे एक प्रयुत थाय चोराशी लाख प्रयुते एक चुलीकांग थाय. चोराशी लाख चुलीकागे एक चुलीका थाय चोराशी लाख चुलीकाए करी एक शीर्ष प्रहेलिकाग थाय तेने चोराशी लाख गुणा करीए त्यारे शीर्ष प्रहेलीका थाय ए गुणाकारनो आंक १९४ अक्षरनो थाय. ते नीचे प्रमाणे ७५८२६३२५३०७३०१०२४११५७९७३५६९९७५६९६४० ६२१८९६६८४८०८०१८३२९६००००००००००००००००००००००००
०००००००००००००००००००००००००००००००००००००००००००
००००००००००००००००००००००००००००००००००००००००००००००
००००००००००००००००००००००००००० आ प्रमाणे अनुयोगद्वार सूत्रनी टीकामा छपेली चोपडीना पाना ७४५ मामा छे ते उपरथी लख्युं छे १९४ अक्षरनी संख्या छे एथी अधिक संख्या गणवी मुश्केल पडवाथी वधारे आंक दर्शाव्या नथी पण बीजी रीते संख्या मनमा समजी शकाय मोढे बोली शकाय नहि. वली वत्तु उठुं समजाय ते सारु बताव्युं छे के एक कुवो चार गाऊ ऊंडो, चार गाउ पहोलो, चार गाउ लांबो एवो एक कुवो तेमां जुगलीआना सात दीवसना बालकना नीमाला ते नीमाला एकना असख्याता कडका करवा, अने तेवा कडकाए करी आ कुवो भरवो ते एवो सज्जड भरवो के ते नीमाला उपरथी चक्रवर्तीनी स्वारी जाय तो पण कुवाना नीमाला दबाय नही, पाणी अंदर प्रवेश न करी शके, एवो सज्जड कुवो भरवो, तेमांथी सो सो वर्षे एक एक नीमालो काढवो एवी रीते सो सो वरसे नीमाला काटवाथी कुवो खाली थाय त्यारे एक पल्योपम थाय एवा दश

कोमाकोमी पल्योपमे एक सागरोपम थाय. एवां सागरोपमनां नरक तथा देवतानां आउखां छे. बीजी पण गणत्रीउ काम लागे छे. आ कालनुं स्वरूप, जगत्‌ना जीवना आउखा वगेरेनी गणत्रीमां आवे छे, ए चंद्र सूर्यना आधारथी काल केहेवो छे तेने काल द्रव्यमां स्वाभावीक गणता नथी. हवे काल द्रव्य कोने कहे छे के छए द्रव्यना अगुरु लघु पर्यायनी वर्तना थाय छे, ते वर्तना एकथी बीजी थवी तेनुं नाम समय छे. तेज कालद्रव्य उपचरित छे. पदार्थ रूप नथी. कारण जे द्रव्यनी वर्तना अपेक्षित छे तेथी पदार्थ रूप नथी. कालनो गुण नवी वस्तुने जुनी करवानो छे. काले जे वस्तु बनी ते आजे जुनी कहेवाशे, आजे करी ते नवी कहेवाशे, ए काल अपेक्षित कहेवाय छे. काल छे ते अरूपी. अचेतन अक्रिय नवा पुराण गुण छे ए रीते कालद्रव्यनुं स्वरूप जाणवुं.

५ मो द्रव्य पुद्‌गलास्तिकाय. तेना चार गुण. मूर्त एटले देखाय छे. अचेतन एटले जीवपणुं नथी, सक्रिय एटले मलवा वीखरवा रूप क्रिया करे छे वली जीवनी साथे रहीने क्रिया करे छे माटे सक्रिय छे. तथा मलन विखरण गुण छे. जे पुद्‌गल परमाणु ने पुद्‌गल द्रव्य कह्यो छो ते परमाणु केवो सूक्ष्म छे ? बाल्यो बले नहि, छेद्यो छेदाय नहि, दृष्टिने अगोचर छे. एवा बे परमाणु मली खंध थाय छे, तेने द्वीप्रदेशी खंध कहे छे. एम त्रण चार आदे परमाणु मली खंध थाय छे, ते खंध दृष्टीगोचर आवता नथी. अनंता परमाणु मलीने जे खंध थाय छे ते दृष्टीने गोचर आवे छे ते व्यवहार परमाणु कहेवाय छे, निश्चय नये तो खंध कहीये. व्यवहारथी परमाणु कहेवानुं कारण ए छे के ए पण बाल्या बले नही शस्त्रथी छेदाय नही अने एक परमाणुमां एक वर्ण, एक गंध, एक रस अने बे फरस रह्या छे. वर्तना प्रमाणे अने सत्ता प्रमाणे तो पांच वर्ण, बे गंध, पांच रस, आठ फरस रह्या छे तेथी परमाणुना

पर्यायनुं पलटनपणुं थाय छे ते पलटनपणे सत्तामांथी वर्त्तनारूप कालानो पीलो थाय पीलानो लाल प्रमुख थाय, एम फेरफार थाय छे. आ अधिकार अनुयोगद्वार सूत्रमां छपेली प्रतमा पाने २७० मे छे त्यांथी जोवो एवो परमाणुनो स्वभाव छे. तेथी एक छुटा परमाणुने निश्चय परमाणुं कह्यु छे अने बीजाने व्यवहार परमाणु कहेवाय छे निश्चय नये तो खंध कहीए. व्यवहारथी परमाणु कहेवानुं कारण एटलुं छे के दृष्टिने अगोचर छे ए पण वाल्या वले नहीं, शस्त्रथी छेदाय नहीं ए व्यवहारीक परमाणु अनंताए श्लक्ष्ण श्लक्ष्णिका ते आठे करीने श्लक्ष्ण श्लक्ष्णिका कहीए तेथी आठ गुणानु नाम भर्द्धरेणु तेवी आठ भर्द्धरेणुए एक त्रसरेणु थाय, जे सूर्यना प्रकाशथी छापराना छेरीयामांथी देखाय छे ते, एवी आठ त्रसरेणुए एक रथरेणु थाय, रथ चाल्ये जे आकाशे रज भरे ते, आठ रथरेणुए एक देवकुरुना युगलीआ मनुष्यनो वालाग्र थाय, एवा आठ वालाग्रे एक हरिवर्षना मनुष्यनो वालाग्र थाय, आठ ए वालाग्रे हेमवतना मनुष्यनो वालाग्र थाय, एवा आठ वालाग्रे महाविदेहना मनुष्यनो वालाग्र थाय, एवा आठ वालाग्रे भरतक्षेत्रना मनुष्यनो वालाग्र थाय, एवा आठ वालाग्रे एक लीख थाय, आठ लीखे एक जू थाय, आठ जूए एक जवमध्य थाय आठ जव मध्ये एक आगुल थाय, छ आंगुले एक पाद थाय, बार आगुले वेंत थाय, चोवीश आगुले एक हाथ थाय, एवा चार हाथे एक धनुष्य थाय, एवा बेहजार धनुष्ये एक गाउ थाय, एवा चार गाउए एक जोजन थाय, एना त्रण प्रकारना मान छे, ते अनुयोगद्वार सूत्रमां पाने ३९५ मे जोड लेवुं आ मापनी वचमांना खंधो तथा एथी मोहोटा खधो अनेक प्रकारना थाय छे, विचित्र संस्थान विचित्र मापना थाय छे. परमाणु घणा अने अवगाहना नानी, परमाणु एथी ओछा ने अवगाहना मोटी. केटलाएक खंधे

दृष्टिए देखाय, हाथमां पकडाय नही, केटलाएकना फरस जणाय पण नजरे देखाय नही, केटलाएक गंधथी जणाय पण नजरे गंध देखाय नही. एम विचित्र स्वभावना पुद्गलना खंध थाय छे, तेमना मलवाथी पुद्गलना खंधना विचित्र स्वभाव थाय छे, तेम स्वभावथी विचित्र रीतना पदार्थ बने छे, पाछा वीखरी पण जाय छे, ते जोवामां आवे छे, ने काम पण विचित्र प्रकारे करे छे. जेटला पदार्थ देखाय छे ते पुद्गल छे. आपणे जीव कहीए छीए, पण जीवने देखता नथी. जीवनां ग्रहण करेलां शरीर देखाय छे, ते सारु समाधि तंत्रमां जशविजयजी महाराज कहे छे केः—' देखेसो चेतन नहि, चेतन नांहि देखाय; रोष तोष कीनशुं करे, आपो आप बुजाय. माटे कहेवानी मतलब एटली छे के चेतन देखातो नथी, देखो छो ते चेतन नथी पण जरु छे, एटले पुद्गल छे, पुद्गलनां लक्षण नव तत्त्वमां दश कह्यां छे. वर्ण, गंध, रस, फरस, शब्द, अंधारु, उद्योत, ताप, प्रभा, छाया, आ दश लक्षणमांथी कोइ पण लक्षण देखाय तेनुं नाम पुद्गल जाणवुं. बीजां पांच द्रव्य छे ते देखातां नथी. आवुं पुद्गल पदार्थनुं ज्ञान होय तो विचारे छे के माहरो आत्मा अरूपी, आ रूपी पदार्थ, तेने जे मारुं कहुं छुं एज अज्ञानपणुं छे, अने ते अज्ञानपणुं गयुं नथी, त्यां सुधी पुद्गलीक पदार्थनी इच्छा मटती नथी, अने जरु पदार्थनी इच्छा छे, त्यां सुधी जीव कर्मथी मुक्त थतो नथी. आ पुद्गल पदार्थनुं ज्ञान घणुं विस्तारे भगवतीजी, अनुयोगद्वार विगेरे सूत्रमां छे ते सांभलशो तो विस्तारे समजण पडशे. कर्म जे बंधाय छे ते पण पुद्गल पदार्थ छे. पवन देखातो नथी, पण फरस थाय छे, ते पवनना पुद्गलनो थाय छे. एवी रीते केटलाएक सूक्ष्म पदार्थ दृष्टीए नथी देखाता; जेमके अंधारुं अजवालुं ए वस्तु पकडीए तो पकडाती नथी. पण रूप देखाय छे माटे पु-

दूगल पदार्थ समजवो वादर पदार्थना जाणयाथी सूक्ष्म पदार्थ-
नो अनुमाने निर्णय करवो

६ जीव द्रव्य ते अरूपी एटले जीवनुं रूप नथी, सचेतन
एटले चेतन शक्ति छे, चेतन एटले चेतवुं ते जाणवु जाणवानी
शक्ति जीव विना बीजा कोई पदार्थमा नथी अक्रिय एटले क्रि-
या कोई पण करवानो चेतननो धर्म नथी जे क्रिया थाय छे ते
अनादिकालना जीवनो कर्मनो संजोग छे, ते कर्मना संजोगथी
पोताना आत्मानुं स्वरूप भूली गयो छे, जेम मदिरा पाननो
पीनारो मदिरा पीईने मस्त थाय छे, एटले शुं करवा योग्य छे,
शु नहि करवा योग्य छे, ए ज्ञान रहेतु नथी, ने पोतानी जाति
स्वभाव नीति छोडीने वर्त्ते छे, तेम आत्मा पोतानो स्वभाव
छोडी विभाव वर्त्तनानी क्रिया करे छे स्वभाविक वर्त्तनानुं ना-
म क्रिया नथी विभावमां वर्त्ते तेने क्रिया कहेवी छे, माटे स्वभा-
विक धर्म अक्रिय छे, पण अज्ञान दशाने योगे जीवनो स्वभा-
वज भुली गयो छे. शरीर छे ते हुं छु एम जाणे छे शरीरना
दुःखे दुःखीत थाय छे, शरीरना सुखे सुख माने छे, धन पुत्र
परिवार जोईने आणंदित थाय छे, ए बधो पदार्थ आत्माथी
भिन्न छे, पण अज्ञानपणे जाणी शकतो नथी आत्माना छ ल-
क्षण कह्या छे, ते आत्मा जाणी शकतो नथी ते छ लक्षण कहु छु
अनंत ज्ञान एटले जगतमा अनंता जीव छे, अनंता पुद्गल प-
दार्थ छे, एक एक पदार्थमा अनंता गुण पर्याय रह्या छे, तेनी
त्रिकाल वर्त्तना थाय छे ते सर्व एक समये जाणी शके, एटली
शक्ति आत्मानी छे, पण जड़ संगे करी अवराई गई छे. तेथी
जीव जाणी शकतो नथी पोताना शरीरनी अंदर सर्व व्यापी
ने आत्मा रह्यो तेने पण प्रत्यक्षपणे जाणी शकतो नथी, तथा
शरीरना अंदरना भागमा शा शा पदार्थ रह्या छे, ते पण

जाणी शकतो नथी. ते ज्ञान अवराई गयुं छे तेना फल छे. ज्यारे जीवनो भाग्य उदय थाय छे त्यारे सर्वज्ञना वचननी प्रतीति थाय छे, अने आवर्ण खपाववानो उद्यम करे छे, तो कर्म खपी जाय छे, त्यारे ते सर्व प्रत्यक्ष जणाय छे. ए ज्ञान गुण सर्वथातो ज्ञानावरणी कर्म क्षय थाय छे त्यारे प्रगटे छे, अने थोडां थोडां कर्मनो क्षयोपशम एटले केटलांएक क्षय पाम्यां छे, केटलांएक उपसमाव्यां छे, एटले सत्तामां हाल उदय न आवे एवां कर्यां छे, तेने उपसम कहीये, एवी रीते क्षयोपसम थवाथी मतिज्ञान, श्रुत ज्ञान, अवधी ज्ञान, मनःपर्यव ज्ञान ए चार ज्ञान थाय छे, पछी विशेष विशुद्धिथी सर्व प्रकारे कर्मनो क्षय थवाथी केवल ज्ञान थाय छे. हवे एवुं ज्ञान प्रगट नथी थयुं तेथी अज्ञानपणुं रह्युं छे, एवीज रीते आत्मानो दर्शन गुण छे, दर्शन अने ज्ञानमां भेद शुं छे ? ज्ञाननो विशेष उपयोग, दर्शननो सामान्य उपयोग, ए रीते दर्शन लक्षण, एनां पण आवरणने लीधे दर्शन गुण प्रगट थतो नथी; जेमके चक्षुनो विषय १ लाख जोजननो छे. तो एटला दुरथी देखी शकता नथी. ते आवरणनुं जोर छे. ए प्रमाणे पांचे इंद्रीयोनी शक्ति शास्त्रमां छे, तेम चालती नथी ते आवरणनो प्रभाव छे. वली केवल दर्शनथी सामान्य बोध सर्व पदार्थनो थाय छे ते केवल दर्शनने आवरण लागवाथी दर्शन गुणनुं लक्षण वर्ततुं नथी, ते लक्षण आवरणनो सर्वथा क्षय थवाथी प्रगटशे. हवे चारित्र लक्षण ते आत्मा आत्माना स्वभावमां स्थीर रहे ते. हवे ते स्थीरता अवराईने विभावमां स्थीरता थई छे, ने मोहनी कर्मनो नाश थशे त्यारे आत्मस्वभावमां स्थीरता थशे. तेनां कारणरुप पांच चारित्र छे ने जेटलो जेटलो कषाय क्षय थशे तेटलो तेटलो चारित्र गुण प्रगट थशे. संपूर्ण क्षये संपूर्ण चारित्र लक्षण प्रगट थशे. तप लक्षण ते अवरावाथी तपस्या थती नथी,

ने विचित्र इच्छाउ वर्त्ते छे अने अंतराय कर्म क्षय थवाथी सर्वथा पुद्गल पदार्थनी इच्छाउ नाश थशे, तेनी अगाउ अंशे अंशे इच्छाउ रोकाशे, एटलुं एटलुं तप लक्षण प्रगट थशे, पाचमुं वीर्यनामा लक्षण ते आत्मानी अनंती वीर्य शक्ति छे, पण ते अवराई गई छे जेटलो जेटलो वीर्यातरायनो क्षयोपशम थाय छे तेटली तेटली आत्मानी वीर्य शक्ति शरीरमा रहीने चाले छे. जेमके श्रीमत् महावीर स्वामी भगवाने एक दीवसनी उमरमा टचली आगलीए मेरु कंपाव्यो एटली शक्ति शाथी जागी छे ? तो के कोई पण जीवोने दुःख दीधा नथी, ने पोताने कोई दुःख दे छे तो सहन करे छे, ने तेनी पण दया चींतवे छे के मने दुःख दईने आ जीव कर्म वाधे छे, एवी तेनी दया चींतवी तेने प्रतिबोध करे छे; जेमके चंडकोशी सर्पे डश दीधो तो तेने प्रतिवोध दई अनशन करावी देवलोके वैमानीक देव बनाव्यो आवी रीते दयाना प्रणामथी शक्तिउ प्रगट थई छे. आपणी शक्ति हणाई गई छे, ते दयाना प्रणाम नष्ट थई हिंसानी प्रवृत्ति करवाथी वीर्य वल नष्ट थई गयुं छे, ते पाछा दया भावमा वर्तीए तो वीर्य शक्ति जागे; ते दया वे प्रकारे करवी जोईए. एक द्रव्य दया ते एकेंडी जीवथी ते पंचेंडि जीव सुधी कोई पण जीवने हणवो नहि, तेम कोई पण प्रकारनुं दुःख देवुं नहि, ते द्रव्य दया छे. वीजी भाव दया एवा जीवने दुःख देवानी वर्त्तना करवी, ते आत्मानो धर्म नथी. आत्माने आत्माना स्वभावमा रहेवुं, ते न रहेवाथी आत्माना भाव प्राणनी हानि थाय छे आत्माना भाव प्राण ज्ञान, दर्शन, चारित्र, वीर्य ए चार कह्या छे, ते जेटली विभाव दशानी वर्त्तना थशे, तेटली हणाशे जेटली जेटली विभाव दशा त्याग थशे, तेटली भाव दया थशे, ते एवी भाव दया जेटली प्रगट थशे तेटली तेटली वीर्य शक्ति जागशे. अने संपूर्ण वीर्य गुण

सर्व प्रकारे कर्म नाश थशे त्यारे प्रगट थशे तेज वीर्य लक्षण.

६ छट्ठुं उपयोग लक्षणः—उपयोग शुं छे ते जाणवानी शक्ति छे पण जाणवामां चित्त घालवुं ते रूप उपयोग करता नथी त्यां सुधी जाणी शकता नथी, ते रूप उपयोग ज्ञान दर्शनना भेदे करी बार प्रकारे छे ते कर्मग्रंथथी जाणवा.

आ छए लक्षण जीव द्रव्यनां छे, ते जीव जाणतो नथी त्यां सुधी जीवने पोतानी पारकी चीजनी खबर पडती नथी, ते सर्व अज्ञाननतानां फल छे. जीव छे ते सदा अविनाशी छे, ते पोतानुं स्वरूप न जाणवाथी सदाकाल मरवानो भय राखे छे, एवा अनंत गुण आत्माना छे ते केवलज्ञानी महाराज सिवाय बीजा जीव जाणी शकता नथी. जीवना भेद १४ तथा ५६३ बताव्या छे, ते कर्म संयोगे करी शरीर, इंद्रीयो वगेरेना फेरफारना छे. बाकी कर्म रहित सत्ताए बधा सरखा छे. भेद नथी तो पण भेद जाणवा, ते अधीक उंडा व्यवहारमां छे ते समजवा लखुं छुं.

१ एकेंद्रि सुक्ष्म ते चर्म चक्षुए देखाता नथी २ एकेंद्रि बादर ते चक्षुए करी देखी शकाय. ३ बेइंद्रि बे इंद्रिवाला. ४ तेइंद्रि ते त्रण इंद्रिवाला. ५ चोरेंद्री एटले चार इंद्रिवाला. ६ असन्नि पंचेंद्रि ते मन रहित. ७ सन्नि पंचेंद्रिय ते मन सहित.

ए सात जातना पर्याप्ता एटले पर्याप्ती पूर्ण करेली, अपर्याप्ता ते पोतानी पर्याप्ती पूरी करी नथी; एटले सात पर्याप्ता अने सात अपर्याप्ता मली १४ भेद जीवना थाय छे. हवे विस्तारे एना ५६३ भेद कहे छे.

१९८ देवताना थाय ते नीचे मुजब.

१० भुवन पति. १५ परमाधामीना देवता. १६ व्यतंर जातिना देव. १० तिर्यग जृंभकना देव. १० ज्योतसीनी जातिना देवता. १२ देवलोक वैमानीकनी जातिना देव. ३ किल्विषियानी

जातिना देव. ढेढ जेवा. ए लोकांतिक जातिना देव एकावतारी. ए ग्रैवेक जातिना देव. ५ अनुत्तर विमानना देवता ए कुल एएए जातना देवता, ते पर्याप्ताने अपर्याप्ता मली १एए अया ए देवोने कवल आहार नथी. पोतानी इच्छा प्रमाणे आहारनो स्वाद आवे छे. केटलाएक उंग पुन्यवाला होय तेमने इच्छा परमाणे न पण बनी शके. देवतानी जातिने वैक्रिय शरीर छे. तेथी रोगादी उपजता नथी. मनुष्यना आनखाने उपक्रम लागे छे, तेवुं देवताने उपक्रम न लागे. पूरे आउखे मरे. एक बीजानी ऋद्धिमा घणो फेरफार रहे छे. वेपार रोजगार करवानी जरुर पमती नथी. ए सामान्य-पणे देवतानी जाति कही

३०३ मनुष्य गणावे छे, ते त्रण जातिना थाय छे.

१५ कर्मभूमिना मनुष्य. कर्मभूमि कोने कहे छे ? ज्या अ-सि कहेता हथीआर, तरवार, भाला, छरी, कोश, कुहामा, ए वस्तुनु नाम असि कहीये, ते ज्या वपराय छे. मसी कहेतां नामु, चोपमा लखवामा आवे छे. कृषि कहेता ज्या कर्षण ( खे-तीवामी ) करवानु थाय छे, ए त्रणजातिना कर्म जे क्षेत्रमा करवानु थाय छे, तेने कर्मभूमिना मनुष्य कहीए ते क्षेत्रना नाम.

३ जंबुद्वीपमां मनुष्य १ भरतक्षेत्र. १ ऐरवृतक्षेत्र. १ महाविदेहक्षेत्र.

६ धातकीखंम द्वीपमां मनुष्य. २ भरतक्षेत्र. २ ऐरवृतक्षेत्र. २ महाविदेहक्षेत्र.

६ पुष्करावर्त द्वीपने विषे मनुष्य. २ भरतक्षेत्र. २ ऐर-वृत क्षेत्र. २ महाविदेह क्षेत्र

ए १५ क्षेत्रमा वसनारा मनुष्य पंदर जातिना, एमा भ-रतक्षेत्र तथा ऐरवृतक्षेत्रना मनुष्यनी रीति सरखी छे, कालस्थि-ति पण सरखी छे, छए आरानी हकीकत सरखी छे. पाच म-

हाविदेहक्षेत्रमां सदा तीर्थंकर महाराज विचरता लाभे छे, उ-
त्कृष्टमां उत्कृष्ट एक महाविदेहमां चार तीर्थंकर महाराज होवा
जोईए, एम जंबुद्वीप पन्नत्तिमां अधिकार छे. कोई ग्रंथमां वे पण
कहे छे, एम प्रवचन सारोद्धारमां कहेलुं छे. तत्त्व केवलीगम्य. वली
उत्कृष्ट कालमां एक महाविदेहमां वत्रीश विजय छे, ते सर्वे वि-
जयमां एक एक तीर्थंकर महाराज होय तेथी एक महाविदेहमां
वत्रीश तीर्थंकर विचरता लाभे; वली केवलज्ञानी सदा काल ला-
भे, मोक्षमार्ग सदाकाल वर्त्ते; जेम भरत, ऐरवृतमां मोक्षमार्ग
त्रण आरामां वर्ते छे, ने वीजा आरामां वंध थई जाय छे, तेम
त्यां नथी. आउखा विषे पण भरत ऐरवृत्तमां उंचुं वत्तुं छे, तेम
त्यां नथी. सदा क्रोड पूर्वनुं आउखुं छे. शरीरमान पांचसें धनु-
ष्यनुं छे, आ फेरफार छे, वीजो पण फेरफार शास्त्रथी जोवो.

३० त्रीश अकर्मभूमि तथा छपन्न अंतर द्वीपना मनुष्य
जुगलीआं छे ते मनुष्यने वेपार, रोजगार, रांधवुं, खेतीकाम, को-
ई पण जातनां हुजार वनाववां, वस्त्र पहेरवां, ए कांई पण कर-
वानुं नथी; टुंकामां असि, मशी अने कृषि ए त्रण कर्मभूमिना
मनुष्यने छे तेम एमने नथी. फक्त कल्पवृक्ष फल आपे ते खावां
छे. कल्पवृक्षथी घर बनी गयां छे, तेमां रहे छे. जेनी जेटली म-
रजादा छे ते प्रमाणे आहारनी इच्छा थाय ते वखते कल्पवृक्ष
एनी मरजी प्रमाणे आपे, आयुष्य शरीर पण मोटां छे, ते दरेक
क्षेत्र अपेक्षित छे, ते आगल आवशे. तेम वली त्यांथी मरीने देवता
थाय, बीजी गतिमां जाय नहि. केमके सरल स्वभावी छे, आ-
करा राग द्वेष नथी.

१० हैमवंत अने ऐरण्यवृत जुगलीआनां क्षेत्र. २ जंबुद्वीप-
मां तेमज ४ धातकीखंडमां ४ पुष्कलार्द्धमां.

ए दश क्षेत्रमां जुगलीआं मनुष्य थाय छे तेमनुं शरीरमान

एक गाउनुं, एक पल्योपमनुं आउखु एकातरे आमला प्रमाणे आहार करे, आयुष्यना छेडाउपर एक जोडलानो स्त्री गर्भ धरे तेनो जन्म थया पछी ७९ दिवस सुधी तेनी प्रतिपालना माता पिता करे. पछी माता पिता मरीने देवता थाय आ स्थिति छे

१० हरिवर्ष अने रम्यक ए वे क्षेत्र नीचेना द्वीपमा छे २ क्षेत्र जंबुद्वीपमां. तेमज ४ पुष्कलार्धमा, ४ धातकी खंडमा

ए दश क्षेत्रनां जुगलीआनुं देहमान वे गाउनुं, आउखुं वे पल्योपमनुं, वे दीवसने आतरे आहार वोर प्रमाणे करे, चोशठ दीवस छोकरानी प्रतिपालना करे

१० देवकुरु. उत्तरकुरुना जुगलीआना क्षेत्र २ जबुद्वीपमा ए वे क्षेत्र. तेमज ४ पुष्कलार्धमा ४ धातकी खंडमां

१० ए दशे क्षेत्रना जुगलीआनुं देहमान त्रण गाउनु, आउखुं त्रण पल्योपमनुं, त्रण दीवसने आतरे तुवेर प्रमाणेआहार कल्पवृक्षना फलनो करे, ४९ दीवस छोकरांना जुगलनी प्रतिपालना करीने काल करे.

३० ए त्रीश क्षेत्रना मनुष्यने अकर्मभूमिना मनुष्य कहीये

५६ छप्पन अतरद्वीपना मनुष्य ते अतरद्वीप जबुद्विपनी जगतीना कोटनी नजीक हेमवंत तथा शीखरी . पर्वत छे बने पर्वतमाथी दाढाउ नीकली छे ते कोटना उपर थईने समुद्रमा गई छे ने चार चार दाढाउ नीकले छे ने प्रेकेक दाढा उपर सात सात द्वीप छे, ए प्रमाणे ५६ अंतरद्वीप थया अतरद्वीप केम कह्या? लवण समुद्र उपर अधर रह्या तेथी अंतरद्वीप कहीए अने ए द्वीप उपर वसनार जुगलीआ मनुष्यने अतरद्वीपना मनुष्य कहीए.

ए मनुष्यनु शरीर आठमें धनुष्यनु होय, आयुष्य पल्योपमना असख्यातमा भागनु होय, तेने पण कल्पवृक्षथी आहार होय.

ए कुल १०१ क्षेत्रना मनुष्य ते पर्याता तथा अपर्याता ए वे भेदे

गर्भजना गणतां २०२ भेद थया, तेमां १०१ भेद समूर्छिम मनुष्यना. समूर्छिम मनुष्य कोने कहीए ? मनुष्यना मलमूत्र, लींट, वमन, थुंक, लोही, मांस, वीर्य, चामडी विगेरे माणसना अंगना पदार्थमां उत्पन्न थाय, आयुष्य अंतर्मूहुर्तनुं. अपर्याप्ति अवस्थाएज मरण पामे. ए मनुष्यो पर्याप्ति पुरी करेज नहि. शरीर पण अंगुलना असंख्यातमा भागनुं होय, एटले देखवामां आवे नहि, ए सात आठ प्राण बांधतो मरण पामे. ए कुल भेद ३०३ मनुष्यना जाणवा.

हवे तिर्यंचना ४८ भेद ते नीचे मुजब.

एकेंद्री ते जेमने एक फरस इंद्रि छे तेना भेद.

४ पृथ्वीकाय ते माटी, पाषाण, रत्न, सोनुं, धातुड. मोतीने पण अनुयोगद्वारनी टीकामां पृथ्वीकाय अने अचित कह्यां छे. ए बाबतमां माणसनां मनने शंका थाय के छीपना शरीरमां पृथ्वीकाय केम थाय. ते विषे जाणवुं जे मनुष्यना शरीरमां पथरी थाय छे, तो ते पृथ्वीकाय छे तेम ए पण जाणवुं. ए पृथ्वीकायना पथरा प्रमुख मोटा मोटा देखाय छे, तो पण ए असंख्याता जीवनो पींड छे. एक आमला जेटली माटी वा पथर लीधो होय तेमां असंख्याता जीव छे. एक जीवनुं शरीर अंगुलना असंख्यातमा भागनुं छे ते बधानो पींडभूत छे. ए जीवनां शरीर कल्पनाथी कबुतर जेवडां करीए तो एक लाख जोजननो जंबुद्वीप छे तेमां माय नहीं. एवी पृथ्वीकायना शरीरनी सूक्ष्मता छे. ए पृथ्वीकायनुं उतकृष्ट आयुष्य बावीश हजार वर्षनुं छे, ते बादर पृथ्वीकायनुं छे. ते देखवामां आवे छे तेनुं स्वरूप कह्युं. हवे पृथ्वीकायना एथी पण सूक्ष्म जीव छे ते चर्मचक्षुने अगोचर छे. केवलज्ञानी महाराजे पोताना ज्ञानमां जोइने कह्या छे, ते चउद राजलोकमां बधे छे. तेनुं आयुष्य

जघन्य अने उतकृष्ट अंतरमुहूर्तनुं छे ए पृथ्वीकायना वे भेदने पण पर्याप्ता जेणे चार पर्याप्ति पुरी करी छे ते, तथा अपर्याप्ता जेणे चारे पर्याप्ति पूरी करी नथी, वा अपर्याप्ति अवस्थाएज मरे छे, ते अपर्याप्ता सूक्ष्म तथा वादर पृथ्वीकाय एटले चार भेद थया

अपकायना च्यार भेद ते पाणीना जीव, तेमा कुवानु, तलाव, समुद्र, वरसाद, धुमर प्रमुखनुं पाणी. ए पाणीना जीवनुं शरीर पण अगुलना असख्यातमा भागनुं ए पाणीनो पींड देखाय छे, तेना एक वींदुमा पण असंख्याता जीव छे ए जीवनुं आयुष्य जघन्य अंतर मुहूर्तनुं, उत्कृष्टथी त्रण हजार वर्षनुं छे ए वादर अपकाय, तथा सूक्ष्म अपकाय ते देखवामा आवता नथी एटले वे भेद थया ते पर्याप्ता तथा अपर्याप्ता वे मेलवता अपकायना चार भेद थया

तेउकायना चार भेद ते सूक्ष्म तेउकाय तथा वादर तेउकाय. ए वे पर्याप्ता तथा अपर्याप्ता एनु शरीर अंगुलना असंख्यातमा भागनुं आउखुं उत्कृष्ट त्रण दिवसनु. एमा पण सूक्ष्म तेउकाय अगोचर छे

वाउकायना च्यार भेद ते सूक्ष्म वाउकाय तथा वादर वाउकाय ए वे पर्याप्ता तथा अपर्याप्ता एम चार भेद वाउकायनुं शरीर अंगुलना असख्यातमा भागनु, आयुष्य वादर वाउकायनुं उत्कृष्ट त्रण हजार वरसनुं अने सूक्ष्म वाउकायनुं अंतमुहूर्तनु

वनस्पतिकायना छ भेद-तेमा प्रत्येक वनस्पति ते एक शरीरे एक जीव होय ते, जेम के एक फलनी माहे जेटला वीज छे तेटला जीव छे फलनी छालनो एक जीव, फलना गर्भनो एक जीव, वृक्षनी शाखानो एक जीव, मूलनो एक जीव, थडमां एक जीव, पत्रमा एक जीव, एवी रीते जूदा जूदा जीव होय कोई कहेशे जे आखा झाडमां एक जीव तो फलना, वी-

जना जूदा जूदा जीव केम ? ते विषे समजवुं के, स्त्रीना आखा शरीमां एक जीव छे, पण तेना शरीरमां गर्भ जेटला रहे छे ते गर्भना जीव जूदा जूदा होय छे. तेम बीजना जीव जूदा जूदा होय. एवां जे फलादिक तेने प्रत्येक वनस्पति कहीये. मोटां झाम वम, पीपला, नालीएरी विगेरे तथा घउं प्रमुख अनाजनां झाम तथा शाक, फल, चोळा प्रमुखना वेलादिक ए सर्वे प्रत्येक वनस्पति जाणवी. ते बे प्रकारे पर्याप्ता अने अपर्याप्ता. वनस्पतिकायना जीवने च्यार पर्याप्ति कही छे, ते पुरी करी नथी त्यां सुधी अपर्याप्तो, पूरी करे त्यारे पर्याप्तो. अपर्याप्ति अवस्थाये पण केटलाएक मरण करे छे. पर्याप्ति प्रत्येक वनस्पतिना झाम, वेला मोटामां मोटा एक हजार जोजन अधीकना थाय छे, ए वेलाउ निरावाध जगामां लांबा जाय छे ते जाणवुं. अने अपर्याप्तानुं शरीरनुं मान अंगुलना असंख्यातमा भागनुं कह्युं छे. उत्कृष्ट आयुष्य दश हजार वरसनुं कह्युं छे. जघन्य अंतर्मुहूर्तनुं कह्युं छे, अने अपर्याप्तानुं जघन्य उत्कृष्ट अंतमुहूर्तनुं छे. एक पर्याप्तानी निश्राये असंख्याता अपर्याप्ता रह्या छे. ए अधिकार पन्नवणाजीमां विस्तारे कह्यो छे. लीली वनस्पतिमां ए अपर्याप्ता संभवे छे, हवे साधारण वनस्पतिकाय ते एक शरीरमां अनंता जीव रह्या छे, तेने अनंत काय कहीये, अने निगोद पण कहीये. ते निगोद बे प्रकारे छे. एक बादर निगोद ते वनस्पति दृष्टिए देखवामां आवे छे. आदू, मूला, गाजर, सूरण, रतालु, आदे कंदनी जातो जे कंद काप्या छतां पण पाछा उगे ते तथा झाळोमां उगता अंकुरा जे जे पत्र फल प्रत्येकने योग्य नथी थयां, जेनी नस बीज परव देखाय नही, भाग्या छतां सरखुं भागे, कापेला जेवुं देखाय, भागेली जगोये पाणीना मोतीआ बाजे, एवी वनस्पतिने अनंतकाय कहीये, ने साधारण वनस्पति तेनेज बादर निगोद कहीये. ते जीव पण बे

प्रकारे, पर्याप्ता तथा अपर्याप्ता एमनुं शरीर अंगुलना असंख्यातमा भागनु छे, आयुष्य अंतर्मुहूर्तनुं हवे सूक्ष्म निगोद ते चउदराज लोकमा सर्व ठेकाणे भरेली छे, सूक्ष्म निगोद विनानी कोइ जगो खाली नथी एनी सूक्ष्मता एवी छे के अंगुलना असंख्यातमा भागमा निगोदना असंख्याता गोला छे, तेमाना एक गोलामा असंख्याती निगोद छे, ते एक निगोदमा अनंता जीव छे, ते जीवोनुं आयुष्य एक श्वास लइने मुकीए तेटलामा सत्तर भव साडा सत्तर भव करे थाय, एटले एटली वार मरवुं उपजवुं थाय, ए जीव पण पर्याप्ता अने अपर्याप्ता बे प्रकारे छे. ए बे भेद प्रत्येकना, बे भेद बादर निगोदना, बे भेद सूक्ष्म निगोदना—ए त्रणना मली वनस्पतिना जीवना छ भेद थया

२ बेइंद्री जीव ते शंख, कोडा, गंडोला, अलसीयां, मेहेर, कर्मीया, शर्मीया, आदे जेने शरीर ते फरस इंद्रि तथा मुख ते रस इंद्रि ए बे इंद्रि छे ते बे इंद्रि जीव जाणवा ए पण पर्याप्ता अने अपर्याप्ता बे भेदे छे ए जीवनुं शरीर मोटामा मोटुं बार जोजननु होय, एवा शरीरवाला जीव विशेषे करीने चोथा आरामा थाय छे, ते कालमा मनुष्यनुं शरीर पण मोटु होय छे, केटलाएक जीवने भगवंतना वचननी प्रतीत नथी होती तेने व्यामोह थाय छे के आटलुं मोटु शरीर केम होय.पण बुद्धिमानने तथा भगवंतना वचननी श्रद्धावालाने शंका थती नथी. कारण जे हालमा एक पेपरमा वाचवामां आवेलु हतुं के एक गीलोडीना हाडका सत्त गजना हता, ने देखीती तो हालमा चार तसुनी देखाय छे हाडका आटला मोटा देखाय छे कोई काले एवी मोटी पण थती नीश्चे थाय छे तेम हालमा देश फरथी पण मोटा नानानो फेर देखाय छे काठेजी बलदीया जेवा मोटा थाय छे तेवा मोटा बलदीया आ देशमां थता नथी. घोडा वि-

लायती एटला मोटा आवे छे के तेवा मोटा गुजरातमा थता नथी. माणसो पण पंजाबमां ऊंचां मजबूत थाय छे तेवां गुजरातमां थतां नथी. एनुं कारण एटलुं छे के हवा पाणीना फेरफारथी थाय छे. तेम कालना फेरफारथी फेरफार थाय एम जाणी बुद्धिवानने शंका थती नथी. ए बेइंद्रि जीवनुं आयुष्य बार वरसनुं उत्कृष्ट थाय छे.

२ तेइंद्रि जीवना बे भेद छे ते पर्याप्ता अने अपर्याप्ता. ते जीव—मांकण, कीडा मंकोडा वीगरे जाणवा ए जीवनुं शरीर मोटामां मोटुं त्रण गाउ सुधीनुं थाय छे, तथा आयुष्य उत्कृष्ट उगणपचास दीवसनुं कह्युं छे. ए पर्याप्तानुं जाणवुं, अने अपर्याप्तानुं तो अंतर मुहूर्तनुं होय.

२ चौरिंद्रि जीव पण बे प्रकारे पर्याप्ता अने अपर्याप्ता ए जीवने पांच पर्याप्ति छे ते पूरी करे त्यारे पर्याप्ता अने तेमांथी अधुरी पर्याप्ति होय ते अपर्याप्ता. माखी, मछर, वींछु, प्रमुख जीव जाणवा. ए जीवने फरस इंद्रि, रस इंद्रि, घ्राण इंद्रि, चक्षु इंद्रि ए चार इंद्रि होय. आयुष्य उत्कृष्ट छ मासनुं होय, शरीर उत्कृष्ट एक जोजननुं होय.

२० पंचेंद्रि तिर्यंचना वीश भेद ते नीचे प्रमाणे जाणवा.

१ जलचर ते पाणीमां चाले ते मछ,ते माछलां,सुसुमार वीगरे.

२ थलचर ते जमीन उपर चाले ते गाय, भेंस, बलद, हाथी, घोडा वीगरे.

३ खेचर ते आकाशे उडे ते पंखीउनी जाति.

४ उरपरिसर्प ते पेटे चाले तेमां सर्प प्रमुख जाणवा.

५ भुजपरिसर्प ते भुजाए चाले ते नोलीया खीसकोली प्रमुख.

ए पांच प्रकारना तिर्यंच ते गर्भथी उत्पन्न थाय ते, गर्भज

ए स्त्री पुरुषना संजोगथी उत्पन्न थाय छे, ए जीवनां शरीरनां मान तथा आयुष्य, क्षेत्र,काल, जीव अपेक्षाये जूदा जूदा छे,ते पन्नवणाजी जिवाभिगमथी वा जीव विचारथी जाणवा ए जीव कर्म भू-मिमा तथा अकर्म भूमिमा उत्पन्न थाय छे बीजो भेद सम्मूर्छिम तिर्यंच ते स्त्रीना संजोग विना उत्पन्न थाय छे जेम के देडको मरी गयो होय ने तेनुं कलेवर होय ते कलेवरमा वरसादनो छा-टो पडे के-पाछा तेमा देडका उत्पन्न थाय, वीछुनुं कलेवर होय तेमा वीछु उत्पन्न थाय छे, छाणमां पण वीछु उत्पन्न थाय छे, तेम केटलीक वस्तुना प्रयोगमा जीवो उत्पन्न थाय छे, ते जीवने सम्मूर्छिम कहीये ए पण पाच प्रकारे थाय छे एटले गर्भज अने सम्मूर्छिम मलीने दश भेद थया,ते गर्भजने छ पर्याप्ति छे,सम्मूर्छिमने पाच पर्याप्ति छे ते प्रमाणे पर्याप्ति करे तेने पर्याप्ता कहीये पर्याप्ति पुरी नथी करी त्या सुधी अपर्याप्ता कहीये ए प्रकारे वे भेदे गणता वीश भेद थाय, ते वीश प्रकारना तिर्यंच पंचेंद्रि जाणवा एकेंद्रिथी तिर्यंच पंचेंद्रि सुधीना भेद एकठा करतां अ-डतालीश भेद सर्व तिर्यचना थाय.

हवे नरकना जीव चउद प्रकारे नरकना नामना भेदथी थाय छे. रत्न प्रभा नरकना नारकी१ शर्करा प्रभा नरकना नारकी २ वालुका प्रभा नरकना नारकी ३ पंक प्रभा नरकना नारकी ४ धुम प्रभा नरकना नारकी ५ तमः प्रभा नरकना नारकी ६ तमतमा प्रभा नरकना नारकी ७.

ए साते नरकमां जीव उपजे ते नारकी कहीये पेहली न-रकना करता वीजी नरकमा दुख वधारे, आयुष्य वधारे, शरीर मोटुं एम अनुक्रमे सातमी नरक पर्यत एक एकथी वधारे दुख, आयुष्य शरीर पण वधारे छे ए नरकमा दुख एवा छे जे दुखनो जोडो मनुष्य लोकमा नथी. केटलीएक नरकमा परमाधामीनी

करेली वेदना छे. केटलीएक नरकमां स्वभाविक क्षेत्र प्रभावे वेदना छे. जे जे आकरां पाप करे तेनां फल नरकमां भोगववानां छे. आयुष्य वधारेमां वधारे तेत्रीस सागरोपमनुं छे, तेमां असंख्याता काल जाय, तेटला काल सुधी दुःख भोगववानुं छे अने मनुष्यमां विषयनुं अल्प काल सुख मानेलुं माणवुं. वस्तुपणे तो विषयमां सुख नथी, पण अज्ञानपणे सुख मानी विषय भोगवे छे अने तेनां फल जीव नरकमां भोगवे छे. ए नरकना जीवने दश प्राण छे, छ पर्याप्ति छे, ते बांधी न रह्यो होय त्यां सुधी अपर्याप्तो कहेवाय ने पूर्ण बांधे एटले पर्याप्तो. ते पर्याप्ता अने अपर्याप्ता एम बे भेद गणातां चउद भेद थाय, एटले चउद प्रकारना नारकी.

ए एकेंद्रिथी पंचेंद्रि सुधीना सर्वे भेद भेगा करीये त्यारे चारे गतिना कुल ५६३ भेद थाय ते नीचे प्रमाणे.

| | |
|---|---|
| १९८ भेद देवताना | ३०३ मनुष्यना भेद. |
| ४८ तिर्यंचना भेद | १४ नारकीना भेद. |

एम बधा मली सामान्यथी जीवना ५६३ भेद थाय छे विस्तारथी तो जीवना भेद तथा जीवनां स्वरूपनुं वर्णन करतां आयुष्य पण पहोंचे नही एटलुं वर्णन शास्त्रमां करेलुं छे, माटे विस्तार रुची जीवोए शास्त्र अभ्यास करी जाणी लेवा, पण ज्यां सुधी अज्ञाननुं जोर छे त्यां सुधी जीवने वीतराग भाषित शास्त्र जोवानुं तथा सांभलवानुं मन थशे नही, एम करतां जबराइथी वा शरमथी सांभलशे तो श्रद्धा करशे नहीं तेनुं कारण एटलुंज छे के पूर्व भवनी विपरीत श्रद्धानी संज्ञा चाली आवे छे, तेना जोरथी साची वस्तु रुचे नही. उन्मार्गनी रुची थाय. विपरीत वस्तु उपर कल्पित न्याय जोडी तेनी श्रद्धा करे. बीजा जीवने पण कुयुक्ति करी समजावी उन्मार्गमां पाडे अने तेवीज रीते अनेक जूदा जूदा धर्मो थइ गया छे, अने जे माणस जे ध-

मेने माने छे, ते धर्ममा शुं कह्यु छे ते पण जाणता नथी. पोते जेने देव माने छे ते देव शा कारणथी मानुं छुं, ते देवमा देवना लक्षण छे के नथी ते जोता नथी केटलाएक ब्राह्मणोए क्रीश्चियन धर्म अंगीकार करी वेद धर्म छोडी दीधेलो, तेज वेद धर्ममा शी भूल छे ते जाणता नथी तेम वेदमा कह्याथी विपरीत चालीए छीएं ते पण जाणता नथी एक क्रीश्चियनने पूछएलुं तो संतोषकारक भूल पण बतावी शक्यो नही, तेनुं कारण एटलुंज छे के स्त्री अने धनना लोभे धर्म अंगीकार करे छे, तेने काई पछी धर्म जाणवानी जरुर पडती नथी, अने अज्ञानना जोरथी सत्य खोलवानुं चित्त थतु नथी. केटलाएक ब्राह्मणो जैननी निंदा करे छे ते एटला सुधी के वेश्याना घरमा पेसवुं पण जैन मदिरमां न जवुं, आ केटलु भूल भरेलुं छे ते नीचेनी हकीकतथी सहेज समजाशे महाभारत शास्त्रमा नीचे प्रमाणे श्लोक छे.

युगेयुगे महापुण्यं, दृश्यते द्वारिकापुरि।
अवितीर्णो हरि र्यत्र, प्रभासे शशि भूषणः ॥१॥
रैवताद्रौ जिनो नेमि र्युगादिर्विमलाचले।
ऋषीणामाश्रमा देवः मुक्ति मार्गस्य कारणम् ॥२॥

आ मुजब महाभारतमा श्लोक छे--ए श्लोकमा जैननुं तीर्थ जे रैवतगिरि हालमां गिरनारजी कहेवाय छे, तथा त्या नेमिनाथजी महाराज बावीसमा तीर्थंकर तेनोज महिमा जैनीयो माने छे, तेज तीर्थनुं तथा नेमिजिननुं बहुमान पूर्ण कर्युं छे वली विमलाचल जे हालमा शत्रुंजय कहेवाय छे. त्या युगादिजिन एटले ऋषभदेवजीने युगादिज जैनशास्त्रमा कह्या छे, तेम भारतमा पण कह्या छे ए बे तीर्थने मोक्षनुं कारण आ श्लोकमा बता-

व्युं छे, तो भारतना माननारने ए जैनना तीर्थने अने देवने मोक्ष कारणभूत सेववा जोईए के निंदा करवी जोईए? भारत तो हमेश वंचाय छे, ते छतां आ वात ध्यानमां न रहेतां अवलो रस्तो पकड्यो छे ते अज्ञाननी राजधानीनुं फल छे. पण जेने कांईक अज्ञान पातलुं पड्युं होय तेना कान खोलवा सारु आ बावत जणावी छे. हजु बीजा पण स्थानमां छे ते नीचे लखीए छीए.

॥ ऋग्वेदनो मंत्र ॥

ॐ त्रैलोक्य प्रतिष्ठितान् चतुर्विंशति तीर्थंकरान् ऋषभाद्यान्वर्धमानांतान्सिद्धान् शरणं प्रपद्ये ॥

॥ यजुर्वेदनो मंत्र ॥

ॐ नमोर्हतो ऋषभाय ॐऋषभपवित्रं पुरहुतमध्वरं यज्ञेषु नग्नं परममाह संस्तुतावारं शत्रुंजयं तं सुरिन्द्रमाहुतिरिति स्वाहा ॥

॥ यजुर्वेदनो बीजो मंत्र ॥

ॐत्रातारमिन्द्र ऋषभंवदंतिअमृतारमिन्द्र हवेसुगतं सुपार्श्वे मिन्द्रहवे सक्रमजितंतद्वर्द्ध मानपुरहुतमिंद्र माहुतिरिति स्वाहा ॥

॥ त्रीजो मंत्र ॥

ॐनग्नं सुधीरंदिग्वाससं ब्रह्मगर्भसनातनं उपैमिवीरं पुरुषमर्हंतमादित्यवर्णं तमसः पुरस्तात् स्वाहा ॥

पुनः ऋग्वेद. मं. १ अ. १४ सू. १०

स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्ट नेमिः ॥

आ रीतना वेदोमा मंत्र छे; ते दयानंद छलकपट दर्पण नामनी चोपडीमा में वाच्या पाने ११९ ते उपरथी वेदना जाणकार शास्त्रीने वताव्या, अने पूछ्युं के आ मंत्रो तमारा वेदमा छे ? त्यारे ते शास्त्रीये सत्य दशा धरीने कह्यु जे अमो नित्य वेदनुं अध्ययन करीये छीए, तेमा आवे छे आ शास्त्रीना केहेवाथी खात्री थई के वेदमानाज छे, तेथी आ चोपडीमां दाखल कर्या, जे हठ विनाना होय तेने समजाय के जैनना देवने पण वेदवालाए मान्य कर्या छे तो तेमनी निंदा केम करुं–वली जैनधर्म नवीन छे एवुं जेना मनमा होय तेने समजाय के जैनना ऋषभदेवजीथी ते चोवीशमा महावीर स्वामी पर्यंत चोवीस तीर्थंकरना वहुमान नमस्कार कर्या छे, तो ए जैनधर्मना देव थया पछी वेद थया के केम ? जो वेद अनादि होत तो ए देवनुं स्मरण थात नही माटे जैनधर्म अनादि छे ए निश्चे वेदथीज थाय छे पण आ वात जेने मिथ्यात्व पातलुं पड्युं हशे तेने समजाशे पण जे हठ कदाग्रही छे, अज्ञाननु जोर पूर्ण छे तेवा माणसने विचार करवानी वुद्धिज जागती नथी अने खरुं समजातुं नथी करता आव्या ते करवुं एटलुंज समजी राख्यु छे, अने ज्यारे अज्ञान खसशे त्यारे खरुं खोटु खोलवानी बुद्धि जागशे, अने खरुं अंगीकार करशे जे जे माणस पोताना देव माने छे, अने ते देवोए धर्म वताव्यो छे, ते प्रमाणे ते देवो धर्ममां वर्त्या छे के नही, ते सारु देवोना शास्त्रमा चरित्र छे ते जोवा जोईए, अने ते चरित्रमा जेम आपणने चालवा कहे छे तेम ते पुरुष चालेला नथी अने सर्वज्ञपणुं माने छे ते चरित्रथी सिद्ध थाय छे के नही, अने ते सिद्ध न थाय तो पछी तेमने देव शा सारु मानवा एवो विचार अज्ञान खसशे त्यारे थशे. त्यासुधी थशे नही. वली गुरुपणुं धरावे छे, अने लोकने धर्म उपदेश देछे के अहिंसा धर्म सर्वमा मुख्य छे एम समजावे छे पण पोते हि-

सानो त्याग करता नथी. असत्य बोलवुं नहीं ए छये दर्शनवालाने मान्य छे, तेम छतां गुरु थइने असत्य बोलतां डरे नहीं, चोरी करवी नही, कोईने ठगवुं नही, ए जगत निंदनीक छे. सर्व धर्ममां निषेध छे. ते छतां गुरु नाम धरावे अने चोरी ठगाइ कपटनां काम करे. पर स्त्रीनो त्याग सर्व धर्ममां ने जगतमां निंदनीक छे, तेम छतां गुरु थइ सेवकनी स्त्री, बेन, मा, छोकरीनी साथे मैथुन सेवतां डरे नहि. साधुने धन राखवुं नहि जोईए ए आर्य धर्मनी मर्जादा छे तेम छतां सेवक पासेथी धन ले. वली कपट लुच्चाइ करी धन मेलवे. सेवको उपर जुलम करीने धन ले. आवी वर्तणुकना करनारने गुरु माने, हजारो रुपीआ आपे आ अज्ञानदशानी प्रबलता छे. आवाने गुरु मानवानो विचार जेने नथी, ते बीजा सत्य असत्य धर्मने ते शुं तपासे ? अज्ञानपणे एवा अज्ञानी गुरुथी ठगाय छे एटलेथी बस नथी. आवते भव खरा धर्मनी निंदा करवाथी जे कर्म बंधाय छे तेथी भवोभव जीव दुर्गतिनां दुख भोगवशे, अने जे पुरुष आत्मार्थी थयो छे, एटलुं अज्ञान खस्युं छे तेना प्रभावथी न्यायनी बुद्धि जागे छे तेथी सत्य असत्य मार्गनी परीक्षा करी खोटो मार्ग त्याग करी सत्य मार्ग अंगीकार करे छे. जेम गौतमस्वामी महाराज श्रीमन्-महावीर स्वामी भगवाननी महत्त्वता सांभली घणाज रोशमां तथा अहंकारमां व्याप्त थया हता, अने भगवान साथे वाद करवा समोसरणमां आव्या हता, पण भगवंते वेदनाज अर्थ समजावी खरो मार्ग गौतमस्वामी महाराजने समजाव्यो. ते न्यायनी बुद्धिथी विचारी सत्य जाणी ग्रहण कर्यो अने पोताना असत्य धर्मनो त्याग कर्यो, अने भगवान सर्वज्ञ छे एवुं दृढ करी पोते भगवानना शिष्य थया. भगवंते वास क्षेप कर्यो. एटलामां भगवानना प्रभावथी आवर्ण खपवाथी द्वाद-

शागीना जाण थया अनुक्रमे शुक्ल ध्यान धरी घातीकर्म खपावी केवलज्ञान पाम्या अने मोक्षे पोहोच्या, तेम आत्मार्थी जे जे पुरुषोए अज्ञान खपावी ज्ञान पामीने अज्ञान खपाववानो मार्ग दर्शाव्यो छे, ते मार्ग अंगीकार करीने वर्त्तवु के सहेजे अज्ञान खपी जशे जे पुरुषने विषे अज्ञाननो अंश पण रह्यो नथी तेज सर्वज्ञपणाने पामे छे अने भगवान् पण तेज कहेवाय छे

१४ मिथ्यात्वनामा दोष ते मिथ्यात्व कोने कहीये खरी वस्तुने खोटी माने, खोटी वस्तुने खरी माने, सत्यने असत्य माने, असत्यने सत्य माने, धर्मने अधर्म माने, अधर्मने धर्म माने, देवने अदेव माने, अदेवने देव माने, चेतनने अचेतन माने, अचेतनने चेतन माने, जे जे पदार्थ छे तेना जे जे धर्म रह्या छे तेथी विपरीत धर्म तेना माने, न्यायने अन्याय माने, अन्यायने न्याय माने; आवी विपरीत बुद्धि थाय ते मिथ्यात्वनी राजधानी छे इहा कोइने प्रश्न थशे के अज्ञाननामा दूषण कह्युं तेमा अने मिथ्यात्वमा शो फेर छे ते विषे जाणवुं जे अज्ञाने करी जड बुद्धी थाय छे अने मिथ्यात्वे करी विपरीत बुद्धी थाय छे. आ फेर छे मिथ्यात्व जेने छे तेने अज्ञान पण छे अने जेने अज्ञान छे तेने मिथ्यात्व पण छे ए बे साथेज रहे छे एटले एकाकार लागशे पण बे शब्दना अर्थ जुदा छे तेम भाव पण जुदा छे ए मिथ्यात्वनी बुद्धिवालाने बहु प्रकारे छे ते समजवा सारु सिद्धांतकारे पचवीस भेद कह्या छे अने ते पचवीस प्रकारे श्रावकना बार व्रत अंगीकार करे छे त्यारे सम्यक्त्व अंगीकार करे छे त्यारे पचीस प्रकारे त्याग करे छे ते स्वरूप किंचित इहा लखु छु

१ अभिग्रह मिथ्यात्व ते कुगुरु कुदेव कुधर्मनो खोटो हठ पकडेलो छे ते मिथ्यात्वना जोरथी गर्दभ पुंछनी परे मुके नही एटले कोईक पिताए पुत्रने समजाव्यो के जे पकडवु ते मुकवु

नहीं ते वातनुं विशेष स्वरूप समज्या विना ते वात चित्तमां नि-
श्चित आपी राखी पछी कोईक वखत बजारमां जाय छे त्यां ग-
धेडुं दोडतुं आव्युं तेने रोकवाने पुंछडुं पकड्युं, त्यारे तेणे ला-
तो मारवा मांडी ते लातो खाया करे पण पुंछडु मुके नही.
ते जोई लोकोने दया आववाथी तेने समजाव्यो जे ए पुंछडुं
मुकी दे नीकर मरी जइश त्यारे एकज जवाब आप्यो जे म्हारा
बापे शिखामण आपी छे के-जे पकड्युं ते मुकवुं नहीं, माटे हुं
पकडेलुं छोडीश नहीं; एम कही मुक्युं नही अने लातो खाईने
दुखी थयो. तेम आ मिथ्यात्वना जोरथी सुगुरु साचो मार्ग बतावे,
घणी रीते समजावे, तो पण सुगुरुनुं वचन माने नहीं अने कहे
जे बापदादा करता आव्या तेम करवुं, घरडा शुं गांडा हता? एम
हठ पकडीने खरी वात समजे नहीं अने प्रत्यक्ष कुगुरु पोतानी
स्त्री वा मा बेन साथे खोटी रीते वर्तता होय तो पण बापदा-
दानो हठ पकडी कुगुरुने मुके नही ते अभिग्रहीक मिथ्यात्व.

२ बीजु अनभिग्रही मिथ्यात्व ते साचा देव अने खोटा
देव कुगुरुने सुगुरुने सत्य धर्मने असत्य धर्मने बधाने सरखा
माने. सुदेवने पण नमस्कार करे अने कुदेवने पण नमस्कार करे.
खराखोटानो भेद नथी. मुखे पण बोले के सर्व देवने नमस्कार
करवा पण तेनो परमार्थ नथी जाणतो के देवने तो नमस्कार क-
रवा योग्य छे पण देवपणुं नथी ने तेमां देवपणुं केम मानवुं
तेवो विचार नथी तेथी गुणी निर्गुणी सर्वेने सरखा माने छे, तेमां
भाग्य उदयथी सुगुरु मले तो कल्याण, पण ते मली न शके. जो
मले तो एवी बुद्धि रहे नहीं ने एवी बुद्धि रही छे तेथी जणाय
छे के कुगुरु मल्या छे. अने तेनी संगतथी तत्त्वने अतत्त्व माने
तेथी शुद्ध आत्मधर्म, अने आत्मधर्म प्रगट करवानां कारणो मली
शके नही. अने भवनो निस्तार थाय नहीं. माटे आत्मार्थी स-

त्य असत्यनी परीक्षा करी शुद्द देवगुरु धर्म अंगीकार करवो के अनभिग्रहीक मिथ्यात्व टली जाय.

३ अभिनिवेशिक मिथ्यात्व ते सत्य देवगुरुने जाणे पण मिथ्यात्वना जोरथी तेने आदरे नहीं कोई समजावे तेने कहे जे वापदादा मानता आव्या ते केम मुकाय. जो मुकीये तो नाक जाय बाकी अमे जाणीये छीए जे सारा तो नथी एवो जवाव आपे अने ममत्वे करी खोटी प्ररूपणा करे, खोटी खेच करे, उनमार्ग वर्त्तावे, आत्माने कर्मबंधनो भय नथी वीतरागनो मार्ग साचो जाणे तो पण ते रीते पोताना अहंकारने लीधे प्ररूपे नही, पोते वर्त्ते नही ने साचा उपर द्वेष धारण करे. एवा इत्यादी, पार्श्वनाथजी महाराजनी परपरामा थएला साधु, ते गोशाला जेवा रहेला तेमने श्रीमत् महावीर स्वामी महाराजना श्रावके जइने कह्युं जे आपे श्री पार्श्वनाथजी महाराजनो पण उपदेश सांभळ्यो छे अने गोशालानो उपदेश सांभळ्यो छे, तेमा सत्य शुं छे? त्यारे जवाव दीधो जे महावीर स्वामी महाराज जेम पार्श्वनाथजी महाराज उपदेश देता हता तेमज दे छे, पण हमारे ममत्त्व बंधायो छे माटे वीरनो मरोम उतारीशुं हमो दुर्गति जता वीता नथी एवो जवाव अभिनिवेशिक मिथ्यात्वना जोरथी दीधो, तेम आज पण साधु जाणया छता आवा आग्रहथी उत्सूत्र वोलता मरता नथी वीजा जीवोने उनूमार्गनो उपदेश देइने तेमने पण उन्मार्गने विषे जोडे वीतरागना सत्य मार्गनी निंदा करे. आवी दशा छे ते ए मिथ्यात्वना जोरनी छे एवी दशा छे त्या सुधी पोताना सहज स्वभावने ओलखशे नहि, विभाव स्वभावने छांडशे नही. तेम शुद्द तत्त्वनी श्रद्धा पण करशे नही, माटे ए मिथ्यात्वनो परिहार करवो.

४ संशय मिथ्यात्व ते वीतरागना वचनमां संशय पडे. जेम

केशास्त्रमां रीखवदेवजी महाराजना वखतमां शरीर पांचसें धनुष्यनां हतां, आयुष्य क्रोम पुर्वनुं हतुं, एवुं शास्त्रमां सांभलीने शंका करे जे आटलुं मोटुं शरीर, आयुष्य होय नही, एम मानी प्रभुना वचन सर्दहे नहीं, पण विचार करे नहीं के आवी गया कालनी वावतो तथा अरूपी पदार्थनी श्रद्धा आप्त पुरुष जे सर्वज्ञ तेमना वचननी प्रतीत करवाथी थाय छे, माटे आप्त पुरुषनी खातरी प्रथम करवी. ते खातरी करवानुं साधन हालमां एटलुं छे के जे जे लोक जे जे देवने माने छे ते ते देवने ते सर्वज्ञ माने छे, तो ते देव सर्वज्ञ छे के नहीं ते मध्यस्थ बुद्धिथी तपासवा सर्वे देवोनां चरित्रो जोवां; तेमां सर्वज्ञतानी खामी जणाय छे के नहीं. जेम के महादेवजीए पार्वतीना बनावेला पुत्रने पुत्र न जाणतां जार पुरुष जाण्यो. वली तेनुं माथुं क्यां गयुं ते ज्ञानमां जणायुं नहीं तेथी हाथीनुं माथुं लावीने पेला पुत्रने चोम्युं. एवा दाखला जोवाथी सर्वज्ञ छे के नथी ते खात्री थशे. तेमज श्रीमत् महावीर स्वामी भगवान् केवलज्ञान पामी सर्वज्ञ थया त्यार बाद सर्वज्ञतानी खलना कोइ पण ठेकाणे थती नथी, तो जे पुरुषमां सर्वज्ञतानी खामी नथी जणाती तेवा पुरुषना वचनमां संशय करवो नहीं जोइए. युक्ति करवानी शक्ति होय तो ते युक्तिये तपास करवी. हालमां पण हवा फेरफारथी मजबूत माणस देखाय छे, तेम ते कालनी हवा एवी अनुकुल तेथी एवा बनी शके. एवा विचारो करवाथी अमने तो कोइ पण संशय वीतरागना वचनमां थतो नथी ने बीजाना चरित्रो जोयां तेमां सर्वज्ञतानी खामी जणाय छे. हालमां चरित्र चंद्रिका नामनी चोपमी छपाइ छे तेमां घणा देवोनां चरित्र छे ते में वांची छे. तेम परीक्षकोये मध्यस्थ बुद्धिए वांचवी. ते चोपमीमां महावीर स्वामीनुं पण चरित्र छे ते बराबर लख्युं नथी, तो पण तेमां स-

र्वज्ञतानी खामी पमती नथी हवे जैनना द्विजवचनचपेटा हे-
मचड्राचार्यनु करेलुं तथा धर्मपरीक्षानो रास जोशो तो केटला-
एक देवोना चरित्र जणाशे अने तेमनी सर्वज्ञतानी खामी जणाशे
माटे जे पुरुषमा खामी नथी ते पुरुषना वचन प्रमाण जेने ए मि-
थ्यात्व खश्यु हशे ते करशे जेने परमात्माना वचनमा कोइ पण
वावत माटे संशय तेने संशय मिथ्यात्व जाणवुं.

५ अनाज्ञोगीक मिथ्यात्व ए मिथ्यात्ववालाने धर्म कर्मनी
खवर नथी, तेनी खोजना नथी, मुढतामाज रहे ठे, धर्म सनूमुख
दृष्टीज नथी, जेम के एकेडी प्रमुख जीवो अव्यक्तपणामाज
काल गुमावे ठे तेने अनाज्ञोगीक मिथ्यात्व कहीये

हवे दश प्रकारे मिथ्यात्व ठाणाग सूत्रमा कह्या ठे तेने अ-
नुसरीने लखु ठु

१ धर्मने अधर्म माने ए मिथ्यात्व हवे धर्म वे ते वे प्रकारे
ठे एक निश्चय धर्म ते आत्म स्वज्ञावमा रहेवुं ते अने तेथी
विपरीत जे जम धर्म ठे, तेमा प्रवर्तवुं अने तेने धर्म मानवो ते
अधर्म पुद्गल प्रवृत्ति वे प्रकारे ठे एक पुद्गल प्रवृत्ति आत्म धर्म
प्रगट थवाना कारणरूप ठे, ते पण आदरवा योग्य ठे, तेने व्य-
वहार धर्म कह्यो ठे ए वे धर्मने जे जे रूपे ठे ते रूपे मानवा ते
धर्म अने तेथी विपरीत मानवु ते मिथ्यात्व व्यवहार धर्म, जे
जे गुणस्थाने गुणस्थान मर्यादा प्रमाणे न आदरे अने धर्म माने
ए पण मिथ्यात्व ठे हृदयमा निश्चय धर्म धारण करवो ते न करे
अने व्यवहार वर्त्तनानेज निश्चयरूप माने तो ते पण मिथ्यात्व ठे
जे जे अंशे आत्मा निर्मल थाय, कषायादिकथी मुकाय, तेने नि-
श्चय धर्म कहीए, ते प्रगट थाय एवा कारण अंगीकार करवा का-
रणने कारणरूप मानी वर्तता ए मिथ्यात्व टली जशे

२ अधर्मने धर्म माने एटले अनादिकालनो जीव अधर्मने

सेवी रह्यो छे. वली अधर्मीना कुलमां जन्म पाम्यो छे तेथी ते-
नी वार्ता सांभली ते रीतनी श्रद्धा करे अने हिंसा करीने धर्म
माने; जेमके केटलाएक लोक वींछी, सर्प, वाघ, सिंह एवा हिंस-
क जीवने मारवा ते धर्म छे एम माने वली बकरीइदमां बकरा
मारवा ते धर्म छे आवी रीते अज्ञानपणे जीव हिंसा करीने धर्म
माने ते अधर्मने धर्म मान्यो कहीए वली लोकमां आर्य लोक
कहेवाय, दयालु कहेवाय ते छतां केटलाएक बकरा घोडा विगेरे
यज्ञ करीने तेमां होमे अने तेने धर्म माने; कोइ पण जीवने दुःख
थाय तो तेनुं फल एज छे के ते पापथी आपणे दुःख भोगववुं
पडे एवुं सर्व धर्मवाला माने छे. तेम छतां आवा प्राणीने दुःख
देवामां पाप मानता नथी एज अधर्मने धर्म मान्यो कहीए, माटे
जे जे माणस कोइ पण जीवने दुःख देवुं, जूठुं बोलवुं, चोरी
करवी, स्त्री गमन करवुं, धननी तृष्णा ए वस्तुमांथी कोइ
पण वस्तु करीने धर्म माने, ते अधर्मने धर्म मान्यो समजवो.
अहीआं कोइ प्रश्न करशे जे तमारा जैनीउ गाडी घोडा उपर
बेसनारा, सारा आभूषण घरेणाना पहेरनार, खाटला उपर सारी
तलाइउ नाखी सुनारा, रोज सारा मिष्टान्न भोजनना करनारा
तेवा सुखीआ माणसने संसार छोडावी दिक्षा आपी उघाडे पगे
चलावोछो, उघाडे माथे फरवो छो, भोंय उपर सुवाडोछो, घर घर
फरीने भिक्षा मंगावोछो. जेवो आहार मले तेवो खवरावो छो अने
सुंदर विगयो खावाना बंध करावोछो तो ए शुं ? तेने दुःख देइ
धर्म मान्यो न कहीये, ए विषे समजवुं के अमारा जैनी मुनि
महाराजो कोइने पण जबराइथी एवी रीते करता नथी, ने
जबराइथी एमांनुं कंइ पण कोइने करावे ने धर्म माने
तो तमो कहोछो तेम थाय. पण अमारा मुनियो तो संसारमां
शुं शुं दुख छे, वली संसारमां दुखने सुख मानवाथी शुं फल थाय

छे मोक्ष साधन शी रीते थाय छे तेनो धर्म उपदेश दे छे ते धर्म उपदेश आत्मार्थी सांभली जक्ष जे शरीर तेमा रही जे जे अज्ञानपणानी प्रवृत्ति अनिष्ट लागे छे अने आवते भव विषय कषायना कडवा फल जाणवामां आवे छे ते जाणीने संसारनो त्याग करी एवी प्रवृत्ति पोतानी प्रसन्नताये करे छे ने तेम करवाथी संसारमां जे जे धन कमावाना दुख, राधवाना दुख, वस्तु लाववाना दुख, आभूपणनो भार उचकवाना दुख, विषय भोगवी शरीर खराब करवानां दुख, केमके विषय भोगवती वखत शरीरने केटली मेहेनत पडे छे, वली विषय भोगवी रह्या पछी पण शरीरनी स्थिति केवी थाय छे! एवा दुखो टली जाय छे करोड पतिने पण धन संबंधी केटली फीकरो करवी पडे छे कुटुंब होय तो कुटुंबना झगडाना केटला दुख ? तेने अज्ञानपणे दुख मानता नथी पण जो बुद्धिथी विचार करे तो संसारमा सवारथी उठे त्यारथी ते रात्रे सुवे त्या सुधी केटला दुख भोगववा पडेछे. तेमानुं एक पण दुख साधुपणामा नथी सदाकाल आणंदमा जाय छे नवु नवुं ज्ञान थाय छे तेथी बुद्धिवानो सदा प्रसन्नतामा रहे छे माटे जैनीओ कोइने दुख देइने धर्म मानता नथी तेम जे जे आत्मार्थी होय तेने उपर कहेला पाचे, अधर्ममाथी कोइ पण अधर्म प्रवृत्ति करीने धर्म मानवो नही ने जे माने ते अधर्मने धर्म मान्यो कहीये

३ मार्ग जे मोक्ष मार्ग जे मार्ग साधी वीतरागपणाने पाम्या छे, आत्माना ज्ञान दर्शन चारित्र रूप गुण प्रगट कर्या छे, केवल ज्ञाने करी जगतना भाव एक समयमा जाणी रह्या छे, तेवा पुरुषे देखाडेलो मोक्ष मार्ग एटले मोक्षना साधन ते साधनने उन्मार्ग माने अने तेनुं आराधन न करे, आराधन करनारनी निंदा करे ते मार्गने उन्मार्ग मानवारूप मिथ्यात्व जाणवु

४ हिंसा करवानी बुद्धि आपे, जुठुं बोले, लोकने ठगता बीहे नही, स्त्री गमन करे, पैसानो ममत्व लोभ मटयो नथी, एवा गुरुनी सेवा करी धर्म माने; एवा खोटा मार्गे चालेला देवनो बतावेलो धर्म माने; जगतना पदार्थनुं ज्ञान जेने नथी, ते छतां पदार्थनुं स्वरूप विपरीत बतावे अने कहे जे आ मोक्ष मार्ग छे. पांच यम तो जगत प्रसिद्ध छे. ते यम पालवा सारा कहे ने पाले नही; अणगल पाणी वापरे, तेमां त्रस थावर जीवनी हिंसा थाय अने नदीमां नहावामां पुन्य माने, जुओ के महाभारतमां गरणुं बेवडुं करी पाणी गालवानुं कह्युं छे, तो नदीनुं पाणी शी रीते गालशे ? नही गलाय तो हिंसा थशे ने पाछा कहे छे जे नदीमां नहावानुं महा पुन्य छे. यज्ञ करी जीव हिंसा करवानो उपदेश आपे, तेने मोक्ष मार्ग कहे; वली जैनी भाइओ पण जे धर्म करणी छोकरानी इच्छाए पैसानी इच्छाए परलोकमां राजा थाउं देवता थाउं एवा सुखना अर्थे करे अने तेने मोक्ष मार्ग माने, ए पण उन्मार्गने मार्ग मानवारूप मिथ्यात्व छे. वली मानने सारु, जशने सारु, लोकने सारु देखाडवाने सारु, आत्महितनी बुद्धि विना वीतराग मार्गनी अश्रद्धानपणे जे धर्म करणी करे ते उन्मार्गने मार्ग मानवारूपज छे. वली जे मार्ग वीतरागे शास्त्रमां निषेध कर्यो छे तेवी धर्मनी प्रवृत्ति करी मार्ग माने, अविधिमां प्रवर्त्ति बीजाने प्रवर्तावे ते उन्मार्गने मार्ग मानवारूप मिथ्यात्व जाणवुं.

५ जीवने अजीव माने ते मिथ्यात्वः—जेमके केटलाएक नास्तिक मति तो जीवज मानता नथी. पांच भूत मली आ शरीर बने छे ते जीव छे, ते सिवाय जीव जुदो नथी. पांच भूत वीखरी जाय एटले कंइ नथी. परजीव पण नथी ए जीवने अजीव माननार सर्वथा प्रकारे जाणवा. केटलाएक पंचेंद्रि तिर्यंचने

जीव माने पण पाच थावरने जीव मानता नथी. ए पण जीवने अजीव मानवानुं मिथ्यात्व जाणवुं जैनीजपाच थावरने तो जीव माने छे, पण केटलीएक शास्त्रना बोधनी खामिथी सचित वस्तुने अचित्त मानवी थाय छे, जेमके गुलाबजल केटला वखतनुं तेने केटलाएक सचितना त्यागी अचित मानीने वापरे छे. शास्त्रमा सौथी वधारे काल चुनाना पाणीनो छे चुनाना पाणी करता गुलाबमा कइ वधारे गरमी नथी के तेथी वधारे काल रहेवाथी सचित न थाय एवो विचार करवाथी सचित थाय एम लागे छे, तेम छता अचित मानवु तेमज जे जे जिव पदार्थने अचित मानवाथि जीवने अजीव मानवारूप मिथ्यात्व लागे, माटे सर्वज्ञ महाराजे जेने जीव कह्या छे तेने जीव कहेवाथी ए मिथ्यात्व टले छे.

६ अजीवने जीव मानवो ते मिथ्यात्व ते वधा शरीर छे ते अजीव छे, ते हुंज छु करीने ममत्व भाव करवो, वली अणसमजथी शास्त्रमा जे वस्तु अचित कही होय तेने सचित करी मानवु थाय, तो पण मिथ्यात्व लागे.

७ साधुने असाधु मानवा ते मिथ्यात्व. जे मुनि महाराज पंचमहाव्रत पाले छे, प्रभुनी आज्ञा प्रमाणे वर्त्ते छे, मोक्ष मार्गमा उजमाल थइने वर्त्ते छे, जेने स्त्रीनी धननी ममता नथी, सावद्य वचन मात्र बोलता नथी, एवा साधु मुनिराजने असाधु माने पोते ससार धन, स्त्रीना अभिलाषी एवा गुरुनो सग कर्यो छे, तेणे बुद्धि अवली करी नाखी छे तेथी खरा साधुने असाधु माने ए मिथ्यात्व खरा खोटानी परीक्षा ज्ञान थयेथी थाय छे ते विना जे जे वाडामा जे पडया छे ते बीजा वाडाना साधुने खोटा माने छे, ने दरेक वाडामा बंधारण पण एवा थइ गया छे, एटले एम मानी जे उत्तम पुरुषनी निंदा करे छे, पण एटलो विचार करे जे पाच यम तो वधा दर्शनवाला माने छे तेम यथार्थ प्रा-

णातिपात, मृषावाद, अदत्तादान, मैथुन, परिग्रह ए पांच वस्तुना संपूर्ण त्यागवाला कया साधु छे. एवुं जो तपासे तो जलदी समजवामां आवी जाय अने उत्तम पुरुषनी निंदा करवामां नही आवे.

७ असाधुने साधु मानवा ते मिथ्यात्व. असाधु जे साधु नाम धरावे छे. पण धननो अने स्त्रीनो त्याग कर्यो नथी जीव हिंसादिक आरंभने तो छोड्यो नथी, वेपार रोजगार करे छे, मंत्र जंत्र करी आजीविका करे छे, लोकने विपरीत समजावीने पैसा ले छे, एवाने साधु मानवा ते तथा केटलाएक लोकने छगवा सारु बाह्यथी धननो त्याग देखाडे छे, पण चित्तमां पैसानी इच्छा ते पण असाधु कहीए, केटलाएक साधुपणुं पाले छे, पण वीतरागना वचननी श्रद्धा नथी, केटलाएक परलोकना संसारिक सुखनी इच्छाए साधुपणुं पाले छे. पण मोक्षने अर्थे उद्यम नथी करता, वली केटलाएक पंचांगी जे शास्त्र ते मानता नथी, जिन प्रतिमा भगवंते मानवी कही छे, गृहस्थने पूजवी कही छे, ते छतां गृहस्थने उपदेश करे के जिन प्रतिमा पूजवी नही, पूजवाथी पाप थाय छे, एवी प्ररूपणाना करनार पण असाधुज कहीए; एमने साधु माने ते असाधुने साधु मानवारूप मिथ्यात्व जाणवुं. बीजी रीते पोतानी विभाव परिणति मटी नथी, विभावमां ( विषय कषायमां ) मग्न रहे अने पोताना मनथी हुं रुडुं करुं छुं, एम माने पोतानी प्रशंसा करे ते पोताने विषे असाधुपणुं छे, ते छतां पोतामां रुडापणुं साधुपणुं मानवुं ते असाधुने साधु मानवारूप मिथ्यात्व छे.

ए सिद्ध भगवान जे अष्टकर्म जे ज्ञानावर्णी कर्म क्षय करी अनंत ज्ञानरूप जे केवल ज्ञान प्रगट कर्युं छे. दर्शनावर्णी कर्म क्षय करी सामान्य उपयोगरूप केवल दर्शन प्रगट कर्युं छे, मो-

दनी कर्म क्षय करी चारित्र गुण जे पोताना आत्मस्वन्नावमाज स्थिर रहेवुं ते रूप चारित्र गुण तथा क्षायक समकित प्रगट कर्युं ठे, अंतराय कर्म क्षय करी अनंत वीर्यादिक गुण प्रगट कर्या ठे, नाम कर्म क्षय करी अरूपी गुण प्रगट कर्यो ठे, गोत्र कर्म क्षय करी अगुरु लघु गुण प्रगट कर्यो ठे, वेदनी कर्म क्षय करी अव्या बाध सुख प्रगट कर्युं ठे, आयुष्य कर्म क्षय करी अक्षय स्थितिने पाम्या ठे, एवी रीतें आठे कर्म क्षय करी आठ गुण प्रगट कर्या ठे एवा सिद्ध महाराजने सिद्ध न माने, न्नगवान न माने अने एवा पुरुषनी निंदा करे, एवा देवने देव मानता होय तो तेने बंधु चत्तुं समजावी एवा देव उपरथी आस्था उठावे ए मिथ्यात्व सेववाथी आत्माना शुद्ध गुण प्रगट पण कोइ दिवस नहीं थाय, कारण के एवा गुणनी इच्छा होय तो एवाज पुरुषना गुणग्राम करत, पण ते करतो नथी अने निंदा करे ठे तेज मिथ्यात्व जाणवु

१० असिद्ध जेमने आठे कर्म रह्या ठे, जे नवा पण कर्म बाध्याज करे ठे, विषय कषायमा आसक्त ठे ते तेमना चरित्रथी सिद्ध थाय ठे, तेम ठता तेवा देवने सिद्ध मानवा, न्नगवान मानवा, तेमनी आज्ञाए वर्तवु, तेज संसार वृद्धिनुं कारण ठे, आत्माना गुणनुं घात करनार ठे, माटे मिथ्यात्व त्यजवानो उद्यम एटलोज करे के आपणने धर्म करणी करवा बतावे ठे ते करणी देवे करीने देवपणु पाम्या ठे के आपणने विषय कषाय त्याग करवा कहे ठे, अने पोते विषय कषायमा वर्त्ते ठे, त्यारे तो एक ठगाइ जेवुं काम बन्युं एम बुद्धिवानने सहेलाइथी समजाइ जशे, अने जेमनामा गुण प्रगट थया ठे ते पण समजाशे, माटे आठ कर्म क्षय कर्या होय तेमनेज सिद्ध, वा न्नगवान वा देव वा ईश्वर मानवा. एवुं करवाथी ए मिथ्यात्व टलशे, ए दश मिथ्यात्व

१ तेमज बीजी रीते ठ मिथ्यात्व ठे तेमां प्रथम लोकीक

देवगत मिथ्यात्व ते उपर दशमां असिद्धने सिद्ध मानवानुं मिथ्यात्व लख्युं छे तेवा देवने देव मानवा वा संसार अर्थे मानता मानवी ते लौकिक देवगत मिथ्यात्व.

२ बीजुं लौकिक गुरुगत मिथ्यात्व ते गुरु नाम धरावी पंच अव्रत रात दीवस सेवी रह्या छे; एवा सन्यासी, फकीर, पादरी विगेरेने गुरु मानवा ते.

३ त्रीजुं लौकिक धर्मगत मिथ्यात्वः—जे पर्वने विषे धर्मनो परमार्थ रह्यो नथी, मात्र केटलाएक पाखंडीउए उन्नां करेलां पर्व जे होली, बलेव, नागपांचम, रांधनछठ, सीलसातेम आदि एवा पर्वने धर्म पर्व मानवां तथा जे हिंसामय, विषय कषायमय प्रवृत्तिने धर्म प्रवृत्ति मानवी, पुद्गल न्नावनी प्रवृत्तिने धर्म प्रवृत्ति मानवी ते लौकिक धर्मगत मिथ्यात्व.

४ लोकोत्तर देवगत मिथ्यात्वः—देव जे तीर्थंकर महाराज तेमने मुक्तिने अर्थे मानवा ए तो योग्य छे. मुक्ति अर्थे मानवाथी सर्व कार्यनी सिद्धि थाय छे, ते छोडीने संसार अर्थे मानवा, मारे दीकरो आवशे तो सो रुपीया चडावीश एवी मानता मानवाथी ते लोकोत्तर मिथ्यात्व लागे छे; कारण के न्नगवंतनी यथार्थ श्रद्धा होय तो सहेजे थशे; थशे तो चडावीश एम मानेज नही. ते तो एमज जाणे छे के जेटली बने एटली न्नगवंतनी न्नक्ति करवी; न्नक्ति सर्व कार्यनी सिद्धिने आपनारी छे. न्नगवंतनी न्नक्ति कर्या छतां कदापि कार्य न थाय तो जाणे छे के जे बने छे ते पूर्व कर्मना उदयथी बने छे अने निकाचित उदय कोइ टालवा समर्थ नथी. न्नगवान महावीर स्वामीने पण कर्म उदय आव्यां ते न्नोगववां पड्यां एम विचारी श्रद्धा भ्रष्ट थाय नहीं अने जेनी मजबुत श्रद्धा नथी ते माणस आवी मानता करे छे, अने पूर्वना निकाचित कर्मना जोरथी कार्य न थयुं तो पछी तेनो सर्व बावत-

मा अज्ञानपणे श्रद्धा ठगी जाय छे अने धर्म भ्रष्ट थाय छे, माटे एवी मानता करवी नही. अने करे तो लोकोत्तर मिथ्यात्व लागे वली जे पुरुषने मिथ्यात्व नष्ट थयु छे तेमने तो भगवते मोक्ष मार्ग बताव्यो छे ते अंगीकार कर्यो छे, तेथी एक मोक्ष सिवाय पुद्गलीक सुखनी इछाज नथी फक्त आत्म तत्त्वनीज सनूमुख थया छे जे जे कर्म उदय थाय ते खुशीथी भोगवे छे के मारे उदय आवेलां कर्म समभावे भोगवाय तो नवां कर्मनो बंध थाय नहीं एवी भावना बनी छे, तेथी स्वप्नामा एवी माननानी इच्छा नथी, फक्त सहेज सुखना कामी छे, ते लोकोत्तर मिथ्यात्व सेवताज नथी

५ लोकोत्तर गुरुगत मिथ्यात्व ते जैनना गुरु महाराज मोक्ष मार्गना दातार तेमने मोक्ष अर्थे मानवा योग्य छे, ते गोर्मीने संसारना स्वार्थे मानवा ते लोकोत्तर गुरुगत मिथ्यात्व, अने जैनना साधुनो वेष पहेरे छे पण प्रभुनी आज्ञाथी वहार वर्त्ते छे, उत्सूत्रप्ररूपणा करे छे, उन्मार्ग वर्तावे छे, एवा वेषधारी धोला कपडावाला वा पीला कपडावाला साधु नामधारीने गुरु मानवा ते लोकोत्तर गुरुगत मिथ्यात्व छे

६ लोकोत्तर धर्मगत मिथ्यात्व वा पर्वगत मिथ्यात्व ते जैनना पर्वो ससार अर्थे करवा, जेमके फल पाचम करीए तो छोकरा थाय, आशापुरीना आबिल करीए तो आशा पुरण थाय; एवी इछाए जे जे पर्व आराधन करवां ते पर्वगत मिथ्यात्व, अने जो तपस्या कर्म क्षय करवा ते करे, तो ते निर्जरारूप फलने आपनार छे, ते कंइ दोषित नथी ससारनी आशाए करवु ते पर्वगत मिथ्यात्व छे धर्म साधन करी आ लोक पर लोकनी इच्छा करवी, ते सर्व कर्म आववानुं कारण छे, केमके एक माणसे देवलोकनी वा राजा थवानी इछाए ससारनो त्याग कर्यो, हवे ए त्याग

इच्छा सहित छे. एने देवता वा मनुष्यना सुखनी तथा भोगनी इच्छा छे, तो एवी इच्छाए तप करीए तो संसारनी वृद्धिज थाय, माटे एवी इच्छानो त्याग करवो, ने आत्मगुण प्रगट करवानी इच्छाए धर्म करणी करवी, के सेहेजे ए मिथ्यात्व टली जशे.

ए छए मिथ्यात्व थयां.

हवे त्रीजी रीते चार मिथ्यात्व छे ते कहीये छीये.

१ प्रवर्तना मिथ्यात्व ते मिथ्यात्वनी मांहे प्रवर्तवुं जेमके कोइ मिथ्यात्व सेवे छे. तेनी साहाज्यमां वा मिथ्यात्वीना वरघोडामां जवुं, वा पधरामणीमां जवुं, वा कुटुंबी अन्य देवनी सेवा करता होय तेनी साथे वर्तवुं वा मिथ्यात्वीनां पर्व करवां ए प्रवर्तना मिथ्यात्व.

२ प्ररूपणा मिथ्यात्व ते जिनेश्वर महाराजे आगममां पंचांगीमां वा पूर्वाचार्यना ग्रंथमां जे जे रीते धर्म प्ररूप्यो छे तेथी विपरीत पोतानी मतिथी प्ररूपणा करवी, जेमके दिगंवर मार्गना चलावनार जैनी छे, ते छतां वीतरागना आगमो जे वर्ते छे ते मानता नथी, अने कल्पित् सास्त्र रची जुदोज मार्ग वर्तावे छे. केटलाएक ग्रंथनी रचनामां निःकारण श्वेतांवरमत दोषित कर्यो छे. जेमके संजमथी भ्रष्ट वर्तनारने वांदवा पूजवा श्वेतांवरी पण निषेध करे छे, ते छतां एवा साधु श्वेतांवरी मतना छे तेथी ए मत खोटो छे. आ लखवुं केवुं भल भरेलुं छे. पण उत्सूत्रनो भय नहीं ते बोलावे छे. दिगंवर मत चलावनारे साधुने वस्त्र नहीं राखवां वताव्यां तेथी शुं थयुं के वस्त्र रहीत साधु थवा वंध थइ गया, अने साधुनो मार्गज वंध थइ गयो, नाम मात्र कोइक थाय छे तो ते पण उपरथी वस्त्र नठी राखे छे, एटले मार्ग प्ररूपेलो रह्योज नहीं. प्रभुने एक अंगे पूजे छे. आभूषण भगवंतने पहेरावता नथी ने कहे छे जे प्रभुए आभूषणनो त्याग कर्यो छे, तेथी चडाववां नहीं, तो प्रभुए स्नाननो पण त्याग कर्यो छे, तो प्रभुनी मूर्तिने पखाल

केम करो छो ? जो पखाल करतां, एक अगे पूजा करता, तमारा अभिप्रायमा हरकत आवती नथी, तो विचारो के ए पण निषेध करेलुं तमे करो छो, तेमज सर्वे अगे पूजा करो, आभूषण चमावो, तो शुं हरकत थाय ? पण वगर विचारथीज ए वात वर्तावी छे श्वेताम्बर रीत सर वर्ते छे, जेम मेरु शिखर उपर भगवतनो जन्माभिषेक इंद्र महाराजे कर्यो ते वखते आभूषण भगवंतने पेहेराव्या हता ते भाव लावी ए सर्वे कर्तव्य करवुं छे भगवतनी मूर्त्ति आरोपित छे, तेमने जे जे अवस्था आरोपी भक्ति करीए ते थाय, आ विचार न करता अष्ट द्रव्ये भक्ति करनारनो निंदा करे छे, तेज विपरीत प्ररूपणा छे वली स्त्रीने मुक्ति नथी मानता ने गोमट सार दिगंवरनो करेलो छे ने ते तेओए मानेलो छे, ए नामाकित ग्रथ छे तेमा एक समये दश स्त्री मोक्ष जाय एम कहेलुं छे, ते छतां ते बाबतपर लक्ष न राखता स्त्रीने मुक्ति नहीं एम विपरीत प्ररूपणा करे छे दिगंवर मतनी चरचा विशेप प्रकारे अध्यात्ममतपरीक्षामा उपाध्याय महाराजजी श्री जसविजयजी महाराजे दर्शावी छे एटले इहा विशेप लखतो नथी, एमज ढुंढीया तेरापंथी विगेरे आगमथी जेटली विपरीत प्ररूपणा करे छे ते प्ररूपणा मिथ्यात्व जाणवुं ए प्ररूपणा मिथ्यात्व, ज्ञान थया विना टलवानुं नथी, माटे वितरागना वचननी श्रद्धा सहित ज्ञाननो अभ्यास करवो के प्ररूपणा मिथ्यात्व टले बोध विना जेम करता आव्या तेम करवु, एम करवाथी मिथ्यात्व टली शके नहीं माटे ज्ञान, नि पक्ष पातथी करवुं

३ प्रणाम मिथ्यात्व ते मिथ्यात्व मोहनीनो ज्या सुधी उदय छे, त्या सुधी प्रणाम मिथ्यात्व टलशे नहीं व्यवहारथी प्रभु पूजा प्रमुख करशे, अंतरंगमाथी मिथ्यात्वनो क्षयोपशम अथवा उपशम थयो नथी त्या सुधी प्रणाम मिथ्यात्व टलशे नहीं. ए

ज्यारे उपशम समकित वा क्षयोपशम समकित पामशे त्यारे प्रणाम मिथ्यात्व टलशे, माटे ज्ञानमां तथा ज्ञानी पुरुषनी उपासनामां तत्पर रहेवुं, ने ज्ञानीनां वचन प्रमाणे चालवानी अति उत्कंठा राखवी, देवगुरुनुं अतीशे आराधन करवुं, तेथी ए मिथ्यात्व दूर थशे. हवे ए मिथ्यात्व दूर थयुं छे के नहीं तेनी परीक्षा समकितना लक्षण समकितनी सज्झायमां जशविजयजी महाराजे कह्यां छे ते प्रमाणे पोतानामां छे के नहीं ते मेलवी जोवाथी जणाशे,अने अनुमानथी धारी शकाशे;निश्चय तो अतिशय ज्ञानीनां वचनथी थाय, ते तो आ कालमां विरह छे एटले उपाय नथी; तेम अतिशय ज्ञानीने पुछ्या विना निरधार न थाय तेनो दाखलो जे इशान इंद्र महाराजे पण भगवान्ने प्रश्न पुछ्या के हुं भवी छुं के अभवी छुं? समकिती छुं के मिथ्यात्वी छुं? आवा त्रण ज्ञानना धणीथी मुकरर थयुं नही तेथी पुछवुं थयुं, तो आपणे शुं मुकरर करी शकीए. तो पण शास्त्राधारे उद्यम करवो, मार्गानुसारीना गुण हरिभद्रसूरि महाराजे धर्म बिंदुमां बताव्या छे तेनी साथे मिलान करवुं अने मिलान करतां लक्षण न मले तो मिथ्यात्व गयुं नथी एम समजवुं.

४ प्रदेश मिथ्यात्व ते मिथ्यात्वनां दलीयां आत्म प्रदेश साथे क्षीर नीरनी पेरे एकमेक थइने रह्यां छे ते ज्यारे क्षायक समकित थाय छे त्यारे टले छे. मिथ्यात्व बंध उदय ने सत्ता त्रणे प्रकारे टली जाय छे त्यारे क्षायक समकित थाय छे, माटे ते समकित प्रगट करवानो भाव राखवो के प्रदेश मिथ्यात्व टली जाय.

आ बधां मलीने पचीश प्रकारना मिथ्यात्व शास्त्रोमां दरशाव्यां छे. एमां केटलाएक भेद एक बीजाने मलता छे, तेनुं कारण एटलुंज समजवुं के साची वस्तुने खोटी कहेवी ए मि-

थ्यात्व छे तो सारी बुद्धिवालाने तो एक शब्द बस छे पण विषम कालमां मारा जेवा मंद बुद्धिना वर्णीजने रूपांतरे नेद दरशावेला जोवामां आवे तो मन सुधरे, माटे जुदा जुदा नेद छे, ते समजीने दरेक प्रकारे विनाव दशाथी मुक्त थवाना कामी थवुं. केटलाएक जैनी नाम धरावे छे, पोषध पडिक्कमणा करे छे, जिन नक्ति करे छे, गुरुनी सेवा करे छे, परदेशथी धर्म बोध गामना लोकने करवाने साधुजीने तेडी लावे छे, पण गुरुजी स्याद्वाद् मार्ग दर्शावे छे तेथी कोइक नव्य जीव प्रतिबोध पामे छे अने दिक्षा लेवाने तत्पर थाय छे, त्यारे तेना माता पिता अने लागता वलगता गुरुनी निंदा करवा तत्पर थाय छे, लडवा तैयार थाय छे अने गालो देवानी फीकरज नही, आटली हदे पहोंचे छे जरा पण पापनी बीक राखता नथी आ वात केवी अन्यायनी छे के जेमने उपदेश देवा लाग्यो, ते तो दरेक प्रकारे संसारथी उदास थाय एवोज उपदेश आपे, तेथी कोइक उत्तम जीव दिक्षा लेवा तैयार थया, तो तेमा साधुजी महाराजे शी कसुर करी के तेमनी निंदा करवा लडवा जीव तैयार थाय छे साधुजी कदापि कंइ फेरफार युक्तिए करीने बोले, तो श्रावको कहेशे जे साधु थइने जूठुं बोल्या, अने विचित्र प्रकारे निंदा करे छे, ए सर्वे जोर मिथ्यात्वनुं छे माटे ए वर्तना नहीं करवी वली शास्त्रनी श्रद्धा छे एम बधा माणस कहे छे, पण पोताने फावती वात नहीं आवी तो शास्त्रपर पण लक्ष देता नथी, एकोना फल छे, के अंतरंगमाथी मिथ्यात्व गयुं नथी तेना फल छे, जो मिथ्यात्व गयुं होत तो आ दशा थात नही, साधुजी दिक्षा लेवा नीकले तेनी केटलीएक हकीकतनो धर्म बिंदुमा हरिनद्रसूरि महाराजे दरशाव कर्यो छे, ते ग्रंथ टीका तथा बालाबोध सहित छपायो छे, तेमा दिक्षा लेनारने मातापितानी रजा लेवानो अ-

माणस मुवेली अवस्थाने पामे छे. निद्रासक्तवाला आगल बोले चाले शरीरे कंइ करे तो पण तेने खबर पमती नथी, त्यारे उपयोग अवराइ गयो ए प्रत्यक्ष नुकशान थयुं, माटे हरेक प्रकारे जाग्रत दशा थाय एम इच्छवुं. भगवान श्री महावीर स्वामी महाराज जेमने वार वरसमां वे घमी निद्रा आवी छे. वाकी वधो काल अप्रमाद दशामांज गयो छे. आत्मतत्वना विचारमां गयो. तेमणे पोते स्वभाविक आत्मगुण प्रगट कर्या. माटे जेम भगवंते दर्शनावर्णी कर्म खपाव्युं तेम खपाववानो उद्यम करवो के जेथी आपणुं पण दर्शनावर्णी कर्म क्षय थाय अने केवलज्ञान केवलदर्शन प्रगट थाय. वली आ संसारमां पण बहु उंघवानी टेववालाने दलद्री कहे छे. पोतानुं काम करवा पण शक्तिवान थतो नथी. अभ्यासु माणसने निद्रा वधारे होय तो अभ्यास करी शकतो नथी; वली गुरु महाराज पासे वाख्यान सांभलवा जाय तो त्यां पण बेठो बेठो उंघे एटले वाख्याननी धारणा करी शकतो नथी. वली एहवा प्रमादीना घरमांथी चोर चोरी पण सुगमताथी करे छे ते आ लोकनुं नुकशान थाय छे, अने परलोकना नुकशानमां दर्शनावर्णी कर्म उपार्जन थाय छे. एम भगवंते जाणी नीद्रानी इच्छानो नाश करी केवल दर्शन प्रगट कर्युं छे जेमां सर्वे दर्शनगुण रह्या छे तेम आपणे पण भगवंतनी आज्ञा प्रमाणेज दर्शनावर्णी कर्म खपाववानो उद्यम करवो ने निद्रानो नाश करवो.

१६. अव्रतनामा दोष. ए दोष आत्मामां रह्यो छे तेना प्रभावे अनेक प्रकारनी इच्छा थाय छे. हिंसाथी जुठुं, बोलवाथी, चोरी करवाथी, मैथुननी वांछाथी, परिग्रहनी ममताथी, ए पांच अव्रतथी चित खसतुं नथी. ए पांच अव्रत एहवां छे. एक अव्रत सेववाथी बीजां अव्रत सहेजेज वर्ती जाय छे. वली ए अव्रत से-

ववाना निमित्तनुत पाचे इंडीना तेवीश विषय तथा मननी च-
पलता ज्या सुधी पाचे इंडी अने ठठु मन मोकलुं ठे, तेनी काम-
ना वनी रही ठे, त्या सुधी ठकायनी हिसा रोकाती नथी हवे
ए विषय ठे ते आ लोक अने परलोक वनेमा डुखना आपनार ठे
जेमके आपणने कोइ सोय शरीरने अम्कामे ठे तेथी केटली पीमा
थाय ठे वली दाक्तर कंइ गुमगु वीगेरे थयुं होय ने कापवाने
नसतर मुके ठे ने कापे ठे तो आखमाथी आसु जरे ठे, वली बुम
पण एटली पमे ठे के तेथी बीजाने धास्ती लागे सर्वेने अनुजव
एनो ठे तेथी लखवानी जरुर नथी तो जेम आपणने डुख थाय ठे,
पीमा थाय ठे, तेमज वीजा जीवने कापीए तो तेहने केम डुःख
न थाय? अवश्य डुख थायज ते डुखथी तेनु मन पण डुजाय तो
ते सरकारमा फरीयाद करे तो आपणने शिक्षा पण थाय व-
खते फरीयाद न करे ने जबरो होय तो मार मारे तो प्रत्यक्ष
डुख जोगववुं पमे ठे कोइ माणसने ते वखत तेने साहाजका-
री न होय तो पठी पण साहाजकारी मलेथी डुख दे ठे तो ए प्र-
माणे वीजा जीवने डुख देवाथी डुख आ लोकमा जोगववु पमे
ठे तेमज जे जीवनी हालमा शक्ती न होय तो आवते जव ते
जीवने शक्ती मलेथी डुख देशे वा नर्कादीकमा परमाधामी वी-
गेरे डुख देशे माटे एकेंडीथी ते पचेंडी सुधीना जीवोमा कोइ
पण जीवने डुख देवु नही एवी बुद्धि प्राप्त थशे तो हिसा कर-
वानी बुद्धि थशेज नही जुठुं बोलवाथी पण वीजा जीवने डुख
थशे तेमज चोरी करवाथी पण ते जीवने डुखनो पार रहेतो
नथी, कारण के गरीब वा करोमपति कोइने पण धननी इच्छा
शात थइ नथी अने ते धन लइ जाय तो केम डुख न थाय? अ-
र्थात थायज. जेम कुमारपाल राजा एक उंदर मोहरो काढी
तेनी साथे गेल करतो हतो ते जोयो, ते उपरथी मनमा आव्युं

जे आ तिर्यंचने धन उपर प्रेम समजथी छे के वगर समजथी छे तेनो तमाशो जोवा सारु उंदरनी सोना मोहर उचकी लीधी एटले थोडीवार तरफडीयां मारी उंदर कालधर्मने पाम्यो. पछी कुमारपाल बहु दलगीर थया ने तेहना पायछित्तमां पोते उंदरीयो प्रासाद बांध्यो. ए उपरथी जुओ के तिर्यंचने पण धननी केटली तृष्णा छे तो मनुष्यने तो धनथीज बधो कारभार चाले छे. तेनुं धन कोइ चोरी जाय तो ते धनवालाने दुख थवाने बाकी रहेतुं नथी. दुनीयामां शरीरनी पीडा करतां मननी पीडा वधारे थाय छे. केटलीएक वखत धन जाय छे के माणस मरी जाय छे तो तेनाथी माणसनुं शरीर सुकाइ जाय छे तो ए शरीर सुकाय छे ते मननी पीडाथी सुकाय छे, वास्ते तेथी पण सामा प्राणीने दुख थाय छे. मैथुन पारकी स्त्री साथे करवाथी तेहना धणीने तथा तेना मातापिताने केटलुं दुख थाय छे ते प्रसिद्ध छे. कोइ वखत जार पुरुषनो जीव जाय छे. केटलीएक वखत ते स्त्रीनो जान जाय छे. केटलाक वखत स्त्रीना धणीनो जीव जाय छे. कदापि जीव न जाय तो रात दीवस एहनी पीडा साले छे. वली स्वस्त्रीनी साथे भोग करवाथी योनिमां समुर्छिम जीव असंख्याता हणाय छे तो ते जीवने दुख थाय छे. वली पोतानुं शरीर पण नरम पडे छे, पोताना शरीरे दुख थाय छे, एमज परिग्रहनी इछा होय त्यां सुधी हरेक प्रकारे धन मेलववुं तेमां लुच्चाइ ठगाइ करतां बीहता नथी. जुठुं बोलतां बीहता नथी कोइनो प्राण लेतां बीहता नथी. पोते पण विचित्र प्रकारे दुखी थाय छे. ए परिग्रहनी मुर्छानां फल छे ए पांचे अव्रत एहवां छे के एक सेवतां बीजुं सेवाइ जाय तेथी भगवंते पांचे अव्रतनो त्याग कर्यो छे, अने एज उपदेश भगवाननो छे के हरेक प्रकारे अव्रतनो त्याग करवो जोइए. जो विशेष विशुद्धि थाय ने सर्व

प्रकारे अव्रतनो त्याग थाय तो ते करवो ने सर्व प्रकारे त्याग न थाय तो देशथी त्याग करी श्रावकना बार व्रत धारण करवा एवी रीते श्रावक धर्म वा साधु धर्म बाहजथी अंगीकार करी अंतरंग शुद्ध नथी थयुं तो अव्रत टलतुं नथी माटे अंतरंगमाथी कषायनी परिणति त्याग थवी जोइए बाहारथी प्रवृत्ति न करे पण अंतरमां इच्छाउ थयां करे तो पछी कर्मबंध थतो रोकातो नथी पुदगल न्नावथी अनादिनी इच्छाउ, हिंसानी, जुठनी, चोरीनी, मैथुननी, धननी ए पांचे पदार्थनी इच्छा छुटे त्यारे आत्मानु काम थाय छे जुओ तंडुलीउ मछ छे, ते मछनी पांपणमा थाय छे ते जे मछनी पांपणमां थाय छे ते मछनुं मुख मोहटु छे तेथी केटलाएक मछ तेहना मुखमा पेसे छे ने नीकले छे ते पेलो तंडुलीउ मछ जुवे छे ते जोइने विचारे छे जे माहरुं एहवुं मुख होय तो एक जीवने पाछो जवा न देउ एवो विचार करवाथी त्याथी मरीने सातमी नरके जाय छे एणे खाधु पीधुं कंइ नथी पण शक्त इच्छाथी दुष्ट ध्यान थाय छे तेना प्रन्नावथी नरके जाय छे एमज दुनीयामा चीजो छे ते वधी कंइ मलती नथी पण इच्छाउ खावानी थयां करे छे केटलाक वखत पैसानी खामीथी मली शकती नथी वा पैसा छे पण कृपणताथी पैसा खरचवा नथी तेथी मली शकती नथी केटलीएक वखत शरीरने प्रतिकूल ते वस्तु होवाथी खाइ शकाती नथी पण अव्रतना उदयथी इच्छाउ थया करे छे ते प्रन्नाव अज्ञानतानो छे पोतानी शी वस्तु छे, पोताने पोताना आत्म न्नावमा केम वर्तवुं तेनुं ज्ञान नथी तेथी इच्छाउ थया करे छे दुनियामा हजारो स्त्री छे ते कइ मोंपर थुंकवानी नथी पण जे जे स्त्री नजरे पडे के चित्त दोडे वा काने सान्नले के फलाणी स्त्री बहु रुपाली छे के मन दोडे, आ वात अज्ञानना जोरनी छे तेना जोरथी इच्छाउ बन्या करे छे, पण ते

न थवुं जोइए. वली धन जो समुलगुं न होय तो हजार रुपीया मले तो सारुं पण ज्यारे हजार मल्या त्यारे लाखनी इच्छा थाय छे. लाख मल्या त्यारे करोमनी इच्छा थाय छे. करोम मले त्यारे अबजनी इच्छा थाय छे तेथी वधारे मले छे तो राजनी इच्छा थाय छे. राज मले तो वासुदेवना राजनी इच्छा थाय छे. वासुदेवपणुं मल्युं तो चक्रीपणानी इच्छा थाय छे. चक्री थाय तो इंद्र थवानी इच्छा थाय छे हवे आवी इच्छाउ करे छे तेथी मलतुं कंइ नथी, पण तृष्णा जीवने शमती नथी ए अव्रतनी राजधानी छे. वली केटलाएकने दश वीस हजार मले छे के वेपार वंध करे छे के आ मलेला रखे जता रहे एवा विचारथी वधारे धन पेंदा करवानो उद्यम नथी करतो तेथी तेनी तृष्णा रोकाइ छे एम समजवुं नहीं माटे हरेक प्रकारे इच्छा रोकवी जोइए. कदापि संसार त्याग कर्यो अने चेलानी, पुस्तकनी, माननी इच्छा न गइ वा इंडीयो वश न थइ तो पण अव्रत टलतुं नथी. कदापि आ लोकना विषय रोक्या पण परलोकनी इच्छा करे. जे हुं मरीने राजा थाउं, धनवान थाउं, देवता थाउं, देवतानी इंद्राणीना सुख भोगवुं. आवी इच्छा छे ते पण अव्रत छे उपाध्यायजी महाराजे मंकुक चुरण न्याय कह्यो छे. एटले मरी गएला देमकाना चुरणमां वरसाद पमे तो घणां देमकां थइ जाय. तेम आ भवना विषय छोमया, ने परभवना घणा विषयनी इच्छा करी एटले अव्रत कंइ टल्युं नही. शुभ क्रिया छे ते कारणरूप छे ते कारणरूप धर्म जाणी करवी पण तेहने आत्मधर्म न जाणघो. आत्मधर्म तो जेटली जेटली इच्छाउ थती वंध थशे ते कार्त्रिम नहीं, स्वाभावीक धन, स्त्री, पुत्र, शरीर कोइनी पण इच्छा वर्ते नहीं अने पोताना स्वभावमांज आनंदित थाय अने स्वभावमां स्थिर रहेवुं. जे जे पुद्गलने थाय ते जाणवा देखवाना स्वभाव छे ते स्वभावमां रहेवुं. तेमां राग द्वेष करवो

नहीं एज आत्मानुं काम छे ए दशामा रहे एटले अव्रत सहेजे टली जाय अव्रत सर्वथा कषायनो नाश थवाथी सर्वथा टली जाय छे अंशे अंशे देश विरति गुणस्थान पामे छे त्याथी टलवुं शरु थाय छे भगवतने सर्वथा अव्रत टल्युं छे तेथी भगवान थया छे.

१७ राग नामा दुषण ए रागना घरना माया अने लोभ छे ए राग परिणति अनादि कालनी छे, धन उपर राग, कुटुंव उपर राग, स्त्री पुत्रपर राग, स्वजन उपर राग, घर हाट वाग वगीचा उपर राग, राग मलेली वस्तु उपर थाय छे, अने नहीं मलेली वस्तुपर पण राग थाय छे दीठेल वस्तु उपर, अण दीठेली वस्तु उपर राग थाय छे साभलेली वस्तु उपर, वाचेली वस्तु उपर राग थाय छे एम अनेक प्रकारे राग दशा छे, अने राग दशाने प्रभावेज पापी जीवनो सजोग मले छे ने एवा खराव माणसनो सग मलवाथी पाछो द्वेष जागे छे पर वस्तु उपर राग थवानाज कारणथी जीव अनादिनो रोलाय छे अनेक प्रकारे जन्म मरण करवा पडे छे पर स्त्री उपर राग होय ते पोते मरे तो पण तेनी इछा छुटे नहीं एवा अधर्मी जीवने मनुष्य जन्म तो आवे नहीं पण तेना शरीरमा कीडो वा करमीयो शरमीयो थाय एवा भवने पामे ए रागनो प्रभाव छे जे जे कर्मवध थाय छे ते राग द्वेषथीज थाय छे ने जीव ससारमा रोलाय छे द्वेष पण रागथी थाय छे पोतानी वस्तु मानी छे ते वस्तु कोइ लइ जाय तो आ वस्तु उपर राग छे तेथी लइ जनार उपर द्वेष थाय छे द्वेष करनारने कोइ कहेनार मले के तमो समजु थइने कषाय करो छो पण रागनी वावतमा मुनि महाराजजी सीवार कोइ समजावनार नथी आ जड पदार्थ उपर राग करवाथी आत्माना गुणनो राग थतो नथी तेम तेना कारण जे ज्ञान दर्शन चारित्र तेना उपर पण राग थतो नथी रागना वशे जीव लज्जाने मुकीने

ने निर्लज्ज कर्म करे छे. उंची जातना माणसने धन पण होय कुटुंब होय, स्त्री रूपाली होय ते छतां ढेढनी जातनी स्त्री उपर राग थयो होय तो आ धन कुटुंब छोडी तेनी साथे संबंध करे छे. आ रागनी विटंबना छे. जे वस्तु खावाथी शरीरने उपाधि थाय छे. धर्म भ्रष्ट थाय छे, तो पण रागना बंधनथी ते वस्तु खाय छे ने एवी वस्तु खावाथी केटलीएक वखत माणस मरी जाय छे, ते जुवे छे तो पण एवां काम करे छे. धनना रागे करीने लोभ थाय छे ते गमे एटला पैसा मले छे पण संतोष पामतो नथी, अने असंतोषे लांबा वेपार करवाथी असल पैसा होय ते पण जता रहे छे तो पण लोभ छोडता नथी; अने केटलाएकने देवा- लां काढवां पडे छे. केटलाएक खोटी दानतथी पैसा होय तो पण लोकना पैसा आपता नथी. ते लोक एम नथी विचारता के आ म करवाथी जन्म पर्यंत दुनियांमां गेर इजत थशे, अने छोक- राने पण कहेशे जे तारा बापे देवालुं काढ्युं छे. आवी बावतो बने छे तो पण धनना रागे एवी खोटी दानत करे छे. वली पासे पैसा राखी केद पण जवुं कबुल करे छे. आ दुख राग दे छे. धन- ना रागे सामा जीवना ने पोताना भाइना, बापना, मांताना, प्राण पण ले छे तो बीजाना प्राण ले एमां तो कहेवुंज शुं. आ विटं- बना रागनी छे. चोरी करतां, ठगाइ करतां पण रागे करी जीव बीहतो नथी, विश्वास घात करतां पण बीहतो नथी. कदापि गृहस्थपणुं छोडीने दीक्षा ले छे पण जड पदार्थ उपरथी राग गयो नथी तेथी पाछा साधुना वेषमां गृहस्थनी प्रवृत्ति करे छे. गृहस्थ- नी पेठे धन मेलवे छे. छोकराना रागनी पेठे चेलानो राग जागे छे. पुस्तकनो राग जागे छे, अने एवी वर्तना करी संजमथकी भ्रष्ट थाय छे. आत्म भावमां वर्तता नथी. शास्त्रनो बोध पण न- थाय छे. ज्ञाननो बोध तो जेम ज्ञानमां जाण्युं तेम वर्तना

करे त्यारे ज्ञाननुं फल थाय जेम कोइ माणसे जाण्युं जे आ झेर छे, पण ते खाधा विना रहेतो नथी तो ते अवश्य मरे, तेम ज्ञान जणी राग वध तो छुटे नहीं, एटले कर्म बंधाया विना रहेतां नथी, अने जेने निराग दशा प्रगटी छे तेना प्रभावे कोइ कंइ लेइ जाय छे, कोइ मारे छे, कूटे छे, पीमे छे, निंदा करे छे, कोइनो वियोग थाय छे, तो पण पोताने खेद थतो नथी, मरवानी पण फिकर थती नथी, पोते पोतानुं आत्म स्वरूप जाण्युं छे, तेथी जाणे छे के मारो आत्मा मरवानो नथी, मरे छे ते जम छे, आत्मा अविनाशी छे. शरीरने पीमे छे ते पण पूर्वे जमनी सगते बीजा जीवने पीमा करी छे, तेथी पीमे छे, तो ते कर्म जेवुं, जेवुं जम संगते बाध्युं छे तेवु तेवुं भोगववुं छे कोइ लइ जाय छे ते वस्तु मारी नथी, पण जमनी सगते मारी मानी छे, अने मारी मानी पारकी वस्तुउ लीधी छे तो मारी लइ जाय छे पूर्वे जेणे कोइनी वस्तु लीधी नथी, तेनी वस्तु रस्तामा पमी होय तो पण कोइ लेइ जतुं नथी आवा ज्ञानना प्रभावे जरा पण खेद धारण करता नथी, पोताना आणंदमा वर्ते छे ज्ञानी पुरुष तो समवृत्तिए करीने जे जे सुख छुख प्राप्त थाय छे, तेमा रागद्वेष करता ज नथी आत्मानो जाणवानो स्वभाव छे ते रूप जे जे बने छे ते जाणी ले छे कर्मनु स्वरूप जाण्युं छे, तेथी कर्मना उदय प्रमाणे बनी रह्यु छे, एम जाणी कोइ पण अनुकुल चीज उपर राग दशा धारण करता नथी, तेमज भगवाने राग द्वेष क्षय करीने आत्माना पोताना गुण प्रगट कर्या छे, तेमने पगले तेमनी आज्ञा प्रमाणे चाले तो पोताना आत्माना गुण प्रगट करी परम पदने पामे

१७ द्वेषनामा दूषण—ए द्वेषनी प्रकृति जगतमा पण निंदा योग्य छे द्वेषना बे पुत्र छे, क्रोध अने मान. क्रोध करवाथी प्रश्न

माने दुःख करुंछुं एम माने छे, पण पोताने प्रत्यक्ष दुःख थाय छे. पोतानुं शरीर फेरफार थइ जाय छे, शरीर लाल लाल थइ जाय छे, छातीमां गन्नराट थाय छे, लोही शरीरमांथी उछली जाय छे, तेथी लोही सुकाइ जाय छे अने निर्बल थइ जाय छे. आ बनाव क्रोधथी बने छे. क्रोधी माणस नोकरी रहेवा जाय तो कोइ नोकरी राखे नहीं, कोइने त्यां व्याजे नाणुं लेवा जाय तो ते पण खुशी थइने आपे नहीं, वली दुकान मांमी होय तो शांत माणसने त्यां जेटलां घराक आवे, एटलां घराक क्रोधीने त्यां आवे नहीं, कन्या जोइती होय तो खुशीथी मले नहीं, वली क्रोधी माणस पोताने हाथे पोतानुं माथुं फोमे छे, कूवादिकमां पमे छे, वा झेर खाय छे, फांसो खाय छे, पोताने हाथे पोतानी घात करे छे, जगतमां अपजश पामे छे. क्रोधी माणस कदापि संसार छोमी साधु थाय छे तो कषाये करी तेमां पण शोन्ना पामता नथी, तेम आत्मानुं कल्याण थतुं नथी पण संसारवृद्धि थाय छे; जेमके चंमकोशिया सर्पे पाछला न्नवमां साधुपणामां क्रोध कर्यो, तो मरीने पाछा क्रोधी थवानो वखत आव्यो, पाछे त्यां पण क्रोधथी मरण थयुं ने सर्प थवानो वखत आव्यो, तेमज जे जे माणस क्रोध करे तेने आ लोकमां दुःख थाय अने परलोकमां नरकगतिमां जवुं थाय छे; माटे हरेक प्रकारे क्रोध छोमवानो उद्यम करवो. अग्निशर्मा तापस मास मासखमणनां पारणां करतो हतो, तो पण दुर्गतिए जवानो वखत आव्यो. एनी विस्तारे हकीकत समरादित्यकेवलीना रासमां जुउ. केटला न्नव सुधी द्वेष रह्यो छे, अने केवां केवां दुर्गतिनां फल मल्यां छे. क्रोधथी प्रत्यक्षमां मार खाय छे, वखते प्राण पण जाय छे, माटे जेम बने तेम क्रोधने जीतीने समतामां रहेवाथी आ लोकमां पण सुख थाय छे. क्रोधीने संसारमां सुख नहीं तेम परलोकमां पण सुख नथी. न-

रकादिकनी आकरी वेदनाउ जोगववी पमशे वली मान करवाथी पोते एम समजे ठे के मारी मोटाइ थाय ठे, पण ते न थता लघुताने पामे ठे मद करवाथी मोटा मोटा राजाउ पण डुखमा पमया ठे, तो वीजाउनुं तो कहेवुंज शुं? माटे जेम वने तेम अहकारने तजवो. अहंकार क्रोधनु वीज ठे अहंकार नाश पामे तो क्रोध आवेज नहीं जगतमां जेटली चीज ठे तेमां जम ठे ते देखाय ठे, तो पोते चेतन ठे तो जम चीज प्रिय अप्रिय करवाथी अप्रिय चीज उपर द्वेष थाय ठे पण जे परवस्तु एटले पोतानी वस्तु ठे नहीं, तेना उपर द्वेष करवाथी फक्त कर्मवंध सिवाय वीजो लाज नथी, माटे जे जे वस्तुना जे जे धर्म ठे ते जाणी लेवा; जे जे अवसरे जे जे वस्तु ग्रहण करवानो उदय थयो ते वस्तु ग्रहण करवी, तेमां द्वेष करी ग्रहण करवाथी कर्मवध सिवाय वीजो काइ फायदो नथी आत्मा मलीन थाय ठे मुनिमहाराजाउए तथा तीर्थंकर महाराजे द्वेषनो त्याग कर्यो ने केवलज्ञान पाम्या, माटे वीजा पण आत्मार्थी जीवे तेमनी रीत प्रमाणे द्वेषनो त्याग करवो खावानी, पीवानी, पेहेरवानी, उढवानी, पाथरवानी, सुवानी, चालवानी कंइ पण वस्तु प्रतिकुल मले तेमा द्वेष धारण करवो नहीं कोइ धन लेइ जाय, कोइ मारी जाय तो पण कर्मनो विचार करवो के पूर्वना पुन्यनी खामी पमे ठे त्यारे वने ठे, माटे रागथी जीव उपर द्वेष करवो ते नकामो ठे, एम विचारी समजाव दशा धारण करवी द्वेषनो अश पण जागे नहीं, एम प्रवृत्ति करवी, ने सत्ता, वंध, अने उदय ए त्रणे प्रकारे नाश करवो के केवलज्ञान, ने केवलदर्शन गुण प्रगट थाय

आ मुजव अढार दूपण जगवते दुय कर्या ठे, तेथी आत्माना सपूर्ण गुण उत्पन्न थया ठे, तेणे करीने त्रण जगतना जम एक समयमा जाणी शके एटली शक्ति प्राप्त थइ ठे. एक प्रश्न

द्रव्यने विषे समय समय अनंता पर्याय परावर्त्तमान थइ रह्या छे, ते एक एक द्रव्यमां पूर्वकाल एटले जे कालनो छेडो नथी तथा आवता कालमां पर्याय थवाना ते सर्वे एकी वखते जाणी शके एवुं ज्ञान जेमने प्राप्त थयुं छे, आत्मानी अनंत वीर्यशक्ति प्राप्त थइ छे; एवा आत्माना समस्त गुण प्रगट थया छे, तेना प्रन्नावेज देवताउ फटिक रत्नमय समवसरणनी रचना करे छे, त्रण गढ रचे छे, तेमां त्रीजा गढमां देवता सिंहासन थापे छे, ते सिंहासन उपर बेसीने न्नगवान देशना आपे छे, ते देशना केवी छे ? के जेमां पोतानो कंइ प्रकारनो लान्न रह्यो नथी, कोइ प्रकारे धन के स्त्रीनी स्वप्नामां पण इच्छा नथी. जेने धनादिकनी तथा माननी इच्छा रही छे ते धर्म उपदेश आपे तेमां स्वार्थ राखीने आपे छे, अने स्वार्थ ज्यां आव्यो त्यां खरा धर्मना स्वरूपनो दर्शाव थतो नथी, तेम सांन्नलनारनुं ध्यान पण उपदेशकना स्वार्थ उपर जवाथी तेमनो उपदेश सांन्नलनारने लान्नकारी थतो नथी, कारणके हमेश जे धर्म उपदेश देनार जेवो उपदेश दे ते रीते ते पोते वर्त्तता नथी, त्यारे सांन्नलनार विचारे के गुरुजीथी वा न्नगवानथी पण ए रीते चलातुं नथी, तो आपण शी रीते चालीए, एम विचारीने पोते जे स्थितिमां छे तेमांज कायम रहे छे, पण आत्माना गुण प्रगट करवाने उत्सुक थता नथी; अने जेने अढार दूषण गयां छे, तेमने तो वीतराग दशा प्रगटी छे, कोइ पण वस्तु उपर रागद्वेष रह्यो नथी, केवल जगतना जीवने तारवा सारु पृथ्वी उपर विचरी धर्म उपदेश दे छे, तेथी सांन्नलनारनुं पण कल्याण थाय छे. सांन्नलवा बार पर्षदा बेसे छे. ए अधिकार श्राद्धशतक नामना प्रश्नोत्तरमांथी लखुंछुं.

केवलज्ञानी महाराज पूर्व द्वारेथी प्रवेश करे, जिनने त्रण प्रदक्षिणा करीने "नमोतीछथस्स" कहीने पूर्व अने दक्षिण वच्चे

वेसे, तेमना पछी मनः पर्यवज्ञानी, अवधिज्ञानी, चौदपूर्वधर, दशपूर्वधर, नवपूर्वधर, अने लब्धिवंत मुनि पूर्व द्वारे पेसे. ज्ञगवंतने त्रण प्रदक्षिणा देइ नमस्कार करी नमोतीर्थाय, नमोगणधरेन्न्यो, नमो केवलिन्य. एवी रीते नमस्कार करी केवलज्ञानीनी पाछल वेसे पछी वीजा सर्व साधुजी पूर्वने द्वारे प्रवेश करीने त्रण प्रदक्षिणा देइ नमस्कार करी "नमस्तीर्थाय," नमोगणभृद्भ्यो, नमः केवलिन्न्यो, नमोऽअतिशयज्ञानिन्न्यो एवी रीते नमस्कार करीने पूर्वे वेठेलानी पाछल ते साधुजी वेसे पछी वैमानिकदेवी पूर्वद्वारे प्रवेश करीने ज्ञगवंतने त्रण प्रदक्षिणा देइ नमस्कार करी, नमस्तीर्थाय, नम' सर्वसाधुन्न्य एवी रीते नमस्कार करीने साधुजीनी पाछल वेसे पछी साधवीजी पूर्वद्वारे प्रवेश करीने ज्ञगवंतने त्रण प्रदक्षिणा देइने नमस्कार करीने वैमानिक देवीनी पाछल रहे ज्ञवनपतिनी, व्यतरनी, ज्योत्सीनी देवीज दक्षिण द्वारे प्रवेश करे ज्ञगवंतने वैमानिकनी देवीनी पेठे प्रदक्षिणादि करीने दक्षिण पश्चिमनी वचमा रहे ते अनुक्रमे रहे त्यारवाद ज्ञवनपति, ज्योत्सी, वाणव्यंतरना सुर पश्चिमद्वारे प्रवेश करी ज्ञगवंतने प्रदक्षिणादिक दइ नमस्कार करीने पश्चिम अने उत्तर वच्चे यथाक्रमे वेसे वैमानिकदेव तथा मनुष्य अने मनुष्यनी स्त्री ए त्रण उत्तरद्वारे प्रवेश करे, ज्ञगवानने प्रदक्षिणादि देइ नमस्कार करीने पूर्वने उत्तर वच्चे यथाक्रमे वेसे आ मुजव वार पर्षदा समवसरणमा साज्ञलवा वेसे छे त्या ज्ञगवानना अतिशयना प्रज्ञावथी त्रण पासे ज्ञगवानतुं प्रतिविंव समवसरणमा देवता करेछे, तेथी चारे पासे वेठेला ज्ञगवतनेज जुए छे ने चारे मुखे देशना दे छे, एम वधाना समज्यामा आवे छे. देशनानी एवी खुवी छे के जेना जेना मनमा जे जे शंका पडे छे, ते ते ज्ञगवान जाणी लेइ ज्ञानथी उत्तर आपे छे, कोइने प्रश्न

पूछवो पड़तो नथी. आवी जेनी शक्ति छे. कोइना मननो संदेह दूर करवो मुश्केल नथी, एवी भगवंतनी वाणी सांभलीने निकट भवी जीवतो तेज वखत प्रतिबोध पामी संजम ले छे, अने तेवी विशुद्धि न होय ते श्रावक धर्म वा सम्यक्त्व अंगिकार करे छे, ने आत्मानुं कल्याण करे छे. ए बे प्रकारना धर्मनुं वर्णन विस्तारे प्रश्नोत्तररत्नचिंतामणिमां छे, एटले अहींआं लखतो नथी, पण सार ए छे के हरेक प्रकारे संसारना मोहनी, स्त्री पुत्रादिकनी, अने धनादिकनी राग दशा अनादिनी छे, ते राग दशा उतारवी, अने आत्म दशानी सनमुख जेम जेम विकल्प खसे ए उद्यम करवो, अने विकल्पनां कारण छोडवां. ज्यां सुधी संसारमां मग्न छे त्यां सुधी आत्मानी दशा जागवानी नथी, ते साबुज संसार छोडी साधु थवानी जरुर छे. साधुजी थाय छे त्यारे वेपारादिकनां कारण छुटी जाय छे, स्त्री प्रमुखनां कारण खशी जाय छे, एटले आत्मज्ञान केम करवुं तेनां शास्त्र जोवानो निवृत्तिए वखत मले छे. शास्त्र केटलांएक तो एवां छे के वांचवाथीज मोह खशी जाय छे, ने आत्मभाव प्रगट थाय छे. आत्मभाव प्रगट थाय एवां घणां शास्त्र छे, तेना अभ्यासमां मग्न थाय, पछी अनुभव ज्ञान प्रगट थाय छे. त्यारे तो शास्त्रनी पण जरुर नथी. पोताना प्रबलज्ञानें ध्यानादिकथी कर्म खपावे छे, अने केवलज्ञान तथा केवलदर्शन प्रगट करे छे. एटली विशुद्धि नथी होती तो मरीने देवता थाय छे. त्यां देवतानां सुख भोगवी पाछा मनुष्य थइ धर्म आराधन करी मुक्तिने पामे छे. माटे एवा अढार दूषण रहित देवने देव मानवा, तेमनी भक्ति करवी, तेमनी आज्ञाए वर्त्तवुं. जे मोक्ष पाम्या छे तेमनो बतावेलो मार्ग अंगिकार करीए तो मोक्ष पामीए. त्यारे कोइने प्रश्न थशे के जैन धर्मनाज देव अढार दूषण रहित छे? शुं बीजा देव एवा नथी? तेने समजा-

वुं के अमे कांइ एम केहता नथी. ए विषे जैन धर्म सिवायना होय तेमणे पोतानी मेले पोताना देवना चरित्र लखेलां होय ते जोइ लेवा, ने ते चरित्र जोता जो अढार दूषणमानुं कोइ पण दूषण न होय तो तेमने खुशीनी साथे देव मानवा, अने तेवा देवने अमे पण नमस्कार रात दिवस करीए छीए. वाचनारने देवनुं चरित्र जोता जो अढार दूषणमाना दूषण देवमा देखाय छे तो दूषण वालाने देव कोण मानशे. जेने ए दूषण तजवा नहीं होय—ते मानशे ने जो तजवा हशे तो विचार करशे जे, जेणे पोताना आत्माने तार्यो नथी तो आपणो पण केम तारशे? एम विचार करीने सहेजे सत्य देवनीज आज्ञा धारण करशे.

प्रश्न—मोटा मोटा पन्डितो थइ गया ने मोटा मोटा शास्त्र रच्या तेमणे शु देवनुं ओलखाण नहीं कर्युं होय? न्यायना शास्त्र, व्याकरण शास्त्र, जैनीओने पण ब्राह्मण पासे भणवा पडे छे, माटे एवा विद्वाने काइ जोवुं बाकी राख्युं हशे? ते विषे जाणवुं जे ए वात पोतपोतानुं मन जाणे एवी छे केटलाएक अन्य दर्शनना विद्वानो साथे वात थइ छे, ते विद्वानो पोताना धर्मनी पुष्टी करे छे, पण खानगीमा तेथी बोलवु उलटुं थाय छे, जेमके आचार्य महाराज श्री आत्मारामजी महाराज प्रथम ढुंढक मतमा हता ते वखतमाज ढुंढीआ पासे भणवा गएला, ते ढुढके शीखामण आपी जे प्रतिमाजीनी निंदा तमो करो छो माटे नहीं भणावु, केमके आगममा जोता प्रतिमाजी पूजवानुं व्याजबी जणाय छे, अने ते स्थलो बतावी प्रतिमाजीनी श्रद्धा करावी त्यारे आत्मारामजी महाराजे कह्युं जे तमे केम खोटा मार्गमा पडी रह्या छो? त्यारे कह्यु जे हवे नीकलवानी लज्जा आवे छे आवी रीत छे माटे बीजानो जोवानो विचार करवो फोगट छे. पोते पोतानी मेले शास्त्र जोइ निःपक्षपातथी तपास करवी के खरुं शु छे?

तो सेहेजे समजाइ जशे. जैनीउ व्याकरण न्याय जणे छे ए तो कक्को शीखवा जेवुं छे, एमां कांइ मार्गनुं ज्ञान करवानुं नथी. मार्गनुं ज्ञान कोइ ब्राह्मण पासे लेवा जता नथी. मार्गनुं ज्ञान तो मार्ग पामेलो माणस बतावी शके छे, तो मुनि महाराजाउतो एक संसार त्याग करवानुं काम करी चुक्या छे. व्याकरण जणावनार तो संसारमां पमेला छे, ते शुं बतावी शके? माटे ए सर्व विचार पारका छोमी पोतानुं काम करवुं होय तेणे पोताना आत्मानो उद्धार करवा पोते शास्त्र अभ्यास करी देवगुरुनी तजवीज करवी. अनादिनी टेव तो एवी छे केजे वामामां पम्या तेज कर्या करवुं, पण ते रीत छोमी पोतानी बुद्धिथी सूक्ष्म विचार करी जे जे देवनाम धरावी आपणने जे धर्म करवा कहे छे ते धर्ममां ते वर्त्या छे? तेम स्वभावमां रही विभावथी मुक्त रहेवा कहे छे तेम रह्या छे? आ जोवानुं मुख्य काम छे, अने आपणे पण मनुष्य जन्म पामी एज करवानुं छे, माटे अंशे अंशे जमनी प्रवृत्ति उछी थाय, आत्म स्वभावमां स्थिरता थाय ए उद्यम करवो.ए उद्यमथीज वर्त्तमाने वा कालांतरे आत्मगुण अनुक्रमे संपूर्ण उत्पन्न थशे, माटे जेम बने तेम आत्मतत्त्वनी शुद्धि छए दर्शनमांथी जे दर्शनमां विशेष मले ते दर्शन ग्रहण करी ते दर्शननी श्रद्धा राखी स्वगुण खोजवाना कामी थवुं.

प्रश्न—तमारा जैन दर्शनमां व्यवहार क्रियामां वर्त्ते छे, पण कोइ आत्म खोजना करवी, आत्म गुणमां वर्त्तवुं, तेवा तो देखता नथी.

उत्तर—सर्व जीव कंइ आत्माला खोजी होता नथी, तेम आत्मगुणमां वर्त्तनारा पण होता नथी, कारण जे आ दुषम कालमां ज्ञानीउए ज्ञानमां प्रथमथीज जोयुं छे के हालमां कोइ मोक्ष आ क्षेत्रमांथी जशे नहीं. एटले मोक्षे जाय एवा ध्यानादिकना

करनार क्याथी होय ? पण आ कालने योग्य साधन करी शके एवा उत्तम जीवो तो वर्त्तता नीकली शके ध्यानादिक करीने समभाव दशा लाववी छे, विषय कषायथी मुक्त थवुं छे, कोइ मारी जाय कोइ पूजा करी जाय ते बने उपर तुल्य दशा करवी जोइए, ते करवाना उद्यमी तो नीकलशे, पण केटलाएक धर्मवाला ध्यान करवानु नाम देइ गाजानी चलमो फुंके छे, भांग पीए छे, तेथी ज्ञान नष्ट थइ जाय, अने कषायादिक वधे छे, एवा उद्यम करीने कहे जे अमे ध्यान करीए छीए ते केम मनाय ? अन्य दर्शन मा पण केटलाएक वेदीया ढोर कहेवाय छे ते कोने कहे छे ? के जे वेदांतनी वातो करे, तेनी कथा करे, अने विषय कषायमा वर्त्ते त्यारे कहे जे ए जडनुं काम जड करे छे तेमा अमारे शुं ? जे खावानु मन थयु ते खावु, भोगनी इच्छा थइ ते भोग करवा, कंइ पण जड कर्त्तव्य रोकवुं नहीं आवो धर्म पाली पोतानी इच्छा प्रमाणे विषय कषायमा वर्त्ते अने कहे जे अमे ध्यानी छीए, तेने दुनियामा वेदीया ढोर कह्या छे पातंजली योगशास्त्रमां अष्टाग जोग साधवा कह्या छे तेमा प्रथम जोग यम छे, ते पाच वस्तुना त्यागथी कह्या छे जीवहिसा, जूठ, चोरी, मैथुन, परिग्रह ए पाच वस्तुनो त्याग थाय त्यारे यमनामा जोग प्रगटे त्यारवाद बीजो जोग नियमनामा कह्यो छे, तेमा शौच, संतोष, तप सज्झाय ध्यान, अने ईश्वरध्यान आ पाच वस्तु करवानी कही, तो ए जेम जैनमा व्यवहार कह्यो छे, तेमज योगशास्त्रमा कह्यो वली त्रीजा जोगमा आसननो जोग करवो छे, स्थीर आसन करवुं, ए त्रण जोग थया पछी चोथो प्राणायाम जोग थाय, तेमां रेचक, पुरक, कुंभक करवु कह्युं छे आ हठ समाधियोग छे त्यारवाद पाचमो जोग प्रत्याहार छे, तेमा पाचे इंद्रिना विषयनो संवर थाय छे, संसारथी तथा जड भावथी विमुख थाय छे, तत्त्वबोध

थाय छे, सूक्ष्मज्ञान थाय छे. छठो ध्याननामा जोग, सातमो धारणानामा जोग, आठमो समाधि जोग ए त्रण जोग केवल सहज समाधिनी प्राप्तिनां साधन छे ते थाय. हवे विचारो के अष्टांग जोगना साधनवालाए पण प्रथमना जोगमां व्यवहार शुद्धि बतावी, ते व्यवहार शुद्धि करे नहीं, ने कहे जे ध्यान करीए छीएं, ते ज्ञानवंत केम मान्य करशे ? अनुक्रमे चढवानो जैनशासनमां पण गुणस्थाननो क्रम बताव्यो छे, ते मुजब तेमां पण योग्यता प्रमाणे ध्यानादिक छे, अने क्रम रहित गुणस्थानमां पण चढनारो पडे छे, ते संयम श्रेणीनी सज्झायमां कह्युं छे. ने वली बृहत्कल्पनी शाख आपी छे, माटे अनुक्रमे जेम कह्युं छे तेवी रीते ध्यानादिकनी रीत कही छे. अष्टांग जोगनी व्याख्या पण योग दृष्टी समुच्चयमां हरिभद्राचार्य महाराजे विस्तारे कही छे तेमां विशेष फेरफार समजातो नथी, अने जैनीउ जाणता नथी, खोजना करता नथी, ए कहेवुं जैन धर्मना शास्त्रना अजाणपणाने लीधे छे जैनमां क्रमे गुणस्थान चढवानुं कह्युं छे, तेमां योग्य थाय छे, त्यारे ध्यान करे छे. योग्यता ना आवे त्यां सुधी भावनाउ भावे, ए भावनाध्याननुं स्वरूप ध्यानशतक, योगशास्त्र, ध्यानमाला, षोडशकजी वगेरे ग्रंथो जोशो तो सारीपेठे समजाशे. में पण अंशमात्र प्रश्नोत्तररत्नचिंतामणिमां दर्शाव्युं छे. तेथी अहीं लखतो नथी माटे त्यांथी जोवुं. तमारुं प्रश्न एटलुं स्वीकारीए छीएं के मार्गमां दर्शाव्या प्रमाणे माराथी वर्त्तातुं नथी ते प्रमाद दशा छे. बाकी जे महापुरुष थया छे ने थवाना छे ते पुरुष तो आत्मतत्त्वनी खोजनामांज वखत गाले छे. निज स्वरूप विचारे छे, पोताना गुण पर्याय विचारे छे, पोतानुं स्वरूप विचारतां पोतानी विपरीत दशा देखाय छे, ते टालवाने व्यवहारमां वर्त्ते छे. व्यवहारमां वर्त्ततां जेटलो जेटलो आत्मा कर्मथी मुक्त थाय

छे, अने निर्मल थाय छे, तेने ज धर्म माने छे, तेमांज आनंदित थाय छे पोताना आत्मानी परीक्षा करवा कष्ट पण सहन करी जुए छे, कारण के केटलाएक वातो करवारूप जड पदार्थ मारो नहीं एम कहे छे, पण ज्ञानी तो कष्ट सहन करती वखत परीक्षा करे छे के जे शरीरने कष्ट पडे छे, त्यारे ते कष्ट मने थयु जनाय छे के नहीं ? जो दुखमा चित्त लेपाय छे त्यारे तो कहेवारूप थयुं, ने जो शरीरने कष्ट थाय छे तेमा समजाव रहे छे त्यारे साचुं ज्ञान थयु स्वीकारे छे, एवी स्वजाविक दशाज स्वस्वरूप परस्वरूप ज्ञान थवाथी थइ छे, तेना प्रजावे जे जे दुख थाय छे तेमा जराए खेद पामता नथी. पोते पोताना आनंदमा रहे छे कर्म फलनी पतीज छे तेमा वधारे पतीज थती जाय छे के पूर्वे पाप कर्यां छे, तेनु आ फल जोगवुं छुं, हवे पण पाप करीश तो तेना फल जोगववा पडशे आ विचारो ठशी गया छे, तेथी कर्म खपाववाना उद्यम जे जे प्रजुए बताव्या छे, तेमा व्यवहारमा वर्त्ते छे, निश्चय स्वरूप हृदयमा जावे छे तेनी विचारणा करे छे. वधारे विशुद्धिवंत ध्यानादिमा लीन थाय छे एवा उद्यमी पुरुष मोक्ष पामशे ए निरधार छे, पण जेणे उद्यम छोड्यो तेने तो कंइ पण बनवानुंज नथी

प्रश्न–धर्मनो उद्यम तो बधा धर्मवाला पोतपोताना विचार प्रमाणे करे छे, तो जैन धर्मनुं विशेष शुं ?

उत्तर–जैन धर्मना मार्गमा निश्चयने व्यवहार बे प्रकारनो मार्ग छे, तेणे करीने वस्तुधर्मनो यथाथ निर्णय थाय छे, अने यथार्थ प्रवृत्ति पण करी शके छे जैन थइने पण केटलाएक एकलो निश्चय ग्रहण करे छे, केटलाएक एकलो व्यवहार ग्रहण करे छे अने निश्चय उपर दृष्टि नथी ए बेमा यथार्थ जैनीपणुं नथी ए सारु जशविजयजी महाराज कही गया छे के "स्यादवाद

पूर्ण जो जाणे ॥ नयगरभीत जस वाचा ॥ गुणपर्याय द्रव्य जो बुझे ॥ सोइ जैन हे साचा ॥ " आवी रीते कह्युं छे, ते मुजब वर्त्ते तेने जैन कहीए; तो जेम जैन नाम धरावी एक पक्ष ग्रहण करे तेने जैनमां गणया नहीं. तेनुं कारण के ते यथार्थ आत्म साधन करी शके नहीं, तेम अन्य दर्शनीमां पण एकांत पक्ष ग्रहण करे तेने वस्तु धर्मनुं यथार्थ ज्ञान नहीं थइ शके, अने वस्तु धर्मना बोध विना आत्मधर्मने आत्मधर्मना रूपे जाणे नहीं, जड ध-र्मने जड धर्मना रूपे जाणे नहीं. जेवुं आत्मानुं लक्षण छे, तेवुं लक्षण जाणे नहीं. परमात्मानुं जेवुं लक्षण छे तेवुं जाणे नहीं. ते कदापि परमात्मानुं ध्यान करे तो पण सफल शी रीते थाय? केटलाएक कहे छे जे ईश्वर सिवाय कोइ पदार्थ छे नहीं. जड पदार्थ छे एवुं जे कहीए छीए ते भ्रांति छे. हवे प्रत्यक्ष पदार्थने भ्रांति कहे छे ते माणस तेने अनुसरतुं ध्यान करे तो आत्मकार्य शी रीते थाय? माटे जे जे वस्तु जेवे रूपे रही छे ते रूपनुं ज्ञान करी ध्यान करे तो कल्याण थाय; बाकी जे जे जीवने पो-ताना आत्मानुं कल्याण करवानीज बुद्धि छे, ने ते बुद्धिथी जे उद्यम करे छे ते परंपराए हितकारी छे, कारण जे आत्म धर्म पामवाना सन्मुख थया छे, तेने सदगुरुनो जोग बने तो ज्ञान थतां वार लागे नहीं; माटे सन्मुख भाव करवो ए सारो छे, तेथी परंपराए कल्याण थशे अने एक पक्षनी बुद्धि मुकी नि-श्चय दृष्टि हृदयमां स्थापी निश्चय प्रगट थाय, एवां कारणो से-ववां तेथी कल्याण थशे; अने परंपराए इच्छित सुख थशे, तेमां मुख्य शास्त्रज्ञान करवानो वधारे उद्यम राखवो ते ज्ञानने अनुसरता परभावथी मुकावानां साधन करवां एटले सर्वे श्रेय थशे.

प्रश्न–जैनमां वस्तु केटली कही छे?

उत्तर–जड अने चेतन बे पदार्थ छे, एनी व्याख्या प्रथम

घणी करी छे, एटले अहींआ लखतो नथी हवे एटलुज लखवानुं छे के जड जे शरीर, घर, हवेली, कपडा, आभूषण विगेरे प्रगट पदार्थ छे, तेन अद्वैतवादी कहे छे के भ्राति छे पदार्थ नथी, अविद्याना प्रभावथी मानो छो आ जे कहेलुं छे ए बाबतना ग्रंथ पण घणाज लखाया छे अने न्याय पण जोडाया छे पण मारा विचारमा सर्वज्ञ पुरुषे शुं बताव्युं छे ? आ पदार्थ जड छे, तेथी ए पदार्थ मारा नहीं, ए पदार्थमा मारापणुं मानु छुं ते भ्राति छे, अविद्या छे, आत्मानो चेतन स्वभाव छे, माटे पर स्वभावने मारो कहेवो ते भ्रांति छे, ने ए भ्रातिए अनंतोकाल थयो संसारमा रोलायो, माटे ससारमा जेने रझलवुं न होय तेणे ए पदार्थ उपरथी मारापणानो ममत्व छोडवो, आ रीते परमात्मानुं कहेवुं छे, तेनुं रूपातर थइ गयुं छे, वली जैनमत स्याद्वाद छे तेने अजाणपणे एम जाणे छे के हा ने ना ए केम बने ? पण जे जे पदार्थ रह्या छे तेमा बे बे धर्म रह्या छे तो ते न मानता कार्यनी सिद्धि शी रीते थाय ? तेनो दाखलो के, स्त्री छे तेने छोकरा थाय छे हवे एक पक्ष लइने कहीए जे छोकरा स्त्रीने थायज तो शुं दूषण आवे छे के जे स्त्री वंझा छे तेने थता नथी, हवे वंझाने थायज नहीं एम मानीए तो तेमा पण दोष आवे छे, केमके वझाने औषध खावाथी वझा दोष टले छे ने छोकरा थाय छे हवे एम कहीए जे औषधथी वंझा दोष टलेज छे, तो ते पण खोटु थाय छे, कारणके केटलीएक बाइओने वझादोष ओसडथी नथी पण मटतो, तो ए पण एकात कहीशु त्या दूषण आवशे शरीरनी नीरोगता सारी सभालथी रहे छे, एम जो एकातथी कहीशु तो माहाराणी साहेबने मादगी भोगववी पडी अने देहनो त्याग करवानो वखत आव्यो, तेमणे काइ संभाल राखवामा कचाश राखी नथी, पण प्रबळत्त कर्म जोर करे त्या माणसनु कइ चाली

शकतुं नथी. हवे अहीं एवो सवाल थशे के शरीरनी संभाल राखवानी जरुर नथी, कर्मथी थाय छे ते थशे, ए पण एक पक्ष नथी, संभालथी पण बचाव थाय छे जेमके जाणी बूझीने झेर खाइए तो पछी शी रीते जीवीए? मरकी प्रमुखनी हवा चालती होय त्यांथी खशी जवुं जोइए. तेम करवाथी बचाव थाय छे, ते पण एकांत नहीं. हवे दाक्तरने पण नाशी जवुं जोइए, आ सवाल आवशे. केमके बीजा नासे त्यारे दाक्तर केम न नासे? त्यारे अमो कहीए छीए के नासवानो एकांत नहीं. दाक्तर मरकी न लागे एवा बंदोबस्तथी रहीने लोकनी संभाल करे, दाक्तर नासे नहीं, बीजा माणस बीजे स्थले जाय. एज प्रमाणे नाणुं पेदा करवुं, ते मेहेनत करवाथी नाणुं पेदा थाय एम कहे छे तेने कहीए छीए जे मेहेनत करवाथी नाणुं पेदा थाय छे ने नथी पण थतुं. बुद्धिवान बुद्धिथी नाणुं पेदा करे छे ते पण एकांत कहेवाशे नहीं. बुद्धिवान देवालां काढे छे, अने वगर बुद्धिवान धन साचवी राखे छे, ते पण एकांत नहीं रहे. बुद्धिनी खामीथी घणुं नुकशान थाय छे. खावुं ए सारुं छे पण एकांत कहेवाशे नहीं. केमके शरीरमां खाधेलुं पच्युं नथी ने खाय तो अजीर्णादिक रोग थाय, माटे तेणे खावुं नहीं, तेमां पण एकांत नथी. सेहेज पदार्थ संतोषने सारु, निभाव सारु, खाधेली पचवा सारु खावुं. घी पदार्थ उत्तम छे, खावा जोग छे पण निरोगीने, रोगीने नहीं. रोगीने पण न खावो ए एकांत नथी, दवाना अनुपानमां रोगना उपर वा शरीरनी स्थीति उपर विचार करी वैद या दाक्तर खावा कहे ते खावुं. दान देवुं उत्तम छे पण एकांत नहीं. पोताने माथे देवुं होय ते आपे नहीं अने दान तेवी रीते देवुं नहीं ते पण एकांत नहीं. पोताने खावाने बे रोट-
ी छे, तेमांथी अरधो वा एक रोटलो आपे छे ने बाकी
ंथी निर्वाह करे छे. तो ते उत्तम छे. दान न आपत तो

पोते खात ते पोते खाधु नही ने आप्यु, तो महा फलदायी छे. कोइने दुःख न देवुं ए शब्द एकात छे तो पण ते एकात नहीं. कोइ उत्तम पुरुपने रोग थयो छे. ते रोग टालवा दुःख दे तो ते लाभकारी छे. जेमके गुमडुं थयु होय ने नस्तर मूके छे तेथी दुःख थाय छे पण शाता करवा सारु दुख देवु छे, तो ते दुःख देवुं निषेध नथी छोकराने भणवा सारु महेताजी विगेरे दुःख दे, ते दुख देवु निषेध नथी, ते पण एकात नही ने मारवाथी हाथ पग भागे, कोइ घा पडे, लोही नीकले, कोइ भारे इजा थाय एवो मार विगेरे मारवो जोइए नही. वली कोइ कोमल अगनो होय एवाने वीलकुल मारवो न जोइए, वली कोइ शिष्य अयोग्य होय तो मारवो न जोइए. एम सर्वे विद्या भणवी ए साधारण नियम छे पण ते एकात नही जेमा मत्राादिक विद्या छे, ते काम करवानी शक्ति न होय, तेणे ए भणवु नही एम तप करवो ए लाभकारी छे, तो पण ते एकात नही, जेनी शक्ति होय ते तो सुखे तप करे, पण जेने शक्तिनी खामी छे, तेथी प्रणाम बगडे तेवुं छे तेणे तप करवो नही, वली ते पण एकात नही छेल्लो मरण समय छे ते वखते शरीरनी शक्ति न होय तो पण चारे आहारनो त्याग करे, ते पण एकात नहीं जेने भाव सारा न रहे अने प्रणाम बगडी जाय तो तेणे त्याग करवो नहीं धर्म उपदेश देवो ए सारी वात छे, पण ते एकात नही जेणे यथा प्रकारे शास्त्रनुं ज्ञान मेलव्युं छे ते उपदेश दे, पण ते ज्ञान जेणे न मेलव्युं होय ने ते उपदेश दे तो प्रभु आज्ञाथी विरुद्ध देवाइ जाय, माटे ज्ञान रहित होय तेणे उपदेश देवो नही ज्ञानवत छे ते पण साभलनार उपदेशने लायक न होय तो उपदेश देवो नही, ते पण एकात नही हालमा लायक नथी पण उपदेश देवाथी लायक थाय एवु होय तो देवो अयोग्यने जवाब न देवाथी शास-

ननी लघुता थती होय, तो ते लघुता न थाय ते सारु उपदेश देवो. आ स्याद्वादनी रीत छे. अपेक्षा अपेक्षानां वचन जुदां जुदां छे, हवे एवी अपेक्षाउ न समजे ने एकज रीतनी वात करे ते ज्ञानी के अज्ञानी ? सरकारना कायदामां पण अपवाद बताव्या छे, तेम जैन शासनमां उत्सर्ग अपवाद मार्ग बताव्यो छे. बगर अपेक्षाए हा तेनी ना एवो जैन मार्ग नथी, तेवी रीते जैन मार्ग जाण्या विना कोइ ठेकाणे शास्त्रमां उत्सर्ग मार्गनी वात होय, कोइ ठेकाणे अपवाद अपेक्षाये होय, ते विचार जाण्या विना कहे छे जे जैनमां एक ठेकाणे कंइ छे ने एक ठेकाणे कंइ छे. आ कहेनार केवल मुर्खता वापरी कहे छे. जो जैन शासननुं माहापण मळ्युं होत तो कदापि कहे नहीं. जैनमां जे साते नय सप्त भंगी आदि बतावी छे, ते आवी रीते अपेक्षाज्ञान थवाने सारु छे, ते नयादिकनुं यथार्थ ज्ञान थाय तो सर्व ठेकाणे जे जे नयनुं वचन होय ते ते नयनुं ते ते ठेकाणे थापे तो कोइ वातनो संशय रहे नहीं, पण ते ज्ञान विना जैन शासननी स्याद्वाद वात संबंधी विपरीत भाखे वा बोले ए पोताना वामानो हठ छे. जे जे पदार्थो रह्या छे तेनो निर्णय स्याद्वाद ज्ञानथी थाय छे. दुनियामां कोइ पण वस्तुनो स्वभाव स्याद्वाद विना नथी. जेम के जीव छे ते अविनाशी छे, ए सत्य छे, कोइ दिवस जीवनो विनाश थतो पण नथी. एज पक्षपर एकांत रहीए तो जे जे संसारमां रोळाता जीवो छे ते एक शरीर मुकी बीजी जातिमां बीजुं शरीर धारण करे छे, तो प्रथम हाथी हतो त्यारे पोताना आत्मप्रदेश हाथीना आखा शरीरमां फेलाइने रह्या हता, ते हाथी पण मरण पाम्यो ने माखी थइ तो जे हाथीमां फेलावो हतो तेनो संकोच करी माखी जेटलामां समाया; एवी रीते आत्मप्रदेश थया तो हाथी वाली अवगाहनानो नाश थयो, तथा हाथीनी पण बोलवुं, चालवुं, खावुं,

पीवु वगेरे जे जे प्रवर्त्तना हती ते वंध थइ गइ माखपणानी थइ, तो हाथीपणुं नाश थयुं ते अपेक्षाए जीवमा नाश धर्म पण रह्यो जे नाश धर्म न माने ते विपरीत के केम? परमाणु पदार्थ अविनाशी छे पण एक वीजामां मलवु वुटा पडवुं ए धर्म रह्यो छे, ते विनाशी धर्म तेमज माटीना अनेक घाट वने छे ते विनाश थाय छे, माटी अविनाशी पणे छे, तो एवा पण वे धर्म रह्या छे तेवा वे वे धर्म रह्या छे आत्मामा स्वभाव धर्म अने विभाव धर्म व, वे अपेक्षाये रह्या छे स्वभाव धर्म कृत्रिम नथी स्वभाव धर्म जडमा रहेवानो, जडनी साथे वर्त्तवानो नथी. मुख नथी तेथी वोलवानुं नथी, चालवानुं नथी फक्त जाणवुं, देखवुं, स्वभावमा स्थीर रहेवुं ए स्वभाव आत्मानो छे हवे एकात मानीए तो जड प्रवृत्ति करे छे ते कोण करे? वेदाती लोक एम कहे छे, के मायाथी—अविद्याथी थाय छे तो ते रीते पण परसंजोगे वर्त्तवुं तो थयुं, तो जीवमा स्वभाव न होय तो वर्ते शी रीते. हवे वर्त्तवानो स्वभाव मानीए तो एथी रहित थाय नहीं एम काइ पण एक स्वभाव मानवाथी वस्तु निर्णय थशे नहीं जैनशास्त्रकारो स्वभाविक धर्ममा काइ पण जड प्रवृत्ति नहीं एम कहेछे ते सत्य छ, तेम न होय तो ससारथी मुकाइने शुद्ध कोइ थाय नहीं, माटे शुद्ध निश्चय नयना पक्षथी निज स्वभावमा रहेवुं एज धर्म छे अशुद्ध निश्चयना पक्षथी जडनी संगते कर्म वाधेला छे, ते कर्मना सजोगथी जडनी प्रवृति थायछे जड जेम वर्त्ते छे, तेम आत्मा वर्त्ते छे हवे ते प्रवृति छोडवाने सारु व्यवहारमा धर्म साधन करवु छे अने जे जे कर्म वांधेला छे ते खपे एवो उद्यम करवो. कर्म खपाववानो उद्यम यथार्थ कर्या विना आत्मा निर्मल थवानो नथी ने कर्म खपवाना नथी. एवा वस्तुद्दमा स्वभावि धर्म विभाविक धर्मोनु ज्ञान विना ध्यान करे ता विपरीत

ध्यान थशे, माटे पदार्थोना धर्मनो दर्शाव जैन शास्त्रने विषे बहु विस्तारे छे, ते जाणी पछी दया दानादिक करे तो सफळ थाय, अने मोक्ष साधन पण तेनेज कहीए. स्वभाव धर्मने स्वभाव पणे श्रद्धा करी, विभाव धर्ममां वर्त्तना छे ते वर्त्तना दूर करवामां, प्रथम विभाव वर्त्तना करवी पडशे, जेमके ग्रहस्थ पणानी प्रवृत्ति विभाविक छोडी साधु धर्मनी प्रवृत्ति करवी, हवे निश्चय नयनी अपेक्षाए ए पण विभाव छे, पण ए विभाव केवो छे? के स्वभावने आवर्ण लागेलाने खसेडनार छे—वीतराग आज्ञाए साधु पणुं आवे छे, ततो विभावना अंश खपवाथीज आवे छे, ते जेम जेम संजममां तत्पर थाय अने संजम स्थानमां चडे, तेम तेम विभाव दशा खसती जाय, अने आत्मशुद्धि थाय. अनुक्रमे गुणस्थान चडे ते सर्वथा विभावथी मुक्त थाय, अने स्वभाव धर्म प्रगट थाय, तेथी अनंत ज्ञान शक्ति प्रगट थाय, तेथी एक समयमां त्रण लोकना भाव जाणवामां आवे, अनंत दर्शन प्रगट थाय, तेथी सामान्य उपयोग रूप बोध थाय, अनंत चारित्र गुण प्रगट थाय तेथी स्वभावमां स्थिर रहे, अव्याबाध सुख वेदनी कर्मना क्षयथी प्रगट थाय, नाम कर्मना क्षयथी अरूपी गुण प्रगट थाय, गोत्र कर्मना क्षयथी अगुरुलघु गुण प्रगट थाय, अंतराय कर्मना क्षयथी अनंत वीर्य प्रगट थाय, आयु कर्मना क्षयथी अक्षय स्थिति प्रगट थाय आवी रीते अनंत आत्माना गुण प्रगट थाय, अने लोकाग्रे सिद्धिने विषे बिराजमान थाय.

प्रश्न—सिद्ध स्थान क्यां छे अने त्यां शुं करवा रहेवुं

उत्तर—सिद्ध स्थान चौद राजलोकनी उंचाइ छे तेना छेडाना भागमां अलोकने अडीने रह्या छे. अलोक एटले त्यां धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, जीवास्तिकाय, पुद्गलास्तिकाय, काळ ए पांच पदार्थ नथी तेथी अलोक कहीए, ते अलोक नीचे रह्या छे,

कारण जे धर्मास्तिकाय अलोकमा नथी तेनी सहाय विना च-
लातु नथी माटे त्या रह्या छे, त्या केहेवा रूपे रह्या छे देह नथी
तेथी वर्ण नथी, गध नथी, फर्म नथी, रस नथी अरूपी पणे रह्या
छे, ते सदाकाल अवस्थित पणे रह्या छे, कोइ पण दिवस फरी
चलायमान पणुं नथी अचलस्वभावी (ससारी सुख अथिर छे,
तेवुं अथिर सुख नथी) स्थिर सुख छे जन्म मरण करवानां दुःख
टली गया छे संसारमा विकल्पनुंज दुःख छे, ज्यारे विकल्प न
होय त्यारे ससारमा सुख थाय छे तेमा सिद्धमहाराज सदा वि-
कल्प रहित छे कोइ पण वखत कोइ पण कारणनो विकल्प
नथी तेथी सदाकाल सुखमयी रहेछे संसारमां इच्छाओ प्रवर्त्ते छे, ते
इच्छाओ पुरी न थाय तेनु दुःख छे, पण सिद्धमहाराजने ससारी कोइ
पण चीजनी इच्छा नथी एटले दुख नथी तेथी सदा सुखमयी छे
जे जे पदार्थो जोवामा जाणवामा आवे छे, ते संबंधी रागी जी-
वने राग थाय छे, पछी ते मलतु नथी तेनुं दुःख थाय छे, अने सिद्ध
महाराज वीतराग दशाने पाम्या छे तेथी तेमना जाणवा देखवा-
मां चौद राज्यलोकना पदार्थ समये समये आवेछे पण वीतराग
दशाने लीधे जे पोताना आत्माना स्वभावथी जणाय छे तेमा
काइ पण चित्त नथी, विकल्प नथी, पण स्वभावाणंदमा वर्त्ते छे.
जेटला जेटला ससारमा दुख छे, तेमानु एक पण दुख सिद्ध म-
हाराजने नथी. वली समारना जे जे सुख छे ते दुःखमयी छे
अनित्य छे, मात्र सुख माने छे, एटलुं छे ज्ञानदृष्टिए विचारीए
तो सुख नथी, कारण जे जगतना जीव स्त्रीना भोगे करी आ-
णद माने छे पण तेज वखत शरीरने केटली पीडा थाय छे, तेना
उपर लक्ष नथी ते दुःख न मानतां सुख माने छे—विषयथी
आयुष्यनी हानी—पइसानी खराबी—ए सर्वे वात कोरे मुकी सु-
ख माने छे, तेमज तमाशा खेल जोवा जाय छे त्या उजागरा

करे छे, कन्ना कन्ना पग दुखे छे, ते दुख मानताज नथी; आभुषण पहेरी खुशी थाय छे, तेनो न्नार उठाववो पडे छे अने शरीरे पीडे छे, तेहना उपर लक्षज नथी; तेमज खावाना विषय सेववाथी केटलीएक एहवी चीज छे के जे खावाथी रोगनी उत्पत्ति थाय छे पण तेहना उपर लक्षज नथी, केटलाएक पदार्थ शरीरने अडचण करे एहवा नथी ते पण प्रमाणथी खाय तो, पण ते प्रमाण उपर लक्ष नही ने अतिशय खायतो अजीर्ण थाय ने मरे वा मांदो पडे तेनो पण विचार विषय आगल रहेतो नथी; प्रमाणथी खाय तो तेमां पण केटलां दुख न्नोगववां पडे छे, जेमके जीवने दुधपाक खावानुं मन थाय छे, अने ते दुधपाक खाइने खुशी थाय छे; पण ए दुधपाक रांधतांज केटलो शरीरमां पसीनो नीकल्यो त्यारे तइयार थयो, ते कोइ विचार करता नथी; एवी रीतनां संसारी सुख दुखगर्न्नित छे. स्त्रीयोने विषयने सारु पुरुषनुं दासपणुं करवुं पडे छे; जो विषयनी इच्छा न होय तो पाणिग्रहण करवानी जरुर न पडे, पण विषयनी इच्छाथी पाणिग्रहण करे छे. पछी पुरुष मारे, कुटे, गालो दे, घरनुं आखो दिवस काम करावे, आटलुं दुःख न्नोगवे त्यारे विषयनां पेहेरवानां सुख मले. माटे वस्तुपणे संसारी सुख, सुख मानवारूप पण दुःखमयी छे, अने सिद्ध महाराजने एमांनुं एक पण दुःख नथी; केवल सुखज छे; अने सादि अनंत न्नांगे छे. एटले सिद्धमां गया त्यारथी आदि छे पण ए सुखनो अंत आववानो नथी. एनुं स्वरूप अकल छे. कोइथी कल्युं जाय एवुं नथी, तेम ए सुख मुखे कह्युं जाय तेवुं नथी. शास्त्रमां एक दृष्टांत आप्युं छे के एक राज पुरुष वक्र शिक्षित अश्व उपर बेठो अने पछी तेनी जेम जेम लगाम खेंचे छे तेम तेम दोडतो जाय छे, जंगलमां उज्जड न्नूमिमां लइ गयो, माणसो वधा पाछल रह्या अने राजा एकलो वनमां गयो. राजाने न्नय

लागवाथी लगाम मुकी दीधी. एटले अश्व ऊभो रह्यो. पछी अश्व उपरथी उतर्यो राजाने पाणीनी तरस बहु लागी छे, पण पासे काइ नथी एटलामा एक भील आव्यो, तेनी पासे राजाए पाणी माग्युं, तेणे दया लावीने पातरामा पाणी लावी आप्यु, ते पाणी पीने राजा संतोष पाम्यो. पछी ते भीले फल प्रमुख लावी आप्या ते राजाए खाधा, तेथी राजा बहु खुशी थयो पछी पाछलथी प्रधान विगेरे आवी पहोंच्या तेमने राजाए कह्यु जे आ भीले प्राण राख्या पछी राजा भीलने पोताना घेर तेडी गया त्या खाजा, घेवर वगेरे अनेक पदार्थ खवराव्या, ते खाइने भील पण अतिशे राजी थयो एम केटलाएक दिवस रहीने राजानी रजा लेइने भील पोताने घेर गयो त्यारे स्त्रीए पूछ्युं जे नगरमा केवु सुख हतु? तो बहु सुख हतुं एम कहे, पण शु सुख हतु ते कही शके नहीं तेम सिद्ध महाराजनुं सुख कही शकाय नहीं, कारण के सिद्ध महाराजना सुखना जोमानुं सुख आ संसारमा नथी; माटे खरी रीते जे ए दशा प्राप्त करे, ते ए सुखने जाणे केटलाएक लखवामा आव्या छे, ते दृष्टांत रूप छे तेथी बुद्धिवान केटलुक समजी शके छे आवु सिद्ध महाराजनु सुख अढार दूषणनो त्याग करवाथी थायछे माटे दरेक दूषण भगवंते त्याग कर्या तेनु स्वरूप ते ते दूषण नाम मात्र बताव्यु छे विस्तारे शास्त्रमा छे त्याथी जोइने जेम भगवंते त्याग करवानो उद्यम द्रव्य भावथी कह्यो छे तेम करवो के आत्मानुं कल्याण थाय अने सिद्ध महाराज वच्चे भेद छे ते भागीने सिद्ध महाराजना सरखा गुण वालो आत्मा थाय मनुष्य जन्म पाम्यानु एज सार छे

प्रश्न —आत्माना गुण आत्माने आपवा तेने दान कहु तथा आत्माना गुणनी प्राप्तिने लाभ विगेरे लख्यु ते शा आधारथी?

उत्तर—देवचंदजी कृत चोवीसीमा सुपार्श्व स्वामीना स्त-

वनमां दर्शाव्या छे. वली आनंदघनजी महाराजनी चोवीसीमा पण एवो दर्शाव छे तेना आधारथी लख्युं छे.

प्रश्न--हालमां महा पुरुषोना करेला ग्रंथोना तथा सूत्र सिद्धांतनां भाषांतर थाय छे ते योग्य छे के नहीं ?

उत्तर--हालमां भाषांतर थाय छे ते भाषांतर कोइ मुनि महाराज तो करता नथी. पूर्वेना करेला बालाव बोध मुनि महाराजो तथा आचार्यादिकना करेला छे, तेना उपर पण टीकाउ जेटलो विद्वानो भरोसो करता नथी. टीका जोइ मलतुं टीका साथे होय ते मान्य थाय छे. अने हालमां तो एवा पुरुषो कोइ ग्रंथनुं भाषांतर करता जणाता नथी. फक्त पोतानी आजीविकाने अर्थे गृहस्थो (जैनी) अथवा ब्राह्मणो करे छे. जे माणस पोतानी आजीविकाने अर्थे करे छे तेमणे जिनशासननी रीत पेहेलीज लोपी छे. कारण जे आ लोकने अर्थे प्रभुनी पूजा करे तेने लोकोत्तर मिथ्यात्व कह्युं छे, तो ज्ञानने अर्थे करी वा पुस्तक वेची पैसा पेदा करवा ते आ लोकनो लाभ छे तो प्रथमज लोकोत्तर मिथ्यात्व थयुं, ते मिथ्यात्व लागे छे, एम शास्त्रथी जाणे छे पण पोताने मिथ्यात्व लागे छे एम मानता नथी, आवी दशावाला जैनीउ तथा ब्राह्मणो मिथ्यात्वी छे एवा जीवोने यथार्थ सिद्धांतनो बोध केवी रीते थाय ? अने यथार्थ बोध विना अर्थनो अनर्थ थाय. माटे ए काम आत्मार्थीए करवुं योग्य नथी. तेम छतां आजीविका निमित्ते काम करे छे तेने शुद्ध क्षयोपशम थतो नथी. वली विशेषावश्यकमां तो एम कह्युं के सामायक अध्ययन गुरु पासे भणवुं. पण " न नु पुस्तक चौर्यात् " पोतानी मेले पुस्तकमांथी भणवुं नहीं. तो आतो सिद्धांतना अर्थ करवा छे. वली पयन्नादिक विना बीजां आगम (अंग उपांगादिक) श्रावकने साधुजी भणावे तो प्रायश्चित निशिथजीमां कह्युं छे. तो भणवानी

तो नाज होय अने आतो पोतानी मेलेज अर्थ करे, तेमा गुरु महाराजना आशय ते आवेज नहीं तेथी बरोबर अर्थ थाय नहीं; माटे आत्मानी बीक राखी एवां काम करवाने समता राखवी अने जे जीव, नय न राखे ने ए काममा वर्त्ते तेना करेला बालावबोध उपर आत्मार्थी नरोसो राखवाना नथी, अने जेने मार्गनु ज्ञान नथी, मार्गना ज्ञानवंतनी अनुजाइए चालवु नथी ते पोतानी मरजी प्रमाणे वर्त्तशे तेमा काइ इलाज नथी

प्रश्न--तमारा करेला प्रश्नोत्तर चिंतामणिमा जिनपूजामा अल्प हिंसा लखी छे, अने बीजा शास्त्रमां तो अल्प हिंसा पण नथी केहेता तेनु कारण शुं?

उत्तर--पूर्व पुरुषो अनुबंध हिंसा नथी कहेता ते केहेवुं व्याजबी छे. पूजामा अनुबंध तो कुशलानुबंधी छे. एटले मोक्षमां जोडे एवो अनुबंध छे, माटे अनुबंध हिंसा नथी, स्वरूप हिंसा छे, ते केहेवा मात्र छे फल नथी, तेम अमारुं कहेवुं शब्द नेद छे, आशय एकज छे. अमे अल्प जे प्रते मुक्ति सुखनी प्राप्ति थाय, एटले मोक्ष सुखने आपनारी जिन पूजा छे अल्प हिंसानुं फल थाय नहीं. अल्प शब्द अनाव वाची पण छे, तेवोज समजवो एवी रीते केहेवाथी पूर्व पुरुषोना कहेवा प्रमाणेज छे पूर्व पुरुषथी विरुद्ध श्रद्धा अमारी नथी. *कोइ ठेकाणे हमारी नूल थाय* पण महंत पुरुषनी नूल थायज नहीं एज अमारी पण श्रद्धा छे हमारी चोपडीमा ज्या ज्या पूर्व पुरुषथी विरुद्ध जोवामां आवे तेनी श्रद्धा करवी नहीं. ते ते ठेकाणे पूर्व पुरुषनीज श्रद्धा करवी ते अमने पण जणाववुं के अमो अमारी नूल सुधारीए

प्रश्न--प्रश्नोत्तर रत्न चिंतामणिमां पाने १८७ मे क्षायक सम्यक्त्व शुद्ध अशुद्ध नेद सारु तत्वार्थनी शाख आपी छे ते तत्वार्थमा छे ?

उत्तर--तत्त्वार्थमां तो सादि सपर्यवसान, सादि अपर्यवसान ए रीते बे भेद करेला छे ते पेहेला भेदना स्वामी श्रेणीकादिक छद्मस्थ कह्या छे. ने केवलज्ञानीनुं क्षायक सम्यक्त्व सादि अपर्यवसान, ए रीते बे भेद करेला छे. एज भेद नवपद प्रकरणनी टीकामां शुद्ध अशुद्ध कह्या छे ते बे शास्त्र एकठी लखी छे. शुद्ध अशुद्ध भेदना अक्षर नव पद प्रकरण टीकामां पाने ४०मे तथा समयसुंदरजी कृत प्रश्नने विषे छे, त्यांथी जोइ लेवुं.

प्रश्न--दिगंबर मत पहेलो के श्वेताम्बर मत पेहेलो ?

उत्तर--दिगंबर मत विषे शास्त्रमां घणे ठेकाणे कह्युं छे. भगवंतना निर्वाण पछी छसेंने सत्तर वर्षे शिवभूति आचार्ये दिगंबर मत काढयो छे. ते वात दिगंबरी नथी मानता कारण जे तेमणे नवां शास्त्र रच्यां छे. अगियार अंग तथा बार उपांगादिक प्रगट छे, पण कहे छे के विछेद गयां छे अने पोताना मत काढनारना करेला ग्रंथो छे तेज आधारे चालेछे. एटले एमने शास्त्रथी समजावीए ते माने नहीं पण न्यायथी समजाववा जोइए. ते आत्मार्थी तो सेहेजे समजी जाय तेवुं छे. जो न्यायनी बुद्धि जागी होय तो हालमां संप्रति राजाना भरावेला हजारो जिन बिंब छे. ते संप्रति राजा भगवानना निर्वाण पछी आशरे ३०० वरसे थया छे ते प्रतिमाजीने लिंगनो आकार नथी. वली कच्छ देशमां महावीर स्वामीजीनी प्रतिमाजी भद्रेसरमां छे. त्यां त्रांबाना लेख छे ते प्रतिमाजीने २५०० वरस थयां छे, वली महुवामां जीवत स्वामीनी प्रतिमा छे, ते महावीर स्वामी विद्यमान अवसरमां भरावेला छे ए आदि दिगंबर मत नीकलता पहेलांनी जिन प्रतिमा घणे ठेकाणे छे, ते प्रतिमाजीने लिंगनो आकार नथी. तेम त्यार पछीना पण श्वेतांबर देरासर घणां छे ने घणां जिन बिंब छे, ते सर्वे लिंगना आकार विनानां छे. अने दिगंबरना देरासरमां लिंग

वालां जिनबिंब छे तो विचारो के वीर जगवानथी चालतो धर्म दिगंबरनो होत तो जुनो प्रतिमाजी लिंगवाली होत, अथवा श्वेतांबर मत नवो होत तो पण जुना प्रतिमाजी लिंगवाला होत पण ते जणातां नथी. माटे श्वेतांबर मत जगवानना वखतथी चाल्यो आवे छे दिगंबर प्रश्न करे छे के अमारा जिनबिंब जुना छे ते विषे जाणवुं जे ते जुना छे एवो पुरावो नथी अने श्वेतांबरना जुना प्रतिमाजीनो पुरावो छे, जडेसरना लेख छे, संप्रति राजा क्यारे थया ते पण लेख छे, माटे पुरावो बलवान छे. आबुजी, तारंगाजी, समेतशिखरजी तथा गीरनारजी, सिद्धाचलजी ए मोटा तीर्थ उपर चैत्यो जुना कोना छे ? कबजो कोनो छे ? असलथीज श्वेतांबरीनो कबजो छे फक्त श्वेतांबरी श्रावकोए कोइ कोइ ठेकाणे मेहेरबानी दाखल देरासर बांधवा दीधेला जणाय छे, कारण के मुख्य जगोपर तो श्वेतांबरीनाज देरासर छे, अने दिगंबरीना हमणा थोडा वखतमां थया छे ए जोता श्वेतांबरी धर्म श्रीमत् महावीरस्वामीथी चालतो आव्यो तेज छे हालमा कोइ कोइ देशमा श्वेतांबरीनी वस्ती उछी छे, दिगंबरीनी वस्ती वधारे छे तेवी जगोए मालकीनो पग पेसारो करे छे तेमा श्वेतांबरीए दया लावी देरासरमा आववा दीधा तथा दिगंबरी प्रतिमाजी केटलेक ठेकाणे पधरावचा दीधा ते दया करी तेने बदले अपकार करी मालकीनी तकरारो केटलेक ठेकाणे करे छे पण उपकार विचारता नथी ए दिगंबरीनी ज्ञान दशानी खामीना फल छे पण देरासरो तथा कबजा उपरथी श्वेतांबरी मुलथीज छे ते खातरी थाय छे दिगंबर मतनो वाद तो अध्यात्म मत परीक्षामा बहु छे, एटले लखवानी जरुर नथी पण केटलो

एक न्याय विचारमां आवे छे ते लावी लखुं छुं. दिगंबरीए व-
स्त्ररहित मुनिमार्ग प्रकाश्यो अने श्वेतांबरीनो सिद्धांत स्थविर
कल्पी साधु ते वस्त्र सहित होय. आ विधि चालतो आव्यो ते
चाले छे, तेथी श्वेतांबरीना हजारो साधुजी त्यागी वैरागी आ-
त्मार्थी जोवामां आवे छे, ने दिगंबरीना साधुनो लोप थयो. वली
जुज कोइ होय छे तो ते पण वस्त्र ओढे छे, तो नाम दिगंबर ध-
रावी पाछा वस्त्र पेहेरवानी जरुर पडी तो वस्त्र पहेरवां, ने दिगं-
बरी नाम धारण करवुं, ए केवी बालक जेवी वात छे. अहींआं
कोइ दिगंबरी प्रश्न करशे के सिकंदर बादशाहनी तवारीखमां छे
के जैनना नग्न साधु गाम बहार हता, तो असल वस्त्र नहीं एम
साबित थाय छे, एम कहे तेने समजाववुं के श्वेतांबर साधु वधी
वखत कपडां राखे छे, एम समजवुं नहीं. एकांतमां ध्यानादिक
करे त्यारे वस्त्ररहित होय, केमके श्वेतांबरी एकासणानुं पच्च-
क्खाण करे छे, तेमां चोलपटा आगारेण एवो आगार छे, ते
आगारनो अर्थ एवो छे के एकासणुं करवा मुनिमहाराज बेठा छे
ने एवामां गृहस्थ आवे तो उठीने चोलपटो पहेरी ले, तो एकास-
णुं भागे नहीं, आ आगार गृहस्थने नथी. आ जोतां गृहस्थनी
रुबरुमां वस्त्र सहित होय एम समजाय छे; माटे सिकंदर बाद-
शाहे दीठेला श्वेतांबर साधु जंगलमां काउस्सग्ग ध्यानमां वस्त्र
रहित जोया होय, तेथी ते कांइ दिगंबरी साधु थया नहीं, माटे
मार्ग वस्त्र सहितनो श्वेतांबर चालवाथीज, साधु साध्वीनो
मार्ग कायम रह्यो. वली दिगंबर मतना काढनारने पण साध्वी
वस्त्र रहित रहे ते सारु लाग्युं नहीं तेथी साध्वी थवानो मारग
नष्ट थइ गयो; अने श्वेतांबर मतमां हजारो साध्वीजी थइ गयां छे,

थाय छे ने थशे अने तेथी आत्मानुं कल्याण करशे, अने दिगंवरी स्त्रीउनुं तो आत्म कल्याण नष्ट थइ गयुं आ दिगंवरी वाइउने फायदो कर्यो के केवल धर्मसाधन करवामाज अंतराय कर्यो व-ली दिगंवरीउए स्त्रीने मुक्ति उगावी पण पोताना गोमतलार ग्रं-थमाज स्त्रीलिंगे मुक्ति जवा कहे छे, ते ग्रंथनुं अपमान करेछे अने स्त्रीउनुं मोक्ष साधन रोके छे, तो जेटलो जेटलो नवो मार्ग प्ररूप्यो छे, तेमा फायदानु नाम नथी तेमणे श्वेतांवरी साधुजीनी के-टलीएक निंदा पोताना ग्रंथमा करी छे, तेवो मार्ग श्वेतांवरी सा-धुनो छे नहीं ने तेम साधु चालता पण नथी कोइक संजम थ-की भ्रष्ट थइ वर्त्ते तेने काइ श्वेतांवरी साधु मानता नथी, ते छता श्वेतांवरी साधुजीनी निंदा करे छे, तेथी पोतानो आत्मा वगमे छे साधुजीने काइ हरकत थवानी नथी पोताना साधुनी महत्वत्ता करे छे पण पंच महाव्रतने दूषण लागे एवो ज व्य-वहार वाध्यो छे मुनिने सावद्य प्रवृत्ति कंइ पण करवी करावची नथी तेम छता दिगंवरी साधु आहार लेवा आवे तो वे जणने पमदो झाली उन्ना रहेवु जोइए, आहार पण एमने खपतो करी मु-कवो जोइए, एक माणस थाली वगामनार जोइए आ रीत वधी असंयमी संयमी सारु करे, तो असंयमी निर्वद्य काम शी रीते करशे ? सावद्यज करशे अने ते सावद्य मुनिने लागशे तो पंच महाव्रत केवी रीते पालशे ते विचार दिगंवरीने करवानो छे श्वेतांवरी साधु असंयमी पासे कंइ पण करावे नहीं, पोता-ने सारु करेलु पण वापरता नथी गृहस्थे पोताने सारु कर्युं होय तेमाथी जुज ले छे फरीथी गृहस्थने पोताने सारु पण करवुं न पमे एटले कोइ पण रीतनुं श्वेतांवरी मुनिने सावद्य

लागतुं नथी दिगंबरी साधु सारु तो कर्युं होय तेज काम लागे छे एटले सावद्य लागे छे तो संजम क्यां रह्युं. आ थवानुं कारण एटलुंज छे जे भगवंतनां प्ररूपेलां आगम विद्यमान छतां ते मानवां नहीं, ने पोतानी मरजीनां कल्पेलां शास्त्र मानवां ते कल्पनामां सर्वज्ञ जेवुं ज्ञान क्यांथी थाय? ए चोख्खुं समजाय छे. वली दिगंबरी गृहस्थो प्रभुनी पूजा एक अंगे करे छे, ने कहे छे जे श्वेतांबरी भगवानने आभूषण चडावे छे ते योग्य नथी; पण विचार करता नथी के पोते काचा पाणीथी पखाल करे छे ते पण गृहस्थावस्थानो आरोप करे छे, वली एक अंगे केशर वगेरे चडावे छे ते पण साधुपणानो आरोप नथी. पण जे वखते इंद्र महाराजे भगवंतने राज्याभिषेक कर्यो ते वखते युगलीआए एक अंगुठे पखाल वीगेरे कर्युं, तेवो हेतु धारता होय तो ए पण राज अवस्थानो छे. वा मेरु शिखर उपर इंद्रे अभिषेक कर्यो ते अवस्था लेता होय तो ए बंने अवस्थाए सर्वे अंग केशर, चंदन, वस्त्र, आभूषण छे, तो एक अंगे पूजवानी कइ अवस्था छे ते विचारशो तो भूल जणाशे. जो केवली अवस्था कहेशो तो ते वखत तो टाढुं पाणी चढवानुं छेज नहीं, माटे ते अवस्था थपाशे नहीं. अने ते नहीं थापो त्यारे तो जन्म अवस्था अथवा राज अवस्थाविना बीजी अवस्था थपाशे नहीं. अने ते थापो त्यारे तो सर्व अंग पूजो, आभूषण घरेणां पहेरावो. वली दिगंबरना तेरा पंथीउए तो आवो तर्क आववाथी एक अंग पूजवुं मूकी दीधुं, मात्र पखालज करे छे. तो ते पण पखाल वखते कइ अवस्था विचारशो, वली नैवेद्य प्रभु आगल मुकशो त्यारे कइ अवस्था विचारशो? तेमनाथी पण बीजी अ-

वस्था थपावानी नथी पण पोतानी भूल आत्मार्थी समजशे आ भूल थवानुं कारण आगम नहीं मानवा तेज छे, बीजी नथी भगवान आहार करता नथी एम माने छे अने नैवेद्य धरे छे, ते तेमने विचार करवानो छे अमारे तो आहार करे छे एम मानवु छे एटले श्वेतांबरीने बधुं सीधु छे दिगंबरीकृत समयसार नाटकमा तो कहे छे जे ज्ञानी पुरुषनो भोग छे ते निर्जरानो हेतु छे तो भगवान क्या ज्ञानी छे ? के कर्म बंधनो हेतु थशे एम विचार करे तो आहार करवाथी भगवानने दोष लागे छे ते कहेवु खोटु छे एम समजाशे आ वातोनो वधारे विस्तार अध्यात्म मत परीक्षामा छे, तेथी अहीं वधारे लखतो नथी. त्याथी जोइ लेवु आत्मार्थी जीवने श्वेतांबर दिगंबर मतनी परीक्षामा एटलुज जोवानु छे के आत्मानो जे स्वभाव छे ते प्रगट थवानुं साधन कया मार्गमा छे ते जोवु जे जे आत्मा निर्मल थवाना कारणो बने मार्गमा बताव्या छे, तेमाथी निकट कया मार्गमा छे ते जोवुं जोइए

केटलाएक अध्यात्मी ग्रंथो दिगंबर मार्गमा छे, ते ग्रंथो वाचीने घणा जीवो ससारमा पडी जाय छे, तेनु कारण एटलुंज छे जे जेम जशविजयजी उपाध्यायजीए अध्यात्मना शास्त्र रच्या छे, तेमा एक ढाल निश्चयनी, तेनी साथे एक ढाल व्यवहारनी छे, तेथी ते वाचवाथी कोइ मार्गथी उपराठा थता नथी अने तेम दिगंबरना ग्रंथोमा नथी तेथी दिगंबरना ग्रंथ वाची निश्चे पामता नथी अने व्यवहार पालता नथी तेथी जीवो बे मार्गथी भ्रष्ट थाय छे, एनुं कारण एटलुज छे के आगम नहीं मानवाथी आगममा तो आ कालमा वधारे चार नयनीज व्याख्या

करवा कहेलुं छे, तेनुं कारण जे व्यवहार मार्गमां पुष्ट नथी थया ते जीवो निश्चय एकांत वांचवाथी संसारमां लीन थइ जाय छे. अने जे व्यवहार मार्गमां मजबूत थएला होय, तेने निश्चय मार्गनुं ज्ञान थवाथी व्यवहार मार्ग पालता होय, तेनो अहंकार नष्ट थइ जाय छे, के जेम प्रभुजीए आत्मतत्त्वमां रमवुं कह्युं छे तेम रमातुं नथी; माटे निज स्वभावमां रमीश ते दिवस पूर्ण धर्म कर्यो गणाशे. माटे ते बाबतनी मारामां खामी छे. ते खामी मटाडवा साधन करवुं. ते साधनमां तत्वज्ञाननां शास्त्र तथा तत्त्वज्ञानना जाणकार पुरुषनी संगत करुं, आम विचारी निश्चय धर्म पामवाना उद्यमी थाय. एटले गुणनी वृद्धि थाय, पण जे एम विचारे जे ज्ञान विना क्रिया कायक्लेश छे, माटे क्रिया करवीज नहीं एम विचारीने क्रिया उपरथी विमुख थाय छे. ते शुं करे छे ? तप न करे त्यारे खाइने पुद्गलनी पुष्टता करे, विषय कषायनी वृद्धि करे, प्रतिक्रमणनी क्रिया न करे, नवराशना वखतमां उंघे वा छोकरा रमाडे, वा गप्पां मारे, आवो नकामो वखत जाय, अने एवां गप्पां मारवानी टेव पडवाथी वांचवानो अभ्यास पण छुटी जाय छे, पछी संसारमां मग्न थाय छे. एवा थएला जोवामां आवे छे माटे पूर्व पुरुषोए "ज्ञानक्रियाभ्यां मोक्षः" आ पाठ मुकेला छे. माटे आत्मार्थीए अध्यात्मज्ञाननो अभ्यास करी संसारी विषय कषायनी क्रियाथी मुकावुं जोइए. अने जे कुशलानुबंधी अनुष्टान छे ते आदरवुं जोइए. अने जे जे गुणस्थानमां जे जे क्रिया मुकवानी छे ते मूकवी. अने जे जे क्रिया ग्रहण करवानी छे ते ग्रहण करवी तोज गुणस्थान चडवानो वखत मले, अने आत्म विशुद्धि थाय. तेवी तेवी प्रवृत्ति थवाथी अध्यात्म ज्ञान

खरुं थयुं गणाय नाम अध्यात्म, ठवण अध्यात्म अने ज्व्य अध्यात्म तोआनंदघनजी महाराज गरूदा कहे ठे, तेम ते अध्यात्म कार्य थशे नहीं, नाव अध्यात्मज आत्मानुं कार्य करनार ठे, ते अध्यात्म दिगंवरी श्वेतावरीनु जूडुं नथी, पण सामान्य रीते ठीक ठे, पण वस्तु धर्मना ज्ञानमा फेर न होय फेर होय तेने जिनागममा नाव अध्यात्म कहेता नथी प्रजुए कहेला वस्तु धर्मनी यथार्थ श्रद्धा करी ध्यानादिक करे ठे, तो सफल थाय ठे पण ते विपरीतपणे श्रद्धा करी ध्यान करे ते सफल थतु नथी अरूपी पदार्थनु ज्ञान तथा रूपीपदार्थना वस्तु धर्मनुं ज्ञान सर्वज्ञता आव्या विना यथार्थ थतु नथी, माटे तेनी श्रद्धा आगम अनुसारे करे तोज वने; अने ते आगम प्रमाण न करे तो यथार्थ श्रद्धा क्याथी थाय? अने ते न थाय त्या सुधी नाव अध्यात्म आवे नहीं, ने आत्म कार्य थाय नहीं ते आगमनी श्रद्धा श्वेतावर धर्ममा ठे, माटे एज कल्याण करनारु ठे.

प्रश्न--तमे एम कहोगे जे आगमनी श्रद्धाएज नाव अध्यात्म आवे तो जैन आगममा पंदर भेदे सिद्ध थया छे ते केम मनाशे

उत्तर—पंदर नेदे सिद्ध कह्या ठे ते प्रमाण ठे ने तेमा केटलाएक नेद तो आगम माननारना ठे फक्त अन्यलिंगे सिद्ध कह्या ठे ते आगम माननार न होय पण ते जे पद माननो होय, तेमा आगमथी विरुद्ध वात होय ते वात उपर सेहेजे तेनी अश्रद्धा थाय ठे. जेम कोइ माणसने वगर उद्यमे पग गरकी जाय ठे ने निधान मले ठे, तेम ते जीवोने सिद्धात प्रमाणे श्रद्धा पोताना क्षयोपशमना वलथी जागे ठे, तेथी जे जे तेना

आगममा जैन आगमथी विपरीत छे, ते विपरीत आवी जाय, अने जैन आगम जोया विना जैन आगममां कह्या प्रमाणे श्रद्धा थाय, तेने भाव अध्यात्म प्रगट थाय छे, तेम दिगंबरने पण थाय तेमां कांइ नवाइ जेवुं नथी. वीतरागनो धर्म कांइ केवल लिंग- मां नथी पण यथार्थ नवे तत्वनुं तथा षट् द्रव्यनुं ज्ञान जेने थाय तेने भाव अध्यात्म प्रगट थाय. माटे वस्तु धर्म यथार्थ खोजवा- नो उद्यम करवो तेथी कार्य थशे.

प्रश्न--जैनमां रडवा कूटवानी रीती छे ते योग्य छे ?

उत्तर--जिन एटले राग द्वेषने जीते तेहने जिन कहीए ते- हना सेवक ते जैनी कहेवाय छे तो जिननो उपदेश पण रागद्वेष जीतवानो छे. उपदेशना सांभलनार राग धरीने रुदन करे छाती कूटे माथां कूटे तो तेथी प्रभुनी आज्ञानुं उलंगन करवुं थाय छे. वली रुदन करवाथी अने मरनारनी फीकर करवाथी केटलाएक माणस मरण करे छे. जुवो लक्ष्मणजीनो संबंध ! लक्ष्मणजी ने रामचंद्रजी बे बन्नेना स्नेहनुं वखाण इंद्र महाराजे कर्युं ते कोइक देवताथी सहन न थयुं अने ते जोवा आव्या. मनुष्य लो- कमां आवीने लक्ष्मण सांभले एम सीताजीनुं रूप धारण करी रामचंद्रजी काल करी गया एहेवुं रुदन लक्ष्मणे सांभळ्युं ते- वोज मनमां अत्यंत शोक प्राप्त थयो ने ते शोकनी अत्यंतताथी तरत लक्ष्मणजी मरणने पाम्या. आवी हानी वासुदेव जेवा पुरु- षने थइ तो तेमना वीर्यनी अपेक्षाये आपणामां कंइ पण बल- शक्ति वीर्य नथी तो आपणा शरीरने हानी केम न पहोंचे. कदापि तेमनामां भाइनो राग हतो, तेथी ओछो राग होय तो मरण न थाय, पण शक्ति तो घटेज. रोगादीक पण वखते थाय.

वखते माणस फीकरमा गाम्ना थाय छे बुद्धि भ्रष्ट थाय, भ्रमित थाय छे आ म्होटुं प्रगट नुकशान छे वली जगतमा पण आवरु नथी पामता वली राजकर्त्ता यवन राजा छे तो पण आ रम्वा कुटवानी रीतने धिक्कारे छे आपणे जगतमा ऊच कोम कहेवाइए, तेनी नीच कोम हासी करे ए आपणी आवरुने केटलुं हीणु लगाम्नार छे बजार वच्चे रम्वुं कुटवुं ते जोइ रस्ते चालता माणसने केटली इजा थाय छे ने हासी करे छे वली केटलाएक देशमा लाज काढवावाला वेरा छे, तेम छतां माथानो छेम्डो कमरे बाधीने कुटे छे, केम्ड ऊपर अग बधुं खुल्लु रहे छे, आ केवु हासी कारक छे आ रीत नीच कोम जेवी छे के नहीं ते विचारथी जुए तो समजाय हमेश माणसने छातीनु जोर सारुं होय तो बुद्धि सारी रहे छे ने छातीए जोरथी कुटवाथी छातीनी कमजोरी थाय छे तेथी बुद्धिनी पण हानी थाय छे, वली एथी छातीमा हार्टम्डिसीझ रोग ( इग्रेजीमा कहे छे ते ) थाय छे, ए रोग एवो छे के ए रोगवालो एकदम मरी जाय छे वली काम करवाने अशक्त थाय छे, ने तेम हालमा छातीना दरदवाला घणा माणस म्हारा जोवामा आवे छे ते माणसने तप, सयम ज्ञान अभ्यास करवानी बहु हरकत आवे छे अमदावाद जेवा शेहेरमा घणो चाल हतो ते केटलोक फेरव्यो छे, तेटलो बीजा शहेरमा फर्यो नथी, पण म्हारा विचार प्रमाणे अने ज्ञानी पुरुषो थइ गया तेमना विचार प्रमाणे आ चाल बध करवा योग्य छे आपणा देव वीतराग छे अने तेमनो हुकम पण वीतराग दशा लाववानो छे तो माणस मरी गयुं ते जोइने विचारवानुं छे के आ माणस बाल उमरमा मरण पाम्यो तो हुं क्यारे मरीश ते खबर नथी तथा हु घरम्डो थइने मरीश ए पण निश्चे नथी तो म्हारे हवे धर्ममा ऊजमाल थवु, आ-

छे, ने कइक सुधारा थया छे माटे बुद्धिवाला पुरुषोए पोताने त्यां एवो चाल बंध करवो जोइए. ए बंध करवाथी निंदा थवानी बीक राखवी नहीं. एवी बीक राखवाथी आपणे धर्म करी शकता नथी. में म्हारी माताजी काल धर्म पाम्यां त्यारे ए रीवाज बंध करवा धार्युं त्यारे म्हारा पीताजी हयात हता अने ते पण धर्म चुस्त हता तेथी उलटा कहेवा लाग्या जे एम करवुं व्याजबी छे. आ वखत बंध थशे तो म्हारी पाछल पण बंध रहेशे तो म्हने पण लाभ मलशे एम विचारी म्हारा पीताश्रीए वीर्य फोरवी बंध कर्युं, तेथी अज्ञानी निंदा करता हता; पण सुज्ञ पुरुषो तो साबाशी आपता हता. पछी म्हारा पीताए काल कर्यो ते वखते म्हारी मातानी वखत निंदा करता हता तेटली निंदा न थइ; माटे पहेली वखत अणसमजु बोले तेना उपर समभाव राखीने आवा चाल बंध राखवा पहेल कर्या विना बनतुं नथी. सर्वे चीज उद्यमने आधिन छे अने पोताना घरना पोते राजा छे माटे पोताने त्यां एवुं रूवा कुटवानुं न करे तो कंइ न्यातवाला न्यात बहार मूकवाना नथी, माटे हिंमत पकडीने ए चालने रोकवा जोइए. ए रूवा कुटवानुं काम एवुं छे के एक माणस रूतुं होय ते वात शान्त पुरुषने सांभलवामां आववाथी एने पण राग प्राप्त थवाथी आंसु आवे छे तेनो निमीत्त भूत रूनार माणस छे माटे जेम बने तेम ए चाल सुज्ञ पुरुषोए उठो करवो जोइए, तेने बदले एवो वहीवट थयो छे के आपणे तेने त्यां रूवा कुटवा नहीं जइये तो आपणे त्यां रूवा कुटवा कोण आवशे एटले जीवता माणसे पण रूं कुटे तेमां शोभा लेवानी ठरावी. आ ते कहेवी अज्ञाननी राजधानी छे मुवा पछी पोते जोवा तो आववानो नथी अने रूशे कुटशे के नहीं तेनी

खबर नथी पण ए बाबतनुं कर्म बाधी ले छे आ अज्ञानता छे ते आत्मार्थीए अज्ञानता टालवी अने रम्वा कुटवानी इच्छा तो न राखवी पण कुटुंनी माणसने समजाववुं जे म्हारी पाछल आ पाप करशो नहीं एवी सखत रीते भलामण करवी के कर्म न बधाय. पण कर्म बाधवानो भय लाग्यो एज शुभ प्रणामे शुभ कर्म उपार्जन थाय माटे एवो ठरावज करवो के म्हारी पाछलरम्वा कुटवानु करवु नहीं एटले पाछल वाला एनो हुकम न माने तो पण मरनारने कर्म बंध थायज नहीं. आ लखवाथी एम न समजवुं के मरण थाय त्या जवुज नहीं जवुं तो जोइए कारण के स्नेही वा न्यातना माणसने दुःख पम्यु तो जरुर जइने संतोष पमाम्वो ते दीलगीरीमा छे तो तेमनु कामकाज करी आपवुं तेम जो न करीए तो निर्दयता थाय, माटे जवु, संतोष पामे एवी वात करवी, के तेनुं चित्त शान्त रहे वली मरनारनी देहने ठेकाणे पोचाम्वामा मदद करवी, ए करवुं जरुरी काम छे ए करवामा एवी फीकर रहे जे म्हारी देहने ठेकाणे नहीं पाम्नार मले ने तेमा जीवनी उतपत्ति थशे वा तेथी कोइ प्रकारनु काम थशे, तेथी कर्म बंध थशे ते पण फीकर राखे, तेथी पण कर्म बंधनो भय रह्यो तेमां हरकत नथी, अने जे पुरुष संथारो करी वोसराववानीज भावना करे छे तेन ए विचार थतो नथी फक्त स्नेहीने मदद करवी अने शवमा वधारे वखत लागवाथी जीवनी उत्पत्ति थशे ते फीकरथीज जरुर जवु, कामकाज करवुं रम्वा कुटवानो विकल्प बंध कराववो वा उछो कराववो ए जरुरी छे वली केटलाएक देशमा हालमा पण हिंदुलोकमा पण मरण वखते रम्ता कुटता नथी उलटा ढोल वगाम्हे छे, तो शु ते लोकने मरनार उपर राग नहीं होय? रागथी आखमा आसु आवे ए स्वाभावीक नियम छे तेम बने, पण ते थोमा वखतमा वि-

कल्प शांत थइ जाय. पण तेनी वर्तणुक याद लावी रहे ते-
नो पार न आवे अने मातुं ध्यान पण विशेष थाय वली स्त्रियो
धणीनुं सुख याद करी रहवाथी काम पण दीप्त थाय; तो पछी
कुलक्षण सेववानी बुद्धि थाय. आवा नुकशान कारक चाल सु-
धारवा ए म्होटा पुरुषनी फरज छे. ए नित्य एवुं रहवानुं जारी रहे-
वाथी धणीने स्त्री संबंधी विकार जागवानुं साधन थाय छे, माटे ए
बदले एटलो वखत धर्म साधनमां काढवो एवुंज मुकरर कर्युं होय
तो वैराग्य दशा जागे, विकल्पनी शान्ति थाय, खोटा मार्गनी बुद्धि
थाय नहीं ने होय तो ते खोटी बुद्धि नष्ट थाय माटे एवा अवसरमां
वैराग्यनी कथा विगेरे सांभलवामां वखत काढवो, आ बाबत ज-
रुरनी छे. पण जैनमां हालमां वर्त्ते छे एवी रीति होय एम संभ-
वतुं नथी. त्यारे अहीं कोइ प्रश्न करशे जे, जे वखत मरुदेवी
माताजी निर्वाण पाम्यां त्यारे भरत महाराजे पोक मुकी ते
वात शास्त्रमां छे ए कंइ धर्म रीत नथी, संसार रीत छे के एवी
पोक मुकवाथी लोकना जाणवामां आवे तेथी सर्वे लोक एकठा
थइ जाय. ए तो मरण वखतनी एक क्रिया छे, पण आवुं बजार
वच्चे कुटवुं, रोज छेहा वालीने बेसवुं, ते कंइ साबीत थतुं नथी.
ते वखते रागना बंधनथी रुदन थइ जाय, लोकने जणाववा पो-
क मुके ए कृत्य संसार नीतिनुं छे पण त्यार बाद जे वधारे कृत्य
थाय छे ते धर्मीष्टने करवा योग्य नथी. धर्मीष्टने तो जे रागा-
दिक घटे एम करवुं एज सार छे.

प्रश्न.—जैन कोमनी चढती दशा केम थाय?

उत्तर.— आ प्रश्ननो जवाब तो अतिशे ज्ञानी विना बी-
जो कोइ देवा समर्थ नथी अने ते आपणा भाग्यनी कसरथी
अतिशे ज्ञानीनो विरह पड्यो छे एटले खातरी पूर्वक जवाब
देवा अशक्त छुं. वली हुं जवाब लखुं छुं ते करतां पण म्हाराथी

वधारे बुद्धिवान वधारे बतावी शके, माटे जेनुं विशेष होय ते अंगीकार करवु,

१ प्रथम तो अन्यायनी प्रवृत्ति जैनमा जे धनाढ्यपणे दीपता पुरुषो तथा शेठीआ नाम धरावता होय वा धर्मीमा नाम लखावता होय एवा पुरुषोए बंध करवी जोइए, कारण के यथा राजा तथा प्रजा तेम म्होटा पुरुषोनी एवी सुंदर प्रवृत्ति जोइने नाहाना पण न्यायमा प्रवर्ते एम वर्त्तवा सारु मार्गानुसारीना गुण योगशास्त्रमां तथा धर्मबिंदुमा तथा श्राद्धगुणवर्णवमा बताव्या छे ते उपरथी म्हारी चोपडी प्रश्नोत्तर रत्न चिंतामणी नामनी छे, तेमा जोशो तो जणाशे ए गुणमा जैन कोम वर्त्ते एवा उपदेश मुनि महाराजोए पण देवाना जारी राखवा जोइए तथा जेम रात्री भोजन विगेरेना नियम करावबामा उद्यम करे छे तेम आ उपदेशना उद्यममा वर्त्ते तो वधारे लाभ थाय एवो उपदेश नथी देता एम म्हारु कहेवुं नथी, पण देनार महा पुरुषोनो उत्साह वधारवा लख्युं छे अने कोइ सामान्यपणे देता होय ते विस्तारे उपदेश दे ते सारु लखवु छे ग्रहस्थोए एवी प्रवृत्ति रोकीने पोताना स्नेहीने अन्याय त्याग करे एवी भलामण कर्याज करवी जोइए कदाच भलामण कोइ धारण करतुं नथी तेथी पण उदास थइ ए उपदेश बंध करवो नहीं. हमेश जारी राखवाथी कंइ कंइ सुधारो थाय अन्यायनु धन स्थिर रहेतुं नथी एवुं श्राद्धविधि विगेरे शास्त्रमा घणे ठेकाणे कह्यु छे माटे न्यायनी प्रवृत्ति धन मले. ते स्थिर रहे वली जैन कोमनो बीजी कोममा घणो विश्वास पडे तेथी वेपार करवा पैसा जोइए ते पण सुखे मले, वली नोकरी करवा जाय तो झट नोकरी सारा पगारनी मले दलाली करवा जाय तो ते धंधामा पण पेदाश करे हरकोइ माल वेचवानी दुकान माडे, घणां घ-

शक तेनी दुकाने आवे ए वाबतमां सुरतमां कल्याणभाइ क-
रीने उत्तम श्रावक हता तेमनी शाख एवी पडी हती जे टो-
पीओना वेपारमां रुपिआ बे त्रण हजार दर वरसे पेदा करता
हता. वळी पिता पासे पुजी नोहोती ते छतां पोते आशरे चा-
लीश हजारनी पुंजी मेलवी हती. ते त्रण भाइओ तथा पिताए
वेंहेंची लीधी. त्यार बाद पोते वेपार करवानो बंध कर्यो तो पछी
भाइओ दुकान चलावी न शक्या. अने पेंदाश नहीं थवाथी दु-
कान बंध करवानो वखत आव्यो. भरुचमां एक पारसीनी दुका-
न छे ते एकज रीतनो भाव राखे छे तेमां तेने त्यां घणो वकरो
थाय छे. मुंबाइमां नफीसोवाला म्होटा वेपारी एक रीत राखे छे
तो तेमां सुखी थयेला जोइए छीए, माटे वेपारमां अन्याय जो
बंध करे तो म्होटी साख पडी जाय अने पुन्यानुसारे सारी पें-
दाश थाय. गया कालमां सत्यवादी श्रावको थइ गया छे ते ए-
टली बधी छाप मारी गया छे के श्रावक गेर व्याजबी रीते
चाले नहीं, तेथी हालमां श्रावक बुरु काम लूच्चाइ करे छे एटला
अर्थमां श्रावक लुच्चाइ न करे आ छाप चाली आवे छे, तेना ब-
दलामां हमणांना समयमां धर्मी नाम धरावीने पण केटलाक
ठगाइ करता जोवामां आववाथी बीजा धर्मी श्रावकने त्यां कोइ
भलामण करे छे तो धनवान ग्रहस्थो तेनो विश्वास नथी करता
अने धर्म ठगनी उपमा आपे छे. ते में पण सांभली छे आ थवा-
मां धनवाननी भूल नथी पण धर्मी थइने ठगाइनो धंधो करे त्यारे
लोकमां सर्व धर्मीनी निंदा थाय अने वेपार रोजगारमां विश्वास
उठवाथी पेंदाश थाय नहीं अने सुखी थवानो वखत मले नहीं
माटे जेम बने तेम श्रावकोए छाप सारी पाडवी जोइए. केटला
एक वेपारी वेपार करे छे तेमां नुकशान लागे छे त्यारे देवामांथी
छूटवा सारु सरकार पासे जाय छे एटले कायदानो फायदो लइने

मुक्त थाय छे तेमां पैसा छुपावी राखे छे. ए अन्याय छे के शुं छे वळी कदापि कोइए न राख्या अने पाछा पैसा पेदा कर्या ने लाखो मळ्या पण पेहेलाना देवामा जुज रकम देवी होय तो देवा वालाने आपे नहीं तो जगतमा जैन कोमने सुदर छाप शी रीते पडे ते विचारवुं जोइए; अने एवा पैसा राखी शासननी परभावना करे संघ जमाडे तेमा अन्यायना पैसा आवे तो जमनारनी बुद्धि केवी रीते सुधरे साधारण माणस दाखलो ले के देवा वाला ते आवा धनवान थाय छे, शासनना भाभला जेवा केहेवाय छे, ते आपता नथी तो आपणे शी रीते आपीए? एवा विचार फेलावाथी लोकना मनमा एवुं आव्युं जे पैसा हशे ते मान पामीशुं. देवा वालाने बधा पैसा आपी दइशुं तो मान नहीं पामीये आ बुद्धि फेलाइ गइ छे तेथी सर्व कोइने देन थाय ते आपवानी बुद्धि थाय नहीं आ बाबतमा संघनो अंकोश एवो जोइए वा नाती वालानो के जे देवादार थाय तो तमाम पैसा देवा वालाने अपाववा जोइए अने पछी तेने म्होटा वरा संघ जमाडवाना खरच करवा देवा जोइए एवी चीज करवा तैयार थये के न्याते नवलामण करवी तें ला लीधी छे ते वखत छगा पैसा आप्या छे, ने बाकीनुं देवुं छे ते पेटे न्यातना तथा संघना खरच जेटला पैसा आपी दो अने ते देवुं पुरु थया पछी तमारी मरजी प्रमाणे खरचो आवी अंकुश न्यात राखी शके तो जैननी बहु मानता थवामा बाकी रहे नहीं अने एवी छापथी श्रावकोने धीरता कोइ श्रावको खाय नहीं सर्वथी शिरोमणि कोम थइ जाय पण हालमा तो श्रावको प्रथम देव द्रव्यनाज पैसा खाइ जनार उपर एवी अंकुश राखी शकती नथी अने तेथी लोको दुखी थया विना रहेता नथी केटलाएक गाममा एवी पण रीत छे के देवद्रव्यनुं देवुं होय त्या सुधी श्रावक तेहने त्या न्यात जमवा जता

नथी तेथी तेवा स्थलोए देवद्रव्यना लेहेणानो निकाल आवी जाय छे पण एवो रीवाज सरवे देवा आशरी सर्वे सेहेरमां तथा सर्व गाममां थाय तो जैन कोम सुखी थवानुं साधन छे वली कोइ माणसे देवालुं काढ्युं नथी पोतानी रीतमां छे पण पैसा नथी ते माणस देवुं करी न्यात विगेरे जमाडे छे तेनी न्यात जमवी नहीं. वली ठगाइ लुच्चाइनो वेपारज करे छे तो तेनी पण न्यात तरफथी शिक्षा करवी. आ रीत थाय तो न्यात सुखी थाय अथवा आ लोकमां वेपार रोजगार सारो चाले अने जगतमां बहु मानता थाय अने सुखी थाय अने तेना पुण्यथी परलोकमां पण सुखी थाय. विद्याभ्यास करी हुंशियार थइ वर्त्तणुक अन्यायनी सुधारे नहीं तो तेथी पण कोमनुं बहुमान थवालुं नथी. बहुमान थवानुं कारण अन्याय छोडवो एज छे. ते म्होटा पुरुषे करी बनाववो जोइए तथा देव द्रव्य साधारण द्रव्य ज्ञान द्रव्य एवां द्रव्य श्रावकने त्यां वधारे व्याज ऊपजतुं होय तो पण धीरवुं नहीं, ए बाबत श्राद्धविधी तथा द्रव्य शीतेरी विगेरे शास्त्रमां मना करी छे अने तेमां घणा विस्तारे बताव्यो छे ते जोवुं जोइए. देवादिक द्रव्य जेणे खाधुं तेनी सात पेढी सूधी तेनो वंश सुखी थतो नथी माटे धीरवानो पायोज बंध करवो जोइए अने राखनारे व्याजे तो न लेवुं पण घीनी टीपना देवा पैसा पण राखवा नहीं, अने राखवाथी घणुंज नुकशान शास्त्रमां बताव्युं छे, माटे ए बातनो खूब लक्ष राखवाथी सुखी थवानुं साधन छे, देरासर संबंधीना पैसामां कांइ पण पोताना पैसानो भेल करवो नहीं तेथी आ लोकने परलोकना सुखना भाजन थशे.

२ बीजुं जैन कोमना शेठीआणुए सट्टानो वेपार करवा देवो न जोइए. सट्टाना वेपारथी माणसने घणां प्रकारनां नुकशान थाय छे. एकतो प्रथम आलसु थाय छे कांइ पण वेपार ढुंढवानी

शीखवानी बुद्दि नष्ट थाय छे वेपारनी रीतनी खबर पमती नथ नामानी रीत पण शीखी शकतो नथी, ए सट्टाना धंधावालाने बी- जा वेपारनी वाकेफगारी थती नथी तेथी कदापि सट्टाना धंधामा नुकशान गयुं, तो पछी सुखी थवाना वखतनी मुश्केली छे. वली ए धंधाथी माणस वांकु बोलवुं, लुच्चाइ करवी, एवी अनेक रीतो खोटी शीखे छे, कोइक भाग्यशाली न शीखे तेने ए ठपको नथी; पण ए निमित्त एवुं छे ए वेपारवालाने पोतानी पासे रु ५००) आपवानी शक्ति होय अने पाच हजार खोट जाय एवो वेपार करे त्यारे हवे नुकशानी क्याथी आपीशुं ए फीकर रही नही. ने खोट जाय तो देवालु काढवुज पमे, अने पाछो फरी पेदा करे तो ते आपवानी दानत रहेती नथी तो ए अन्याय छे के शु छे? ए वेपार लावो केम करी शके छे के वेपारमा पैसा रोकवा पमता नथी जो रोकवा पमे तो लावो वेपार सहेजे थाय नही वली जु- गार अने आ नामफेर छे जुगारमा पण पैसा जोइता नथी फक्त एकी वा बेकी बेमाथी एक बोलवामा आवे ते साचुं पमे तो जीते छे तेम आकना धधामा पण एज रीत छे कलकत्तेथी मलतो आक आवे ते जीते छे ने नफो ले छे तो बे रीत एक छे हालमा सुर तमा बाइओ पण ए वेपार करवा लागी छे आ स्थितीने आपणी श्रावक कोम पहोंची छे हवे सुखी शी रीते थाय? सट्टामा एक पेदा करे अने एक खुए त्यारे एक श्रावक सुखी थयो अने एक दुखी थयो, तेमा काइ बहारथी पैसो आव्यो नही अने बीजा वे पारमा तो माल देशावर चमावे वा मंगावे तेमा फायदो थाय छे या कोइ कहेशे श्रावक सिवाय बीजी कोम शु सट्टानो धधो नथी करता ते विषे जाणवु जे बही कोम करे छे पण घणुं करी श्रा वकनी वस्तिना प्रमाणमा श्रावक घणा सट्टाना धधा करनार नि कले छे म्होटा शहेरोमा दलालो अने सट्टाना धंधा करनार वधारे

देखाय छे तेमां दलालीना धंधाने हमो वखोडता नथी, कारण के ए वेपार वगर जोखमनो छे, नुकशाननुं नाम नथी ए पेदा करवानो ज धंधो छे पण जे सट्टाना दलालो छे ते दलाली उपर संतोष करीने रहे तो जरुर दलालीमां सारु पेदा करे पण ते दलालो पाछा सट्टानो धंधो करी दलालीमां पेदा करेलुं सट्टामां वहोलताए आपे छे एटले दलालोने पण सुखी थवानो वखत मलतो नथी वली जेना बाप सट्टाना धंधा करता होय तेना छोकरा पण एज वेपारमां पडे छे. तेमनी वधारे भणवा गणवानी बुद्धि पण जागती नथी तेम मा बापने पण भणाववानी कालजी रहेती नथी माटे सट्टानो वेपार जैन कोमने करवो नही एवो न्याती वा संघ तरफथी बंदोबस्त थाय तो जैन कोमने बीजा वेपार करवानी खोजना थाय. माता पिताने अने छोकरांउने भणवानी बुद्धि थाय तेथी छोकरांउ विद्वान थाय तो न्याय अन्याय सहेजे समजे अने अन्याय सहेजे त्याग करे, माटे हरेक प्रकारे सट्टाना धंधा छूटे एवा भाषणो तथा मुनी महाराजनो उपदेश जारी करी माणसोना मनमां ठसावी पछी न्यातीनो बंदोबस्त थाय तो सारी रीते सुधरवानुं स्थानक छे.

३ त्रीजुं के जैन कोममां विद्याभ्यासनी घणी खामी छे माटे जैनने विद्याभ्यासमां जोडवा जोइए. ते जोडवानुं काम नाणानुं छे नाणां विना बनतुं नथी हवे नाणां भेगां करवामां एवुं थवुं जोइए के जे नाणुं खर्चाय छे तेमांथी बचावीने नाणां कढाववां जोइए, के कोम खरचना बोजामां आवे नही ते सारु मन एम थाय छे के लगन सिमंत अने मर्ण पाछळ हजारो रुपिआ खर्चाय छे. केटलीक न्यातमां केटला एक शहेरमां लगनमां एक एक छोकरो परणे छे त्यारे पैशा वहेंचवानो सो सो दोढसो दोढसो रुपीआ खरच थाय छे ते बुम काढी नांखी ते ख-

रचना पैशा विद्याभ्यासना फंडमां लेवा जे न्यातमा लग्नने सिमंतनी एक न्यात करता वधारे न्यातो जमाडवानो चाल छे ते न्यातमा एक न्यात करता वधारे न्यात जमाडवानो रीवाज बंध करी तेना बचावना पैशा आ फंडमा लेवा तेनो एवो अंकुश जोइए के ज्या सुधी ठरावेला पैसा फंडमा नहीं आपे त्या सुधी हस्तमेलाप विगेरे थाय नही आ ठराव पसार थाय तो केटलीएक उपज दर वरसनी थाय वली मर्ण पाछळ केटलीएक ज्ञातीमां न्यातो जमाडवानो रीवाज छे ए रीवाज बहुज दीलगीरी भरेलो छे. घणु करी अन्य दर्शनीनी रीत जैनमा दाखल थएली जणाय छे ए जमण केटलुं निर्दय छे ते थोडुं जणावुंछुं केटलाएक देशमा जे दिवस न्यात होय तेज दिवशे परदेशना माणसो रडवा आवे ते घणुं करीने जे वखत न्यात जमवा बेसे तेज वखत रडवा कुटवानु काम चाले छे. हवे जे माणसने त्या मृत्यु थयुं होय ते माणस केटली दीलगीरीमा होय ते तो सर्व कोइने अनुभव छे हवे एवी दीलगीरीवालाने त्या जमवा जवानु मन वज्र जेवी छातीवालाने थाय, पण दयालु माणसनु मन शी रीते थाय? अने थाय तो निर्दयता साबीत थाय छे. वली एक बाजु उपर रडता कुटता होय ने कुटवाथी छातीमाथी लोहीधारा निकळती होय अने ते वखत जमवा बेसनार सुखे प्रसन्नताये खाय ए केवी निर्दयता छे. वळी केटलाएक बुढा माणस मरवा पड्या होय ने मर्ण जेवी स्थितीमा होय तेने जोइने आवीने लोकने बोलता सांभळ्या छे के हवे लाडवा सही थाय एवुं छे पछी ते माणस मर्ण पामेछे, त्यारे खुश थाय छे के हवे लाडवा मलशे ए जे लाडवा बदल खुश थाय छे तेमा गरभित पचेंद्रीना मर्णनी अनुमोदना थाय छे, आ पाप केटलुं छे. ते ज्ञानी कहे ते खरु पण खावानी तृष्णाने लीधे माणस

विचारता नथी अने ए चाल चलाव्या जाय छे, माटे ए चाल बंध थाय तो पैसा बचे अने वली बहाली अनुमोदनानुं पाप टले माटे ए रीवाज बंध करीने तेना बचता पैसा आ फंडमां लेवा. वळी मरण पाछळ शुभ मार्गे हजारो रुपीआ काढे छे तेमांथी कंइक भाग आ खातामां लेवानो राखवो जोइए, तथा म्होटा गृहस्थोए खुशीथी म्होटी रकमनी मदद करवी जोइए आम थवाथी खर्चातां नाणां आ फंडमां आवशे एटले वधारे बोजो आवशे नहीं अने ए सारु विद्याभ्यासना काममां आ फंडमांथी मदद थशे. कदापि एटले नाणे बस न थाय तो पेंदाश उपर सेंकडे एक एक रुपिओ अथवा अरधो रुपिउ ठरावयो जोइए एक हजार रुपिआ सुधीना पेंदा करनार उपर सेंकडे रु ०॥ लेवो जोइए अने तेनी उपरनी पेंदाशवाळानो सेंकडे रु १) ठरावबो जोइए. म्होटी पेंदाशवाळाने कंइ भारे पडे एम नथी कारण के शास्त्रमां तो हेमचंद्र आचार्य पेंदाशमांथी चोथो भाग शुभ मार्गे वापरवा कहे छे तो आतो एक रुपिउ कंइ भारे पडवानो नथी आ सिवाय न्यातोमां केटलाएक दंडो लेवानो चाल छे ते दंडना पैसा आ फंडमां लेवा जोइए. आम थवाथी पैसानी उत्पत्ति सारी थवानो संभव छे अने हंमेश तेमांथी जे जे कामो करवां हशे ते थयां करशे. हालमां दरेक न्यातमां न्यातनी पूंजीउ छे ते पूंजीयो आ फंडमां जो आवे तो कामनी शरुआत सहेजे थाय अने कोइने पैसा घरमांथी काढवा पडे नहीं. अने हंमेशनी आवक शरु थाय. पेंदाशमां लेवानुं अनुकुळ ना आवे तो घणी जातना मालना वेपार छे ते दरेक जातना माल उपर कंइ लेवानो ठराव करवो एवो ठराव पांजरापोळ सारु छे तो ते सुखे ते कारखानुं चाले छे पण वस्तुपणे पेंदाशनो ठराव वधारे उत्तम छे. वेपार उपर नांखवाथी वेपारमां केटलीएक हरकतो

पडे माटे पेटाशपर आय त्या सुधी वेपार उपर टेक करवो नहीं पण जेम माणसो समजे तेम करवुं, केमके बधा माणसना विचार मळवा मुश्केल पडे छे अने आवा काम माणसने प्रसन्न करीने करवाना छे, जेम कोइने अप्रीती न थाय तेम करवानुं छे. आ काम करवाथी जेम पोतानी जातिना माणसने जमवानुं मळे छे ते पोताना छोकरा हुशीआर थशे तो वधारे जमवानुं मळशे, जमवानुं जवानुं नथी वली कर नहीं आपे तो छोकरा भणाववा निशाळमा वधारे कर आपवो पडशे ते पण बचशे, माटे सर्वे भाइडए मनमां आ वात विचारवी जोइए अने पैसानु फंड प्राप्त करवु पैसा विना कइ काम बने एवु नथी.

४ ए पैसाना खरच करवामा प्रथम निशाळो गुजराती इंग्रेजी सस्कृत अने जैनधर्मनुए भणे एवी निशाळो जोइए. आ निशाळमा पण अन्यायमाथी मन खसे एवुं शिक्षण आपवु जोइए सस्कृत भणनार माणसने घणा वर्ष अभ्यास करवो पडे छे त्या सुधी एमना कुंटुबनु पोषण थाय एवा बंदोबस्तनी जरुर छे, ते विना हालमा संस्कृतशाळामा अभ्यास छोकरा करे छे पण ते छोकरा पुरुं सस्कृत ज्ञान मेळवी शकता नथी अधुरु मूकी चाल्या जाय छे, तेनु कारण एटलुंज छे के धनवानना छोकरा तो प्राये अभ्यास करता नथी अने ते करनार विरलाज निकळशे. साधारण स्थितीना छोकरा पचीशत्रीश वर्षनी उमर सुधी अभ्यास करे त्यारे सस्कृत ज्ञान पुरुं करी शके तो एटली उमर सुधी एना कुटुंबनो निर्वाह केम थाय? वली धननी तृष्णा धनवानने लाखो मळे तो पण शमती नथी तो साधारण माणसने तृष्णा केम शमे माटे पदर वरशनी उमर थाय त्यारथी कुटुबना निर्वाहनी फीकर थाय, ते फीकर न थाय एवो बंदोबस्त भणावनार तरफथी थयो होय तो सुरो अभ्यास पुरण

करे ए सारु प्रथम व्याकरणनो अभ्यास करे तेनो रु ५) महिनो आपवानो जारी करवो पछी जेम जेम अभ्यास वधे तेम तेम परीक्षा लेइने पगार वधारवो छेवट न्यायशास्त्र पुरण करतां सुधी अभ्यास करे त्यारे रु ५० ) नो महिनो आपवो. एवी आज्ञा होय तो संस्कृतनो अभ्यास पुरण करनार उमेदवार छोकरा नीकलशे माटे एवा नियमो बांधवाथी जैनमां संस्कृत जाणेला विद्वान थशे. वली ब्राह्मणो पासे साधुजीने जणवुं पडे छे ते जणवुं पडशे नहीं. तेज न्याइने संघ पगार आपी राखी लेशे तो श्रावकना पैशा बीजी कोम दर वरशे एवा पगारना आशरे बधा मलीने शास्त्रित पचीश हजार रुपैआ खाता हशे ते जैन कोम खाशे माटे आ फंड थाय तो तेमांथी आ करवानी जरुर छे. कोइ सुखी माणस हशे ते पोताना आत्महित बदले जणाशे तो ते पगार नहीं पण ले पण आ शालामां मोटामां मोटी रु ५० ) ना महिनानी आज्ञा आपवानी जरुर छे. पचाशनो महिनो आ फंडमांथी तो एक वरशथी वधारे वखत आपवो नहीं पडे, पण ते छोकराने पचासना आपनार घणा मलशे. वली संस्कृतनां भाषान्तर विगेरेमां वा बीजी शाळामां एवी पेदाश थइ शकशे जैननी विद्वत्ता वखणाशे जे तेनी साथे वाद करवा कोइ शक्तिवान थशे. एथी म्होटी प्रभावना थशे. तेमज जैन धर्मना ज्ञाननो अभ्यास तो हालमां सुरतने अमदावादमां जेम एक कलाक करावे छे तेम करवानुं जारी रहेशे तोए बस छे.

जे माणसो बीन रोजगारी छे ने दुखी छे तेने सारु दरेक म्होटा शेहेरमां उद्योगशाळा करवानी जरुर छे ते शाळामां तेमने दाखल करवाने तेने काम करवानुं सोंपवुं. जे जे काम जेनाथी बनी शके तेवुं काम सोपवुं के जैन कोम भूखे न मरे ए शाळामां कंइक माल वेचतां नुकशान थाय ते आ फंडमांथी

आपवुं घणी जातना वेपार हाथे करी करवाना छे ने जे आवडी शके एवा काम उद्योगशालामा राखवा, जेथी सहेजे ते काम करे माटे नमुना दाखल वताव्यु छे. जे चीज जैनोमा हजारो मण खपे छे ते वनाववानुं काम वैरा सहेलाइथी शीखी शके दशीयो वणवानुं काम ते पण वनावी शके वालाकुंचीयो वांधवानु पण वनावी शके एवुं छे नवली स्थितीनी वाइओने योग्य काम दाल विणवा विगेरेनुं सोपवु ने भाइओने वीडीयो वालवानुं, सुतरना दडा करवानुं, दोरडा वणवानुं ने गुथवानुं काम, केटलाक सुका पदार्थनी गोलीयो दवा सारु वनावी वेचवानु काम, आवा काम सोंपवा. मीलो विगेरेमा काम करी शके एवा ने ते धंधामां जोडवा केवल अशक्य माणसने छुपी मदत पैसानी आपवी आम थवाथी जैन कोम निराधार वधारे रहेशे नहीं अ उद्योग तो एक नाममात्र लख्या छे जगतमां घणी तरेहना वेपा छे, तेमाना वनी शके तेमां नुकशान थोडु ने नफो घणो एवा जो इने दाखल करवा वनावेल वस्तु वेचवानु काम पण तेने सोंप के गाममा फरीने ते वेचे

५ जैन कोमनी लडाइओ सरकारमा जाय छ वा न्यातम तड पडे छे अने तेथी एक वीजामा द्वेप बुद्धि वहु रहे छे, एक सं रहेतो नथी अने ते एक वीजा वच्चे घणा वरस सुधी पोहोंचे छे अने ते वदल दरेक वावतमा तकरारो पडे छे अने सरकारमा ह जारो रुपैआ जैन कोमना वगडे छे मन जुदा थवाथी एक वीजा वगाडवाना उद्यम थाय छे ए सारु एवो वदोवस्त थवो जोइए जैननी दरेक गाममा लवाद कोरट ठरावववी अने जे तकरार हो ते लवाद कोरटमाज मूके एवो न्यात तरफथी ठगव थवो जोइ पण तेमा एटलु राखवु के ते गामना लवादना फेसलाथी नारा थाय तो तेथी म्होटा शहेरोमा लवाद कोरटमा अपील करे. अ मदावाद ने मुवाइ जेवा शहेरमा त्रण त्रण कोरट करवी १ नव

१ नंबर. ३ नंबरनी एक एकथी चमती एटले सौथी मोटी
पहेला नंबरनी के त्रीजा कलासना फेंसलाथी नाराज थाय
तो बीजा नंबरनी कोरटमां पछी पहेला कलासना लवाद
आगल अपील करे के जेथी कोइने पक्षपातनो वहेम रहे नहीं,
ने हरेक कजीउं टुंकामां पती जाय. मारा मारी विगेरेना तोफान
करनारने योग्य शिक्षा पण करवी के कोरटमां सीपाइ विगेरेनो
खरच निकले. आ ठराव थवाथी घणा कजीआ ओछा थशे ने
नातोमां कुसंप चालशे नहीं. न्यातना रीवाजना कायदा न्या-
तमां अनुकूल होय ते बांधी राखवा तेमां बहु मते सुधारा एक
बे वरसे कर्या करवा पण ते हंमेश चाले एम करवुं. आम थाय
तो बहु फायदो थाय वारसानी म्होटी रकमनी तकरारना पण
निकाल आवी जाय. लाख रुपिआ उपरना फेंसला सारु एक
म्होटी दस वीस माणसनी सभा करवी जेमां वधा देशना म्होटा
गृहस्थो--लवाद निमावा जोइए ने छेल्ला फेंसला तेउने करवाने
सोंपवा, के अपक्षपात इन्साफ मले. जेथी जैन कोमनी एवी तक-
रारोमां पूंजीउनो नाश थाय छे ते थतां अटके.

६ वीसा श्रीमालीनी न्यात घणा गाममां छे ते छतां ते
लोक एक बीजाने ऊंचा निचा गणे छे ते गणवा न जोइए. व-
स्तुपणे तो तमाम श्रावकोमां भेद न होवो जोइए पण ते भेद
भांगवानो हालमां समय जणातो नथी. तेम छतां तेम थाय तो
वधारे सारुं ने तेम न थाय तो पोतानी न्यातनो माणस कोइ
पण शहेरमां होय तेने कन्या आपवा लेवानो भेद होवो न जो-
इए, ने कन्या आपी पैसा ले छे ते पण लेवा न जोइए. एना
बंदोवस्तनी पण जरुर छे. तेमां ते गामवालानो घणो भाग सरखो
होय त्यां न्यातनुं जोर चालतुं नथी, माटे तेने अटकाववानो
रस्तो बीजा शहेरवालाए करवो जोइए. घणुं करीने म्होटा शहे-
रवाला पैसा आपे छे ते आपनारना उपर पण अंकुश रहे तो

ते सहेजे बध थइ जाय. तेथी अयोग्य स्थानमा कन्यात्त जइ
दुःख पामे नहीं माटे पैसा आपनार लेनार बेने मना करी होय
तो ए काम सुधरे श्रीमाली, पोरवाड, उसवाल विगेरे जे जे न्यात
जे जे देशवार होय ते सर्वेनी साथे आप लेनो वहीवट करवाम
अटकाव छे ते काढी नाखवो जोइए, अने वली उसवाल श्रीमाली
पोरवाड विगेरे दसा विसानो भेद छे ते निकली जाय तो वधारे
सारु एमाथी जेम बहु मते सबड थाय तेम करवा जेवु छे. वली
जैन धर्मना पालनार केटलीएक न्यातना छे ते आपणा धर्मी
भाइओ छे तेमनी साथे एकठा जमवानो रिवाज नथी ते पण
खराब छे, कारण के अन्य धर्मी ब्राह्मण वाणीयानुं खाइए छीए
खावामा बाध छे केमके ते लोक आपणे जेने अभक्ष कही
छीये ते वस्तु खाय छे, माटे तेमनु खावुं न जोइए, ते खावानी
प्रवृत्ति छे ते रोकवाथी श्रावकना व्रतमा दुषण नहीं लागे एटल
फायदो छे अने जे जैनी भाइओ गाळेला पाणीना पीनार अभ
क्षना पण त्याग करनार एवा जैनीओनु न खावुं तेथी प्रभुनी
आज्ञा न लोपाय एम समजातु नथी, कारण जे स्वामी भाइन
तो बहुमान करवा ए समकीतनो आचार छे तेना बदलामा तेमने
निचा कहेवा तेथी समकीत केम मलीन नहीं थाय? आ जगो कप
मने कोइ सवाल करशे के तमे केम जाएया छता ते प्रमाणे
चालता नथी? ते विषे म्हारो जवाब ए छे के घणा लोक तेम प्र
वृत्ति करता नथी ते प्रवृत्ति हु करु तो ते घणा माणस साथे
विरोध थाय माटे ते विरोध पोतानी जातीना साथे न थाय तेम
हुं वर्तु छुं पण म्हारी श्रद्धा तो बीजी कोमना श्रावक साथे भेद
न पाडवो एज छे अने म्हारी मलती श्रद्धावालाने भलामण कर
छुं के एक साथे मेलाप करो एक साथे विरुद्ध करवुं तेथी का
फायदो नथी अने हालमा पण बधा लोको हजु जैन धर्मना

मर्यादा शुं छे ते जाणता नथी त्यां सुधी आ वात मान्य पण भाग्ये करशे, माटे ए वात मान्य न करे तो केटला एक शहेरमां जुदी न्यातना जैनीओनुं सीधुं लइने जमे छे अने केटला शेहेरमां मां एवो हठ बंधायो छे के जैनधर्मी पाछलथी थएला एवा लाडवा श्रीमाली छे हवे ते पाछळ थया के केम तेनो लेख जोवामां नथी पण तेमनी साथे संबंध हालमां जमवा खावानो नथी राखता. थी जाणीए छीए के पाछळथी थयेला होवा जोइये कारण जे ओसवाल पोरवाड प्रमुख न्यातो पण आचार्य माहाराजे प्रति-बोध करी स्थापी आपी छे ने ते स्थापती वखत जे जे धणीए आचार्य महाराजनी आज्ञा पाली ते सरवे ओसवाल थया तेमां जाति भेद रह्यो नथी, तेमज हरिभद्र सुरी महाराजे पोरवाड स्थापती वखते पण एमज थयुं छे अने ते सरवे ओसवाल पोर-वाड श्रीमाली विगेरे जमे छे, तेम लाडवा श्रीमालीनामां पण कोइ आचार्ये प्ररूप्युं होवुं जोइए अने जैन धर्म पामवाथी एक न्यात थएली जणाय छे ते छतां तेमना पैसाथी सीधुं लावेलुं ने तेनी रसोइ ओसवाल श्रीमाली पोते रांधी जमवा कहे तो पण ओसवाल प्रमुख जमवानी ना कहे छे. आ कोइक प्रका-रथी असल हठ बंधायेलो जणाय छे. ए हठ छोडवा लायक छे कारण के शा कारणथी हठ बंधायो ते पण कोइने खबर नथी अने ते हठ पकडी बेसवो ए भूल भरेलुं छे. केटलाएक शेहेरमां कणबी तथा भावसार पैसा वा सीधु आपे छे ते श्रीमाली पो-रवाड प्रमुख खुशीथी जमे छे अने वहीवट चालतो आवे-लो चाले छे अने तेवीज रीते लाडवा श्रीमाली आ वहीवट चालतो नथी ते चलाववो जरुर छे. आगल ते लोक जमता हता पण आपणे तेमनुं नहीं जमवाथी तेमने खोटुं ला-गवाथी ते लोक पण आपणुं जमता नथी. आथी शासनमां भेद

पमी गयो छे. ए जैन न्नाइत्नमां न्नेद पमवाथी केटलाएक शास-
नना काममा घणी गुचवणो आवे छे ते लोक आपणा विचार
प्रमाणे चालता नथी ने जो तेमनी माथे ऐक्यत्ता होय तो ते पण
आपणा विचारथी जुदा पमी शके नहीं वली तेमनी पासे आ-
पणे धर्म पामवो ने आपणी पासे तेमने धर्म पामवो सुलन्न पमे
अने घणीज सुगमता पमे, माटे एकठा थवुं जमवुं खावु तो उ-
त्तम छे पण ते न वने तो तेमना पैसा लइ जमवानो न्नेद काढी
नांखवो. जेटलो न्नेद न्नागशे ते गुणदाइ छे सामा त्रणसें गाथाना
स्तवनमा गच्छमा न्नेद न पामवा एम साधु महाराज आशरी
कहेवुं छे ते तेमज श्रावकमा पण न्नेद पामवा जोइए नहीं वे
हीलीथी शासनने घणुं नुकशान छे, वली ममत्वी ओसवाल श्री-
माली प्रमुख छे तो कहे छे जे अमो ऊचा छीए ए लोक निचा छे
एम बोली तेमनी निंदा करे छे तेथी नीच गोत्र बंधाय छे, कारण
के श्रावकनो धर्म पाचमा गुणस्थाननो छे ते गुणस्थानमां म-
नुष्यने नीच गोत्रनो ऊदय ज नथी ते छता श्रावकने नीच कहेवा
ए नूल न्नरेलुं छे ने कर्मबधनुं कारण छे; वीतरागनी आज्ञा वि-
रुद्द छे विचारसारनी टीकामा प्रश्न थयुं छे के हरिकेशी चंमाले
दीक्षा लीधी छे ते छठे सातमे गुण स्थानके वर्त्ते छे अने छठे सा
तमे गुणस्थानके नीच गोत्रनो ऊदय नथी तेना जवाबमा देव
चंइजी महाराज कहे छे के जेने नरेंइ जे चक्रवर्त्ती अने देवें-
जे सुधर्म इंड महाराज नमस्कार करे छे तेने उच गोत्रनो उ
उदय कहीए, नीच गोत्र उदय होत तो पूजनीक थातज नहीं. पू
जनीकपणुं ऊंच गोत्रना उदयथी ज थाय छे वार व्रतनी पूजाम
श्रावकना वहुमान आश्री कहुं छे के विरतिने प्रणाम करीने इं
सन्नामा बेसे. गुणस्थानवंत श्रावकने इंड महाराज नमस्कार
करे छे ने तेवा व्रत वंत ओसवाल श्रीमाली पोरवाम विगरे सि

वायनी नातमां शुं नहीं होय? अर्थात होय ज. तेम छतां आवो भेद राखवानी पद्धती होय तो व्रतवंत लाड्वा श्रीमाली प्रमुखनी निंदा थाय ते शुं प्रभुनी आज्ञा बहार नथी? माटे प्रभुनी आज्ञानुं आराधन थवुं एज उत्तम पुरुषनुं तथा उत्तम पुरुष थवुं होय तेनुं काम छे केमके कर्मग्रंथनो ५६ मी गाथामां मिथ्यात्व मोहनी उपार्जना करवानां उन्मार्गनी देशना विगरे घणा बोल कह्या छे तेमां संघनुं प्रत्यनीकपणुं पण गएयुं छे अने ते गाथाना अर्थमां श्रावकनी निंदा विगेरे करवाथी मिथ्यात्व उपार्जे एम कहेछे, माटे पर न्यातना धर्मीष्टने नीचा कहेवाथी एज गाथामां फल कह्यां छे ते पामीये तेमज तेमनी साथे भेद भांगी एकत्र थइए तो समकीत निर्मल थाय माटे आपण सर्वे मीत्रोए आ भेद मनमांथी काढी नांखी अभेदपणुं थाय एम उद्यम करवो जोइए. जैन धर्मना पालनार अने प्रशंसाना करनारनां जेम बने तेम तेमनां बहुमान करवां, तेमने बने एटली मदत आपवी, पण तेमना उपर इर्ष्याभाव द्वेषभाव लाववो नहीं तेम ए नीच जाति छे एवुं कलंक देवुं नहीं जोइए. हालमां रजपुतोनुं आपणे खाता नथी तेज जातिमांथी ओसवाल प्रमुख थया छे तेमज लाड्वा श्रीमाली विगेरे धर्म पालवाथी एक न्यात थइ छे. असल आपणे हता तेमने जेम संभारता नथी तेम तेमनी शुं न्यात हती ते तपासवानुं काम नथी. महावीरस्वामी महाराज आदे तिर्थंकर महाराजना गुण ग्रामना करनार तेमना प्ररूपेला मार्गने सेवनार छे माटे ते गुणनी बहुमानता जेटली आपणथी थाय ए करवी पण तेनी लघुता करवी ए महा दुषण समजुं छुं माटे सर्व भाइओए आ प्रयास लेवा योग्य छे.

७ जैनमां न्यातनी वर्तणुकना कायदा करवा जोइए ते सर्वे जैनीओनी एकज जातनी वर्त्तणुक जोइए. रीतो भातोनो

आपवा लेवानो पण कायदो बंधाय तो सहेज सहेजमा न्यातो-
मा तड पडे छे अने लडाइओ थइ ऐक्यता भंग थाय छे ते का-
यदाने आधारे चालवानुं होय तो वर्तणुक भंग थाय नहीं. हमेश
डर रहे भंग करे तेहना प्रायश्चितनी व्यवहारी मरजादा जोइए
अने एक गामना लडे तो तेनुं समाधान कायदामा देश परदेश
उपरीत कर्या होय ते करे एटले तेनो निकाल आवी जाय ने
तकरार लांबी पोहोंचे नहीं, कारण जे थोडा थोडा माणसमां
पक्षपात थइ शके छे आखुं जैन मंडल एकज थाय अने तेमनुं
बंधारण कायदानुं कर्युं होय ते बंधारण जे तोडे तेनी साथे देशे
देशनु जैन मंडल विरुद्ध थाय तो जैननो कायदो तोडता डर रहे
अने बधा साथे विरुद्धता थइ शके नहीं. कायदा कर्या पछी पण
तेमां अडचण पडे तो आखु मंडल दर वरसे मले त्यारे काय-
दामा सुधारो करता जाय आ करवाथी पण जैन कोमने सुखी
थवाना साधन छे

८ आ सिवाय काम सुधारानां करवाना घणां छे पण ए
करनार माणसनी खामी छे ए खामी क्यारे दूर थाय ज्यारे जैन
मंडलमाथी परोपकारी माणसोए आवुं काम करवानी खुशी
बतावबी जोइए, तेमा बे वातनी खुशी बतावबी जोइए एकतो
पोते जेटलुं काम करी शके तेटलुं काम करवानी खुशी बतावबी
जोइए बीजुं जेटला पैसानी जे मदत करे वा चहाता होय ते-
टला पैसानी मदत करवा तैयार थयलाए जणाववुं जोइए. हवे
ते कोने जणावे ए बंधारण सारुं एकठा थइ परोपकारी अग्रेसर
मुकरर करवा जोइए अने पैसानी मदतमांथी श्रावको कारभार
करनार राखवा जोइए अने ते माणसोथी तथा परोपकारी म-
हेनतुं भाइओनी मदेनतथी जेटलु जेटलुं बने ते बनाववु तेम
करता करतां कोइक वखत बधो सुधारो थवानो वखत मलशे

एकली वातो करवाथी आ काम बनतुं नथी चतुरविध संघमाथी कोइ पण धनवान गृहस्थ अग्रेसरी थाय तो ए काम बने माटे जेने पूर्वे पुण्य उपार्जन कर्युं छे ते पुण्यात्मा हित सारु उपार्जन कर्युं छे माटे ते पुण्यनां फल एज छे धनवान पुरुषो सारा गुमास्ता राखे पोताना वेपारनुं काम तेमने सोंपी पोते परमार्थनां काममां कम्मर बांधवी के जेथी शासन दीपे अने पुण्यशाली शेठतो कहे जे अमने फुरसद नथी त्यारे साधारण माणसने फुरसद तो होयज क्यांथी? त्यारे पुन्यवंतने धन मळ्युं तेनां फल खावां ते खाइ शकता नथी. अने जे जे जेटलुं जेटलुं काम करे छे ते तो तेटलुं तेटलुं फल चाखे छे अने भगवंतनुं शासन एकवीश हजार वरस सुधी जयवंतु कह्युं छे, माटे कोइ पण भाग्यशाली शासननां काम करवा कम्मर बांधशे अने शासन जयवंतु वर्त्तशे. जे जे भव्य प्राणी शासन जयवंतु राखवानी महेनत करे छे ते कांइ उछुं पुण्य बांधे छे एम नथी, अतुल्य पुन्य उपार्जे छे; माटे आ वांची कोइ पण भाग्यशाली तत्पर थाय ते सारु आ लखाण कर्युं छे. भाग्यशाली पुरुषो जागे नहीं त्यां सुधी तो चाले छे एम चालवानुं छे पण हालना वखतमां केटला एक भाग्यशालीउ जाग्या जणाय छे ने एनो उद्यम करे छे तेमने मारा लखवाथी कंइ कंइ सारु लागे तो तेउ ते वापरे ते सारु ज लखाण कर्युं छे वा आवता काले पण जैन कोम सुधारवाना कामी थाय तेमने पण मारी बाल बुद्धिना विचारमां कांइ सारो विचार होय ने पसंद पडे ते वर्त्ते ते सारु आ लख्युं छे. कदापि आ लखाण प्रवृत्तिनुं छे तेमां कोइने खोटुं लगाडवा लख्युं नथी तेम छतां पण मारी भूलथी कोइने खोटुं लागे एवुं लखाइ गयुं होय तो तेमनी पासे अगाउथी क्षमा करवा विनंती करुं छुं अने मने लखशे तो पत्र द्वारे हुं माफी मागीश अने प्रभुजी

आगल तो प्रभुनी आज्ञाथी विरुद्ध लखायुं होय तेनुं मन व
कायाये करी मिच्छामि डुक्कडं दउ छुं.

प्रश्न–जेम जैनमा अभक्ष्य पदार्थ मास मदीरा मध माग
मूला प्रमुख अनतकाय वीदल वेगण रात्री भोजन अभक्ष्य व
छे तेम अन्यदर्शनीउए कह्या छे ?

उतर--श्रीचंड केवलीना रासमां पुराणोमां कहेला श्
टांकेला छे ते श्लोक नीचे लखु छुं, तेथी खात्री थशे जे जे
त्मार्थी माणसो छे ते तो वीचारशे पण विषयी जीवो छे ते त
तो जे धर्म माने छे तेना पण शासन उपर भरोंसो न राखे
टले इलाज नथी अन्यदर्शनीओना धर्म प्रकाशनार ज पोत
शास्त्रमा अभक्ष्य कहेलुं छे ते वाचीने तेहनो त्याग करे नही
टलु श्रोताना गलामां उतरे एहवो उपदेश पण दइ शके न
एटले हालमा एहवुं थयुं छे के श्रावक राते खाय नहीं कोइ
यालु ब्राह्मण राते न खाय तेने कहे छे जे तुं तो श्रावक थइ ग
छे आवी दशा बनी छे, ए वधुं योग्य गुरु नही मलवाना प
छे माटे जैनीभाइओए तेहनी दया चींतववी तेज उत्तम छे, प
जैनी थइने हालमा केटलाएक शेहेरमा नलो थया छे तेथी
ले चीथरा बाध्या एटले पाणी गलइ गयु अने संखारो पण र
चवता नथी, आ काइ ओछी अफसोसनी वात छे! के अन्यदर्श
कहे जे जैनीओ पाणी गलीने वापरे ने जैनीभाइओ आ व
छोडता जाय छे तो दीर्घकाले अन्यदर्शनी जेवुं ज थशे केट
एकने कहीए छीए के नलमाथी पाणी लइ तने गाली नाखी ते
संखारो जो नल तलावमाथी होय तो तलावमा नाखवो ने
वामाथी नल होय तो कुवामा नांखवो पण तेम करनार ध
ज ओछा छे, माटे जैनभाइओ जीव दया प्रतिपाल कहेवाय तो
नाम साचे साचुं क्यारे थाय के ज्यारे जीवनी जतना करे त्यारे म

व रक्षा सारु पाणी गलवुं ने तेनो संखारो तलाव वा कुवामां
ानुं पाणी होय त्यां नांखवो. अन्नक्ष्य वावीस जैनशासनमां
ग्रां छे तेनो त्याग करवो. तेमांनां केटलांएक अन्यदर्शनीमां
ा कह्यां छे पण केटलांएक अन्यदर्शनीने खवर नथी तेथी
वे लख्यां छे. जैन न्नाइओने पोतानी त्याग करवानी चीजने
यदर्शनी पण त्याग जोग कहे छे तेथी त्याग करवानी श्रद्धा
ा ते सारु लख्युं छे.

॥ श्री जिनो जयतु, यडुक्तं महान्नारते ॥

घातकश्चानुमन्ता च, न्नक्षकः क्रयविक्रयी ॥
लिप्यंते प्राणिघातेन, पञ्चैतेऽपि युधिष्टिर॥ १ ॥
यावान्त पशु रोमाणि, पशु गात्रेषु न्नारत ॥
तावद्वर्षसहस्राणि, पच्यन्ते पशुघातकाः ॥ २ ॥

अर्थ—महान्नारतमां कह्युं छे के हे युधिष्टिर जीवोने प्राण
ने करीने मारनार, संमत्ति आपनार, खानार, वेचनार, वेचातु
ार, आ पांचे जणाओ पापथी लेपायछे अने पशुना शरीरमां
ला रुवाटां छे तेटला हजार वर्ष सुधी नरकमां रहे छे.

॥ शान्तिपर्वेप्युक्तम् ॥

यूपं छित्वा पशुन् हत्वा, कृत्वा रुधिर कर्दमान् ॥
यद्येवं गम्यते स्वर्गे, नरके केन गम्यते ॥ १ ॥

अर्थ—शान्तिपर्वमां पण कह्युं छे के थांन्नलाने छेदीने अने पशू-
नें मारीने पृथ्वी उपर लोहीना कादवो करीने जो स्वर्गमां
य तो नरकमां कोण जाय? अर्थात् पशु विगेरे जीवोने मार-
र ज नरकमां जाय ॥ माटे पशुघात अने यज्ञ होमादीक कर-
थी एहवांज फल थाय.

॥ मार्कंन्रूपुराणे ॥

जीवाना रक्षणं श्रेष्टं, जीवाः जीवितकांक्षिणः ॥

तस्मात् समस्तदानेभ्योऽभयदानं प्रशस्यते ॥ ४ ॥

अर्थ–मार्कंड पुराणमा कह्यु छे के जीवोनुं रक्षण करवुं श्रेष्ट छे जीवो पण पोताना जीवीतनी ईच्छा करे छे, माटे दान थकी जीवोने अभयदान आपवुं ए अधिक गणाय छे ॥ भयदाननी महत्वता केटली बतावे छे तेछता पशुने होमवु थ ते केटली बालचेष्टा छे, माटे सर्वे धर्ममा कोइने दुःख न थ एम वर्तवु एज धर्म छे

॥ तत्रैव मार्कंडे पुष्पाण्युक्तान्यष्टौ ॥

अहिंसा परमं पुष्पं, पुष्पं इंद्रिय निग्रहम् ॥ स भूत दया पुष्पं, क्षमा पुष्पं विशेषतः ॥ ध्यान पुष्पं त पुष्पं, ज्ञान पुष्पं तु सप्तम ॥ सत्य चैवाष्टमं पुष्पं, तेन ष्यंति देवता ॥ ५ ॥

अर्थ–मार्कंडपुराणमां 'जीवाना रक्षण श्रेष्ट' ए जग्योए अ पुष्प कह्या छे, तेमा हिंसा न करवी ए पहेलुं पुष्प, इंद्रिय नि करवो ए बीजु पुष्प, त्रीजु पुष्प सर्व जीवमा दया राखवी, चो पुष्प शान्ति राखवी, पाचमु पुष्प ध्यान करवु, छठु पुष्प करवो, सातमुं पुष्प ज्ञान मेळववु, ने आठमुं पुष्प सत्य बोल एथी देवताओ प्रसन्न रहे छे

॥ यदुक्त महाभारते ॥

यूकामत्कुन दंशी मसात्, जंतुश्च तुदति तनूं ॥ पु वत् परि रक्षत्ति, ते नराः स्वर्ग गामिनः ॥ ६ ॥ आ पादौ च ये घ्नन्ति, ते वै नरक गामिनः॥ सर्वत्र कार्या ज वानां ॥ रक्षा चैवापराधिनाम् ॥ ७ ॥

अर्थ– जू, मांकड, मछरने आदे लइ जंतु शरीरने चट मारे छे तो पण तेनुं पुत्रनी पेठें जे रक्षण करे छे, ते प्राणियो स्

जवा योग्य छे ॥ अने जे मनुष्य जीवोना शरीर आदे लइने विगेरे मारे छे ते मनुष्य नरकमां जाय छे माटे अपराधी ोनी पण सर्व प्रकारथी रक्षा करवी ए मुख्य धर्म छे.

॥ अन्यदप्युक्तं महाभारते ॥

विंशत्यंगुलमानं तु, त्रिंशदंगुलमायतम् ॥ तद्वस्त्रं गुणीकृत्य, गालयित्वा पिबेत् जलम् ॥१॥ तस्मिन्वस्त्रे तान् जीवान्, स्थापयेत् जलमध्यतः ॥ एवं कृत्वा ेत् तोयं, स याति परमां गतिम् ॥ २ ॥

अर्थ—पाणी गालवा विषे कह्युं छे के, वीश आंगल पहोळुं ने ा आंगल लांबु वस्त्र लइ तेने बेवडुं करी तेनाथी पाणी गा- ा पीवुं, ने ते वस्त्रमां रहेला जीवोने कूवा विगेरेमां नांखवा, ी रीते करीने जे मनुष्य पाणी पीए ते उत्तम गतिने पामे ॥ आ रीते महाभारते छे, छतां सन्यासी पुराणी थइ अ- ल पाणी पीये, वापरे, नहाय, तेनी शी गति थाय? ते महा- त वांचनार सांभळनार लक्ष नथी देता, ते केवी बाळ दशा छे आत्मार्थिये दया करवी.

दृष्टिपूतं न्यसेत्पादं, वस्त्रपूतं पिबेत् जलं ॥
सत्यपूतं वदेत् वाक्यं, मनःपूतं समाचरेत् ॥

अर्थ—आंखोथी जोइने पग मूकवा, वस्त्रथी गळीने पाणी ुं, सत्यथी पवित्र वचन बोलवुं, मन पवित्रथी आचरवुं.

॥ महाभारते ॥

मधु भक्षणेपिदोषः— संग्रामेण यत् पापं, अ- ना भस्मसात् कृतं ॥ तत् पापं जायते तस्य, मधुबिंदु भक्षणात् ॥ १ ॥

अर्थ—मोटुं युद्धकरवाथी जेटलुं पाप थाय छे, अग्निथी गाम

विगेरे बालवाथी जेटलुं पाप थाय छे, तेटलुं पाप मधनुं बिंदु मात्र खावाथी थाय छे ॥ मधनुं आवुं पाप छे तोपण शास्त्र वाचनार त्याग न करे तो साम्भलनारने त्यागनी शी वात? माटे प्रथम कथा वाचनार दयालुये मधनो त्याग करवो के जेथी श्रोता सुधरे

॥ विष्णुपुराणेऽपि ॥

ग्रामाणां सप्तके दग्धे, यत् पाप समुत्पद्यते ॥
तत् पापं जायते पार्थ, जलस्याऽगलिते घटे ॥ १ ॥
संवत्सरेण यत् पापं, कैवर्तस्यैव जायते ॥
एकाहेन तदाप्नोति, अपूतजलसंग्रही ॥ २ ॥

अर्थ –विष्णुपुराणमा कह्युं छे के हे पार्थ! सात गाम बालवाथी जेटलुं पाप थाय छे तेटलुं पाप घडामां गाळ्या वगरनुं पाणी भरवाथी थाय छे माछी वर्ष सुधी जाल नाखे ने तेने जेटलुं पाप लागे तेटलु पाप एक दिवस गाळ्या विना पाणी वापरनारने थाय छे ॥२॥

॥ विष्णुपुराणे ॥

यः कुर्यात् सर्वकार्याणि, वस्त्रपूतेन वारिणा ॥
स मुनिः स महासाधु, स योगी स महाव्रती ॥ १ ॥

जे वस्त्रथी गालेला पाणिये करीने सर्व कार्य करे छे तेज मुनि, तेज मोटो साधु, तेज योगी, ने तेज मोटा व्रत वालो जाणवो

॥ यदुक्तं ऐतिहासपुराणे ॥

अहिंसा परम ध्यानं, अहिंसा परम तप.॥ अहिंसा परम ज्ञानं. अहिसा परमं पदं ॥१॥ अहिसा परमं दानं, अहिसा परमो दमः ॥ अहिंसा परमो जापः, अहिसा परमं शुभम् ॥२॥ तमेवमुत्तम धर्मं, महिंसा धर्म रक्षणं ॥ ये चरन्ति महात्मानः, विष्णुलोकं व्रजन्तिते ॥ ३ ॥

अर्थ–ऐतिहासपुराणमा कह्युं छे के ॥ अहिसा ए उत्तम

ध्यान छे, अहिंसा ए उत्तम तप छे, अहिंसा ए उत्तम ज्ञान छे, अहिंसा ए उत्तम पद छे, अहिंसा ए उत्तम दान छे, अहिंसा ए- उत्तम दम छे, अहिंसा ए उत्तम जप छे, अहिंसा एज उत्तम शुभ छे, अहिंसा रूप धर्म करवो एज उत्तम धर्म छे, ते धर्मनुं जे महात्माउ आचरण करे छे ते विष्णु लोकमां जाय छे ॥ ३ ॥

॥ यदुक्तं नागपरूल ग्रंथे ॥ युधिष्ठिरं प्रति कृष्णः ॥

अनक्ष्याणि नक्ष्याणि, कंदमूलानि जारत ॥
नूतनोद्गमपत्राणि, वर्जनीयानि सर्वतः ॥ १ ॥

अर्थः—नागपरूल ग्रंथमां धर्मराजाने कृष्णें कह्युं छे के हे धर्मराजा कंदमूल अनक्ष्य छे ते न खावां तथा नविन उगेला अंकुरादिनां पांदडां विगेरे पण त्याग करवां आ रीते कह्या छतां कंदमूल जे सूरण शकरियां विगेरे एकादशी करीने खाय तेनुं केटलुं पाप ते बुद्धिवाने विचारवुं.

॥ मधुपाने विशेषमाह ॥

मधुपाने मतिभ्रंशो, नराणां जायते खलु ॥ धर्मेण तेभ्यो दातॄणां, नध्यानं न च सत्क्रिया ॥१॥ मद्यपाने कृते क्रोधो, मानं लोजश्च जायते ॥ मोहश्च मत्सरश्चैव, दुष्टजाषणमेव च ॥२॥ अन्यदप्युक्तं ॥ मद्ये मांसे मधुनि च, नवनीते बाहःकृते ॥ उत्पद्यंते विलीयंते, सुसूक्ष्म जंतु राशयः॥

अर्थः—मदिरा पीवामां मनुष्योने बुद्धिनो भ्रंश थाय छे तेथी पापाचरण करे छे, माटे तेउने आपनारने धर्म थतो नथी ने मदिरा पीनारने ध्यान तथा सत्क्रिया फल रहित थाय छे ॥ १ ॥ मदिरा पीवाथी क्रोध, मान, लोज, मोह, मत्सर थाय छे, तथा दुष्ट जाषण बोलाय छे ॥ २ ॥ बीजुं पण कह्युं छे के मदिरा, मांस, मध तथा छासमांथी बार काढेला मांखणमां, झीणा जंतुउना समुह उत्पन्न थाय छे ने नाश थाय छे ॥ मांखणनो दोष कह्यो छे पण

दोष गणता नथी अने कहे छे के शास्त्रथी विरुद्ध नथी ते न्यायीए विचारवुं.

॥ अन्नक्ष्य नक्षणे दोषमाह ॥

पुत्रमांसं वरमुक्तं, न तु मूलक नक्षणं ॥
नक्षणात् नरकं याति, वर्जनात्स्वर्गमाप्नुयात् ॥१॥

अर्थः—पुत्रनुं मांस खावुं ते सारुं पण मूलो न खावो, मूलो खावाथी प्राणी नरकमा जाय छे ने एनो त्याग करवाथी स्वर्गमा जाय छे ॥ १ ॥

॥ ऐतिहासपुराणेऽपि ॥

यस्तु वृंताक कालिंग, मूलकानां च नक्षकः ॥
अंतकाले स मुढात्मा, न स्मरिष्यति मा प्रिये ॥ १ ॥

अर्थ.—ऐतिहासपुराणमां नगवाने कह्यु छे के हे प्रिये वेंगण, कालिंगमो अने मूलाने खानार प्राणी अंतकालमा पण मने नहीं सन्नारे ॥ १ ॥ एनो आशय एज छे के वेंगण, कालिंगमा अने मुलानो खानार अधर्मी छे तेथी अंतकाले मने संन्नारशे नहि तेथी दुर्गतिमा जशे

॥ शिवपुराणेऽपि ॥

यस्मिन् गृहे सदा नाथ, मूलक पचति जनः॥ श्मशानतुल्यं तद्वेश्म, पितृन्निः परिवर्जितं ॥ १ ॥ मूलकेन समं न्नोज्यं, यस्तु नुक्ते नराधमः॥ तस्य बुद्धि र्न वैधेत, चान्द्रायणशरीरीणः ॥ २ ॥ नुक्तं हलाहलं तेन, कृतं चान्नक्ष्यनक्षणं॥ वृंताक नक्षणाच्चापि, नरा यांत्येव रौरवं ॥३॥

अर्थ—शिवपुराणमा कह्यु छे के ॥ हे नाथ! जेना घरमा निरंन्तर मूला रंधाय छे तेनु घर श्मशान तुल्य छे, ने ते घरने पितृलोकोए त्याग कर्युं छे मूलानी साथे जे वस्तुनुं न्नोजन करे छे

ते मनुष्यमां अधम गणाय छे ने तेनी बुद्धि चांद्रायणादि व्रते करीने पण शुद्ध थती नथी ॥ २ ॥ जेणे अन्नद्रय, मूला, वेंगण विगेरे खावां तेणे हलाहल झेर पीधुं समजवुं ने अंते ते प्राणी रौरव नामना नरकमां जाय छे. ॥ ३ ॥

॥ पद्मपुराणेपि ॥

गोरसं माषमध्ये तु, मुद्गादिके तथैव च ॥
भक्ष्येत्तंभवेत् नूनं, मांसतुल्यं युधिष्टिर ॥ १ ॥

अर्थः—हे युधिष्टिर ॥ दुध, दहिं, छाश अडदमां तथा मग विगेरे कठोलमां नाखे छे ते मांस तुल्य थाय छे, माटे ए खावुं ने मांस खावुं बरावर छे ॥ १ ॥

॥ अन्यदप्युक्तं तत्रैव ॥

अस्तंगते दिवानाथे, आपो रुधिर मुच्यते ॥ अन्नं मांससमं प्रोक्तं, मार्कंडेन महर्षिणा ॥ १ ॥ चत्वारो नरक द्वारः, प्रथमं रात्रि भोजनं ॥ परस्त्रिगमनं चैव, संधानाऽनन्तकायिकाः ॥ ३ ॥

अर्थः—पद्मपुराणमां बीजुं पण कह्युं छे के दिवसनो स्वामी सूर्य अस्त पामे, त्यार पछी पाणी पीवुं ए लोही तुल्य छे ने अन्न खावुं ए मांस तुल्य छे ॥ १ ॥ चार नरकनां द्वार छे तेमां प्रथम रात्रे भोजन, बीजुं परस्त्री साथे गमन, त्रीजुं अथाणुं विगेरे खावुं, चोथुं मूला विगेरे खावा जेमां अनंतकाय जीव थाय छे ॥ ३ ॥

आ श्लोकमां रात्री भोजन, परस्त्री गमन, बोल अथाणुं जे सुकातुं बरावर नथी अने कीडा पडे छे ते, तथा मूला जेमां अनंत-काय एटले अनंत जीवो छे तेथी, ए चारे सेवनार नरकगामी छे माटे त्याग करवो.

॥ समाप्तः ॥

श्रीः ।

# वैद्यजीवनम् ।

## भिषग्वर्यलोलिम्बराजकविकृतम्

श्रीमद्यतिवर्यसुखानन्दकृतया दीपिकया

पं० मिहिरचन्द्रकृतभाषाविवृत्या च समन्वितम्

तच्च

खेमराज श्रीकृष्णदास इत्यनेन

मुम्बय्यां

स्वकीये "श्रीवेङ्कटेश्वर" मुद्रणालये

मुद्रयित्वा प्रकाशितम् ।

संवत् १९५० शके १८१५

# भूमिका ।

यद्यप्ययं लोलिम्बराजसत्कवेश्चारित्रसुकवित्वसम्पादको वैद्यजीवनग्रन्थः श्रीकृष्णदासात्मजखेमराजेन भाषायाङ्कारयित्वाच पूर्वमपि मुद्रापितस्तथापि यत स्ततोऽशुद्धत्वेन मनोहरभाषया च मुक्ततया भाषारसिकाग्राह्योपीतिप्रदश्याभ-वदतस्तेनैव तस्य शोधने भाषाविवृतौच मुजःफरनगरप्रान्तान्तर्वर्तिलाक्षापुरिस्थ श्री०रामरक्षातनय पं० मिहिरचन्द्रशर्माहमयोजि सम्प्रत्यलीगढस्थेन मया सं-स्कृते यथामति संशोध्य भाषायाँविवृतःअत्राप्यल्पज्ञत्वासावधानत्वाभ्यां य-त्स्खलनन्तद्विद्वद्भिर्विभाव्य सूचनीयम् यत्पुनर्मुद्रणे तन्न भवेदिति विद्वत्स्व-स्मदर्थनेति शम् ।

काशीस्थराजकीयप्रधान
पाठशालापरीक्षोत्तीर्णः
पं० मिहिरचन्द्रशर्म्मा

# विज्ञापनम् ।

सर्व सुजन विद्यानुरागी तथा लाभाकांक्षी व्यापारियोंपर विदित हो कि ( बंबई ) शहरका प्रख्यात जो हमारा " श्रीवेंकटेश्वर छापाखाना " है जिसमें देवनगरी भाषा और संस्कृत तथा संस्कृतभाषाटीकासहित अनेकानेक ग्रंथ जैसे-वैदिक, वेदान्त, पुराण, धर्म्मशास्त्र, न्याय, छंद, ज्योतिष, काव्य, अलंकार, चम्पू, नाटक, कोश, वैद्यक, साम्प्रदायिक, स्तोत्रादि तथा हिन्दोस्थानी भाषाके सब रकम ग्रंथ सब काल बिकनेको तय्यार रहते हैं जो अन्यत्र नहीं मिलसक्ते खुलापत्राकार तथा किताबोंपर संपुट रेशमी विलायती चित्रित जिल्द बंधी है पुस्तकोंकी रचना और शुद्धता अत्यंत उत्तम है. ग्राहक लोग और व्यापारियोंको चाहिये कि एकवार हमरे यहांसे माल मँगाकर परम लाभको प्राप्त हों और अपने इष्टमित्रोंकोभी बतलाकर लाभ प्राप्त करावें.

## श्रीसप्तशती चण्डी अर्थात् दुर्गापाठ

[ संस्कृतमूल और भाषाटीकासहित. ]

महामाया जगज्जननी आदिशक्तिकी शक्ति जगत् भरमें विख्यात है इस परम पावन चरित्रकी महिमा अतिअगाध है इसमें कठिन दार्शनिक तत्त्व लिखित हैं मधुकैटभका वध, महिषासुरका वध, रक्तबीजका वध, शुम्भ निशुम्भका वध इसमें अत्यन्त विस्तारपूर्वक है, देवीसूक्त, रात्रीसूक्त, रहस्य, कीलक, कवच अर्गला और प्रयोगादिविधिभी संयुक्त है और इनकी भाषाभी किया गयाहै भाषा अत्यन्त सरल मधुर तथा तन मन प्रसन्न करनेवाली है यह ग्रंथ अभी नया छपकर तय्यार हुआ है इसका पाठ प्रत्येक हिन्दूके गृहमें होना परम आवश्यक है महामायाकी यह महिमा सुननेसे सम्पूर्ण रोग शोकक्षयको प्राप्त होते हैं और सुख सौभाग्यका पार नहीं रहता है कीमत केवल १ रु० है जिल्दबंदी बहुत दृढ है.

एकादशीमाहात्म्य भाषाटीका की० १ रु०.

कार्तिकमाहात्म्य भाषाटीका की० १ रु०.

नासिकेत भाषाटीका की० १२ आना.

श्रीः ।

# वैद्यजीवनस्थविषयानुक्रमणम् ।

इति चतुर्थोविलासः



इति पंचमो विलासः ।

इतिवैद्यजीवनविषयानुक्रमः ।

---

पुस्तक मिलनेका ठिकाना—
खेमराज श्रीकृष्णदास
"श्रीवेंकटेश्वर" छापाखाना—बम्बई.

॥ श्रीः ॥

# वैद्यजीवनम्।

## दीपिकया भाषार्थेन च सहितम्।
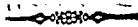
नत्वा विरच्यते साम्बं भाषायां वैद्यजीवनम् ॥
मया मिहिरचन्द्रेण बालव्युत्पत्तिसिद्धये ॥ १ ॥

**प्रकृतिसुभगगात्रंप्रीतिपात्रंरमायादिशतुकिमपि धामश्यामलंमंगलंवः॥अरुणकमललीलांयस्यपादौदधातेप्रणतहरजटालीगांगरिंगत्तरंगे॥ १ ॥**

विश्वेशं शारदा दुर्गां गुरुं गणपतिं हरिं। सुखानंदः प्रकुरुते नत्वा लोलिम्बदीपिकाम् ॥ १ ॥ अथ लोलिम्बराजः कविः शिष्टाचारमङ्गीकृत्य प्रारब्धग्रन्थस्याविघ्नेन परिसमाप्त्यर्थं श्रीकृष्णमर्थयन्नाशीर्वादात्मकं मङ्गलमातनोति मालिनीवृत्तेन। प्रकृतिसुभगगात्रमिति।तत्किमप्यनिर्वाच्यम् धाम तेजो निराकाररूपं वो युष्माकं मङ्गलं दिशतु ददातु। मंगलं श्रेयसि श्वेत इति विश्वः।दिशू अतिसर्जने आशिषि लोट्। तस्य निराकारस्य साकारत्वमाह। किंविशिष्टं धाम प्रकृतिसुभगगात्रं प्रकृत्या स्वभावेन सुभगानि सुन्दराणि गात्राण्यवयवाः यस्य तत्प्रकृतिसुभगगात्रं। प्रकृतिः सहजे योनावमात्ये परमात्मनीति विश्वः। प्रकृतीति वा पदच्छेदः। किंभूतं धाम प्रकृति परमात्मरूपं। पुनः किंविशिष्टं धाम रमायाः प्रीतिपात्रं रमाया लक्ष्म्याः प्रीतिपात्रं प्रीतियोग्यं भाजनं वा। पात्रं तु भाजने योग्य इति विश्वः। पुनः किंविशिष्टं श्यामलं श्यामवर्णं कृष्णाख्यं रामाख्यं वा। उक्तं च दशरथतनयं श्यामलं शान्तमूर्तिमिति। अथ वा श्यामलं स्वच्छं। श्यामलं मेचके स्वच्छ इति विश्वः। तत्किं यस्य पादौ अरुणकमललीलामारक्तकमलशोभां दधाते धारयतः। क प्रणतहरजटालीगाङ्ग-

तस्य प्रसन्नतया । प्रसादस्तु प्रसन्नतेत्यमरः । पुत्रस्य कर्त्तव्यमवेक्ष्य पिता प्रसन्नो भवतीति प्रसिद्धं । किंविशिष्टं काव्यं सत् समीचीनं । पुनश्च वैद्यानां जीवनं यद्वा संतः पण्डिता ये वैद्यास्तेषां जीवनं वर्तनं प्राणप्रियतममिति तात्पर्यम् । सन्सुधीः कोविदो बुध इत्यमरः । अनेन मूढवैद्यानामत्र नाधिकार इति सूचितमिति ॥ ३ ॥

भाषार्थ—दिवाकर ( सूर्य वा अपना पिता ) के प्रसाद ( दया ) से रोगियोंकी आरोग्यताके अर्थ हम संक्षेपसे श्रेष्ठ वैद्यजीवनकाव्यको करते हैं ॥ ३ ॥

**तथापि क्रियते ग्रन्थः सन्ति यद्यपि दुर्जनाः ॥**
**नहि दस्युभयाल्लोको दैन्यवानिह वर्तते ॥ ४ ॥**

उत्साहमाश्रित्य दुष्टजनभयं सदृष्टांतमपहरति । तथापीति । यद्यपि दुर्जनाः परापवादरताः पिशुनाः संति तथापि ग्रन्थः क्रियते । मयेति शेषः । ननु दुर्जनेभ्यो भेतव्यं न चैतत् । तत्र दृष्टांतः । यथा लोको दस्युभयाच्चोरभीतेः दैन्यवान् किं भवति अपि तु न भवति । दीनस्य भावो दैन्यं अबुधस्वरूपं कार्पण्यं तदस्त्यस्य स दैन्यवान् । नहि सावधानानां चोरभयं भवति तथा ममापि सत्कवेर्दुष्टभयं नास्तीति भावः ॥ ४ ॥

भाषार्थ—यद्यपि जगत्में दुष्टजन ( निन्दक ) बहुतहैं तथापि हम ग्रंथको करतेहैं क्योंकि चौरोंके भयसे जगत् कुछ दीन नहीं हरता ॥ ४ ॥

**गदगञ्जनाय चतुरैश्चरकाद्यैर्मुनिभिर्नृणां करुणया कथितं यत् ॥ अखिलं लिखामि खलु तस्य रहस्यं स्वकपोलकल्पितमिहास्ति न किञ्चित् ॥ ५ ॥**

अधुना स्वकपोलकल्पितत्वं परिहरन्नाह । गदगञ्जनायेति । चतुरैः कार्यकुशलैश्चरकाद्यैर्मुनिभिर्नृणां करुणया कारुण्येन वैद्यशास्त्रं कथितमस्ति । किमर्थं । गदगञ्जनाय । गदो रोगः ज्वरादिः तस्य गंजनं पीडनं तस्मै रोगाणां नाशाय । खलु निश्चितं तस्य वैद्यशास्त्रस्य अखिलं रहस्यं कृत्स्नं गोप्यं अभि-

प्रायं लिखामि । इहास्मिन् ग्रन्थे किंचित् स्वल्पतरमपि स्वकपोलकल्पितं स्वयं रचितं नास्ति । आदिशब्दात् चरकसुश्रुतवाग्भटाग्निवेश्यहारीतादीना ग्रहणम् ॥ ५ ॥

भाषार्थ- चतुर चरक आदि मुनियोंने मनुष्योंपर दयाकरके जो रोगोंके नाशार्थ वैद्यकशास्त्र कहाहै उसकेही संपूर्ण रहस्य ( छिपाहुआतत्व ) को मैं लिखताहुं- और इसमें कुछभी कपोलकल्पित ( अपना रचा ) नहीं है ॥ ५ ॥

येषां न चेतो ललनासु लग्नं मग्नं न साहित्यसुधासमुद्रे ॥ ज्ञास्यन्ति ते किं मम हा प्रयासानन्धा यथा वारवधूविलासान् ॥ ६ ॥

अस्मिन् ग्रन्थे मूर्खाणामनधिकारित्वमिन्द्रवज्रयाह। येषामिति। हा इति खेदे। ते मनुष्या मम प्रयासान् ग्रन्थकरणश्रमान् किं ज्ञास्यन्ति अपि तु न ज्ञास्यन्ति। ते के येषां चेतः चित्त ललनासु कान्तासु न लग्नं साहित्यसुधासमुद्रे च येषां चेतो न मग्न । साहित्य काव्य तदेव सुधा तस्याः समुद्रः तस्मिन् । तत्र दृष्टान्तः यथा अन्धा नेत्रहीनाः वारवध्वाः वेश्यायाः विलासान् हावभावभेदान् न जानन्ति । हावभावभेदाः यथा प्रियसमीपगमने यः स्यानासनगमनविलोकनेषु विकारोऽकस्माच्च क्रोधस्मितचमत्कारमुखविष्फूननं स विलासः। यथाहुः। यो वल्लभाश्वानुगतो विकारो गत्यासनस्थानविलोकनेषु। तथा स्मितं क्रोधचमत्कृती च निष्कूनन चास्यगत विलासः इति साहित्यविदः। विलासो भावलीलयोरिति विश्वः। प्रमदा मानिनी कान्ता ललना च नितम्बिनीत्यमरः। बाला यथा वामदृशा विलासानिति वा पाठः ॥ ६ ॥

भाषार्थ-ग्रंथकार मूर्ख जनोंके अधिकारको दूर करताहै कि जिन पुरुषोंका चित्त स्त्रियोंमें लगाहुवा नहींहै और न काव्यरूप अमृतके समुद्रमें डूबाहुआहै क्या वे पुरुष मेरे परिश्रमोंको जानेंगे अर्थात् उसप्रकार नही जानेंगे जैसे अंधे मनुष्य वेश्याओंके विलासों ( हावभाव ) को नही जान सकते ॥ ६ ॥

गुरोरधीताखिलवैद्यविद्यः पीयूषपाणिः कुशलः

क्रियासु ॥ गतस्पृहो धैर्यधरः कृपालुः शुद्धोधि-
कारी भिषगीदृशः स्यात् ॥ ७ ॥

ईदृशः भिषक् वैद्यः अधिकारी स्यात् आरोग्य करणे प्रभुर्भवेत् । किंभूतः गुरोरधीताखिलवैद्यविद्यः । गृणाति हितमुपदिशतीति गुरुः तस्मात् गुरोः वैद्यविद्योपदेष्टुः सकाशात् अधीता पठिता अखिला अष्टाङ्गा वैद्यविद्या येन सः । वैद्यविद्यायाः अष्टाङ्गान्याह शल्यं शालाक्यं कायचिकित्सा भूतविद्या कौमारभृत्यं अगदतन्त्रं रसायनतन्त्रं वाजीकरणतन्त्रमिति । शरीरनेत्रव्रणरोगाणि विषाणि भूतानि च बालतन्त्रं । रसायनं पंचविधं च कर्म अष्टाङ्गमाहुरिति योगतन्त्रम् ॥ नतु चौर्यादिना गृहीतविद्यः । यथोक्तं विद्यां गृहीतुमेच्छन्ति चौर्यच्छद्मबलादिना । न तेषां सिध्यते किंचिन्मणिमन्त्रौषधादिकम् । पुनः कीदृशः पीयूषपाणिः पीयूषममृतं पाणौ यस्य सः अमृतहस्तः सिद्धहस्त इत्यर्थः । पुनः किंविशिष्टः । क्रियासु कुशलः अभ्यस्तकर्मा । यथाह वाग्भटः दक्षस्तीर्थात्तशास्त्रार्थो दृष्टकर्मा शुचिर्भिषक् इति । पुनः किंभूतः गतस्पृहः गता स्पृहा दीनेभ्यो द्रव्यप्राप्तिवांछा यस्य सः । यदुक्तं । नैव कुर्वीत लोभेन चिकित्सापुण्यविक्रयम् । ईश्वराणां वसुमतां लिप्सेतार्थं तु वृत्तये इति । पुनः कथंभूतः धैर्यधरः धरतीति धरः धैर्यस्य धृतेर्धरः । स्वयं धैर्यं धरति रोगिणोपि धैर्यं धारयतीति यावत् । पुनश्च कृपालुः दुःखितेषु करुणाशीलः । पुनः किंविशिष्टः शुद्धः बाह्याभ्यन्तरशौचेन पवित्रः । यद्वा शुद्धः वस्त्राभरणादिना उज्ज्वलः । उक्तं च । कुचैलः कर्कशः स्तब्धः कुग्रामी स्वयमागतः ॥ पञ्च वैद्या न पूज्यन्ते धन्वन्तरिसमा अपीति ॥ ७ ॥

भाषार्थ–ऐसा वैद्य आरोग्य ( आराम ) करनेमें अधिकारी होताहैकि जिसने सकाससे संपूर्ण वैद्यविद्या पढीहो और जिसके हाथमें अमृतहो अर्थात् जिसके नाडी पकडे वही नीरोग होजाय और जो औषधि बनानेकी क्रियामें कुश- और जिसको अधिक लोभ नहो और जो धीरहो अर्थात् प्रबल रोगको देखकर , और जो दयावान्हो और जो देह वा अंतःकरणसे शुद्धहो ॥ ७ ॥

आदौ निदानविधिना विदध्याद्व्याधिनिश्चयम् ॥
ततः साध्यं समीक्षेत पश्चाद्भिषगुपाचरेत् ॥ ८ ॥

प्रथमतो वैद्यकृत्यमाह । आदाविति । भिषक् चिकित्सकः आदौ प्रथमं व्याधिनिश्चयं व्याधेः रोगस्य निश्चयमवधारणे निर्णय विदध्यात् कुर्यात् । यथाह वाग्भटः व्याधेस्तत्त्वपरिज्ञानं वेदनायाश्च निग्रहः । एतद्वैद्यस्य वैद्यत्वं न वैद्यः प्रभुरायुष इति । केन निदानविधिना निर्दिश्यते व्याधिरनेनेति निदानं तस्य विधिना निदानोक्तपंचप्रकारेण । यथा निदानं पूर्वरूपाणि रूपाण्युपशयस्तथा ॥ संप्राप्तिश्चेति विज्ञानं रोगाणा पंचधा स्मृतमिति । ततो रोगपरीक्षातः साध्यं परीक्षेत पश्चात् साध्ये ज्ञाते उपाचरेत् चिकित्सेत् । यथाह वाग्भटः रोगमादौ परीक्षेत तदनन्तरमौषधम् । ततः कर्म भिषक् पश्चात् ज्ञानपूर्वं समाचरेत् इति ॥ ८ ॥

भाषार्थ–वैद्यका प्रथम कार्य कहतेहैं कि प्रथम निदान आदि पांच प्रकारोंसे रोगके निश्चयको करै और फिर साध्य ( चिकित्साके योग्य ) रोगीको देखै फिर चिकित्सा ( इलाज ) करै ॥ ८ ॥

औषधं मूढवैद्यानां त्यजन्तु ज्वरपीडिताः ॥
परसंसर्गसंसक्तं कलत्रमिव साधवः ॥ ९ ॥

अथ ज्वरिणो हितमुपदिशति । औषधमिति । भो ज्वरपीडिताः नराः मूढवैद्याना निदानादिशास्त्राऽज्ञचिकित्सकानामौषध त्यजन्तु दूरतः परिहरन्तु। यतः प्रायश्चित्तं चिकित्सां च ज्योतिष धर्मनिर्णयम् ॥ विना शास्त्रेण यो ब्रूयात्तमाहुर्ब्रह्मघातिनमिति । यथा ब्रह्मग्रहस्तात्किमपि न गृह्यते वर्णाश्रमिणा तथा मूढवैद्यस्यापि करादिति भावः । सर्वरोगेषु ज्वरस्य मुख्यत्वात् ज्वरग्रहणेन सर्वरोगाणा ग्रहणम् । तत्र दृष्टांत· के किमिव साधवः सज्जनाः कलत्रमिव भार्यामिव । ननु साधूनामनुचितः कलत्रत्यागस्तत्राह परेति । किंभूतं कलत्रं परसंसर्गं परपुरुषसंगे आसक्तम् । यथा स्वच्छन्दगा हि या नारी तस्या-

स्त्यागो विधीयते । न चैव स्त्रीवधं कुर्यान्न चैवांगविकर्तनमित्यागमः । कलत्रं श्रोणिभार्य्ययोरिति विश्वः ॥ ९ ॥

भाषार्थ–ज्वरसे पीडित मनुष्य मूढ वैद्योंकी औषधको इसप्रकार त्यागदो जैसे अन्यपुरुषके संगमें फसीहुयी स्त्रीको साधुजन त्याग देते है ॥ ९ ॥

पथ्ये सति गदार्तस्य किमौषधनिषेवणैः ॥
पथ्येऽसति गदार्तस्य किमौषधनिषेवणैः ॥ १० ॥

रोगिणः पथ्यसेवनमेव हितम् पथ्याशी न हि रोगभागिति वृद्धोक्तेस्तं वि- नौषधिसेवनम् वृथैवेत्याह । पथ्ये सतीति । गदार्तस्य रोगिणः पथ्ये सति शा- स्त्रीयात्पथोऽनपेतं पथ्यं । धर्मपथ्यर्थन्यायादनपेत इति यत् । तस्मिन् सति क्रियमाणे अक्रियमाणे च औषधनिषेवणैः किं फलं न किमपीत्यर्थः । यथो- क्तं चरकेण विनापि भेषजैर्व्याधिः पथ्यादेव निवर्तते । न तु पथ्यविहीनस्य भेषजानां शतैरपीति । पथ्येऽसतीति श्लोकार्द्धं गोमूत्रिकावन्धेन द्विरुच्चारणी- यम् एकत्रार्धेऽसतीति च्छेदः ॥ १० ॥ ॥ ॥ ॥

भाषार्थ–यदि पथ्यहै तो रोगीको औषधियोंके सेवनसे क्या फलहै क्योंकि पथ्य- सेही नीरोगहो जायगा ओषधियोंमें द्रव्य लगाना व्यर्थ है और यदि पथ्यनही है तोभी औषधियोंके सेवनसे क्याफलहै क्योंकि अपथ्यसें औषधखानेसेभी नीरोग होना असंभवहै ॥ १० ॥

महीन्द्रमहिलात्रपाप्रदपदारविन्दे तथा
पयोनिधिपयस्तती जलधरैरुपात्ता यथा ॥
मम प्रकृतिनीरसा नृपभिषग्भिरंगीकृता
भविष्यति सरस्वती रसवती मुरासापतेः ॥ ११ ॥

महीन्द्रेति। मह्यां पृथिव्यामिन्द्र इवेन्द्रो महीन्द्रः।सप्तमीति योगविभागात् समासः। महींद्रस्य महिला स्त्री तस्याः त्रपाप्रदं लज्जाप्रदं पदारविन्दं चरणकमलं यस्याः सा तस्याः संबुद्धिर्महीन्द्रमहिलात्रपाप्रदपदारविन्दे मुरासापतेः मुरासा- नाम लोलिम्बराजवल्लभा तस्याः पतिर्भर्ता तस्य मम प्रकृतिनीरसा स्वभाव-

नीरसा सरस्वती वाणी नृपभिषग्गिरंगीकृता सती तथा रसवती भविष्यति । तथा कथम् । यथा जलधरैर्मेघैरुपात्ता गृहीता पयोनिधिपयस्ततो समुद्रजलसंततिः समुद्रजलसमूहः रसवती भवति । किंलक्षणा प्रकृतिनीरसा स्वभावेन नीरसा क्षारत्वात् । प्रतीपदर्शिनी वामा वनिता महिला तथेति कोशः ॥११॥

भाषार्थ–हे राजाओंकी स्त्रियोंको लज्जित करनेवाले चरणारविंदवाली ( पत्नी ) मुरासा ( ग्रंथकर्त्ताकी पत्नीका नाम ) का पति जो मैं हूं मेरी स्वभावसे नीरसभी वाणी राजा और वैद्योंके अंगीकार करनेसे इस प्रकार रसवती होजायगी जैसे समुद्रके स्वभावसे खारे जलोंका समूह मेघोंके ग्रहण करनेसे रसवान् ( मीठा ) होजाताहै ॥११॥

**इह गमिष्यति वैद्यमतिः श्रमं प्रथममेव पुनस्तु महत्सुखम् ॥ प्रियतमस्य मृगाक्षि समागमे नवकरग्रहणा गृहिणी यथा ॥ १२ ॥**

द्रुतविलंबितेनाह । हे मृगाक्षि हरिणनयने मृगस्य अक्षिणी इवाक्षिणी यस्याः । मध्यमपदलोपी समासः । इह अस्मिन् ग्रंथे वैद्यमतिः प्रथममेव विचारकालमेव श्रमं खेदं गमिष्यति पुनः विचारोत्तर सम्यगर्थे ज्ञाते महासुखं प्राप्स्यति महच्च तत् सुखं च । आन्महत इत्यात्वम् । का कस्मिन्निव । यथा गृहिणी प्रियतमस्य समागम इव गृहमस्त्यस्याः । अतइनिठनाविनीन् । ङीप् । सा प्रियतमस्य अतिशयेन प्रियस्य भर्तुः समागमे समागमो नाम विवाहप्रथमरात्रौ अनलाविनोदः तस्मिन्निव । कथंभूता गृहिणी । नवकरग्रहणा नवं नूतनं करग्रहणमस्याः सा यथा प्रथमं श्रमं गच्छति अग्रे सुखं गच्छति तद्वत् ॥१२॥

भाषार्थ–हे मृगके समान नेत्रवाली स्त्री! इस ग्रंथमें प्रथम तो वैद्यकी बुद्धि खेदको और पुनः विचार करनेपर महान् सुखको इस प्रकार प्राप्त होगी जैसे नवीन विवाही स्त्री अपने प्रियतम ( पति ) के संगममें प्रथम खेदको पाके और पुनः रति और संतान आदिके सुखको प्राप्त होती है ॥ १२ ॥

**यतः सर्वेषु रोगेषु प्रायशो बलवान् ज्वरः ॥ अतस्तस्य प्रतीकारं प्रथमं ब्रूमहे वयम् ॥ १३ ॥**

आदौ सर्वरोगप्रधानस्य ज्वरस्य प्रतीकारार्थं कविः प्रतिज्ञां करोति । यत इति । सर्वेषु रोगेषु अतिसारादिषु यतो ज्वरो बलवान् बलिष्ठो मुख्यः अत एव तस्यैव प्रतीकारमुपायं वयं ब्रूमहे कथयामः । तदुक्तं चरके । रोगराट् सर्वभूतानामंतकृद्दारुणो ज्वरः । तस्मात्तस्य विशेषेण यतेत प्रथमं भिषक् । सुश्रुतेपि । ज्वरमादौ प्रवक्ष्यामि यतो वै रोगराट् स्मृतः । वाग्भटोपि । ज्वरो रोगपतिः पाप्मा मृत्युराजोऽशनोंतकः । क्रोधो दक्षाध्वरध्वंसी रुद्रोर्ध्वनयनोद्भवः ॥ इति ॥ १३ ॥

भाषार्थ–जिससे ज्वर संपूर्ण रोगोंमें प्रायः बलवान् है इससे उसका प्रतीकार ( इलाज ) प्रथम हम कहते हैं ॥ १३ ॥

देवदारुधनाविश्वाबृहतीद्वयपाचनम् ॥
ज्वरे पूर्वं पिबेच्चारुपयोधरधराधरे ॥ १४ ॥

देवदार्विति । भोः चारुपयोधरधराधरे चारू सुन्दरौ पयोधरावेव धराधरौ पर्वतौ यस्यास्तत्संबुद्धिः । उपमितं व्याघ्रादिभिरिति समासः । देवदार्वादीनां पाचनं ज्वरे पूर्वं प्रथमं ज्वरभेषजदानकाले पिबेत् । उक्तं च । नागरं देवकाष्ठं च धान्यकं बृहतीद्वयम् । दद्यात्पाचनकं पूर्वं ज्वरिताय ज्वरापहमिति । नागरं शुंठी काष्ठं देवदारु धान्यकं प्रसिद्धं । बृहतीद्वयं धावनीद्वयम् ॥ १४ ॥

भाषार्थ–हे सुंदर और पर्वतके समान स्तनोंवाली ज्वरहोनेपर प्रथम देवदारु धनिया सोंठ दोनोंकटेहली इन पाच औषधियोंके पाचन( क्वाथ )को रोगी पीवे॥ १४॥

अधुना शृणु तन्वि लंघनं ज्वरितानां प्रथमं प्रशस्यते ॥
सुरपादपधान्यधावनीयुगविश्वौषधिपाचनं ततः ॥ १५ ॥

ज्वरोपायेषु लंघनस्य प्राधान्यमाह । अधुनेति । हे तन्वि अधुना संप्रति त्वं शृणु मद्वचनमवधारय । किं तत् । ज्वरितानां संजातज्वराणां ज्वरः संजातो येषां ते ज्वरिताः । तदस्य संजातमिति तारकादित्वादितच् । ज्वरस्य विप्रकृष्टकारणकथनपूर्विका संप्राप्तिः । यथा । मिथ्याहारविहाराभ्यां दोषा ह्या- . . . . । बहिर्निरस्य कोष्ठाग्निं ज्वरदाः स्यू रसानुगाः ॥ इति । तस्य

सामान्यलक्षणं यथा । स्वेदावरोधः संतापः सर्वांगग्रहणं तथा । युगपद्यत्र रोगेषु स ज्वरो व्यपदिश्यते ॥ इति । तस्य पूर्वरूप यथा । श्रमोऽरतिर्विवर्णत्वं वैरस्यं नयनप्लुवः । इच्छाद्वेषौ मुहुश्चापि शीतवातातपादिषु ॥ जृंभागमर्दो गुरुता रोमहर्षोऽरुचिस्तमः । अप्रहर्षश्च शीत च भवत्युत्पत्स्यति ज्वरे ॥ इति । ज्वरितानां पूर्वं प्रथम लंघन प्रशस्यते अनशन प्रशस्तं विहित । यथा । ज्वरागमे प्रकुर्वीत प्रथम वातवर्जनम् । लघन चोष्णपानीयमित्यूचुर्मुनिपुगवाः । ततः परिपक्वज्वरेषु सुरपादपादिभिः पचभिः पाचनार्थं क्वाथः । तत्र सुरपादपो देवदारुः १ धान्य धान्याकम् २ धावनीयुगम् कटकारीद्वयम् ४ विश्वौषधी शुंठी ५ । तत्र ज्वरपाकलक्षणम् आसप्तरात्राचरुण ज्वरमाहुर्मनीषिणः । मध्यं चतुर्दशाहात पुराणस्तत उच्यते । त्रिःसप्ताहे व्यतीते तु जीर्णसज्ञा लभेत सः । एतत्सर्वज्वरे पाचनं देयं । यथोक्तमन्यत्र । नागर देवकाष्ठं च धान्याक बृहतीद्वय । दद्यात्पाचनकं पूर्वं ज्वरिताय ज्वरापहम् । पाचनद्रव्याणा परिमाण यथा । दशरत्तिकमाषेण गृहीत्वा तोलकद्वयम् । दत्वाम्भः षोडशगुण ग्राह्यं पादावशेषितमिति वैद्यकपरिभाषा । तत्र क्वाथविधिरुक्तो भावप्रकाशे । पानीयं षोडशगुण क्षुण्णे द्रव्यपले क्षिपेत् । मृत्पात्रे क्वाथयेद्ग्राह्यमष्टमाशावशेषितम् । कर्षादौ तु पलं यावत् दद्यात् षोडशकं जलम् । तज्जल पाययेद्धीमान् कोष्णं मृद्वग्निसाधितम् । शृतः क्वाथः कषायश्च निर्यूह स निगद्यते । क्वाथपानमात्रामाह । मात्रोत्तमा पलेन स्यात्त्रिभिरक्षैस्तु मध्यमा । जघन्या च पलार्धेन स्नेहक्वाथौषधेन च । तत्रांतरे । क्वाथे द्रव्यपले वारि द्विरष्टगुणमिष्यते । चतुर्भागावशिष्टं तु पेय पलचतुष्टयम् ॥ दीप्तानल महाकायं पाययेच्चाञ्जलीजलम् । अन्ये त्वमं परित्यज्य प्रसृतिं तु चिकित्सकाः ॥ क्वाथमाराममिच्छंतस्त्वष्टभागावशेषितम् । पारपर्योपदेशेन वृद्धवैद्याः पलद्वयम् । अष्टभागावशेषितस्य चतुर्भागावशिष्टापेक्षया गुरुत्वात् दीप्तानलं महाकायं पलद्वय पाययेत् मध्यमाग्निमल्पकाय पलमात्रं पाययेत् । मात्रोत्तमा पलेन स्यादिति वचनात् । क्वाथे क्षिपेत्सितामशैश्चतुर्थाष्टमषोडशैः । वातपित्तकफातके विपरीतं मधु स्मृ-

छिन्नोद्भवापर्पटवारिवाहभूनिंबशुंठीजनितः क-
षायः ॥ समीरपित्तज्वरजर्जराणां करोति भद्रं ख-
लु पंचभद्रः ॥ १९ ॥

अथ वातपित्तज्वरोपशमाय पञ्चभद्रनामानं कषायमाह । छिन्नोद्भवेति । समीरपित्तज्वरजर्जराणां वातपित्तज्वरेण व्याकुलानां नराणां छिन्नोद्भवादिभिः कृतः पञ्चभद्रनामा कषायः खलु निश्चयेन भद्रं कुशलं करोति । तत्र छिन्नोद्भवा गुडूची पर्पटः तिक्तम् वारिवाहः मुस्तकः भूनिंबः किरातः शुंठी शृङ्गवेरं । तत्र वातपित्तज्वरलक्षणमाह। तृष्णा मूर्च्छा भ्रमो दाहः स्वप्ननाशः शिरोरुजा । कंठास्यशोषो वमथू रोमहर्षोऽरुचिस्तमः । पर्वभेदश्च जृंभा च वातपित्तज्वराकृतिरिति ॥ १९ ॥

भाषार्थ--गिलोह, पित्तपापडा, मोथा, चिरायता, सोंठ इन पांच औषधियोंका क्वाथ ( जिसको पंचभद्र कहते हैं ) वातपित्तज्वरको नष्ट करता है ॥ १९ ॥

मृगमदविलसल्ललाटमध्ये मृगमदहारिणि लोचनद्वयेन॥
मृगनृपतितनूदरश्रि पित्तज्वरमहह द्यति रैणवः कषायः॥

हे मृगमदविलसल्ललाटमध्ये मृगमदेन कस्तूर्या विलसत् शोभमानं ललाटमध्यं यस्याः। पुनः किंभूते हे मृगमदहारिणि मृगे यो मदो नेत्रचाञ्चल्यरूपः तमपहर्तुं शीलमस्याः सा तत्संबोधने। केन। लोचनद्वयेन द्वौ अवयवौ यस्य तद्वयम्। संख्याया अवयवे तयप्। द्वित्रिभ्यां तयस्याऽयज्वा। लोचनयोर्दर्शनसाधनयोर्नेत्रयोर्द्वयम् तेन। पुनश्च हे मृगनृपतितनूदरश्रि मृगाणां नृपतिः सिंहः तस्य यत्तनु सूक्ष्मं उदरं तस्येव श्रीः शोभा यस्याः सा। त्रीणि संबोधनानि परिचितकथनायेति भावः। रैणवः कषायः रेणोः पर्पटस्य अयं रैणवः निर्यासः पित्तज्वरं द्यति हंति। अहह इति अद्भुतम् ॥ २० ॥

भाषार्थ–हे कस्तूरीसे शोभायमान मस्तकके मध्यवाली हे अपने दोनों नेत्रोंसे मृगके मदको हरनेवाली, हे सिंहके समान सूक्ष्म उदरकी शोभावाली यह आश्चर्य है केवल पित्तपापडेका क्वाथही पित्तज्वरको नष्ट करता है ॥ २० ॥

एक एव खलु पैत्तिकज्वरं हंति पर्पटकृतः कषायकः ॥
चंदनोदकमहौषधान्वितश्चेत्तदा किमु पुनर्विचारणा।२१।

अथ श्लोकः क्षेपकः कस्मिंश्चित्पुस्तके दृश्यते अतो मयापि व्याख्यायते । एक एवेति । पूर्वार्धः उक्तार्थ एव। चदन रक्तचंदन उदक ( नेत्रवाला ) महौपध शुठी एभिरन्वितो युक्तश्चेत्तदा पैत्तिक ज्वरं हंति इत्यत्र पुनर्विचारणा प्रमाणैस्तत्त्वपरीक्षा किं । अत्रापि विमर्शः किं । उक्त च । एकः पर्पटकः श्रेष्ठः पित्तज्वरविनाशनः । किं पुनर्यदि युज्येत चदनोदीच्यनागरैरिति ॥ २१ ॥

भाषार्थ–अकेला पित्तपापडेका क्वाथही पित्तज्वरको नष्ट करता है और यदि उसमे रक्तचंदन, नेत्रवाला, और सोंठभी मिलाय लिये जाय तो क्या कहना है ॥ २१ ॥

आरोग्यलक्ष्मीरुपयाति पित्तज्वरातुरं रेणुक-
षायभाजम् ॥ मां त्वं यथा रत्नकले स्मरार्तं
कृतप्रकोपोपशमं सखीभिः ॥ २२ ॥

हे रत्नकले सखीभिः सह त्व सहर्ष स्मरार्तं मामुपयासि तथा रेणुकषायभाज रेणोः कषायः तं भजतीति तं पित्तज्वरेण आतुरः तं आरोग्यलक्ष्मीः उपयाति नीरुजो भवतीत्यर्थः ॥ २२ ॥

भाषार्थ–हे रत्नकले अर्थात् गीत वाद्य आदि उत्तम कलाओंमे कुशले पित्तपापडेके क्वाथको पीनेवाले पित्तज्वरके रोगीको आरोग्यकी शोभा उसप्रकार प्राप्त होती है जैसे कामदेवसे दुःखित और तेरी सखीयोंने किया है शात क्रोध जिसका ऐसे मुझको तू प्राप्त होती है ॥ २२ ॥

द्राक्षापर्पटराजवृक्षकटुकामुस्ताभयानां जलं
मूर्च्छाशोषनिदाघतृट्प्रलपनभ्रांत्याढ्यपित्तज्वरे ॥
दुःस्पर्शभ्रमदाकिरातकटुकासिंहास्यरेणूद्भवः
क्वाथः शर्करयान्वितोऽथ हरते तृट्दाहपित्तज्वरान्।२३

द्राक्षादिषण्णा जलं क्वाथ. मूर्छादियुक्ते पित्तज्वरे देयम् । तत्र द्राक्षा गोस्तनी पर्पटः राजवृक्षः कृतमाल. कटुका मुस्ता मुस्तकः अभया पंचरेखा

हरीतकी । मूर्छा मोहः येन नरः काष्ठवत्पतति शोषः यक्ष्मा निदाघः स्वेदः तृट् जलस्य प्रलपनं प्रलापः भ्रांतिः भ्रमः । यथोक्तं । द्राक्षाभयापर्पटका-ह्वतिक्ताक्वाथं सशम्याकफलं विदध्यात् । प्रलापमूर्च्छाभ्रमदाहशोषतृष्णान्वि-ते पित्तभवे ज्वरे तु इति । दुस्पर्शो यवासः प्रमदा प्रियंगुः । महदीति । किरा-तो भूनिंबः कटुका कटुरोहिणी सिंहास्यो वासकः रेणुः पर्पटः एषां षण्णां कषायः शर्करयान्वितः सितासंयुतः पीतः तृट्दाहपित्तज्वरान् हरते दूरीक-रोति । तत्र क्वाथे सिद्धे पूते अर्धपलोन्मिता शर्करा पश्चात्प्रक्षेतव्या । यथोक्तं। क्वाथे क्षिपेत्सितामंशैश्चतुर्थाष्टमषोडशैः ॥ वातपित्तकफातंके विपरीतं मधुस्मृत-मिति । अत्रैवं क्रमः। वातातंके सिता क्वथितजलाच्चतुर्थांशा प्रक्षेप्तव्या पित्ता-तंके अष्टमांशा कफातंके षोडशांशा शर्करा प्रक्षेप्तव्या । मधुनि विपरीतः क्रमः यथा वातातंके षोडशांशं मधु पित्तातंके अष्टमांशं कफातंके चतुर्थांशं मध्वि-त्यर्थः ॥ तृट् तृषा दाहो गात्रसंतापः एकस्मिन् व्याधौ योगद्वयमनेन श्लोकेन उक्तं बोद्धव्यं । क्वाथः शर्करयान्वितो हरति तृड्दाहास्रपित्तज्वरा-निति वा पाठः ॥ २३ ॥

भाषार्थ–दाख, पित्तपापडा, अमलतास, कुटकी, मोथा, हरडै, इनका क्वाथ उस पित्तज्वरको नष्टकरता है जिसमें मूर्छा, राजयक्ष्मा, पसीना, जलकी तृषा, प्रलाप और भ्रांतिहों और जवासा, महदी, चिरायता, कुटकी, अडूसा ( वासा ), पित्तपापडा, इनका वह क्वाथ जिसमें मिश्री मिली होय तृषा, दाह, रक्तपित्त और पित्तज्वरको नष्टकरताहै ॥ २३ ॥

**अहो किमर्थं बहुभिः कषायैः पराशराद्यैर्मुनिभिः प्रदिष्टैः॥**
**छिन्नाशिवापर्पटतोयदानात्पित्तज्वरः किं न सरीसरीति**

अहो विस्मये पराशराद्यैर्मुनिभिः प्रदिष्टैः प्रदर्शितैः बहुभिः कषायैः अनेकैः क्वाथैः किमर्थम् किं प्रयोजनम् । यतः छिन्नाशिवापर्पटतोयपानात् पित्तज्व-रः किं न सरीसरीति अतिशयेन न गच्छति किं अपि तु गच्छत्येव । तत्र छिन्ना गुडूची शिवा धात्री पर्पटो रेणुः एषां क्वाथस्य पानात् पित्तज्वरो अ-वश्यं गच्छतीत्यर्थः । उक्तं च। पर्पटामृतधात्रीणां क्वाथः पित्तज्वरं जयेदिति ।

सरीसरीति इत्यत्र गत्यर्थात्कौटिल्येऽर्थे एव यङ् इति नियामकात् पित्तज्वरः किं न सरीसरीति अपि तु सरीसरीति अथ विपरीतार्थो भवति तदा अनया रीत्या र्थः क्रियते पित्तज्वरः किं सरीसरीति। कौटिल्य गच्छति अपि तु न सरीसरीति इति सुष्ठ्वर्थोयम्। तत्र पित्तकफज्वरलक्षणमाह। लिप्ततिक्तास्यता तंद्रा मोहः कासोऽरुचिस्तृषा। मुहुर्दाहो मुहुः शीतं पित्तश्लेष्मज्वराकृतिः॥ २४॥

भाषार्थ–आश्चर्यहै कि पराशरआदि मुनियोंके कहेहुये बहुतसे कषायोंसें क्या प्रयोजन है केवल गिलोह, आवला, पित्तपापडा, इनका काथ देनेसे क्या पित्तज्वर नष्ट नही होताहै अर्थात् अवश्य होताहै॥ २४॥

लोहितचंदनपद्मकधान्यच्छिन्नरुहापिचुमंदकषायः॥ पित्तकफज्वरदाहपिपासावांतिविनाशहुताशकरः स्यात्॥ २५॥

अथ पित्तश्लेष्मिकज्वरे क्वाथमाह। लोहितेति। लोहितचदनादीनां क्वाथः पित्तकफज्वरादीना नाशको भवति। तत्र लोहितचदन रक्तचदनं पद्मकं पद्मकाष्ठ धान्य कुस्तुंबुरु छिन्नरुहा अमृता पिचुमंदो निंबः। कीदृशः कषायः पित्तकफज्वरदाहपिपासावातिविनाशहुताशकर. तत्र पित्तकफाभ्या सहितो ज्वरः पित्तकफज्वरः दाह. गात्रसतापः शरीरौष्ण्य वा पिपासा तृष्णा वांतिः वमनं तासां विनाशः हुताशो जठराग्नि. तौ करोतीति। उक्तं च। गुडूचीनिंबधान्याकं पद्मकं रक्तचंदनम्। एप सर्वज्वरान् हति गुडूच्यादिस्तु दीपनः। हृल्लासारोचकच्छर्दिपिपासादाहनाशनः॥ इति॥ २५॥

भाषार्थ–लालचंदन, पद्माख, धनिया, गिलोह, और नीबकी छाल इनका क्वाथ पित्तकफज्वर, दाह, तृषा, वमन, और मदाग्नि इनको नष्ट करता है॥ २५॥

जलजलजजलवाहरेणुविश्वौषधशिशिरैः शिशिरंजलं श्रृतं स्यात्॥सपदि सुखकरं सदा सदाहज्वरहृदपि योज्यमिदं नवज्वरेऽपि॥ २६॥

शय्या पल्लवपद्मपत्ररचिता वासो वयस्यैः समं कांतारे कुसुमस्फुरत्तरुवरे वीणान्वितं गायनम् ॥ आलापाश्च शुकालिकोकिलकृताः कांताश्च कांताः कथा वाताश्चामलवालकव्यजनजा दाघं निराकुर्वंते ॥ ३० ॥

शय्येति । एते शय्यादयः दाघं दह्यते कायोऽनेन । दहभस्मीकरणे हलश्चेति घञ् न्यंक्वादित्वात्कुत्वम् । दाघो दाहस्तं निराकुर्वंते दूरीकुर्वंति । के ते तत्राह । पल्लवपद्मपत्ररचिता शय्या पल्लवानि कदल्याः किसलयानि तैः रचिता निर्मिताः शय्याः संस्तरः दाहार्दितं कंजकदलीदलसंस्तरे इत्युक्तत्वादनुक्तापि कदली योज्या । पुनश्च कुसुमस्फुरत्तरुवरे कुसुमैः सुमनोभिः स्फुरंतः प्रकाशमानास्तरुवराः श्रेष्ठवृक्षाः यत्र तस्मिन् कांतारे वने वयस्यैः सवयोभिः स्निग्धैः समं सार्द्धं वासोऽवस्थानं । पुनः वीणान्वितं गायनं वल्लक्या मिलितं गायकं गानं वा । भूयश्च शुकालिकोकिलकृता आलापाश्च शुकाश्च अलयश्च कोकिलाश्च ते तत्र शुकाः प्रियदर्शनाः कीराः अलयः भ्रमराः कोकिलाः वनप्रियाः एतेषामालापाः आभाषणानि । पुनश्च कांताः मनोरमाः सर्वांगसुंदर्यो नार्यः । कांता इत्युभयान्वयि तेन कांताः कथा मनोरमाः प्रबंधकल्पनाः । यद्वा कान्ताः स्त्रियः कांताकथा इत्येकं पदं वा तेन कांतानां स्त्रीविशेषाणां कथाः शृंगाररसोत्तराः गोष्ठ्यः संलापाः । भूयश्च अमलवालकव्यजनजाः वाताः अमलं निर्मलं वालकं स्वल्पकं यत् व्यजनं तस्माज्जाताः एतादृशा वाताः । यद्वा अमलवालकयुक्ताः ये व्यजनास्तेभ्यो जाताः । व्यजनं तालवृंतकमित्यमरः । वालज इति वा पाठः अमलवालाज्जातास्तालवृंतजाश्च अमलवालाज्जाता ये व्यजनास्तेभ्यो जाता इति वा ॥ ३० ॥

भाषार्थ—ये सब दाहको दूर करते हैं कि केले वा कमलके पत्तोंसे बनाई शय्या, और खिले हैं फूल जिनपर ऐसे वृक्षवाले वनमें, अपनी अवस्थाओंके समान मित्रोंकेसाथ बसना, और वीनाके बाजेसहित गानेको और तोता, भ्रमर, कोयल आदि

पक्षियोंके शब्दको सुनना, और मनोहर स्त्रीयोंका संग और सुंदर कथाओंका श्रवण, निर्मल, और कोमल वीजनेकी पवन ॥ ३० ॥

## तृड्दाहमोहाः प्रशमं प्रयांति निम्बप्रवालोत्थितफेनलेपात् ॥यथा नराणां धनिनां धनानि समागमाद्वारविलासिनीनाम्॥ ३१ ॥

तृडिति। निंबप्रवालोत्थितफेनलेपात् निम्बस्य सर्वतोभद्रस्य प्रवालान्यभिनवपत्राणि किसलयानि तेभ्यः उत्थितः उत्पन्नः यः फेनः जलहासः तस्य लेपात् लेपनात्। निंबपत्राणा स्वरसो मथनीयस्तस्माद्यः फेन उत्तिष्ठतीति भावः तन्मर्दनाच्च। तृट् च दाहश्च मोहश्च ते प्रशमता प्रयाति प्राप्नुवन्ति। कस्मात् कानीव वारविलासिनीना वारे जनसमूहे विलसनशीलाना निर्लज्जानां वेश्यानां समागमात् संगात् मिथुनीभावाद्वा धनिना धनसंपन्नाना आढ्याना नराणा धनानीव वित्तानि यथा। वारः सूर्यादिवारे स्यात् वृन्दावसरयोः क्षणे इति मेदिनीकारः ॥ ३१ ॥

भाषार्थ–नीबके पत्तोंसे पैदाहुये फेन ( झाग ) के लेपसे तृषा, दाह, मोह (भ्रम,) इस प्रकार रोग नष्टहोतेहैं जैसे वेश्याओंकेसगसे धनवालोंके धन नष्ट होजाते है॥३१॥

## अयि नितंबिनि गायनलालसे मधुरचारिणि काममदालसे॥हरति दाहमघर्मकरानने हिमहिमांशुजलैरनुलेपनम्॥ ३२ ॥

पुनश्च तापप्रतीकारमाह। अयीति। अयीति कोमलामन्त्रणे। हे नितम्बिनि। नितंबः स्त्रियाः पश्चात्कटितटः स विशालोऽस्त्यस्याः अत इनिठनाविति इनि ङीप्। तत्संबोधने हे नितम्बिनि हे गायनलालसे गायने लालसा महत्यभिलाषा यस्याः सा तत्संबोधने। पुनः हे मधुरचारिणि मधुर नितम्बस्य भारेण गजवन्मन्दगमनेन प्रिय चरितुं शीलमस्याः सा। तत्संबोधने हे काममदालसे। कामेन रिरंसया यो मदो हर्षोन्मत्तता तेन अलसा क्रियाया मन्दा आलस्ययुक्ता इतियावत् तत्संबोधने। पुनश्च हे अघर्मकरानने घर्मकरः

कित्सकपते वैद्यस्वामिन् लोलिम्बराज तत् तस्मात् कारणात् तैः किं क्रियताम् । भो मुग्धे ऽप्रगल्भे मुग्धे इति विशेषणमन्वर्थम् । वैद्यकलायामकुशलत्वात्।तैः कान्ताऽधरः सुधाऽधिकतरोऽमृताधिकतरः सद्यस्तापहरः केवलम् सेव्यताम् । अयं विधिः कामज्वरे नतु पित्ते । उक्तं चाकान्ताकटाक्षदग्धानां वद वैद्यकिमौषधम् । दृढमालिङ्गनं पथ्यं क्वाथश्चाधरचुम्बनमिति । पाठांतरमिदम् रसिकत्वादत्र लेख्यम् ॥ ३५ ॥

भाषार्थ–हे प्राणप्यारी पित्तज्वरसे व्याकुल पुरुष विलंबसे फल देनेवाले और पीनेमें दुखदायी नानाप्रकारकी लताओंके जलको मत पीवो स्त्री बोली हे वैद्यों के स्वामी फिर वे पुरुष क्या करें पति उत्तर देता है हे मुग्धे ( भीरू ) वे पुरुष शीघ्र तापका नाशक और अमृतसेभी अधिक जो स्त्रीका अधरामृत केवल उसकाही सुखसे सेवन करें ॥ ३५ ॥

**यदि पर्युषितं धान्यसलिलं सितया समं ॥**
**प्रभातसमये पीतमन्तर्दाहं नियच्छति ॥ ३६ ॥**

अथ पित्तज्वरे अन्तर्दाहशांत्युपायमाह । यदीति । यदि पक्षान्तरे धान्यसलिलं धान्यस्य धन्याकस्य जलं पर्युषितं व्युष्टं क्षुण्णं धन्याकं मृत्पात्रस्थ जले प्रक्षिप्य आच्छाद्य रात्रौ बहिः स्थापितं तत् व्युष्टं सितया शर्करया समं सार्धं तत् प्रभातसमये प्रातःकाले पीतं सत् अन्तर्दाहं शरीराभ्यन्तरज्वालां नियच्छति नाशयति । यथाह । व्युषितं धन्याकजलं प्रातः पीतं सशर्करं पुंसाम् । अन्तर्दाहं शमयत्यचिराद्दूरप्ररूढमपीति । अन्यच्च प्रातः सशर्करः पेयो हिमो धन्याकसम्भवः । अन्तर्दाहं तथा तृष्णां जयेत् स्रोतोविशोधन इति । पलं धान्यम् षट्पलं जलं सिता पलमिता इति कर्तव्यता ॥ ३६ ॥

भाषार्थ–यदि रात्रिको एक पल धनिया कूटकर जिसमें भिगोया होय उस छः पल वासी जलको मिश्री डालकर प्रातःकालके समय पीवे तो शरीरके भीतरकी ज्वाला नष्ट हो जाती है ॥ ३६ ॥

**पञ्चमूल्यमृतामुस्ताविश्वभूनिंबसाधितः ॥**
**कषायःशमयत्याशु वायुमायुभवं ज्वरम् ॥ ३७ ॥**

अथ वातपित्तज्वरे नवागपाचनमाह पचमूलीति। पंचानां मूलानां शालपर्ण्यादीना समाहारः पचमूली। द्विगोरिति ङीप्। तथाहि। शालपर्णीपृश्निपर्णीबृहतीद्वयगोक्षुरम्। वातपित्तहरं वृष्य कनिष्ठं पचमूलकम्। अमृता गुडूची मुस्ता मुस्तकम् विश्व शुण्ठी भूनिम्बः चिरातिक्तः। एतैर्नवभिः निर्मितः कषायः क्वाथः वायुमायुभवं वायुर्वातः मायुः पित्तं ताभ्यां जनितं ज्वरमाशु शीघ्रं शमयति नाशयति। यथाह चक्रपाणिदत्तः। संसृष्टदोषेषुहितं संसृष्टमथपाचनम्। विश्वामृताब्दभूनिम्बैः पंचमूलीसमन्वितैः। कृतः कषायो हंत्याशु वातपित्तोद्भव ज्वरमिति। तत्रवातपित्तज्वरलक्षणं यथा। तृष्णा मूर्छा भ्रमो दाहो निद्रानाशः शिरोरुजा। कंठास्यशोषो वमथू रोमहर्षोऽरुचिस्तमः। पर्वभेदश्च जृंभा च वातपित्तज्वराकृतिरिति ॥ ३७ ॥

भाषार्थ—शालपर्णी पृष्टपर्णी, और दोनोकटेहली, गोखरू, गिलोह, मोथा, सोठ, चिरायता, इनसे बनायाहुआ क्वाथ वातपित्तज्वरको शीघ्र नाश करताहै ॥ ३७ ॥

शृङ्गीकणाकट्फलपौष्कराणां क्षौद्रान्वितानां विहितो वलेहः॥ श्वासेन कासेन युतं बलासज्वरं जयेदत्र न कापि शंका ॥ ३८॥

अथ श्वासकाससहिते कफज्वरेऽवलेहमाह। शृङ्गीति। क्षौद्रान्विताना शृंग्यादिचतुर्णां विहितोऽवलेहः श्वासेन कासेन च सहितं बलासज्वरं जयेत् अत्र कापि शंका नास्ति।तत्र क्षौद्र कपिलवर्ण मधु। यथोक्तम्।मक्षिकाः कपिलाःसूक्ष्माः क्षुद्राख्यास्तत्कृत मधु। मुनिभिः क्षौद्रमित्युक्त तद्वर्णात् कपिल भवेत्। गुणैर्माक्षिकवत् क्षौद्र विशेषान्मेहनाशनमिति भावप्रकाशे। क्षुद्राभिर्मक्षिकाभिः कृतम्। क्षुद्राभ्रमरेत्यत्र। शृंगी अजशृंगा कणा मागधी कट्फलः श्रीपर्णिका पौष्करं पुष्करमूलम् एषा कृतोवलेहः।अवलेहो नाम क्वाथादेर्यत् पुनः पाकात् घनत्वं सा रसक्रिया। सोवलेहश्च प्राश इत्युच्यते बुधैरिति वैद्यकपरिभाषा ॥ ३८ ॥

भाषार्थ—मेंढासिंगी पीपल कायफल और पोहकरमूल पीलेसहतमें बनाई-हुईकी चटनी श्वास और खांसी जिसमें ऐसे कफज्वरको नष्टकरतीहै इसमें कुछभी शंका नही ॥ ३८ ॥

भार्ङ्गीगुडूचीघनदारुसिंहीशुण्ठीकणापुष्करजःकषायः ॥ ज्वरं निहंति श्वसनं क्षिणोति क्षुधां करोति प्ररुचिं तनोति ॥ ३९ ॥

अथ श्वासयुते ज्वरे चिकित्सामाह । भार्ङ्गीति । भार्ङ्ग्याद्यष्टानामोषधीनां कषायः ज्वरं नितरां हन्ति । श्वसनं श्वासं क्षिणोति नाशयति क्षुधां करोति प्ररुचिं प्रकृष्टमन्नाभिलाषं तनोति विस्तारयति । तत्र भार्ङ्गी ब्राह्मणयष्टिका गुडूची अमृता घनो मेघनामा दारुर्देवदारु सिंही कंटकारी शुण्ठी महौषधम् कणा कृष्णा पुष्करजः पौष्करमूलम् ॥ ३९ ॥

भावार्थ—भारंगी गिलोह मोथा देवदारु भटकैरया सोंठ पीपल पोहकरमूल इनका क्राथ ज्वर और श्वासको नष्ट करताहै क्षुधा और अन्नमें रुचिको वढाताहै ॥ ३९ ॥

ममद्वयं विस्मयमातनोति तिक्ताकषायो मुखतिक्तताघ्नः॥ निपीडितोरोजसरोजकोषा योषा प्रमोदं प्रचुरं प्रयाति ४०

ममेति । मम लोलिम्बराजस्य वस्तुद्वयं विस्मयमाश्चर्यमातनोति उत्पादयति । किं तत् द्वयम् तिक्ताकषायो मुखतिक्तताघ्नः तिक्ता कटुकी तस्याः कषायः क्काथः मुखतिक्तताघ्नः मुखकटुत्वनाशको भवतीत्येकम् । प्रलापो वक्त्रकटुतेत्यादि निदानोक्तत्वात् मुखतिक्तता पित्तज्वरकृता बोध्या । पुनश्च निपीडितोरोजसरोजकोषा नितरां पीडितः करेण उरोजसरोजयोः कुचकमलयोः कोशः कुड्मलं यस्याः सा योषा स्त्री प्रचुरं प्रभूतं वहुतरं प्रमोदं हर्षं प्रयाति प्राप्नोतीत्येतद्द्वयमित्यर्थः ॥ ४० ॥

भाषार्थ—लोलिम्बराजकवि अपनी स्त्रीसे कहता है कि मुझे इन दो वस्तुओंसे आश्चर्य होता है कि कुटकीका क्राथ मुखकी कटुताको नष्ट करता है और हाथोंसे दवाया है ...रूपी स्तनोंका अग्रभाग जिसका ऐसी स्त्री अत्यंत आनंदको प्राप्त होती है ॥ ४० ॥

क्काथः कट्फलकत्तृणाब्दधनिकाशृंग्युग्रगंधाभया-
भार्ङ्गीपर्पटविश्वदेवतरुजो वाल्हीकमध्वान्वितः॥
कासश्वासमुखामयज्वरवलश्लेष्मप्रकोपं हरेत्
तद्वत्कोमलकंठि कंठजनितां पीडां च जेह्रीयते ॥४१॥

इदानीं श्लेष्मकासश्वासमुखामयकण्ठपीडाचिकित्सामाह क्काथइति । वाल्हीकमध्वन्वितः कट्फलकत्तृणाब्दधनिकाशृंग्युग्रगन्धाभयाभार्ङ्गीपर्पटविश्वदेवतरुजः क्काथः कासश्वासमुखामयज्वरवलश्लेष्मप्रकोपं हरेत् । तच्च वाल्हीकं हिंगु तच्च शाणमितम् मधु माक्षिकं तच्च तोलकद्वयात्मककर्षमितम् कट्फलः कैडर्य्यः कत्तृण पौरम् अब्दो मुस्ता धनिका धन्याकम् शृंगी कर्कटशृंगी उग्रगन्धा वचा अभया हरीतकी भार्ङ्गी ब्राह्मणयष्टिका पर्पटः पित्तारि॰ विश्व शुंठी देवतरुर्देवदारुः । एकादशभिरेतैर्द्रव्यैर्जनिते क्काथे पूते च शीते तत्र पश्चाद्धिङ्गुमधुनी प्रक्षेप्तव्ये । स पीतः सन् कासादीन् हरेत् तत्र कासः श्वासः श्वासरोगः मुखामयो गलशुण्ड्यादिरूपो मुखरोगः ज्वरवल ज्वरवेगः श्लेष्मप्रकोप कफवृद्धिम् हे कोमलकण्ठि मृदुगलध्वनिविशिष्टे तद्वत् तथैव कठजनितां गलोद्भवा पीडा व्यथा च जेन्हीयते अतिशयेन नाशयति । कोमल मृदुले जले इति । कठो गले सन्निधाने ध्वनौ मदनपादपे इति च मेदिनीकारः ॥ ४१ ॥

भाषार्थ–कायफल रामकपूर धनिया मोथा काकडासिंगी वचपाचरे स्याहीहरड भारंगी पित्तपापडा सोंठ देवदारु इनके क्काथमें चार मासे हींग और दो तोले सहत मिलानेसे खासी, श्वास, मुखके रोग, ज्वरका वल, और कफकी वृद्धि नष्ट होते है हे कोमलकण्ठवाली तिसीप्रकार कंठकी पीडाको नष्ट करता है ॥ ४१ ॥

अरुचिं द्यति लुंगकेसरं सघृतं सैंधवचूर्णमिश्रितम् ॥
रुचिमंजुरहस्य तन्वि ते नयनं खंजनगंजनं यथा ॥ ४२ ॥

अरुचिमिति । हे तन्वि हे कृशाङ्गि सघृत सैंधवचूर्णमिश्रित शीतशिवरजोयुक्तं लुंगकेशर बीजपूरकेसरम् । बीजपूरकेसरयोर्नूतेन सहावलेहः अरुचिमन्नानभिलापस्वरूपम् रोग द्यति खण्डयति । अत्र दृष्टान्तः हे तन्वि खजन-

गंजनं खंजनं खंजरीटारुण्यपक्षिणं गञ्जयति समदत्वात् तिरस्करोति एवंभूतं ते नयनं लोचनं यथा अंबुरुहस्य अंभोजस्य रुचिं शोभां खंडयति तथेत्यर्थः॥४२॥

भाषार्थ—हे तन्वि ( पतली ) घी और सींधालवण जिसमें मिला होय ऐसा विजोरानींबूका, केशर ( जीरा, ) अन्नकी अरुचिको इसप्रकार नष्ट करता है जैसे खंजन पक्षीको तिरस्कार करनेवाला तेरा नेत्र, कमलकी रुचिको नष्ट करता है ॥ ४२ ॥

ग्रन्थीन्द्रजाऽमरपुरक्रिमिशत्रुभार्ङ्गीभृंगत्रिकटुनलकट्फलपौष्कराणाम् ॥ रास्नाभयाबृहतिकाद्वयदीप्यभूतकेशीकिरातकवचाचविकावृकीणाम् ॥ ४३ ॥ क्राथोहन्यात्सन्निपातान्समूलान् बुद्धिभ्रंशस्वेदशैत्यप्रलापान् ॥ शूलाध्मानं विद्रधिश्लेष्मवातान् वातव्याधिं सूतिकानां च तद्वत् ॥ ४४ ॥ युग्मं ॥

अथ सकलसन्निपातानां बुद्धिभ्रंशस्वेदादीनां च नाशाय क्राथमाह । ग्रंथीत्यादिश्लोकाभ्याम् । ग्रंथ्यादीनां त्रयोविंशतिद्रव्याणां क्राथः समस्तान् सकलान् संनिपातान् त्रिदोषजनितान् बुद्धिभ्रंशं चित्तवैकल्यम् स्वेदम् प्रस्वेदं शैत्यं शरीरे शीतभावं प्रलापमनर्थभाषणम् शूलं वातेन जठरपीडां आध्मानं वातनिरोधजं सवेदनोदरपूर्णत्वम् । शूलाध्मानयोर्द्वन्द्वैक्यम् । विद्रधिं हृद्व्रणम् । श्लेष्मवातं कफयुक्तवायुम् तद्वत् तथैव सूतिकानां नवप्रसूतानां वातव्याधिं वायुरोगं च हन्यात् नाशयेत् । हन्यादित्यस्य सर्वत्र संनिपातादौ सम्बन्धः । तत्र ग्रन्थिः पिप्पलीमूलं इन्द्रजः इंद्रयवः अमरः कुलिशवृक्षः सीहुण्डः अमरो देवदार्विति कश्चित् । पुरो गुग्गुलुः क्रमिशत्रुः विडंगः भार्ङ्गी फञ्जिका भृंगं भृंगराजः त्रिकटु विश्वोपकुल्यामरिचम् अनलश्चित्रकः कट्फलः श्रीपर्णिका पौष्करं पुष्करमूलम् रास्ना नरकुली अभया पंचरेखाहरीतकी बृहतिकाद्वयं कंटकारीयुग्मम् दीप्या यवानी भूतकेशी जटामांसी किरातकश्चिरतिक्तः वचा षड्ग्रन्था चाविका चव्यम् वृकी पाठा । अथ सन्निसामान्यलक्षणमाह । क्षणे दाहः क्षणे शीतमस्थिसंधिशिरोरु-

जा। सस्रावे कलुषे रक्ते निर्भुग्ने चापि लोचने। सस्वनौ सरुजौ कर्णौ कंठः शूकैरिवावृतः। तंद्रा मोहः प्रलापश्च कासः श्वासोऽरुचिर्भ्रमः। परिदग्धा खरस्पर्शा जिव्हा स्रस्तांगता परम्। ष्ठीवन रक्तपित्तस्य कफेनोन्मिश्रितस्य च। शिरसो लोठन तृष्णा निद्रानाशो हृदि व्यथा। स्वेदमूत्रपुरीषाणा चिराद्दर्शनमल्पशः। कृशत्व नातिगात्राणा सतत कंठकूजनम्। कोठाना श्यावरक्तानां मडलाना च दर्शनम्। मूकत्व स्रोतसा पाको गुरुत्वमुदरस्य च। चिरात्पाकश्च दोषाणां सन्निपातज्वराकृतिरिति। असाध्यसन्निपातस्य लक्षणमाह। दोषे विवृद्धे नष्टेऽग्नौ सर्वसपूर्णलक्षण। सन्निपातज्वरोऽसाध्यः कृच्छ्र साध्यस्त्वतोऽन्यथा। अथावधिमाह। सप्तमे दिवसे प्राप्ते दशमे द्वादशेपि वा। पुनर्घोरतरो भूत्वा प्रशमं याति हति वा। सप्तमीद्विगुणाचैव नवम्येकादशी तथा। एपा त्रिदोपमर्यादा मोक्षाय च वधाय च। सन्निपातज्वरस्याते कर्णमूलेपु दारुणः। शोथः संजायते तेन कश्चिदेव प्रमुच्यते इति माधवकरः॥ ४३॥ ४४॥

भाषार्थ–पीपलामूल इंद्रजो सेहुड वा देवदारु वायविडग भारगी दालचिनी सोठ मिरच पीपल चीता कायफल पोहकरमूल रासन हरड दोनों कटेहली अजमायन जटामासी चिरायता वच चव्य और पाठा इन तेईस औषधियोंका क्वाथ उन संनिपातोंको नष्ट करताहै जिनमें बुद्धिका भ्रंश ( मोह ) पसीना शीतता और प्रलाप ( बकवादकरना ) शूल अफरा विद्रधि ( हृदयफोडा ) कफ वातहो और वातकी व्याधि और प्रसूतकी व्याधिकोभी तिसीप्रकार नष्ट करताहै ॥ ४३ ॥ ४४ ॥

अर्कानंताकिरातामरतरुरसनासिंदुवारोग्रगंधा
तर्कारीशिग्रुपंचोषणघुणदयितामार्कवाणां कषायः॥
सद्यस्तीव्रांस्त्रिदोपानऽपहरति धनुर्मारुतं दंतबंधं शैत्य
गात्रेपु गाढं श्वसनकसनकं सूतिकावातरोगान्॥ ४५॥

क्वाथांतरमाह। अर्कानन्तेत्यादिना। अर्कादीनां षोडशद्रव्याणा कषायः क्वाथः पीतः सन् तीव्रान् दुःसहान् त्रिदोषान् सन्निपातान् धनुर्मारुतं धनु·

वातम् दंतबंधं दंतानां रदनानां बन्धो बंधनम् गात्रे शरीरे गाढं दुःसहं शैत्यं कम्पम् श्वसनं श्वासम् कसनं कासम् सूतिकावातरोगान् प्रसूतस्त्रीवातव्याधीन् सद्यस्तत्कालमपहरति । तत्र अर्कः अर्कमूलम् अनन्ता ताम्रमूलायासः किरातश्चिरतिक्तः अमरतरुः देवदारुः रसना रास्ना सिन्दुवारः सिन्धुकः उग्रगंधा वचा तर्कारी अरणी अग्निमंथः शिग्रुः शोभांजनः पंचोषणं पंचकोलम् । तद्यथा । पंचकोलं कणामूलकृष्णाचव्याग्निनागरैरिति । घुणदयिता अतिविषा मार्कवो भृंगराजः ॥ ४५ ॥

भाषार्थ—आककी जड जवासा और चिरायता देवदारु रासन ( जैतकेबीज ) संभालू वच अरणी सोजना पीपलामूल पीपल चव्य चीता सोंठ अतीस भांगरा इन सोलह औषधियोंका क्वाथ बडेभारी संनिपातोंको और ऐसी वातको जिनमें देह धनुषाकार होजाय दांतोंके बंधनको और गात्रोंमें शीतको और प्रवृद्धश्वास और खांसीको और प्रसूतास्त्रीकी वातव्याधिको नष्टकरताहै ॥ ४५ ॥

तिक्तातिक्तकपर्पटामृतशठीरास्नाकणापौष्कर-
त्रायंतीबृहतीसुरौषधशिवादुस्पर्शभार्ङ्गीकृतः ।
क्वाथो नाशयति त्रिदोषनिकरं स्वापं दिवा जागरम्
नक्तं तृण्मुखशोषदाहकसनं श्वासानशेषानपि ॥ ४६ ॥

अपरं सकलसन्निपातापहं क्वाथमाह । तिक्तेति।तिक्तादिपंचदशौषधैर्विहितः कषायःसर्वान् सन्निपातान् स्वापादींश्च नाशयति । तत्र तिक्ता कटुकी तिक्तको भूनिम्बः पर्पटः पित्तारिः अमृता गुडूची शठी गंधमूली रास्ना भुजंगाक्षी कणा चपला पौष्करं पुष्करमूलं त्रायन्ती त्रायमाणा बृहती कंटकारी सुरो देवदारुः औषधं शुंठी शिवा हरीतकी दुःस्पर्शो धन्वयासः भार्ङ्गी ब्राह्मणयष्टिका एतैः पञ्चदशभिर्निर्मितः कषायः त्रिदोषनिकरं सन्निपातसमूहम् । दिवा स्वापं दिवसे शयनं नक्तं जागरं रात्रौ जागरणम् तृण्मुखशोषदाहकसनम् तृट् पिपासा मुखशोषो वक्त्रस्य शोषणम् दाहो गात्रसन्तापः कसनं कासः एषां द्वंद्वैक्यम् अशेषान् निःशेषान् महाश्वासादीन् नाशयति । सन्निपाताः यथा मांडवीये ।

कण्ठकुब्जकः । कर्णको जिह्मगश्चैव रुग्दाहश्चां

तकस्तथा । भुग्ननेत्रो विलापश्च प्रलापः शीतलाङ्गकः । अभिन्यासश्चेति वि- द्यात्सन्निपातास्त्रयोदशेति । एतेषां लक्षणान्याह चक्रपाणिदत्त. । सदास्यं श्लेष्मणा पूर्णं शूलः कासोतिवेदना । शोथश्च लक्षणान्येव शीघ्रगे सान्निपातके १ अतितन्द्रा ज्वरः श्वास कासस्तापोऽतिसारकः । स्थूलकण्ठः सिताश्यामा जिह्वा कण्ठे च कूजति । श्रुतिरल्पा चेति विद्याच्चान्त्रिके सन्निपातिके २ मदो मोहो भ्रमस्तापो हास्यशीतप्रलापवान् । नित्य वैकल्पिता पीडा विकटाक्ष- निरीक्षणं । लक्षणैः सन्निपातोय ज्ञातव्यश्चित्तविभ्रमः ३ कण्ठग्रहो ज्वरो मूर्च्छा दाहः कम्पो विलापन । मोहस्तापः शिरोर्तिश्च वातार्त' प्रलय गतः । कण्ठकुब्ज सन्निपातं कष्टसाध्य विनिर्दिशेत् ४ ज्वरः कर्णांतशोथश्च श्वासः कम्पः प्रलापनः । स्वेदः कण्ठग्रहस्तापस्तृणमोहो भयमेवच । कर्णिके सन्निपाते च लक्षणानि भवति हि ५ सकण्टा कठिना जिह्वा कासः श्वासोतिविह्वलः । मूको बधिरता तापो बलहानिश्च लक्षण । जिह्वगः सन्निपातोय कष्टात् कष्ट- तरः परः ६ मोहस्ताप. प्रलापश्च व्यथा कण्ठे भ्रमः श्रमः । वेदना च तृषा जाड्य श्वासश्च लक्षणैरिमैः । कष्टात्कष्टतरो ज्ञेयः रुग्दाहः सन्निपातिकः ७ दाहो मोहः शिरःकंपो हिक्का श्वासोङ्गमर्दन । सन्तापश्चान्तको ज्ञेयः सन्नि- पातोतिमारक. ८ श्वसन लोचने भुग्नेऽ स्मृतिःस्थूला ज्वरोधिकः । मोहः प्रल- पन कम्पो भ्रमो निद्रा च लक्षणैः । ज्ञातव्यो भुग्ननेत्रोय सन्निपातः क्षयंकरः९ रक्तनिष्ठीवन मूर्च्छा ज्वरो मोहस्तृषा भ्रमः । वातिर्हिक्कातिसारश्च सञ्ज्ञा- नशो हृदि व्यथा । मण्डल श्यावरक्तश्च देहेषु लक्षणैरिमैः । ज्ञातव्य. सन्निपा- तोय रक्तष्ठीवी निपातकः १० प्रलापतापकर्णार्तिप्रज्ञानाशोतितापवान् । ज्ञेयः प्रलापकश्चिन्हैः सन्निपातोतिमारकः ११ शरीर हिमवच्छीतमतिसारश्च क- म्पन । कर्णनादो हरततापो हिक्का श्वासः क्रमोत्तर । सर्वाङ्गशीतलो हन्ति शीताङ्गः सन्निपातरु. १२ त्रिदोषं च मुख शुष्क निद्रावैकल्यकष्टवाक् । निश्चेतनमतिश्वासो मदाग्निर्बलहीनता । मृत्युतुल्यमभिन्यास सन्निपात च ल- क्षयेदिति १३ श्वासभेदाना लक्षणान्याह च भावमिश्र. । महोर्ध्वच्छिन्नत-

मकक्षुद्रभेदैस्तु पञ्चधा । भिद्यते स महाव्याधिः श्वास एको विशेषतः । उद्धू-यमानवातो यः शब्दवद्दुःखितो नरः । उच्चैः श्वसिति सन्नद्धो मत्तर्षभ इवा-निशं । प्रनष्टज्ञानविज्ञानस्तथा विभ्रांतलोचनः। विवृताक्ष्याननो बद्धमूत्रवर्चा वि-शीर्णवाक् । दीनः प्रश्वसितं चास्य दूराद्विज्ञायते भृशम् । महाश्वासोपसृष्टस्तु क्षिप्रमेव विपद्यते । अस्यार्थः । उद्धूयमानो वातः ऊर्ध्वं नीयमानो वातो य-स्य सः शब्दवत् सशब्दं यथा स्यात् । कीदृक् स शब्दः तद्बोधयितुमाह । म-त्तर्षभ इव उच्चैः श्वसितीत्यन्वयः । सन्नद्धः आनद्धः आनाहयुक्त इति यावत्। ज्ञानं शास्त्रं विज्ञानं तदर्थविनिश्चयः।विशीर्णवाक् स्खलितवचनः दीनः ग्लानः मारकश्चायं महाश्वासः।ऊर्ध्वश्वासमाह।ऊर्ध्वं श्वसिति योत्यर्थं नच प्रत्याहरत्य-धः।श्लेष्मावृतमुखस्रोतः क्रुद्धगंधवहार्दितः।ऊर्ध्वदृष्टिर्विपश्यंस्तु विभ्रांताक्ष इतस्त तः। संमुह्यन्वेदनार्तश्च शुष्कास्योरतिपीडितः ।ऊर्ध्वश्वासे प्रकुपिते ह्यधः श्वासो निरुध्यते । मुह्यतस्ताम्यतश्चोर्ध्वं श्वासस्तस्यैव हन्त्यसून् २। अस्यार्थः सर्वेषु श्वासेषु ऊर्ध्वं श्वसते अत्रात्यर्थमिति शेषः नच प्रत्याहरत्यधः न श्वासमधः करोति । श्लेष्मावृतेत्यादि । श्लेष्मणा आवृतं यन्मुखं स्रोतांसि च तैः क्रुद्धो यो गन्धवहस्तेनार्दितः विपश्यन् इतस्ततो विकृतं यथा स्यादेवं पश्यन् अधः श्वासो निरुध्यते श्वासो नाधः प्रवर्तत इति । ऊर्ध्वश्वासस्यारिष्टस्य लक्षणमाह। मुह्यतो मोहं प्राप्नुवतश्च ऊर्ध्वश्वासोसून् प्राणान् हन्ति । तस्यैवेति नतु मोह-ग्लानिरहितस्य । छिन्नश्वासमाह । यस्तु श्वसिति विच्छिन्नं सर्वप्राणेन पी-डितः । नच श्वसिति दुःखार्तो मर्मच्छेदरुजार्दितः । अनाहस्वेदमूर्च्छार्तो दह्य-मानेन बस्तिना । विप्लुताक्षः परिक्षीणः श्वसन् रक्तैकलोचनं । विचेताः परिशुष्कास्यो विवर्णः प्रलपन्नरः । छिन्नश्वासेन विच्छिन्नः स शीघ्रं विजहा-त्यसून् ३ । अस्यार्थः विच्छिन्नं सविच्छेदं सर्वप्राणेन यावद्बलेन मर्मच्छेदरु-जार्दितः हृदयशिरश्छेदवेदनयैव पीडितः दह्यमानेन बस्तिनोपलक्षितः विप्लु-ताक्षः अश्रुपूर्णनेत्रः विचेताः उद्विग्नचित्तः छिन्नश्वासेन विच्छिन्नः । यस्तु श्वसिति विच्छिन्नमित्यादिलक्षणयुक्तो यः । स नरश्छिन्नश्वासेन विच्छिन्नः

पीडितो बोद्धव्य इति मारकश्चायं विच्छिन्नश्वासः । तमकश्वासमाह । प्रतिलोमं यथा वायुः स्रोतांसि प्रतिपद्यते । ग्रीवां शिरश्च संगृह्य श्लेष्माणं समुदीर्य च । करोति पीनसं तेन कण्ठे घुर्घुरकं तथा । अतीव तीव्रवेगञ्च श्वास प्राणप्रपीडकं । प्रताम्यति स वेगेन त्रस्यते सन्निरुध्यते।प्रमोहं कासमानश्च स गच्छति मुहुर्मुहुः । श्लेष्मणा मुच्यमानेन भृश भवति दुःखितः । तस्यैव च विमोक्षान्ते मुहूर्तं लभते सुखम् । तस्यास्योद्ध्वंसते कण्ठः कृच्छ्राच्छक्नोति भाषितुम् । नचापि निद्रा लभते शयानः श्वासपीडितः । पार्श्वे तस्यावगृह्णाति शयानस्य समीरणः। आसीनो लभते सौख्यमुष्णं चैवाभिनन्दति। उच्छ्रिताक्षो ललाटेन स्विद्यता भृशमार्तिमान् । विशुष्कास्यो मुहुः श्वासो मुहुश्चैवावधम्यते । मेघाम्बुशीतप्राग्वातैः श्लेष्मलैश्च विवर्द्धते । सयाप्यस्तमकः श्वास साध्यो वा स्यान्नवोत्थितः । ४ । अस्यार्थः । संगृह्य व्यथया समुदीर्य वर्द्धयित्वा पीनसं नासास्रावं तेन श्लेष्मणा घुर्घुरकं घुर्घुरशब्द प्राणपीडक प्राणाधिष्ठानहृदयप्रपीडकं प्रताम्यति। तमसि प्रविशतीव। वेगेन श्वासवेगेन ।सन्निरुध्यते निश्चेष्टो भवतीति चरकः। सन्निरुध्यते श्वास इति जैय्यटः । श्लेष्मणा मुच्यमानेन सुख सुखमिव उद्ध्वंसते व्यथितो भवति । शयानः शय्यानिहिताङ्गः अवगृह्णाति पीडयति । उष्ण चैवाभिनंदतीत्यनेन तमको वातकफारब्ध इति बोद्धव्यम् । उच्छ्रिताक्षोऽशूनाक्षः ललाटेन स्विद्यता। उपलक्षितः अवधम्यते गजारूढस्येव सर्वगात्राणि चाल्यत इति । क्षुद्रश्वासमाह । रूक्षायासोद्भवः कोष्ठे क्षुद्रो वात उदीरयन् । क्षुद्रश्वासेन सोत्यर्थं दुःखेनाङ्गप्रवर्द्धकः । हिनस्ति नच गात्राणि नच दुःखो यथेतरे । नच भोजनपानाना निरुणद्ध्युचिता गतिम् । नेंद्रियाणा व्यथा चापि काचिदुत्पादयेद्रुजम् । स साध्य उक्तो बलिनः सर्वे वा व्यक्त लक्षणाः । ५ । अस्यार्थः।क्षुद्रः अल्पनिदानलिङ्गः । उदीरयन्नूर्ध्वं गच्छन् । दुःखः दुःखप्रदः । सर्वे महाश्वासादयोपीति ॥ ४६ ॥

भाषार्थ–कुटकी चिरायता पित्तपापडा गिलोह कचूर रासन जैतके बीज पीपल पोकरमूल त्रायती ( त्रायमाणा ) भटकटैया देवदारु सोंठ हरडे जवासा भारगी इन पंद्रह

औषधियोंका क्काथ दिनकी निद्रा रात्रिका जागरण प्यास और मुखका सूखना और शरीरकी दाह खांसी और पांचप्रकारका स्वास इन सब रोगोंको नष्टकरताहै ॥४६॥

सन्निपातस्य कालस्य कश्चिद्भेदो न विद्यते ॥
चिकित्सको जयेद्यस्तं तस्मात्कोस्ति प्रतापवान् ॥४७॥

कालेन सह सन्निपातस्याभेदं वदन् तज्जयकर्तुर्वैद्यस्य प्रशंसामाह सन्निपातस्येति द्वाभ्याम् । सन्निपातस्य त्रिदोषजनितव्याधेः कालमृत्योश्च कश्चित् कश्चन भेदो विशेषो न विद्यते नास्ति । यो वैद्यः तं सन्निपातं जयेत् पराङ्मुखीकुर्यात् तस्माद्भिषजोऽन्योऽपरः प्रतापवान् नाममात्रोच्चारणेन वैरी विदारणकर्ता कोस्ति न कोऽपीत्यर्थः । उक्तं च । मृत्युना सह योद्धव्यं सन्निपातचिकित्सुना । यस्तु तत्र भवेज्जेता स जेताऽऽमयसंकुलम् इति ॥ ४७ ॥

भाषार्थ—संनिपात और कालका कुछभी भेद नहीं है उस संनिपातको जो वैद्य जीतले उससे परे प्रतापी कोनहै अर्थात् कोई नहीं ॥ ४७ ॥

त्रिदोषाजगरग्रस्तं मोचयेद्यस्तु वैद्यराट् ॥
आत्मापि तस्मै दातव्यः किं पुनः कनकादयः ॥ ४८ ॥

त्रिदोषाजगरग्रस्तं त्रिदोषः सन्निपातः स एव अजगरः सर्पविशेषः तेन ग्रस्तं गिलितं नरं यो वैद्यराट् मोचयेत् तस्मै वैद्यराजे आत्मा देहोपि दातव्यः देयः कनकादयः पुनः किम् कनकादीनां पुनः का वार्तेति ॥ ४८ ॥

भाषार्थ—जो वैद्य संनिपातरूपी अजगरसे ग्रसेहुये पुरुषको छुटाले उसको अपना देहभी देदे सोना आदितो क्या चीज है ॥ ४८ ॥

यः शोफः श्रुतिमूलजः सुकठिनः शांते त्रिदोषज्वरे
रक्तं तत्र जलौकया परिहरेत्सर्पिः पिबेच्चातुरः ॥
रास्नानागरलुंगमूलहुतभुग्दार्व्यग्निमन्थैः समै-
र्लेपः स्यादरविंदवंद्यनयने शोथव्यथाध्वंसनः ॥ ४९ ॥

सन्निपातानंतरं कर्णमूले शोथो भवति तदुपायमाह । यः शोफ इति । सन्निपातज्वरे शांते निवृत्ते सति श्रुतिमूलजः कर्णपार्श्वोद्भवो

यः शोफः शोथः । कीदृशः शोफः । सुकठिनः अतिकठोरः । तत्र जलौकया रक्तपया रक्तं रुधिरं परिहरेत् निष्कासयेत् । जलौकयेति जातावेकवचनं आतुरो रोगी सर्पिः घृतं च पिबेत् । हे अरविंदवंद्यनयने अरविंदैर्महोत्पलैः वंद्ये वंदनीये नयने लोचने यस्याः तत्सबोधने शोथव्यथाध्वसनः शोफपीडा- विनाशनः रास्नादिषड्भिर्लेपः स्यात् । तत्र रास्ना नाकुली नागर शुंठी लुग- मूलं बीजपूरश्रम् हुतभुक् चित्रकः दार्वी दारुहरिद्रा अग्निमन्थो गणिकारि का एतैः षड्भिः समैः समानैर्लेपो विहितः । अत्राह वाग्भटः । सन्निपातज्व- रस्याते कर्णमूले सुदारुणः । शोफः संजायते तेन कश्चिदेव प्रमुच्यते । सुश्रुते तु विशेष उक्तः । ज्वरादितो वा ज्वरमध्यतो वा ज्वराततो वा श्रुतिमूलशोफः । क्रमादसाध्यः खलु कष्टसाध्यः सुखेन साध्यः कथितो मुनीन्द्रैरिति ॥ ४९ ॥

भाषार्थ–संनिपातज्वरके दूर होनेपर कानोंकी जडमें जो बडा कठीन शोथ(सूजन) होजाय तो उसमेंसे जोंक, लगाकर रुधिर निकसवायदे और रोगी घीको पींवे और हे कमलभी जिसके नेत्रोंको नमस्कार करें ऐसी स्त्री, रासन सोंठ विजोरा नीबूकी जड चीता दारुहलदी अरणी बराबर इन सबको लेकर लेप करे तो उसशोथकी पीडा नष्ट होजातीहै ॥ ४९ ॥

शूलात्पार्श्वशिरःस्थितात्कसनतः श्वासाच्चजीर्णज्वरा-
न्मुक्तः स्यात्पुरुषःपयःपरिपिबन्पंचांघ्रिणा पाचितम् ॥
एकासौ गुडपिप्पली विजयते जीर्णज्वराजीर्णरुक्-
क्षुन्मांद्यारुचिपांडुजंतुकसनश्वासान् किमन्यौषधैः ५० ॥

अथ शिरःपार्श्वस्थितशूलकासश्वासजीर्णज्वराणां निवृत्तेरुपायमाह शूला- दिति । पुरुषो मनुष्यः पञ्चाङ्घ्रिणा शालपर्ण्यादिलघुपंचमूलेन पाचितं पक्वपयो जलम् परिपिबन् सम्यक् पानं कुर्वन् पार्श्वशिरःस्थितात् मस्तकातकस्थात् शूलात् पीडायाः शंखशूलादित्यर्थः कसनतः कासात् श्वासात् श्वासरोगात् च पुनः जीर्णज्वरात् त्रिसप्ताहातीतान्महागदाच्च मुक्तः स्यात् रहितो भवति।अपि च हे अरविंदवंद्यनयने असौ गुडपिप्पली गुडेन शिशुप्रियेण युक्ता पिप्पली

कृष्णा एका एकाकिनी जीर्णज्वराजीर्णरुक्क्षुन्मांद्यारुचिपांडुजंतुकसनश्वा-
सान् यदि विजयते जयति तर्ह्यन्यौषधैः गुडपिप्पल्यतिरिक्तैर्भेषजैः किम् न
किमपि फलमित्यर्थः। तत्र पिप्पल्यपेक्षया गुडो द्विगुणो योज्य इति मर्यादा ।
जीर्णज्वरमाह । त्रिसप्ताहे व्यतीते तु ज्वरो यस्तनुतां गतः। प्लीहाग्निमांद्यं कु-
रुते स जीर्णज्वर उच्यते इति ।अजीर्णरुक् अपाकरोगः क्षुन्मांद्यं क्षुधो बुभुक्षा-
याः मंदत्वम् अरुचिः अन्नात् अन्नाभिलाषे सत्यप्यभ्यवहारासामर्थ्यरूपो रो-
गः । पाण्डुः त्वङ्नेत्रादीनां पीतत्वजनको रोगविशेषः जंतुः उदरे कृमिजनको
रोगः । कसनं कासः । श्वासः श्वासरोगः ॥ ५० ॥

भाषार्थ–शालपर्णी,पृष्ठपर्णी दोनों कटेहली, और गोखरू, इनसे पकायेहुये ज-
लको मनुष्य पीवें तो कनपटीयोंका शूल, और खांसी, स्वास, जीर्णज्वर, ये सब
उसके निवृत्त होते हैं, और गुड है मिला जिसमें ऐसी यह अकेली पीपलही पु-
रानाज्वर अजीर्ण रोग अग्निकी मंदता अन्नमें अरुचि, पांडुरोग, उदरके कृमि,
खांसी स्वास इन सबको जीते है अर्थात् नष्ट करती है, अन्य औषधियोंसे क्या
प्रयोजन है ॥ ५० ॥

**जीर्णज्वरं कफकृतं कणया समेतश्छिन्नोद्भवोद्भवकषा-
यक एष हन्ति ॥ रामो दशास्यमिव राम इव प्रलंबं रा-
मो यथा समरमूर्द्धनि कार्तवीर्यम् ॥ ५१ ॥**

अथ कफकृते जीर्णज्वरे कषायमाह । जीर्णज्वरमिति । कणया पिप्पली-
चूर्णेन समेतः संयुक्तः एषः पुरोवर्ती छिन्नोद्भवोद्भवकषायकः छिन्नोद्भवाया
गुडुच्या उद्भवो जन्म यस्य एतादृशः कषायकः । कषाय एव कषायकः ।
क्वाथः कफकृतं श्लेष्मकृतम् जीर्णज्वरं ज्वरागमदिनं परित्यज्य त्रिसप्ताहव्य-
तीतं ज्वरं हन्ति हिनस्तीत्यर्थः । अत्र दृष्टांतः। कः कमिव।रामो दाशरथिः द-
शास्यं रावणमिव । पुनः रामो हलायुधः प्रलंबमिव प्रलम्बासुरं यथा । पुनश्च
समरमूर्द्धनि सङ्ग्राममुखे रामो जामदग्न्यः कार्तवीर्यं यथा हैहयमिवेति॥५१॥

भाषार्थ–पीपलका चूर्ण बुरका है जिसपर ऐसा गिलोहका क्वाथ कफसे पैदा
हुये जीर्णज्वरको इसप्रकार नष्ट करता है जैसे संग्राममें रामचंद्रने रावणको
प्रलंबासुरको परशुरामजीने सहस्रबाहु (अर्जुन)को नष्ट किया ॥५१॥

पञ्चमूलीकषायस्य सकृष्णस्य निषेवणात् ॥
जीर्णज्वरः कफकृतो विदधाति पलायनम् ॥ ५२ ॥

पुनरन्यमाह । पञ्चमूलीति । सकृष्णस्य पिप्पलीचूर्णयुक्तस्य पचमूलीकषायस्य लघुपञ्चमूल्याः क्वाथस्य निषेवणात् तत्पानाभ्यासतः कफकृतः श्लेष्मप्रकोपाज्जातः जीर्णज्वरः पलायनम् अपयानं विदधाति रचयति पलायतीत्यर्थः । उक्तं च । पिप्पलीचूर्णसंयुक्तः क्वाथश्छिन्नरुहोद्भवः । जीर्णज्वरकफध्वंसी पंचमूलीकृतोऽथवा।कासजीर्णारुचिश्वासहृत्पाण्डुक्रिमिरोगनुदिति॥५२॥

भाषार्थ–पीपल मिली है जिसमें ऐसे-शालपर्णी, पृष्टपर्णी, दीनों कटेहली, और गोखरू इन पचमूलोंके क्वाथसे कफसे पैदाहुआ जीर्णज्वर भागजाताहै ॥ ५२ ॥

शठी शुण्ठी रेणुः सुरतरुरनन्ता च बृहती वनस्तिक्ता तिक्तं खलु नवभिरेभिर्विरचितः ॥ कषायः पीतोऽयं मधुकणविमिश्रः शमयति त्रिदोषं निश्शेषं विषममपि जीर्णज्वरमपि ॥ ५३ ॥

अथ सन्निपातविषमजीर्णज्वराणां शान्त्युपायमाह । शठीशुण्ठीत्यादिना । शठ्यादिनवभिर्द्रव्यैर्विरचितो निष्पादितः कषायः क्वाथः अय मधुकणाविमिश्रः मधु च कणा च ताभ्यां युक्तः पीतः सन् खलु निश्चयेन निःशेषं त्रिदोषमखिलं सन्निपातं विषमज्वरं चातुर्थिकादिज्वरं जीर्णज्वरमपि शमयतीत्यन्वयः। कषाये सिद्धे पूते च मधुपिप्पल्यौ पश्चात् प्रक्षेप्तव्ये। तत्र शठी गन्धपलाशी । शुंठी विश्वभेषजम् । रेणुः पर्पटः सुरतरुर्देवदारुः । अनन्ता दुरालभा । बृहती कण्टकारिका । घनो मुस्ता । तिक्ता कुटकी । तिक्तो भूनिम्बः । अथ विषमज्वरसामान्यलक्षणमाह । यः स्यादनियतात्कालाच्छीतोष्णाभ्या तथैव च । वेगतश्चापि विषमो ज्वरश्च विषमो मतः । तेषा भेदानाह। संततः सततोऽन्येद्युस्तृतीयकचतुर्थकौ । तेषा लक्षणान्यप्याह। सप्ताहं वा दशाहं वा द्वादशाहमथापि वा। सतत्या यो विसर्गी स्यात्संततः स निगद्यते । अहोरात्रे सततको

द्वौ कालावनुवर्तते । अन्येद्युष्कस्त्वहोरात्रादेककालम्प्रवर्तते । तृतीयकस्तृतीयेह्नि चतुर्थेह्नि चतुर्थकः ॥ ५३ ॥

भाषार्थ-कचूर सोंठ पित्तपापडा देवदारु जवासा भटकटैया मोथा कुटकी चिरायता इनके क्वाथको सहत और पीपलका चूर्ण मिलाकर पीवै तो सब प्रकारके सन्निपात विषमज्वर और जीर्णज्वरभी नष्ट हो जाते है ॥ ५३ ॥

वासापटोलत्रिफलाद्राक्षाशम्याकनिम्बजः ॥
समधुःससितः क्वाथो हन्यादैकाहिकं ज्वरम् ॥ ५४ ॥

अथैकाहिकज्वरस्यौषधमाह । वासेति । वासाद्यष्टानां क्वाथः कषायः समधुः ससितश्च माक्षिकशर्कराभ्यां युक्तः पीतः सन् ऐकाहिकं दिनेदिने एककाले यः समायातो स ज्वरः ऐकाहिकस्तं हन्यात् नाशयेत् । क्वाथे सिद्धे पूते तत्र मधुसिते प्रक्षेप्तव्ये । तत्र वासा आटरूषः । पटोलः पलवलः । त्रिफला पथ्याविभीतधात्रीणां फलैः स्यात्त्रिफला समैरित्युक्ता । त्रयाणां समाहारः । अजादित्वात् टाप् द्विगोरिति च न ङीप् । द्राक्षा गोस्तनी । शम्याको व्याधिघातः । निम्बः सर्वतोभद्रः ॥ ५४ ॥

भाषार्थ-वासा परवल हरड बहेडा आमला दाख और अमलतास नींबकी छाल इन आठ औषधियोंके क्वाथमें सहत और मिश्री मिलाकर पीवै तो ऐकाहिक ( जो दिनमें एकवार चढै ) ज्वर नष्ट हो जाताहै ॥ ५४ ॥

तन्वंगि गंगोत्तरतीरभूमौ ममार हा कोप्यसुतस्तपस्वी ॥
जलांजलिं तस्य कृते ददातु सैकाहिकः स्याद्यदि तेनुजन्मा ॥ ५५ ॥

अथात्र तर्पणमाह । तन्वङ्गीति । हे तन्वङ्गि हे कृशावयवे । तनूनि कृशान्यङ्गानि यस्याः । कोऽपि अज्ञातनामजात्यादिः असुतो ऽविद्यमानपुत्रः तपस्वी तापसः गंगोत्तरतीरभूमौ भागीरथ्याः वामकूलभूमिकायां हा इति शोके ममार मृतोऽभूत् । सैकाहिकः एकाहिकेन सह वर्तमानः पुमान् यदि ते तव अनजन्मा कनीयान् भ्राता स्यात् तर्हि तस्य कृते अपुत्रतापसार्थं । कृत्यानां

कर्तरि चेति षष्ठी भवति । जलांजलिं ददातु । यद्वा स प्रसिद्धः कष्टत्वात् तथानुगतत्वात् विषमक्रियात्वाच्च स एकाहिको ज्वरः यदि ते तव स्यात् तर्हि तस्य ज्वरस्य कृते तवाऽनुजन्मा कनिष्ठभ्राता जलाञ्जलिं ददातु इति । स एकाहिकभिन्नच्छेदत्वादर्थः गङ्गोत्तरभूमौ योऽपुत्रतापसो मृतः स तृप्यतामिद सतिलं जल तस्मै स्वधा नम इति वाक्येनाश्वत्थपत्रहस्तस्तर्पयेत् । पश्चात् अङ्गवङ्गकलिङ्गेषु सौराष्ट्रमगधेषु च । वाराणस्यां च यद्वृत्तं तदेकाहिकसंस्मरेत्ययं श्लोकः पठनीयः ॥ ५५ ॥

भा०-हेतन्वगि गगाजीके तटकी उत्तरभूमीपर कोई पुत्रहीन तपस्वी मराथा उसतपस्वीको वह ऐकाहिकज्वरवाला जलकी अजलीदो अर्थात् उसकेनिमित्त तर्प्पण करो जो तेरा छोटा भाई होय अथवा जो तुझे ( स्त्री ) हीं ऐकाहिकज्वर होयतो तेरा छोटा भाई तर्पणकरो ॥ ५५ ॥

सशिशिरःसघनःसमहौषधःसनलदःसकणःसपयोधरः॥ समधुशर्कर एष कषायको जयति बालमृगाक्षि तृतीयकम् ॥ ५६ ॥

अथ तृतीयकज्वरे पचनमाह।सशिशिर इति । हे बालमृगाक्षि बालमृगस्य हरिणशिशोरक्षिणी इवाऽस्थिरे अक्षिणी नेत्रे यस्यास्तत्सबोधने एष पुरोवर्ती कषायः काथः समधुशर्करः माक्षिकेण सितया च सहितः तृतीयक ज्वरविशेषकं तृतीयेऽहनि भवः। कालप्रयोजनाद्रोग इति कन् । जयति नाशयति । कथंभूतः शिशिर चंदन घनं धन्याक महौष ं शुंठी नलदमुशीर कणा मगधोद्भवा पयोधरो मुस्ता एतैः सपदपूर्वैः सह वर्तमानः तस्मिन् सिद्धे पूते काथे मधुसितयोः प्रक्षेपः कार्यः। उक्तं च चक्रपाणिदत्तेन । महौषधामृतामुस्तचंदनोशीरधान्यकं. । काथस्तृतीयक हंति शर्करामधुयोजितः इति ॥ ५६ ॥

भाषार्थ-हे बालमृगके नेत्रके समानचचळ नेत्रवाळी स्त्री ळाळचदन धनिया सोंठ खस पीपळ मोथा इनके कायको सहत और मिश्रीमिळाकर पीवै तो तृतीयक ( तिजारी ) ज्वरको जीतताहै ॥ ५६ ॥

चातुर्थिको नश्यति रामठस्य घृतेन जीर्णेन युतस्य

न स्यात् ॥ लीलावतीनां नवयौवनानां मुखावलो-
कादिव साधुभावः ॥ ५७ ॥

अथ चातुर्थिकज्वरे नस्यमाह । चातुर्थिक इति । हे बालमृगाक्षि जीर्णेन पुराणेन घृतेन हविषा युतस्य रामठस्य बाल्हीकस्य नस्यात् नास्ताव् नासिकायां प्रदानादिति यावत् । नासिकायै हितं । शरीरावयवाद्यत् । नस्नासिकाया यत्।तस्क्षुद्रेष्विति नासिकाया नसादेशः।तस्माच्चातुर्थिको ज्वरः चतुर्थेऽह्नि भवः महागदः दिनद्वयं त्वतिक्रम्य यः स्यात् स हि चातुर्थिक इत्युक्तेः चतुर्थकश्चतुर्थेह्नीत्यत्र त्वागमदिनं गृहीत्वा व्याख्येयं नश्यति विलयं प्राप्नोति । कस्मात् क इव नवयौवनानां अतिक्रांतमुग्धभावानां युवतीनां पुनश्च लीलावतीनां क्रीडायुक्तानां विलासवतीनां वा शृंगारचेष्टाविशिष्टानां वा तादृशीनां स्त्रीणां मुखावलोकात् मुखस्य वदनस्य अवलोकादवलोकनात् दर्शनात् साधुभाव इव साधोः सज्जनस्य कुलजस्य भावः स्वभावो यथा नश्यति तथा। लीलाकेलिर्विलासश्च शृंगारभावजा क्रियेति हेमचंद्रः ॥ ५७ ॥

भाषार्थ-पुराना घी मिलाहै जिसमें ऐसे हिंगके सूंघनेसे चातुर्थिक ( चोत्थईया ) इस प्रकार नष्ट होताहै जैसे क्रीडाकरनेवाली नवयौवनस्त्रियोंके मुखदेखनेसे साधुजनोंका स्वभाव ( सज्जनता ) नष्ट होजाताहै ॥ ५७ ॥

अखंडितशरत्कालकलानिधिसमानने ॥
चातुर्थिकहरं नस्यं मुनिद्रुमदलांबुना ॥ ५८ ॥

नस्यांतरमाह । अखंडितेति । हे अखंडितशरत्कालकलानिधिसमानने अखंडितः सकलो यः शरत्काले वर्षावसानसमये कलानिधिश्चंद्रः तेन समानमाननं मुखं यस्यास्तत्संबुद्धौ मुनिद्रुमदलांबुना अगस्तिवृक्षपत्रस्वरसेन नस्यं कृतं तन्नस्यं चातुर्थिकहरं चातुर्थिकज्वरस्य हंतृ भवति ॥ ५८ ॥

भाषार्थ-हे शरत्कालके पूर्ण चंद्रमाके समान मुखवाली स्त्री अगस्तवृक्षके पत्तोंका स्वाभाविक रस सूंघनेसे चोत्थईयाको नष्टकरताहै ॥ ५८ ॥

सुरदारुशिवाशिवास्थिरा वृषविश्वैः कथितः कषायकः ॥

मधुना सितया समन्वितःपरिपीतःशमयेच्चतुर्थकम्५९।

अथ चतुर्थकज्वरे पाचनमाह । सुरदार्वित्यादिना । सुरदार्वादिषड्भिर्यः कषायः क्वाथः कथितोऽभिहितः स मधुना कुसुमोद्भवेन सितया शर्करया च समन्वितः सयुक्तः येन चतुर्थकज्वरिणा पीतः कृतपानः तस्य चतुर्थक चतुर्थेऽह्नि भवं ज्वरं शमयेत् शान्तिं प्रापयेत् । तत्र सुरदारुः देवदारुः शिवा पंचरेखा हरीतकी यद्वा स्वर्णवर्णा जीवनी हरीतकी शिवा आमलकी स्थिरा शालपर्णी वृषो वासक. विश्वं शुंठी । उक्तं च । सुरदारुशिवावृषविश्वशिवा स्थिरवारिशृतं सितया मधुना । अपहति चतुर्थदिनप्रभवं ज्वरमाशु कुभूत्यमिवाधिपतिमिति । तथाहि चक्रपाणिदत्तः । वासाधात्रीस्थिरादारुपथ्यानागरसाधितः। सितामधुयुतः क्वाथश्चतुर्थकनिवारणे इति वा । तथा वंगसेने चोक्तम् । स्थिरासामलकीदारुशिवावृषमहौषधैः । शृतं शीतं जलं दद्यात् सितामधुसमन्वितम् । चातुर्थिके ज्वरे तीव्रे मन्दे चाप्यथ पावके इति ॥ ५९ ॥

भाषार्थ—देवदारु हरडे आवला शालपर्णी और सूंठ इन छः औषधियोंके क्वाथमे सहत और मिश्री मिलाकर पीवैतो चातुर्थिक ज्वर शांत होताहै ॥ ५९ ॥

तक्रं त्र्यूषणचूर्णयुक्तमथवा मद्यं हसंती सती
तद्वत्कंबलरल्लकानथ कुथां शीतातुरःशीलयेत् ॥
आलिंगेदथवा सुदृढतरं तारुण्यमद्यालसाः
काश्मीरागुरुलिप्तपीवरकुचाः कामं कुरंगीदृशः ॥ ६० ॥

अथ शीतज्वरे भेषजमाह तक्रमित्यादिना । शीतातुरः शीतज्वरी त्र्यूषणचूर्णयुक्तं । त्रयाणामूषणानां विश्वोपकुल्यामरीचानां समाहारःत्र्यूषणं तस्य चूर्णेन रजसा युक्तं मिलितमेतादृशं तक्रं चतुर्थांशजलसंयुक्तं दधि शीलयेत् सेवेत । यतः । तक्रं रुचिकरं वह्निदीपनं पाचनं परं। उदरे ये गदास्तेषां नाशनं तृप्तिकारकं । त्र्यूषणं दीपनं हंति श्वासकासत्वगामयान् । आलिंगेयुरमुं हिमावधिदृढं तारुण्यदर्पालसाः इति तृतीयपादे वा पाठः । अथवा पक्षांतरे।

मद्यं हलिप्रियां शीलयेत् यतः । मद्यं सर्वं भवेदुष्णं पित्तकृद्वातनाशनम् । भेदनं शीघ्रपाकं च रूक्षं कफहरं परम् । अम्लं च दीपनं रुच्यं पाचनं वासकारि च। तीक्ष्णं सूक्ष्मं च विशदं व्यवायि च विकाशि च । अथवा सतीं शोभनां हसंतीमङ्गारधानीं शीलयेत् । यतः । अग्निर्वायुकफस्तंभशीतकंपविनाशनः । आमाशयकरश्चापि रक्तपित्तप्रकोपनः ।तद्वत्तथैव कम्बलरल्लकान् सेवेत ।तत्र कंबलो मेषादिलोमनिर्मितः रल्लकः पार्वतीयो नैपालकंबलः । कुतपाभिधश्छागलोमरचित इति विभेदः । यतः कंबलवंतं न बाधतेशीतं । अथ तद्वत् कुथां कंथां सेवेत । यत आहुः । भिक्षा प्राणस्य रक्षार्थं कंथा शीतनिवारिणीति । अथ वा। सर्वोत्कृष्टपक्षे तारुण्यमद्यालसाः तारुण्यं यौवनं तदेव मद्यं मत्ततोत्पादकं तेन तारुण्यमद्येन अलसाः क्रियामंदाः आलस्ययुक्ताः पुनः काश्मीरागुरुलिप्तपीवरकुचाः काश्मीरं कुंकुमं अगरु वंशिकं ताभ्यां लिप्तौ दिग्धौ पीवरौ स्थूलौ कुचौ स्तनौ यासाम् । एवंभूताः कुरंगीदृशः कुरंग्याः एण्याः दृशौ नेत्रे इव दृशौ यासां ताः नारीः दृढतरं गाढाऽलिंगनं यथा भवति तथा कामं यथेष्टं मुहुः पुनः पुनः आलिंगेत् उपगूहयेत् । यतः उक्तं । कूपोदकं वटच्छाया नारीणां सुपयोधरौ । शीतकाले भवंत्युष्णा उष्णकाले च शीतला इति ॥ ६० ॥

भाषार्थ–शीतज्वरसे दुःखी मनुष्यको अधिक जाडा लगै तो सोंठ मिरच पीपल मिलाकर मठेको पीवै अथवा मदिराका सेवन करे अथवा जिसमें धूआ न होय ऐसी अग्निसे भरीहुई अगींठीकी आगिसे तपै और कंवल अथवा नैपालका कंबल अथवा रुईकी सोर इनको ओढे अथवा उन मृगनयनीयोंका वारंवार दृढ ( खूब ) आलिंगन ( स्पर्श ) करै जिनके देहमें यौवनके मदका आलस्य होय और जिनकी बडीबडी कुचाओंपर केशर और अगरका लेप होरहा होय ॥ ६० ॥

शक्राह्वदद्रुघ्नवृषामृतानांनिर्गुंडिकाभृंगमहौषधानाम् ॥
क्षुद्रायवानीसहितःकषायःशीतज्वरारण्यहिरण्यरेताः६१

अन्यदपि शीतज्वरभेषजमाह । शक्राह्वेत्यादिना । शक्रादिभिर्नवभिर्द्रव्यैः रचितः कषायः शीतज्वर एव अरण्यं विपिनं तस्य हिरण्यरेताः अग्निः भ- । तत्र शक्राह्वः इन्द्रयवः दद्रुघ्नः चक्रमर्दकः वृषो वासकः अमृता

गुडूची निर्गुण्डिका सिन्दुकः भृङ्गो मार्कवः महोषधं शुण्ठी क्षुद्रा निदिग्धिका यवानी वातारिः ॥ ६१ ॥

भाषार्थ-इद्रजो पुवांडके बीज अडूसा गिलोद सम्हालु भृगराज सोंठ भटकटैया अजमायन इन नव औषधियोका काथ शीतज्वररूपी वनके लिये अग्निके तुल्य है अर्थात् शीतज्वरको नष्ट करताहै ॥ ६१ ॥

वाङ्माधुर्यजितामृतेऽमृतलता लक्ष्मीशिवाभे शिवा
विश्वं विश्ववरे घनो घनकुचे सिंही च सिंहोदरि॥
एभिः पंचभिरौषधैर्मधुकणामिश्रः कषायः कृतःपीत
श्चेद्विषमज्वरःकिमु तदा तन्वंगि न क्षीयते ॥ ६२ ॥

अथानेकश्लोकैः विषमज्वरस्य भेषजान्याह वाङ्माधुर्येत्यादिना। अत्र पञ्चभिः सबोधनपदैः पञ्चौषधाना योग हे वाङ्माधुर्यजितामृते वाचो वाण्याः माधुर्यं रमणीयकम् तेन जित पराभूतममृतं पीयूष यया सा तत्सबोधने। अमृतलता वत्सादनी। हे लक्ष्मीशिवाभे लक्ष्मीश्च शिवा च ते तयोः आभेव आभा शोभा यस्याः सा तत्संबोधने। शिवा आमलकी। पुनः हे विश्ववरे विश्वाभ्यः सर्वाभ्यो वनिताभ्यः वरे श्रेष्ठे। विश्वं शुठी। पुनः हे घनकुचे घनौ निरतरौ कुचौ स्तनौ यस्याः तत्सबोधने। घनो मुस्तकः। पुनः हे सिंहोदरि सिंहवत् उदरं यस्याः तत्सबोधने। सिंही कंटकारी।एभिरुक्तैः पञ्चभिः पञ्चसरव्याकैः औषधैः अगदैः कृतो निष्पादितः कषायः काथः मधुकणामिश्रः माक्षिकसहितेन पिप्पलीचूर्णेन मिश्रः सपृक्तः चेत् यदि पीतः कृतपानः तदा तर्हि हे तन्वंगि तनूनि सूक्ष्माणि कृशान्यङ्गानि यस्यास्तत्सम्बोधने किमु विचारय त्वम्। यद्वा त्वं संभावय क्रियाया योग्यता निश्चिनु। किमु सम्भावनाया स्याद्विचारे चापि दृश्यत इति मेदिनीकार.। विषमज्वर.। सततादिभेद भिन्नो ज्वरविशेषः न क्षीयते क्षामो न भवति अपि तु भवत्येवेति शिरश्चालनेनार्थ.। यथाह भावमिश्र स्वप्रकाशे। मुस्तामलकगुडूचीविश्वौषधकंटकारिकाकाथ.। पीतः सकणाचूर्ण. समधुर्विषमज्वरं हन्तीति। ज्वराश्च विषमाः

सर्वे सन्निपातसमुद्भवाः । अथोल्बणस्य दोषस्य तेषु कार्यं चिकित्सितम् । विषमेष्वथ कर्तव्यमूर्ध्वं बाधश्च शोधनम् । स्निग्धोष्णैरन्नपानैश्च शमयेद्विषमज्वरम् । अथास्य भेदाः । संततः सततोन्येद्युस्तृतीयकचतुर्थकाविति ॥ ६२॥

भाषार्थ–हे वाणीकी मधुरतासे अमृतको जीतनेवाली हे लक्ष्मी और पार्वतीके समान कांतिवाली हे संपूर्ण स्त्रियोंमें श्रेष्ठ हे सघन कुचोंवाली हे सिंहके समान उदरवाली स्त्री गिलोह आंवला सोंठ नागरमोथा और कटेहली इन पांच औषधियोंके क्वाथमें सहत और पीपलाचूर्ण मिलाकर पीवै तो क्या हे तन्वङ्गी ( पतली ) विषमज्वर नष्ट नहीं होता अपि तु अवश्य होता है ॥ ६२ ॥

सनागरायाःसपयोधरायाः ससिंहिकायाः सगुडूचिकायाः ॥ धात्र्याःकषायो मधुना विमिश्रः कणाविमिश्रो विषमज्वरघ्नः ॥ ६३ ॥

सनागरयाइति । अयं श्लोकः पूर्वश्लोकार्थस्पष्टीकरणाय ॥ ६३ ॥

भाषार्थ–सोंठ मोथा कटेहली गिलोह आमला इनका क्वाथ मधु और पीपल मिलानेसे विषमज्वरको नष्ट करताहै ॥ ६३ ॥

नान्यानि मान्यानि किमौषधानि परंतु कांते न रसोनकल्कात्॥तैलेन युक्तादपरः प्रयोगो महासमीरे विषमज्वरेऽपि ॥ ६४॥

नान्यानीति । हे कांते हे सर्वांगसुंदरि । सर्वांगसुंदरी नारी कांता काव्येषु कथ्यते । काम्यते स्म । कमेर्णिङंतात् भावे क्तः । विषमज्वरविषये अन्यानि कथ्यमानाद्भेषजादितराणि औषधानि भेषजानि । किमिति प्रश्ने। न मान्यानि न मंतव्यानि किम् अपि तु मान्यान्येव । परंतु किं तु महासमीरे आर्दितरोगे विषमज्वरेपि संततादौ च तिलेन तिलतैलेन युक्तात् संयुक्तात् रसोनकल्कात् पिष्टात् लशुनात् अपरोऽन्यः प्रयोगः उत्कृष्टोपायो न नास्तीत्यर्थः । यथाह भावमिश्रः । तिलतैललवणयुक्तः कल्को लशुनस्य सेवितः प्रातः । विषमज्वरमपहरते वातव्याधीनशेषांश्चेति ॥ ६४ ॥

भाषार्थ–हेकांते अर्थात् सर्वाङ्गसुंदरी अन्य औषधी क्या मानने योग्य नहीहै अ-

पि तु मानने योग्यहै परंतु महान्वातव्याधी और विषमज्वरमे तेल मिलाहै जिसमें ऐसे लहसनके चूर्णसे दूसरा प्रयोग नहींहै अर्थात् उक्तलहसनके लेपसे आराम होजाताहै ॥ ६४ ॥

भवति विषमहंत्री चेतकी क्षौद्रयुक्ता भवति विषमहंत्री पिप्पलीवर्द्धमाना॥विषमरुजमजाजी हंति युक्ता गुडे न प्रशमयति तथोग्रा सेव्यमाना गुडेन ॥ ६५ ॥

भवतीति । क्षौद्रेण कपिलवर्णेन मधुना युक्ता मिश्रिता चेतकी विषमस्य संतताद्विज्वरस्य नाशकर्त्री भवति । पुनश्च वर्द्धमाना पिप्पली विषमहंत्री भवति । पिप्पल्याः वर्द्धमानत्वं यथा । त्रिवृद्ध्या पचवृद्ध्या वा सप्तवृद्ध्याथवा कणा । पिबेदष्टादशादिन तथा चैवापकर्षयेत् । षट्त्रिंशद्भिर्दिनैः सिद्ध पिप्पलीवर्द्धमानकमिति । पुनश्च गुडेन युक्तः अजाजी जीरकः विषमज्वर हंति । तथा तद्वत् गुडेन सहसेव्यमाना सेविता उग्रा यवानी विषमज्वरं शमयति तस्योपशांतिं करोति । अत्र क्रमेण योगचतुष्टयमुक्तम् ॥ ६५ ॥

भाषार्थ—सहत मिलाहै जिसमे ऐसी हरडे अथवा वर्द्धमान पीपल अर्थात् तीन पाच वा सात प्रतिदिन बढाकर अठारह दिनतक दूधमे डालकर पीवै और इसी प्रकार अठारह दिनतक घटावे यह छतीस दिनमें वर्द्धमानपिप्पली योग होताहै अथवा गुड मिलाहै जिसमें ऐसा जीरा वा अजमायन विषमज्वरको नष्टकरतीहै ॥ ६५ ॥

स्वकांतिजितरोचने चपललोचने मालतीप्रसूननिकरस्फुरत्कबरि पंचवक्त्रोदरि ॥ पटोलकटुरोहिणीमधुकचेतकीमुस्तकाप्रकल्पितकषायको विषममाशु जेजीयते ॥ ६६ ॥

स्वकांतिजितेति । हे स्वकांतिजितरोचने स्वकीयया कांत्या शोभया जिता पराजिता रोचना रक्तकल्हारं गोपित्तं वा यया सा तत्संबोधने । रोचना रक्तकल्हारे गोपित्तवरयोषितोः । रोचनः कूटशाल्मल्यां पुंसि स्याद्रोचके त्रिष्विति मेदिनीकारः । हे चपललोचने चाले तरले लोचने नेत्रे यस्याः सा तत्संबोधने । पुनः किंभूते हेमालतीप्रसूननिकरस्फुरत्कबरि मालतीप्रसूनाना

सुमनाकुसुमानां प्रकरो निकरः तेन स्फुरंती प्रकाशमाना सकंपना वा कबरी केशानां सन्निवेशो यस्याः सा तत्संबोधने । पुनः हेपंचवक्रोदरि पंचवक्त्रःसिंहः तद्वदुदरं यस्यास्तत्संबोधने।पटोलः तिक्तकः कटुः रोहिणी कटुका मधुकं मधुयष्टी चेतकी त्रिरेखा हरीतकी मुस्तको मुस्ता एतैः पंचभिः प्रकल्पितो रचितः कषायको निर्यासः आशु क्षिप्रं विषमं संततादिभेदभिन्नं ज्वरविशेषं जेजीयते अतिशयेन जयति ॥ ६६ ॥

भाषार्थ–हे अपनी कांतिसे गोरोचनको जीतनेवाली हे चंचलनेत्रवाली हे मालतीके पुष्पोंके समूहसे प्रकाशमान केशोंकी कबरी ( मींडी ) वाली हे सिंहोदरी स्त्रि पलवल कुटकी मुलहटी हरडै नागरमोथा इनपांचोंका क्वाथ विषमज्वरको शीघ्रही जीतताहै।६६।

**किमु भ्रमयसि प्रिये कुवलयं कराभ्यामिदं मदीयवचनं सुधारससमं समाकर्णय ॥ पुराणविषमज्वरे कुलकनिंबसिंहींद्रजाऽमृताघनकषायको मधुयुतो वरीवर्तते ॥ ६७ ॥**

किमु भ्रमयसीति । हे प्रिये प्रिया भार्या तत्संबोधने कराभ्यां कुरुत इति करौ हस्तौ ताभ्यां इदं कुवलयं कमलकुमुदादिसामान्यं जलजपुष्पं कमलमिति यावत् किमु भ्रमयसि किमर्थं त्वयैतत् भ्राम्यते अनेन ज्वरव्याकुलतां विहाय चित्तं सावधानं कुर्विति सूचितम् । तर्हि किं करोमीति चेत्तत्राह । सुधारससमं अमृतास्वादतुल्यं मदीयवचनं ममोक्तिं समाकर्णय त्वं चित्तं स्थिरीकृत्य शृणु । किं तत् तदाह पुराणेति । पुराणविषमज्वरे पुरातने विषमज्वरे कुलकादिषण्णां कषायः क्वाथो मधुयुतो माक्षिकसंयुक्तो वरीवर्तते अस्ति अतः किं भयं तत्र कुलकं पटोलस्य फलम् निंबः निंबस्य त्वक् सिंही कंटकारिका इंद्रजमिंद्रयवः अमृता गुडूची घनो मेघनामा ॥ ६७ ॥

भाषार्थ–हे प्यारी हाथोंसे इसकमलको क्यौं भ्रमाती है अमृतके समान मेरे वचनको सुन कि पुराने विषमज्वरमें पलवल नीमकी छाल कटहली इंद्रजव गिलोह नागरमोथा इन छः ६ ओषधियोंका क्वाथ जिसमें सहत मिलाहो वर्तता है अर्थात् वि- . . नष्ट करताहै ॥ ६७ ॥

योभजेत्समधुश्यामां हे हेमकलशस्तनि ॥
विषमेषु व्यथास्तस्य न भवंति कदाचन ॥ ६८ ॥

योभजेदिति । हे हेमकलशस्तनि हेम्नः कनकस्य कलशौ घटौ ताविव स्तनौ वक्षोजौ यस्याः । स्वांगाच्चोपसर्जनादसंयोगोपधादिति पक्षे ङीप् । तत्संबोधने । यो विषमज्वरी समधुश्यामा मधुना माक्षिकेण सह श्यामां त्रिवृतां भजेत् सेवेत तस्य विषमेषु संततादिज्वरेषु व्यथाः दुःखानि कदाचन कस्मिन्नपि काले न भवति कदाचिदपि न भवंतीत्यर्थः । अथवा यः पुमान् समधुश्यामा मधुना सह श्यामा पिप्पलीं भजेत् । तस्य विषमेषु ज्वरेषु व्यथाः कदाचन न भवंति । यद्वा यः कामी समधुश्यामा मधुना मद्येन सह श्यामां षोडशवार्षिकीं भार्यां भजेत् तस्य विषमकामस्य पीडाः न भवतीत्यर्थः । मधु-मद्ये पुष्परसे क्षौद्र इत्यमरः। श्यामा षोडशवार्षिकीति प्रसिद्धं । अस्याः लक्षणमाह । स्निग्धनखनयनदशना, निरनुशयामानिनीस्थिरस्नेहा । सुस्पर्शेशिशिरमासलवरागना सा मता श्यामेति ॥ ६८ ॥

भाषार्थ--हेसुवर्णके घटके समान स्तनोंवाली जो मनुष्य सहतके संग निशोत वा पीपलकेचूर्णका सेवन करता है उसको अथवा जो कामी पुरुष मदिरा सहित सोलह १६ वर्षकी स्त्रीको सेवता है उसको विषम ज्वरकी पीडा कभी नही होती ॥ ६८ ॥

क्षणमपि चलतां जहीहि मुग्धे शृणु वचनं मम तन्वि सावधाना ॥ वसति शिरसि मेघनादमूले व्रजतितरां विषमो विलासदृष्टे ॥ ६९ ॥

क्षणमपीति । हे मुग्धे हे अंकुरितयौवने । उदयद्यौवना मुग्धा लज्जाविदितमन्म्येति लक्षणात् । हे विलासदृष्टे विलासो हावभावभेदो दृष्टी दर्शने नेत्रयोर्बुद्धी वा यस्यास्तत्संबोधने । दृष्टिः स्यात्तु स्त्रिया बुद्धौ लोचने दर्शनेपि चेति मेदिनीकारः। क्षणमपि निर्व्यापारतया स्थिरीभूय किंचित्कालमपीति यावत्। चलता चांचल्य जहीहि त्यज । हे तन्वि हे कृशांगि तनूनि कृशान्यंगानि यस्याः सा तत्संबोधने । वोतो गुणवचनादिति ङीप्।सावधाना मनोयोगेन सह

वर्तमाना भव मम वचनं मदुक्तिं शृणु आकर्णय। किं तत् तदाह। वसतीति। मेघनाद मूले मेघनादस्य तंडुलीयशाकस्य मूलं बध्नः तस्मिन् शिरसि उत्तमांगे वसति बद्धे सति विषमो विषमज्वरः व्रजतितराम् अतिशयेन गच्छतीत्यर्थः ॥ ६९ ॥

भाषार्थ–हे मुग्धे ( जिसको यौवन आनेवाला हो ) हे नेत्रोंमे हावभाववाली हे तन्वंगि एक क्षणभर चंचलताको छोड और सावधान होकर मेरे वचनको सुन कि चोराईकी जडको सिरमें बांधनेसे विषमज्वर शीघ्र भाग जाता है ॥ ६९ ॥

विषममपि हरत्यसौ कषायो मधुमधुरो मदिरामृता-
शिवानाम् ॥ अहमिव सततं तव प्रकोपं चरणसरो-
रुहयोर्लुठन् हठेन ॥ ७० ॥

हेतन्वि। पुनश्च मम वचनं शृण्विति संबंधः। किं तत् तदाह। विषममपीति। मधुमधुरः मधुना माक्षिकेण मधुरो मधुररसयुक्तो मदिरामृताशिवानां त्रयाणामसौ कषायो निर्यूहः विषमं विषमज्वरं हरत्यपि हंति किं हंत्येव। अपिः संभावनाप्रश्नशंकागर्हासमुच्चये। तथा युक्तपदार्थेपि कामकारक्रियासु चेति मेदिनीकारः। अत्र दृष्टांतः। कः कमिव तव प्रकोपं त्वदीयं प्रकृष्टं क्रोधमहमिव यथाहं हरामि तथा। किं कुर्वन् तव चरणसरोरुहयोस्तव पादपद्मयोः सततमश्रांतं हठेन बलात्कारेण लुठन् अश्व इवेतस्ततः पतन्। अनेन गुरुमानो दर्शितः स च अपरस्त्रीसंभोगदर्शनादिजन्माचरणपातभूषणदानाद्यपनेयो गुरुरित्युक्तः तत्र मदिरा ताम्रपुष्पा धातकी अमृता गुडूची शिवा आमलकी॥७०॥

भाषार्थ–धायके फूल गिलोह आमला सहतसे मीठा किया इनका क्वाथ विषमको इस प्रकार हरता है जैसे बलात्कारसे तेरे चरणोंमें पडता हुवा में तेरे कोपको हरता हूं ॥ ७० ॥

अबले कमलातनुरक्तकले चलदृक्कमले धृतकामकले।
अमृताब्दशिवं मधुमद्विषमे विषमेषुविलासरते ७१

अबले इति। अबले न अल्पं बलं यस्याः सा तत्संबोधने। अल्पार्थेऽत्र। हे कमलातनुरक्तकले कमला श्रीः तस्यास्तनुः शरीरं तद्वत् रक्ता लो-

हिता कला अंशमात्रं यस्याः सा तत्संबोधने । पुनः किंभूते चलदृक्कमले दृशौ कमले इव चलती चञ्चले दृक्कमले यस्याः तत्सम्बोधने । धृतकामकले धृतो गृहीतः कामेन अनुरागेण भोगेच्छया वा कलो मधुरध्वनिर्यया सा तत्संबोधने । पुनः हे विषमे असमाने विगता समा सदृशी यस्याः तत्संबोधने पुनश्च विषमेषुविलासरते विषमाः पञ्च इषवः शराः यस्य कामस्य यो विलासो लीला तत्र रतिरनुरागो यस्याः सा तत्संबोधने । विषमे विषमज्वरं निमित्त कृत्वा अमृतादीना त्रयाणा क्वाथः कर्तव्यः । निमित्तात् कर्मयोग इति सप्तमी । अत्र क्वाथस्य निमित्त विषमः तस्यामृतादिकर्मणा सह सयोगात् । तत्रामृता गुडूची अब्दो मेघनामा शिवा आमलकी एषा द्वन्द्वैक्य । तच्च मधुमत् माक्षिकसहितं एषा कषाय पिबतो विषमो नश्यतीत्यर्थः ॥ ७१ ॥

भाषार्थ–हे अबले अर्थात् हे निर्बले हे लक्ष्मीके समान शरीरकी कलावाली हे कमलके समान चञ्चल दृष्टिवाली हे कामदेवकी इच्छासें मधुर ध्वनिवाली हे सब स्त्रियोंमें श्रेष्ठ हे कामदेवकी लीलामे विलासवाली स्त्री गिलोह मोथा आवला सहत मिला है जिसमे ऐसा इन तीनोका काथ विषमज्वरके लियेहै अर्थात् विषमज्वरको नष्ट करताहै७१

अयि कुशाग्रसमानमते मते मतिमतामतिमन्मथमंथरे॥
ज्वरहरं रुगरिष्टशिवावचायवहविर्जतुसर्पपधूपनम् ७२॥

अथ ज्वरहरं धूपनमाह । अयीति । अयीत्यनुरागपूर्वकं सम्बोधन । हे कुशाग्रसमानमते दर्भाग्रतुल्या तीक्ष्णा मतिर्बुद्धिर्यस्यास्तत्संबोधने । हे मतिमतां मते पण्डितानां मध्ये माननीये । पुनः हे अतिमन्मथमन्थरे अतिमन्मथोऽत्यर्थः कामः तेन मथरे मन्दगामिनि । रुगाद्यष्टानां धूपनं धूपः ज्वरहरं भवति । तत्र रुक् कुष्ठं अरिष्टो निम्बः शिवा धात्री वचा गोलोमी यवः इन्द्रयवः हविर्घृत जतु लाक्षा सर्षपः गौरसर्षपः ॥ ७२ ॥

भाषार्थ–हे कुशाग्रके समान सूक्ष्म बुद्धिवाली हे पडितोंके मानने योग्य हे कामदेवकी अधिकतासे मन्द गमनवाली स्त्री कठु नीमके पत्ते आवला वच इद्रजव घी लाख इनका धूप ज्वरको हरता है ॥ ७२ ॥

तिक्तोशीरबलाधान्यपर्पटांभोधरैः कृतः॥
क्वाथः पुनः समायांतं ज्वरं शीघ्रं विनाशयेत् ॥ ७३ ॥

अथैकस्मिन्दिने द्विवारमागच्छतो ज्वरस्य भैषज्यमाह । तिक्तेत्यादिना । तिक्तादिषड्भिर्द्रव्यैः कृतो निष्पादितः क्वाथः कषायः पुनः समायांतमेकस्मिन्नहनि एकवारमागत्य पुनर्द्वितीयवारं तस्मिन्नेव दिने आगच्छन्तं ज्वरं शीघ्रं त्वरितं विनाशयेत् अदर्शनं कारयेत् । तत्र तिक्ता कटुका उशीरं वीरणमूलं वला वाट्यालकः धान्यं धान्याकं पर्पटः पित्तारिः अंभोधरो मुस्ता ॥ ७३ ॥

भाषार्थ–कुटकी खस खरेंटी धनियां पित्तपापडा नागरमोंथा इन छः ६ औषधियोंका क्वाथ उस ज्वरको शीघ्र नष्ट करता है जो दिनमें दोवार चढे ॥ ७३ ॥

गोपीद्व्यामलकीस्थिरामगधजातिक्तापयःपालिनी
द्राक्षाश्रीफलधावनीहिमविषामुस्तेंद्रजैःसाधितम् ॥
स्यादाज्यंविषमज्वरक्षयशिरःपार्श्वव्यथारोचक-
च्छर्दिःशोफहलीमकप्रशमनं लीलालतामंजरि ॥७४॥

अथ विषमज्वरक्षयादिरोगाणां प्रत्याख्यानाय घृतविशेषमाह गोपीत्यादिना । हे लीलालतामञ्जरि लीलैव शृंगारादिचेष्टैव लता वल्ली तस्याः मंजरी वल्लरी तत्सम्बोधने । गोप्यादिभिरोषधीभिः साधितं निष्पादितमाज्यं घृतं पानान्न-स्याद्वा विषमज्वरादीनां रोगाणां प्रशमनं मारणं भवति । तत्र गोपी शारिवा द्व्यामलकी भूम्यामलकी तिष्यफला स्थिरा शालपर्णी मगधजा पिप्पली तिक्ता तिक्तापयो ह्रीवेरं पालिनी त्रायमाणा द्राक्षा मृद्वीका श्रीफलः शांडिल्यः धावनी बृहती हिमं चन्दनं विषा अतिविषा मुस्ता मुस्तकं इन्द्रजाः कलिङ्गं । विषमज्वरोऽनियतकालजा जूर्तिः क्षयः कासरोगविशेषो यक्ष्मा शिरःपार्श्वव्यथा सूर्यावर्तार्धभेदाभ्यां मस्तकैकभागे पीडा अरोचकोऽरुचिरोगः छर्दिर्वमनरोगः शोकः शोथरोगः हलीमकः पांडुरोगप्रभेदः । अस्य स्वरूपं तु । यदा तु पांडोर्वर्णः स्याद्धरितः श्वावपीतकः । वलोत्साहः क्षयस्तन्द्रामन्दाग्नित्वं मृदुज्वरः । स्त्रीष्वहर्षोऽङ्गमर्दश्च श्वासस्तृष्णारुचिभ्रमः । हलीमकं तदा तस्य विइति ॥ ७४ ॥

भाषार्थ-हे लतारूपी लीलाकी वेल स्त्री सिरयारी आवला शालपर्णी छोटी पीपल सुगंध वाला त्रायमाणा दारु वेल कटेहली चन्दन अतीस मोथा इद्रजव इन १४ चौदह औषधियोंसे बनाहुआ घी विषमज्वर क्षयी मस्तककी पीडा अरुचि छर्दी सूजन हलीमक ( पाण्डुका भेद ) इनको शात करता है ॥ ७४ ॥

चलदलतरुसेवाहोममंत्रौ त्रिनेत्रद्विजसुरगुरुपूजा-
कृष्णनाम्नां सहस्रम् ॥ मणिधृतिपरिदानान्याशिष-
स्तापसानां सकलमिदमरिष्टं स्पष्टमष्टज्वराणाम्॥७५॥

अथ कर्मजज्वरोपायानाह । चलदलतरुसेवेत्यादिना । इद चलदलतरुसेवादिक सकलं सम्पूर्ण यथाविधि श्रद्धयानुष्ठित अष्टज्वराणां वातिकादीनामरिष्टं अरिवत्तिष्ठतीत्यरिष्ट नाशन भवतीति शेषः ।अष्टज्वराः यथा । दक्षापमान संक्रुद्धरुद्रनिःश्वाससम्भवः । ज्वरोऽष्टधा पृथग्द्वन्द्वसंघातागतुजः स्मृत इति । तथाहि । वातिकः पैत्तिकश्चैव कफजो वातपित्तजः । वातश्लेष्मप्रसूनश्च पित्तश्लेष्मोद्भवस्तथा । सघातागन्तुजः स्मृत इति । तथाहि । वातिकः पैत्तिकश्चैव कफजो वातपित्तजः । वातश्लेष्मप्रसूतश्च पित्तश्लेष्मोद्भवस्तथा । सघातागन्तुजावेव ज्वरोऽष्टविध उच्यते । स्पष्ट ग्रन्थान्तरे स्फुटं । किं तादेत्यपेक्षायामाह चलदलेति । तत्र चलदलतरु• पिप्पलवृक्षः तस्य सेवाविधिः निर्दिष्टवर्त्मना पूजा । होमः प्रतिकूलग्रहमन्त्रेण तमेव ग्रहमुद्दिश्य विधिवत्स्थापितेऽग्नौ ग्रहप्रीत्युत्पादकस्य हविषः प्रक्षेपः । मन्त्रः प्रतिकूलग्रहमन्त्रस्य सिद्धमन्त्रस्य वा जपः । त्रिनेत्रः सदाशिवः तस्य पूजा सहस्रकलशाभिषेकरूपा । द्विजानां ब्राह्मणाना भोजनाच्छादनाद्यर्पणेन प्रीत्युत्पादनरूपा पूजा । गुरोः परमार्थपदानकर्तुर्ब्राह्मणस्य च पूजा । गुरुरग्निर्द्विजातीना वर्णाना ब्राह्मणो गुरुः । सर्वेषामेव वर्णाना जन्मना ब्राह्मणो गुरु• । इत्यादि स्मृतेः । कृष्णनाम्नां सहस्रं विष्णोर्नामसहस्रस्य वा पाठः । भवत्यरोगो द्युतिमान् बलरूपगुणान्वितः । रोगार्तो मुच्यते रोगादिति फलश्रुतेः । मणिधृति• मणीना माणिक्यादिरत्नानां ग्रहदोपशान्त्यर्थं ग्रहविप्राज्ञया विधारण । ग्रहमणयो यथा । माणिक्यमुक्ताफलविद्रुमाणि गारुत्मक पुष्पकवज्रनील । गोमेदवैदूर्यकमर्कतः स्यू रत्नानीति ।

परिदानानि घृतकुम्भादीनि ज्वरोक्तानि दानानि। तापसानां तपस्विनामाशीर्वादा मङ्गलप्रार्थनाः। यदुक्तं ग्रन्थान्तरे स्पष्टं तदाह भावमिश्रः। सोमं सानुचरं देवं समातृगणमीश्वरं। पूजयन् प्रयतः शीघ्रं मुच्यते विषमज्वरात्। सोममुमासहितं सानुचरं नन्द्यादिगणसहितं प्रयतः पवित्रः। विष्णुं सहस्रमूर्धानं चराचरपतिं विभुं। स्तुवन्नामसहस्रेण ज्वरान् सर्वान् व्यपोहति। सहस्रमूर्धानमिति सहस्रशीर्षेत्यादि वेदाभिहितनामसहस्रेण भारतोक्तेन ज्वरस्यापि देवतात्वात् पूजा कार्या। यत आह विदेहः। तीर्थायतनदेवाग्निगुरुवृद्धोपसर्पणैः। श्रद्धया पूजनैश्चापि सहसा शाम्यति ज्वरः। तीर्थमृषिजुष्टं जलं आयतनं देवाधिष्ठितं जालंधरपीठपुरुषोत्तमक्षेत्रश्रीशैलादीनि। दानैर्दयादिभिरपि द्विजदेवतागोगुर्वर्चनप्रणतिभिश्च जपैस्तपोभिः। इत्युक्तपुण्यनिचयैरपचीयमानाः प्राक्पापजा यदि रुजः प्रशमे प्रयांतीति भेषजाचार्यश्च ॥ ७५ ॥

भाषार्थ-अब प्रारब्धसे पैदा हुए ज्वरोंका उपाय लिखते हैं पीपलकी पूजा होम मंत्रका जप शिवजी और ब्राह्मण देवता गुरु इनकी पूजा विष्णुसहस्रनामका पाठ और माणिक्य आदि रत्नोंका धारण और घीसेभरे घर आदिका दान और तपस्विओंका आशिर्वाद ये सब आठ ८ प्रकारके ज्वरको नष्ट करतेहैं ॥ ७५ ॥

**अयि रत्नकले कलानिधे कुशले कोकिलकोमलस्वरे ॥**
**ज्वरवाञ्ज्वरवर्जितोऽथवा लघु कुर्यादशनं दिनात्यये ७६**

**इतिश्रीलोलिंबराजकृतौ ज्वरप्रतीकारःप्रथमो विलासः॥ १॥**

अथ लोलिंबराजः स्वकांतां संबोधयन् ज्वरयुक्तज्वरमुक्तयोर्हितमुपदिशति। अयीति। अयीति कोमलालापे। हे रत्नकले रत्नानि स्त्रीजातिश्रेष्ठानि कलाः अंशास्तत्संबोधने हे कलानिधे कलाश्चतुःषष्टिसंख्याकाः निधीयंते यत्र। डुधाञः कर्मण्यधिकरणे चेत्यधिकरणे किः तत्संबोधने यद्वा कला चंद्रकला निधीयतेऽत्र तेन हेशशिवदने हे कुशले हेविज्ञे हे कोकिलकोमलस्वरे कोकिलस्य पिकस्येव कोमलो मृदुलः स्वरो यस्यास्तत्संबोधने ज्वरवान् ज्वरो

विद्यते यस्य सः ज्वरवर्जितो ज्वरमुक्तो वा दिनात्यये वासरावसाने अशनं भोजन लघु अगुरु कुर्यात्। ज्वरमुक्तस्य लक्षणमाह माधवकारः। स्वेदो लघुत्वं शिरसः कुड्डः पाको मुखस्य च। क्षवथुश्चान्नलिप्सा च ज्वरमुक्तस्य लक्षणम्। इति ॥ ७६ ॥

इतिश्रीकुलावधूतश्रीपरमहंसपरिव्राजकाचार्यश्रीमद्धरिहरानंदनाथभारतीशिष्यब्रह्मावधूतश्रीसुखानंदनाथविरचितायां सुखानंद्यां लोलिंबदीपिकायां ज्वरप्रतीकारनाम्नः प्रथमविलासस्य प्रकाशार्थः ॥ १ ॥

भाषार्थ–हे सम्पूर्ण स्त्रियोंमे श्रेष्ठ हे चोसठ ६४ कलाओंकी समुद्ररूप अर्थात् चन्द्रमुखी हे बुद्धिमति हे कोकिलके समान सुदरसुरवाली स्त्रि ज्वरवाला अथवा जिसका ज्वर हटगया हो वह पुरुष दिनके अन्तमें लघु ( हलका ) भोजन करै ॥ ७६ ॥

इतिश्रीपण्डितमिहिरचन्द्रकृते लोलिम्बराजभाषाप्रदीपे
प्रथमो विलासः ॥ १ ॥

---

अब ज्वरातीसारकी चिकित्सा कहते है.।

## अमृतातिविषासुरराजयवस्तनयित्नुकिरातकविश्वपयः॥ अतिसारहरं ज्वरनाशकरं शृणु निर्जितकुंजरकुंभकुचे ॥ १ ॥

अथ क्रमप्राप्तस्य ज्वरातिसारस्य रुक्प्रतीकारमाह अमृतेति। हे निर्जितकुंजरकुंभकुचे निर्जितौ पराजितौ कुंजरस्य गजस्य कुंभौ हस्तिशिरस्थौ मांसपिंडौ कुचाभ्यां स्तनाभ्यां यया सा तत्संबुद्धौ अमृतादिपण्णां पयः क्राथः तं शृणु आकर्णय कीदृश अतिसारहरं हरतीति हरं अतिसारस्यान्नगन्धेहैर पुनः ज्वरनाशकरं ज्वरस्य विनाशकरं ज्वरातिसारस्य नाशनं तत्र अमृता गुडूची अतिविषा शुक्लकंदा सुरराजयवो वत्सकः इंद्रयवो वा स्तनयित्नु मुस्तकः किरातको भूनिंबः। विश्वं शुंठी। यथाह चक्रपाणिदत्तः। नागरातिविषामुस्तभूनिंबामृतवत्सकैः। सर्वज्वरहरः क्राथः सर्वातीसारनाशनः ॥ १ ॥

भाषार्थ–हे कुचाओंसे हस्तीके गंडस्थलोंको जीतनेवाली स्त्री गिलोह अतीस इंद्रजव नागरमोथा चिरायता सोंठ इन छः औषधियोंके अतीसार और ज्वरके नष्ट करनेवाले क्वाथको तू सुन अर्थात् यह क्वाथ ज्वरातीसारका नाशकारक है ॥ १ ॥

शीतोशीरकयुग्मवत्सकवृकीपद्माह्वधान्यामृता-
भूनिम्बाम्बुदबालबिल्वकविषाविश्वौषधैः साधितः ॥
क्वाथो माक्षिकसाक्षिको विजयते हृल्लासतृष्णावमी-
दाहारोचकसंगभंगचतुरः सर्वातिसारज्वरान् ॥ २ ॥

क्वाथांतरमाह शीतेत्यादिना । शीतादिचतुर्दशाभिरोषधीभिः साधितः माक्षिकसाक्षिकः मधुप्रक्षेपयुक्तः क्वाथः कषायः सर्वातिसारामयान् अखिलानुदरामयान् विजयते जयति । कथंभूतः क्वाथः हृल्लासतृष्णावमीदाहारोचकसंगभंगचतुरः हृल्लासः उपस्थितवमनः तृष्णा पिपासा वमी वांतिः दाहः संतापः अरोचकोऽरुचिरोगः एषु संगः अहं हृल्लासी तृष्णावानित्याद्यभिनिवेशस्तस्य भंगे भंजने चतुरो निपुणः क्वाथः । तत्र शीतं चंदनं तच्च रक्तचंदनं । कषाये रक्तचंदनस्योक्तत्वात् कषायलेपयोर्ग्राह्यं चंदनं रक्तचंदनमितिवचनात् । उशीरक युग्मं उशीरं वीरणमूलकमेकं अपरं लामज्जकं तच्च उशीरवत् पीतच्छावि तृणं भवतीति भेदः वत्सकः कुटजः वृकी पाठा पद्माह्वं कमलं धान्यं धन्याकं अमृता गुडूची भूनिंबश्चिरातिक्तः अम्बुदो मुस्ता वालं ह्रीबेरं बिल्वकं बिल्वपेशी अथवा बालबिल्वं आमबिल्वम् विषा अतिविषा विश्वा शुंठी ॥ २ ॥

भाषार्थ–लालचंदन खस नेत्रवाला कूडेकी छाल पाठा कमल धनियां गिलोह चिरायता नागरमोथा कच्चाबेल अतीस सोंठ इन औषधियोंसे बना क्वाथ सहत मिलानेसे जीका मिचलाना, प्यास, वमन, दाह, अन्नकी अरुचि संपूर्ण अतीसारके ज्वर इनको जीतता है ॥ २ ॥

पंचांघ्रिवृकयब्दबलेंद्रबीजत्वक्सेव्यातिक्तामृतविश्व-
बिल्वैः ॥ ज्वरातिसारान् सवमीन् सकासान् सश्वा-
सशूलान् शमयेत्कषायः ॥ ३ ॥

थातिसारे पंचमूल्यादिक्वाथमाह । पंचांघ्रीति । पंचाघ्र्यादिभिः पंचद-

शाभिः कृतो यः कषायः सवमीन् सकासान् सश्वासशूलान् एतादृशान् ज्वरातिसारान् शमयेदित्यन्वयः । तत्र पचाग्निः शालपर्ण्यादिपंचमूलं प्रागुक्तं । वृकी पाठा अब्दो मुस्ता बला वाट्यालकः इंद्रबीजत्वक् बीजं च त्वक्च अनयोः समाहारः इंद्रस्य बीजत्वक् इंद्रस्य कुटजस्य बीजं फलमिंद्रयव तस्यैव त्वक् कुटजवल्कलं सेव्यमुशीरं तिक्ता कटुकी अमृता छिन्नरुहा विश्वं नागरं बिल्वं बिल्वपेशिकं आमं बिल्वमित्यर्थः । अतः फलेषु परिपाकेषु यो गुणः समुदाहृतः । बिल्वादन्यत्र स ज्ञेयो बिल्वमामं गुणोत्तरमित्युक्तम् ॥ ३ ॥

भाषार्थ-शालपर्णी पृष्टपर्णी दोनोकटेहली गोखरू पाठा नागरमोथा खरेहटी इंद्रजव कूडाकी छाल खस कुटकी गिलोह सोंठ वेलगिरी, इन पद्रह औषधियोंका काथ उन ज्वरातिसारोको शांति करता है जिनसें वमन खासी स्वास और शूल होय ॥ ३ ॥

कफाधिके वा पवनाधिके वा द्वयाधिके वा गुरुपंचमूलम् ॥ पित्ताधिके वा लघुपंचमूलं पुनःपुनः पृच्छसि किं मृगाक्षि ॥ ४ ॥

हे लोलिंबराज पंचमूलद्वये तिष्ठति सत्यस्मिन् किं गुरुपंचकमूलं प्रक्षेप्तव्यं लघु वेति प्रियया पृष्टे तत्राह । कफाधिक इति । हे मृगाक्षि कफाधिके ज्वरातिसारे अथवा पवनाधिके वाय्वधिके वातकफाधिके गुरुपंचमूलं प्रक्षेप्तव्य । यथाह चक्रपाणिदत्तः । बिल्वश्योनाकगंभारीपाटलागणिकारिकाः । कफवातहरं श्रेष्ठं पंचमूलमिदं महदिति । पित्ताधिक्ये लघुपंचमूलं प्रक्षेप्तव्यमिति । तदाह चक्रपाणिदत्तः । शालपर्णी पृश्निपर्णी बृहतीद्वयगोक्षुरं । वातपित्तहरं वृष्यं कनीयः पंचमूलकमिति ॥ ४ ॥

भाषार्थ-स्त्री लोलिम्बराजसे पूछती है कि आपने जो यह क्वाथ कहा है इसमे छोटा पचमूल गेरना या वडा लोलिंवराज उत्तर देता है कि हे मृगके समान नेत्रवाली वारवार क्या पूछती है जिस अतीसारमे कफ यावात अधिक होय अथवा कफ वात दोनो अधिक होय वहा बडा पचमूल और जिसमें पित्त अधिक होय वहा लघु पचमूल गेरना चाहिये ॥ ४ ॥

सदेवदारुः सविषः सपाठः सजंतुशत्रुः सघनः सती-

क्ष्णः ॥ सवत्सकः क्वाथ उदाहृतोसौ शोकातिसारां-
बुधिकुंभजन्मा ॥ ५ ॥

अथ शोकातिसारस्य चिकित्सामाह । सदेवदारुरिति । हे मृगाक्षि असौ क्वाथः शोकातिसारांबुधिकुंभजन्मा शोकेन अतिसारः स एव अंबुधिः तस्य कुंभजन्मा अगस्त्यः । कोसौ तमाह सदेवदारुरिति । देवदारुणा पूतिकाष्ठेन सहितः । सविषः । विषया अतिविषया सहितः । सपाठः पाठया अंबष्ठया सह । सजंतुशत्रुणा विडंगेन सघनः सह घनेन मुस्तेन । सतीक्ष्णः सह तीक्ष्णेन मरीचेन । सवत्सकः सह वत्सकेन कुटजेन । सर्वत्र सहस्य सः संज्ञाया मिति सादेशः । भयशोकसमुद्भूतौ ज्ञेयौ वातातिसारवत् । तयोर्वातहरी कार्या हर्षणाश्वासनैः क्रिया । हर्षणाश्वासनपूर्विका वातहरी क्रिया कार्येत्यर्थः॥५॥

भाषार्थ–देवदारु अतीस पाठा वायविडंग मोथा मिर्च कूडाकी छाल इन सात औषधियोंका क्वाथ शोकसे पैदा हुए समुद्ररूप अतिसारके लिये अगस्ति मुनि है अर्थात् शोकातीसारको नष्ट करताहै ॥ ५ ॥

इतिज्वरातिसारः

अयि प्रिये प्रीतिभृतां मुरारौ किं वालकश्रीघनधान्य
विश्वैः॥यस्याप्यतीसाररुजो न तस्य किं वालकश्री-
घनधान्यविश्वैः ॥ ६ ॥

अथातिसारे पाचनान्याह । अयीत्यादिपद्यैः । अयि प्रिये इति संबोधनम् । मुरारौ कृष्णे प्रीतिभृतां हर्षमुद्वहतां पुरुषाणां वालकश्रीघनधान्यविश्वैः किम् न किमपि प्रयोजनं तत्र वालकः पुत्रः श्रीः लक्ष्मीः घनधान्यं धान्यसमूहः विश्वं प्रपंचजालं । यस्य मनुजस्य अतिसाररुजः अतिसारभवा रुजो रोगा न संति तस्यापि वालकश्रीघनधान्यविश्वैः किम् न किमपि फलं । अत्र वालकं ह्रीवेरं श्रीर्बिल्वं घनो मुस्ता धान्यं धन्याकं विश्वं शुंठी । यथाह चक्रपाणिदत्तः । धान्यकं नागरं मुस्तं वालकं विल्वमेव च । आमशूलविबंधघ्नं पाचनं वन्हिदीपनमिति ॥ ६ ॥

भाषार्थ-हे प्यारी जिन मनुष्योंकी श्रीकृष्णचन्द्रमें प्रीति है उनको पुत्र, लक्ष्मी, प्रसन्नताकासमूह और प्रपच इनसे क्या प्रयोजन है अर्थात् वह इनको तुच्छ समझता है और जिस मनुष्यके अतीसारका रोग नही है उसको नेत्रवाला वेलगिरी नागरमोथा धनिया सोंठ इन औषधियोंसे क्या प्रयोजन है अर्थात् जिसके अतीसार होय वह इनका काढा पीवे तो अतीसार नष्ट हो जाताहै ॥ ६ ॥

पित्तातिसारो धान्यांबु बिल्वाब्दानां निरुध्यते ॥
केनात्र ज्ञायते कर्ता पंडितेन त्वया विना ॥ ७ ॥

पित्तातिसार इति । धन्याबुविल्वाब्दाना केन जलेन पित्तातिसारः पैत्तिकमतिसरणं निरुध्यते नश्यति । अत्रास्मिन् पद्ये त्वया पण्डितेन विदुषा विना केन कर्त्ता ज्ञायते त्वयैव ज्ञायते नतु मूर्खेणेत्यर्थः। ग्रन्थकारस्य तु रीतिरियमस्ति । पित्तातिसारः धान्याम्बुविल्वाब्दाना केन जलेन विना केनान्येन औषधिजालेन निरुध्यते न केनापीत्यर्थः। कथं तत्र दृष्टान्तः यथा पण्डितेन त्वया विना अत्रास्मिन् केन कर्ता ज्ञायते न केनापि तथेत्यर्थः इयमेव ग्रन्थकारस्य लावण्यरीतिरस्माकं समता । तत्र धान्य धन्याक अबु ह्रीवेरं बिल्वमामबिल्व अब्दो मुस्तकः । यथाह इदं धान्यचतुष्कं स्यात् पैत्ते शुठीं विना पुनरिति ॥ ७ ॥

भाषार्थ-हे खि धनिया, सुगधवाला, वेलगिरी, और नागरमोथा, इन चार औषधियोंके जलके बिना और किस औषधीसे पित्त अतीसार रुकता है अर्थात् इसी जलसे रुकता है और तेरे विना कौन पंडित इस श्लोकमें कर्ताको जान सकता है अर्थात् तूही जान सकती है ॥ ७ ॥

इंद्रजमेघमदाकुसुमश्रीरोध्रमहौषधमोचरसानाम् ॥
चूर्णमिदं गुडतक्रसमेतं हंत्यचिरादतिसारमुदारम् ॥८॥

इन्द्रजेति । इदमिंद्रजादीनां द्रव्याणां चूर्णं सम्पेषणजनितं रजः गुडतक्रसमेन इक्षुपाककालशेयाभ्यां सयुक्तं उदारमतिसारं महान्तमतिसरणं अचिराच्छीघ्रं हंति नाशयति । तत्रेंद्रजं इंद्रयवं मेघो मुस्तकः मदाकुसुमं धातकीपुष्पं श्रीर्बिल्वमाम रोध्रो गालवः महौषधं शुठी मोचरसः शाल्मलीवेष्टः । अत्राह

लटकनसूनुः।मुस्ता वत्सकबीजं मोचरसो बिल्वधातकीलोध्रं । गुडमथितं प्रयुक्तं गङ्गामपि वेगवाहिनीं रुंध्यादिति ॥ ८ ॥

भाषार्थ-इंद्रजव, मोथा, धायके फूल, कच्ची वेलगिरी, लोध, सोंठ, मोचरस, इन सात औषधियोंका चूर्ण जिसमें गुड और मठा मिला होय शीघ्रही प्रवल अतीसारको नष्ट करता है ॥ ८ ॥

कल्याणि कांचनलताललितांगयष्टे तांबूलशालिवदने ललने शृणुष्व ॥ शुंठीमदाकुसुममोचरसाजमोदास्तक्रान्विताः प्रशमयंत्यतिसारमुग्रम् ॥ ९ ॥

कल्याणीति । हे कल्याणि हे भद्रे । काञ्चनलताललिताङ्गयष्टे काञ्चनलतेव हेम्नः शाखिशाखावत् ललिता मनोहरा अंगयष्टिर्देहयष्टिका शरीरलता वा यस्यास्तत्संबोधने । पुनः हे तांबूलशालिवदने तांबूलेन पर्णेन शालते शोभते इति ताम्बूलशालि एतादृशं वदनमाननं यस्यास्तत्संबोधने। पुनः हे ललने अंगनोत्तमे। शृणुष्व आकर्णय मद्वचनमितिशेषः। किं तत् तदाह। शुंठीति। तक्रान्विताः दण्डाहतसंयुक्ताः शुंठ्यादयः उग्रमुत्कटमतिसारमतिसरणं प्रशमयति नाशयंतीत्यर्थः। तत्र शुंठी विश्वम् मदाकुसुमं धातकीकुसुमं मोचरसः शाल्मलीवेष्टः अजमोदा उग्रगन्धा ॥ ९ ॥

भाषार्थ-हे कल्याणि, हे सुवर्णकी लताके समान सुंदर अंगवाली हे पानसे शोभायमान मुखवाली हे स्त्रियोंमें श्रेष्ठ मेरे वचनको सुन कि सोंठ, धायके फूल, मोचरस, अजमोद, इन चार औषधियोंके चूर्णको मठेमें मिलाकर पीवे तो प्रबल अतीसार शांत हो जाता है ॥ ९ ॥

अतिसारप्रशमनी चित्रपत्रकशोभिता ॥
वृद्धिदाऽतनुवह्नेश्च श्यामा श्यामेव राजते ॥ १० ॥

अतिसारेति । हे कल्याणि श्यामा गोपी विराजते अतिशयेन शोभते । कथंभूता । चित्रपत्रकशोभिता चित्राणि अद्भुतानि यानि पत्रकाणि पलाशानि तैः शोभिता कांतियुक्ता । पुनः अतनुवह्नेरनंगाग्नेर्वृद्धिदा स्फूर्तिप्रदा । पुनः कीदृशी अतिसारप्रशमनी अतिसरणस्य वधकर्त्री । यथोक्तं निघंटौ ।

शारिवायुगलं स्वादु स्निग्धं शुक्रकरं गुरु । अग्निमांद्यारुचिश्वासकासामविषनाशनं । दोषत्रयास्रप्रदरज्वरातीसारनाशनमिति । यद्वा श्यामा प्रियंगुः सा च चित्रपत्रकशोभिता । जलपिप्पलीसमेता अतिसारप्रशमनी भवति । तत्रदृष्टान्तः । केव श्यामेव षोडशवार्षिकी स्त्रीव । कथंभूता श्यामा चित्रपत्रकशोभिता चित्रमद्भुतं यत् पत्रकं पत्रभंगः स्तनकपोलादिषु कस्तूरिकादिभी रचिता पत्रावली तेन शोभिता अलंकृता । पुनः कीदृशी श्यामा अतिसारप्रशमनी अतिसारोतिबलस्तस्य प्रशमनकर्त्री संगमाद्बलहानिकर्त्रीत्यर्थः।उक्तं च । सद्यो बलहरा नारी सद्यो बलकरं पयः । स्त्रियं गच्छेत्पयः पीत्वा तां च त्यक्त्वा पुनः पिबेदिति । सारो बले स्थिरांशेचेत्यमरः । पुनः कथंभूता श्यामा अतनुवह्निवृद्धिदा । यथोक्तं । श्यामा गुणवती कांता प्रिया मधुरभाषिणी । रतेषु धृष्टा या नारी सा स्त्री वृष्यतमा स्मृतेति ॥ १० ॥

भाषार्थ–जलपीपलसे युक्त सिरवाई अतीसारको शांत करनेवाली और अग्निको बढानेसे उसप्रकार सर्वोत्तम है जैसे चित्रविचित्रके है कपोलोंपर पत्ते ( पलकना ) जिसके और कामदेवकी अग्निको बढानेवाली और बलके नष्टकरनेवाली सोलहवर्षकी स्त्री सर्वोत्तम होती है इस श्लोकमें श्यामापदसे सिरवाई और सोलह वर्षकी स्त्री ली है ॥ १० ॥

बाले बाललताप्रवालललिताकारांघ्रिहस्ताधरेमल्ली
माल्यलसत्कुचक्षितिधरे रत्नज्वलन्मेखले ॥
चंचत्कुंडलमंडले विजयते रक्तामशूलान्वितातीसा-
रं कुटजाब्दबिल्वकविषोदीच्यैः कषायः कृतः ॥ ११ ॥

बालेइतिहेबाले हेश्यामे हे बाललताप्रवालललिताकारांघ्रिहस्ताधरे बाला कोमला या लता वल्ली शाखिशाखा वा तस्या ये प्रवालाः नवीनपत्राणि तद्वत् ललिताकारौ रुचिराकृती अंघ्री चरणौ हस्तौ च पाणी च अधरौ ओष्ठौ च यस्याःतत्संबोधने।पुनः मल्लीमाल्यलसत्कुचक्षितिधरे मल्ली मल्लिका तस्याःमाल्यं पुष्पस्रक् । मालैव माल्यम् चतुर्वर्णादित्वात् स्वार्थे ष्यञ् । तेन लसंतौ प्र-

काशमानौ कुचावेव क्षितिधरौ भूधरौ यस्यास्तत्संबोधने । पुनः हे रत्नज्वल न्मेखले रत्नैर्माणिक्यमुक्तामरकतादिभिः ज्वलंती देदीप्यमाना मेखला कांची यस्यास्तत्संबोधने । पुनः हेचंचत्कुंडलमंडले चंचले जाज्वल्यमाने कुंडलयोः कर्णवेष्टनयोः मण्डले चक्रवाले कपोलस्वरूपे यस्यास्तत्संबोधने । कुटजादिपंचभिः कृतो निष्पादितः कषायः निर्यूहः रक्तामशूलान्वितातीसारं रक्तामशूला रोगाविशेषाः प्रसिद्धास्तैर्युक्तमतिसरणं विजयते जयति । तत्र कुटजो वत्सकस्तस्य त्वक् अब्दो मुस्तकः विल्वं वालं श्रीफलफलं । स्वार्थे कः । विषा अतिविषा उदीच्यं ह्रीवेरं । यथाहुः । सवत्सकः सातिविषः सविल्वः सोदीच्यमुस्तैश्च कृतः कषायः । सामे सशूले सहशोणिते च चिरप्रवृत्तोऽपि हितोऽतिसारे इति ॥ ११ ॥

भाषार्थ–हे बाले ( १६ वर्षकी ) हे कोमल लताके नवीन पत्तोंके समान सुंदर ( लाल ) हैं चरण हाथ और ओष्ठ जिसके ऐसी और हे चमेलीकी मालासे प्रकाशमानहैं पर्वताकार कुचा जिसकी ऐसी और हे रत्नोंसे प्रकाशमान मेखलावाली और हे कुंडलोंसे प्रकाशमान कपोलोंवाली स्त्री कूडेकी छाल, नागरमोथा बेलगिरी, अतीस, और नेत्रवाला इन पांच औषधियोंका क्वाथ उस अतीसारको जीतताहै जिसमें रुधिर, आम, और शूल ये तीनों हो ॥ ११ ॥

धातक्यामलकीपयोधरवृकीकट्वङ्गयष्टीमधुश्रीज-
म्ब्वाऽम्रफलास्थिनागरविषाह्रीबेरलोध्रेन्द्रजैः ॥
तुल्यांशैर्विहितं सतंडुलजलं गंगाधराख्यं महच्चू-
र्णं तूर्णमपाकरोति सकलं जीर्णातिसारं परम् ॥ १२ ॥

अथ महत् गंगाधराख्यं चूर्णमाह । धातकीति । धातक्यादिचतुर्दशद्रव्यैस्तुल्यांशैः समभागैर्विहितं निर्मितं महत् गंगाधराख्यं बृहद्गंगाधराभिधं चूर्णं रजः सतंडुलजलं षष्टिकादिधान्यधौततोयेन सह पीतं । सकलं सप्तविधं जीर्णातिसारं पुरातनमतिसरणं तूर्णं शीघ्रमपाकरोति नाशयतीत्यर्थः । यथोक्तं । संशम्यापां धातुरग्निं प्रवृद्धो वर्चोमिश्रोवायुनाधःप्रणुन्नः ॥ सरत्यतीवातिसारं तमाहुर्व्याधिं घोरं षड्विधं तं वदंति । एकैकशः सर्वशश्चातिदोषैः शोकेनान्यः षष्ठ

आमेन चोक्त इति। साम्यादागंतुकत्वेनातीसारं भयद पुनः। वांछति सप्तमं केचिदुदरामयमुत्कट। तत्र धातकी मध्यपुष्पा तस्या. पुष्पाणि आमलकी धात्रीफलं पयोधरो मुस्तकं वृकी पाठा कट्वंगः श्योनाकः यष्टी मधुयष्टी श्रीः आम बिल्वफल जंबूः नीलफला तस्या अस्थि आम्रफलास्थि रसालस्य मज्जा नागरं शुंठी विषा अतिविषा ह्रीबेरं बालं लोध्र· तिरीटः इंद्रजमिंद्रयवम्॥१२॥

भाषार्थ-धायके फूल आंवला नागरमोथा पाठा ( कश्मीरीपाठा ) स्योनापठा मुलहटी बेलगिरी जामणकी और आमकी गुठली सोंठ अतीस सुगधवाला लोध इद्रजव समानभाग लिये इन चौदह द्रव्योंके गगाधर नामा चूर्णको खाकर चावलोका जल पीवे तो सब प्रकारके जीर्ण ( पुराणे ) अतीसार शीघ्र नष्ट होते हे ॥ १२ ॥

अयि कदुकनिंदकस्तनि प्रमदारूपमदापहारिणि ॥
रुधिरातिसृतौ कषायकःसमधुर्दाडिमवत्सकत्वचः १३॥

अथ रुधिरातिसारे पाचनमाह। अयीति। अयीनि कोमलालापे। हे कदुकनिंदकस्तनि कंदुकस्य गेंदुकस्य निंदकौ निंदाशीलौ स्तनौ कुचौ यस्याः तत्सबोधने। पुनः प्रमदारूपमदापहारिणि प्रमदयति पुरुषं। मदी हर्षे अच् टाप्। प्रमदाया. उत्तमस्त्रियः यद्रूपं मनोहराकृतिः तेन यो मदोऽहं रूपलावण्यसपन्नेति गर्वस्तमपहर्तुं शीलमस्यास्तत्सबोधने। दाडिमवत्सकत्वच. दाडिमो मिष्टकरकः वत्सकः कुटजः अनयोस्त्वक् वल्कलम् तस्याः कषायः क्वाथः। कथभूतः समधु. माक्षिकप्रक्षेपयुक्तः रुधिरातिसृतौ रक्तातिसारनाशने निमित्तं भवतीत्यर्थः। यथोक्त। कषायो मधुनापीतस्त्वचोर्दाडिमवत्सकात्।सद्यो जयेदतीसार सरक्त दुर्निवारणमिति ॥ १३ ॥

भाषार्थ-हे गेंदकी निदा करनेवाले है स्तन जिसके ऐसी और हे स्त्रियोंको जो रूपका मद तिसके हरनेवाली ( सबसे सुदर ) स्त्री अनारका छिडाक ( नाशपाल ) और कूडेकी छाल इनका सहद मिला काथ रुधिरके अतीसारमें श्रेष्ठ है ॥ १३ ॥

चंदनं विमलतंडुलांबुना संयुतं मधुयुतं सितायुतम् ॥
तृड्विखंडनमसृग्विखंडनं खंडनं प्रचुरदाहमेहयोः ॥१४॥

अपि च। चदनमिति।विमलतंडुलांबुना विमलानां निर्मलानां तंडुलानां

शालिषष्टिकादिधान्यसाराणामंबुना तोयेन युक्तं चंदनं घृष्टं श्वेतं मलयजं तच्च मधुयुतं सितायुतं च माक्षिकशर्कराभ्यां संमीलितं पीतं सत् तृड्विखंडनं तृष्णायाः विखंडनं निराकरणकरं भवति । पुनरसृग्विखंडनं रक्तातीसारनाशनं च । पुनः प्रचुरदाहमेहयोः प्रचुरौ प्राज्यौ यौ दाहमेहौ गात्रसंतापप्रमेहौ तयोः खंडनं भंजनं भवतीत्यर्थः । यथोक्तं । पीतं मधु सितायुक्तं चंदनं तंडुलांबुना । रक्तातिसारजिद्रक्तपित्ततृड्दाहमेहनुदिति ॥ १४ ॥

भाषार्थ–निर्मल चावलोंका जल और सहत और मिसरी मिले हैं जिसमें ऐसा जो घिसाहुआ सपेद चंदन है तृषा रुधिर प्रवलदाह और प्रमेहको खंडन ( नाश ) करता है १४.

कुक्षिशूलामशूलघ्नं विविधास्त्रातिसारजित् ॥
सेवेत सगुडं बिल्वं विल्वतुल्यपयोधरे ॥ १५ ॥

कुक्षीति । हे विल्वतुल्यपयोधरे विल्वेन श्रीफलेन तुल्यौ समौ पयोधरौ स्तनौ यस्यास्तत्संबोधने । कुक्षिशूलाद्यामयवान् पुरुषः कुक्षिशूलामशूलघ्नं कुक्षिशूलं कुक्षावुदरे यद्वोदरस्य वामे दक्षिणे वा भागे शूलं व्यथा आमशूलं । आशोपहृल्लासवमीगुरुत्वस्तैमित्यमानाहककफप्रसेकैः । कफस्य लिंगेन समानलिंगमामोद्भवं शूलमुदाहरंतीति लक्षणलक्षितं । कुक्षिशूलं च आमशूलं च कुक्षिशूलामशूले ते हंतीति कुक्षिशूलामशूलघ्नः । पुनः विविधास्त्रातिसारजित् विविधो बहुप्रकारो यो रक्तातिसारस्तं जयति यद्वा विविधास्त्रातिसारजिदिति पाठः । तत्र विबन्धोमूत्रादिरोधः अस्त्रातिसारश्च तौ जयति एतादृशं । सगुडं गुडसहितं बिल्वं सुस्विन्नं बालबिल्वगर्भं शीतं कृत्वा सेवेत तस्योपभोगं कुर्यात् तत् स्वेदनोदकं चानुपिबेत् । यथोक्तं । गुडेन भक्षयेत्बिल्वं रक्तातीसार नाशनम् । आमशूलविबन्धघ्नं कुक्षिरोगहरं परमिति ॥ १५ ॥

भाषार्थ–हे वेलके समान स्तनोंवाली स्त्री गुड मिला है जिसमें ऐसी वेलगिरी कुक्षिका शूल आमसे पैदा हुआ शूल इनको नष्ट करता है और रुधिरके अनेक विकारोंको जीतता है ॥ १५ ॥

तृट्श्वासकासज्वरशोफमूर्च्छाहिक्कान्नविद्वेषणवांतिशू

लैः ॥ युक्तोतिसारी स्मरतु प्रसह्य गोविंददामोदरमा धवेति ॥ १६ ॥

असाध्यमतिसारणं दृष्ट्वा भगवन्नामोच्चारणाभिधं परमौषधमुपदिशति। तृडिति। तृषादिभिर्दशोपद्रवैः। युक्तश्चेदतिसारी तदा स प्रसह्य सर्वोपद्रव सोढ्वा बलात्कारेण गोविंददामोदरमाधवेति स्मरतु सन्निहितकालत्वात्। यथोक्तं। त्वामेव याचे मम देहि जिह्वे समागते दण्डधरे कृतांते। आवर्तयेथा मधुराक्षराणि गोविन्द दामोदर माधवेति। अपिच। शोथ शूल ज्वर मूर्च्छा श्वासं कासमरोचकं। छर्दि तृष्णा च हिक्का च दृष्ट्वातीसारिणं त्यजेदिति। अतिसारिणेतदवश्य त्याज्यम्। स्नानावगाहनाभ्यंगं गुरुस्निग्धादिभोजन। व्यायाममग्निसंतापमतीसारी विवर्जयेदिति ॥ १६ ॥ इत्यतीसारप्रतीकारः॥

भाषार्थ-जिस अतीसारवाले पुरुषके प्यास श्वास खासी ज्वर सूजन मूर्छा हुच अन्नमें अरुचि वमन और शूल ये रोगहों वह हठ ( आग्रह ) से हे गोविंद हे दाम दर हे माधव यह स्मरण करो अर्थात् वह मरजावगा ॥ १६ ॥

यवानीनागरोशीरधनिकातिविषाघनैः ॥
बलाबिल्वद्विपर्णीभिर्दीपनं पाचन स्मृतम् ॥ १७ ॥

अथग्रहणीप्रतीकारमाह यवानीत्यादिना। यवान्यादिदशभिर्द्रव्यैर्ग्रण्या दीपनं रुचिकरं पाचन दोषाणा पाचकः कषायो भवति। तत्र यवा ब्रह्मदर्भा नागर शुंठी उशीरमभयं धनिको धन्याक अतिविषा विषा घ मुस्ता बला वाट्यालकः बिल्वं श्रीफलवृक्षस्यामफलम् द्विपर्णी शालपर्णी पृश्निपर्णी च। ग्रहण्या रूपमुक्तम्। अग्न्यधिष्ठाननाडी च ग्रहणीति निगद्यते ग्रहण्या निदानसमाप्ती यथा। अतीसारे निवृत्तेऽपि मन्दाग्नेरहिताशिन भूयः सन्दूषितो वन्हिर्ग्रहणीमपि दूषयेत्। एकैकशः सर्वशश्च दोषैरत्यर्थमूर्च्छितैः॥ सा दुष्टा बहुशो भुक्तमाममेव विमुंचति। पक्व वा सरुज पूति मुहुर्मुहुर्द्रवं। ग्रहणीरोगमाहुस्तमायुर्वेदविदो जना इति ॥ १७ ॥

भाषार्थ-अजमायन सोंठ खस धनियां अतीस नागरमोथा खरैटी वेलगिरी शाल-पर्णी पृष्ठपर्णी इन दश औषधियोंका क्वाथ ग्रहणीरोगमें अग्निका दीपन और पाचन ( दोषोंका पाचक ) कहा है ॥ १७ ॥

पुनर्नवावल्लिजबाणपुंखाविश्वाग्निपथ्याचिरबिल्वबि-ल्वैः॥कृतः कषायः शमयेदशेषान्दुर्नामगुल्मग्रहणी-विकारान् ॥ १८ ॥

अत्र कषायादीनाह पुनर्नवेत्यादिभिरष्टाभिः । पुनर्नवादिभिः कृतः कषायः पीतः सन् अशेषानखिलान् दुर्नामाद्यामयान् शमयेत् शांतिं नयेत् अत्र दुर्नामा अर्शः गुल्मः कोष्ठांतर्ग्रंथिरूपः ग्रहणी एतेषां विकारान् । तत्र पुनर्नवा वृश्चीरः वल्लिजं मरीचं वाणपुंखा शरपुंखा विश्वा शुंठी अग्निश्चित्रकः पथ्या हरीतकी चिरबिल्वः करंजः बिल्वमामबिल्वम् ॥ १८ ॥

भाषार्थ-सांठी काली मिरच वाणपुंखा ( शरफोंखा ) सौंठ चीता हरडै करंजुवा बेलगिरी इन आठ औषधियोंका क्वाथ दुर्नाम ( ववासीर ) वायगोला और संग्रहणीके सब विकारोंको नष्ट करताहै ॥ १८ ॥

शुंठीछिन्नरुहाविषाजलधरैस्तुल्यैः कषायः कृतो मंदाग्नौ ग्रहणीगदेपि सततं सामानुबंधे हितः ॥ शुंठी कल्ककृतं घृतं प्रपिबतः पांड्वामकासापहं स्याद्वायो-रनुलोमनं ग्रहणिका वेगेन जंगम्यते ॥ १९ ॥

शुंठीति । तुल्यैः समांशैः शुंठ्यादिचतुर्भिः कृतो विहितः कषायः क्वाथः मंदाग्नौ मन्दोऽतीक्ष्णोऽग्निर्यस्मिन् पुनः सामानुबंधे आमेन सह अनुबंधः संबंधो यस्य एतादृशे ग्रहणीगदे संग्रहणीरोगे हितोनुकूलः । तत्र शुंठी नागरं छिन्नरुहा वत्सादनी विषा अतिविषा जलधरो मुस्ता । अत्र घृतमप्याह शुंठीति । शुंठीकल्ककृतं शुंठ्याः कल्कं चूर्णं तेन साधितं घृतं सर्पिः प्रपिबतः पानं कुर्वतः पुंसः पांड्वामकासापहं स्यात् पांडुः रोगविशेषः आमोरोगविशेषः कासः क्षयुः तेषां नाशनं स्यात् वायोरपानवातस्यानुलोमनमधःप्रवर्तनं भवति ग्रहणिका संग्रहणी वेगेन सत्वरं जंगम्यते अतिशयेन गच्छति ॥ १९ ॥

भापार्थ-सोंठ गिलोइ अतीस नागरमोथा समभाग इन चारोका काथ मंदाग्नि और आव जिसमें होय ऐसे ग्रहणी रोगमें हितकारी होताहै और सोंठके चूर्णको घीमें मिलाके जो पुरुप पीताहै उसके पाण्डु आम खासी ये तीनोंरोग नष्ट होतेहै और अधो वायुकाभी ( अनुलोमसरना ) होताहै और ग्रहणीरोगभी शीघ्र चलाजाताहै ॥ १९ ॥

पाठाविपाकुटजवृक्षफलत्वगब्दतिक्तामदारसजनागरविल्वचूर्णं ॥ सक्षौद्रतंडुलजलं ग्रहणीप्रवाहरक्तप्रवाहगुदरुग्गुदजेषु दद्यात् ॥ २० ॥

पाठेति । वैद्यः ग्रहणीप्रवाहरक्तप्रवाहगुदरुग्गुदजेषु रोगेषु पाठादीनां चूर्णं रजः सक्षौद्रतंडुलजलं माक्षिकेण सहितं तण्डुलानां व्रीहिसाराणां प्रक्षालितानां तोयं दद्यात् पूर्वं चूर्णं मुखे निक्षिप्य ततो मधुमिश्रितं तंदुलोदकं पिबेदित्यर्थः । तत्र ग्रहणी संग्रहणी प्रवाहः प्रवाहिका रक्तप्रवाहो रक्तातीसारः गुदरुक् गुदपीडा गुदजोऽर्शस्तेषु । तत्र पाठा विपा कुटजवृक्षस्य फलमिंद्रजवः तस्य त्वक् अब्दो मुस्ता तिक्ता कटुकी मदा धातकी रसजं रसाऽञ्जनम् नागर विल्वम् ॥ २० ॥

भापार्थ-पाठा अतीस इंद्रजो कूडाकी छाल नागरमोथा कुटकी धायके फूल रसोत वेल इनके चूर्णको उपर सहत मिलाकर चावलोंका जल ग्रहणी प्रवाहिका रक्तातीसार गुदाकी पीडा और ववासीर इनसव रोगोंमें दे अर्थात् इन सब रोगोंको यह चूर्ण नष्टकरताहै॥२०॥

तुल्यांशं सकलंकिरातकटुकामुस्तेंद्रजत्र्यूषणं भागश्चंद्रकलामितः कुटजतो भागद्वयं चित्रकात् ॥ चूर्णं चंद्रकलाभिधंगुडपयोयुक्तंचपांडुज्वरातीसारारुचिकामलाग्रहणिकागुल्मप्रमेहापहम् ॥ २१ ॥

अथ चंद्रकलाभिधं चूर्णमाह । तुल्यांशमिति । अत्र किरातकटुकामुस्तेंद्रजत्र्यूषणं सकलं तुल्यांशं ग्राह्यं कुटजतः चन्द्रकलामितः पोडशो भागो ग्राह्यः चित्रकात् भागद्वयं ग्राह्यं एतेषां चूर्णं चन्द्रकलाभिधं नाम भवति । तच्च गुडपयोयुक्तं द्विगुणगुडमिश्रितं शीतलाम्बुना पीतं सत् पाण्डुज्वरातीसारारुचिकामलाग्रहणिकागुल्मप्रमेहापहं भवतीत्यन्वयः ॥ २१ ॥

भाषार्थ-चिरायता कुटकी नागरमोथा इंद्रजों सोंठ मिरच पीपल इन सात औषधियोंका एक एक भाग और कूडेकी छालके सोलह भाग और चीतेके दो भाग लेकर चूर्ण बनावै इस चन्द्रकला नामक चूर्णको दूना गुड मिलाकर शीतलजलसे खाय तो पांडुरोग ज्वर अतीसार अन्नमें अरुचि कामला संग्रहणी वायगोला प्रमेह इन सब रोगोंको नष्ट करता है ॥ २१ ॥

क्षारद्वंद्वपटुत्रिकत्रिकटुकैश्चव्याजमोदानलैः कृष्णा-मूलकहिंगुजीरमिशिभिस्तुल्यैर्विधेयं रजः॥पीतं कोष्णजलेन कोलपयसा तक्रेण वान्यौषधात् हृत्क्षुद्गुल्मगदांकुरग्रहणिषुप्रायःप्रियंप्रेयसि ॥ २२ ॥

चूर्णांतरमाह । क्षारद्वंद्वेत्यादिना । क्षारद्वंद्वं क्षारयोः सर्जिकायावशूकयोर्द्वंद्वं पटुत्रिकं त्रयाणां संघः । संख्यायाः संवसूत्राध्ययनेष्विति कन् । पटूनां विडुचकसैंधवानां लवणानां त्रिकं । त्रिकटुकं त्रयाणां कटुकानां मरीचशुंठीपिप्पलीनां समाहारः एतेषामितरेतरयोगः । तैः चव्यं चविका च अजमोदा च अनलश्चित्रकश्च तैः कृष्णामूलकं पिप्पलीमूलकं च हिंगु च जीरकश्च मिशिः शतपुष्पा च ताभिः एतैः पञ्चदशभिः तुल्यैः रजश्चूर्णं विधेयं कर्तव्यं । तच्च हृत्क्षुद्गुल्मगुदाङ्कुरग्रहणिषु हृद्रोगे क्षुन्मांद्ये गुदे गुदाङ्कुरे अर्शसि ग्रहण्यां च कोष्णजलेन ईषदुष्णेन पानीयेन यद्वा कोलपयसा स्वल्पवदरीक्वथितजलेन अथवा तक्रेण सह पीतं सत् हे प्रेयसि हे प्रियतमे अन्यौषधादन्यस्मात् भेषजात् प्रायो बाहुल्येन प्रियं सुखकरं भवतीत्यर्थः ॥ २२ ॥

भाषार्थ-हे अत्यंतप्यारी स्त्री सज्जीखार और जवाखार खारा काला सेंधा ये तीनो लवण सोंठ मिरच पीपल चव्य अजमोद चीता पीपलामूल हींग जीरा सोंफ समभाग इन पंद्रह औषधियोंके चूर्णको किंचित् उष्ण जलके संग अथवा झाडीबेरके क्वाथके संग अथवा मठेकेसंग पीवे तो हृदयका रोग अल्पक्षुधा वायगोला ववासीर और संग्रहणी इनरोगोंमें प्रायः अन्यसब औषधियोंसे श्रेष्ठहै ॥ २२ ॥

द्विक्षारषट्कटुपटुव्रजहिंगुदीप्यैः स्यात्सारलुंगबदरैकरसेन युक्तम् ॥ श्लेष्मानिलग्रहणिकागुदजे प्रशस्तं लोकत्रयैकमतिदीपनपाचनेऽलम् ॥ २३ ॥

अन्यदप्याह। द्विक्षारेति। द्वौ च तौ क्षारौ च द्विक्षारौ सर्जिकायवक्षारौ षट्कटुः षडूपण। तद्यथा। पञ्चकोलं समरिच षडूपणमुदाहृतं। पटुव्रजः। लवणपञ्चक। तद्यथा। सैंधव रुचक चैव विड सामुद्रकं गुडमिति। हिंगु रामठ दीप्यो यवानी एतेषां चूर्णं कार्यं तच्च सारलुङ्गबदरैकरसेन युक्त सारोम्लरसः अम्लवेतस इति यावत्। लुंगः मातुलुङ्गः बदरो वारिबदरं प्राचीनामलकमिति यावत् एषां मध्ये तच्चूर्णमेकस्यापि रसेन भावित सत् श्लेष्मादीना द्वन्द्वैस्य कफवातसग्रहण्यर्शःसु प्रशस्त योग्य। कथंभूत लोकत्रयैक त्रिलोक्यां मुख्य। पुनः अतिदीपनपाचने अतिशयदीपने पाचने च अल समर्थम्॥२३॥

भाषार्थ-सज्जी और जवाखार पीपल पीपलामूल चव्य चीता सोंठ मिरच पाचो लवण हींग अजमायन इन पद्रह औषधियोके चूर्णको अम्लवेत बिजौर डाडीकेबेर इनके अर्कमे खरलकरके खाय तो कफवातकी संग्रहणी और ववासीर इनकेलिये श्रेष्ठ होताहै और तीनों लोकोमे अग्निके दीपन और अन्नके पाचनमे यह एकही समर्थहै ॥ २३ ॥

चूर्णं चित्रकचव्यश्रीविश्वभेषजनिर्मितम्॥
तक्रेण सहितं हंति ग्रहणी दुःखकारिणीम्॥ २४॥

चूर्णांतरमाह। चूर्णमिति। चित्रकादिचतुर्भिर्निर्मितं चूर्णं तक्रेण दडाहतेन सहितं सार्धं सेवित दुःखकारिणीं ग्रहणीं हंति। तत्र चित्रकचव्ये प्रसिद्धे श्रीर्बिल्वं विश्वभेषज शुंठी ॥ २४ ॥

भाषार्थ-चीता चव्य बेलगिरी सोंठ इन चार औषधियोका चूर्ण दुःखदेनेवाली संग्रहणीको दूर करताहै ॥ २४ ॥

रुचकाग्निमरीचानां चूर्णं तक्रेण सेवितम्॥ग्रहण्युदरगुल्मार्शःक्षुन्मांद्यप्लीहनाशकृत्॥ २५॥

अन्यच्च। रुचकेति। रुचकादित्रयाणां चूर्णं तक्रेण सार्धं सेवित पीत सत् ग्रहण्यादिरोगाणा नाशक नाशकर भवति। तत्र रुचकं सौवर्चलं अग्निश्चित्रकं मरीचं धर्मपत्तन ग्रहणी प्रवाहिका उदरमुदररोगः गुल्मः कोष्ठातग्रं-

थेरूपो रोगः अर्शो दुर्नामा क्षुन्मांद्यं भोजनेच्छायाः मंदत्वं प्लीहा गुल्मः वाम-
कुक्षिस्थमांसखंडमिति यावत् ॥ २५ ॥

भाषार्थ–कालानमक चीता मिरच इनतीन औषधियोंके चूर्णको मठेके साथ खायतो संग्रहणी उदररोग वायगोला ववासीर क्षुधाकी मंदता तापतिल्ली इनसबको नष्टकरतेहै २५

आज्यं पयोधरजलेंद्रजवालबिल्वह्रीबेरमोचरसकल्कयुतं विपक्वम् ॥ आमानुबंधसहितं रुधिरान्वितं च सद्यो निहंति गृहिणि ग्रहणीविकारम् ॥ २६ ॥

इतिश्रीवैद्यजीवनेअतिसारग्रहणीप्रतीकारोनाम
द्वितीयोविलासः ॥ २ ॥

अत्राज्यमाह । आज्यमिति । पयोधरो मुस्ता जलजमुशीरं इंद्रजः कुटज-
बीजं बालबिल्वं लघुबिल्वपेशी ह्रीबेरमुदीच्यं मोचरसः शाल्मलीनिर्यासः
एतेषां कल्केन युतं युक्तं एतादृशं विपक्वमाज्यं घृतं पीतं सत् हे गृहिणि
आमानुबंधसहितं सामं रुधिरान्वितं च ग्रहणीविकारं सद्यः शीघ्रं निहंतीत्य-
र्थः । आजं पयोजलधरेन्द्रजवालबिल्वेति वा पाठः । तत्र आजं अजासंबं-
धिपयः जलधरादिकल्कयुतं विपक्वं ग्रहणीविकारं सद्यो निहंति ॥ २६ ॥
इति श्रीकुलावधूतश्रीपरमहंसपरिव्राजकाचार्यश्रीमद्धरिहरानंदभारतीशिष्यब्र-
ह्मावधूतश्रीसुखानंदनाथविरचितायां सुखानंद्यां लोलिंबदीपिकायामतीसार-
ग्रहणीप्रतीकारनाम्नो द्वितीयविलासस्य प्रकाशार्थः ॥ २ ॥

भाषार्थ–हेगृहिणि खस इंद्रजो नेत्रवाला मोचरस वेलगिरी इन छः औषधियोंके चूर्णको डालकर पकाहुआ घी उससंग्रहणीके विकारको नष्टकरताहै जिसमें आम और रुधिर आताहोय ॥ २६ ॥ इतिश्रीपं० मिहिरचंद्रकृते लोलिम्बराजभाषाप्रदीपे द्वितीयो विलासः ॥ २ ॥

इति द्वितीयविलासस्य भाषा समाप्ता ॥ २ ॥

अतः परं कोमलवाणि कासश्वासप्रतीकारमुदीरयामः ॥
निहंति कासं गुरुपंचमूलीकृतःकषायश्चपलासहायः १॥

श्वासादीना चिकित्सामाह । अतः परमिति । हे कोमलवाणि कोमला मनोहरा वाणी यस्याः तत्संबोधने अतः परमतीसारादिकथनोत्तरं कासश्वासयोः प्रतीकारं चिकित्सामुदीरयामः । तत्र चपलासहायः पिप्पली चूर्णसंयुक्तो गुरुपचमूलीकृतः कषायः गुरुपचमूली बृहत्पंचमूली पूर्वोक्ता तया रचितः क्वाथः पीतः सन् कासं क्षवथु निहंतीत्यर्थः । यथोक्तं । पचमूलीकृतः क्वाथः पिप्पलीचूर्णसयुतः । रसान्नमश्नतो नित्यं वातकासमुदस्यतीति ॥ १ ॥

भाषार्थ-हे कोमलवाणीस्त्री इससेपरे खांसी और स्वासकी चिकित्सा हम कहतेहे कि वेलगिरी श्योनाक गभारी पाडल और अरणी इसबडे पचमूल ओर छोटी पीपलका क्वाथ खासीको नष्ट करताहे ॥ १ ॥

घनविश्वशिवागुडजागुटिका त्रिदिनंवदनांबुजमध्यधृता॥
हरति श्वसनं कसनं ललने ललनेव हिमं हृदयोपगता२॥

कासश्वासयोर्गुटिकामाह । घनेति । घनो मुस्ता विश्व शुंठी शिवा हरीतकी केनचित्प्रमाणेन मिलितानां चूर्णिताना एतासां द्विगुणेन गुडेन जनिता वटिका निर्जलीकार्या सा च त्रिदिनं दिनत्रयं वदनाबुजस्य मुखकमलस्य मध्येऽभ्यंतरे धारिता सती हे ललने हे कामिनि श्वसन श्वासरोगं कसन कासरोगं च हरति विनाशयति । का कमिव हृदयोपगता वक्ष संलग्ना ललना हिममिव शिशिर यथा ॥ २ ॥

भाषार्थ-हेललने नागरमोथा सोठ बडीहरडे इनको समभाग कूट और कपड छानकर दुगनेपुराने गुडमे मिलाकर झडिकेवेरके समान गोली बनावे यह गोली इसप्रकार श्वास और खासीको नष्ट करतीहे जैसे हृदयसे लगीहुईस्त्री शीतको हरतीहै॥२॥

अजस्य मूत्रस्य शतं पलानां शतं पलानां च कलिद्रुमस्य ॥ पक्कं समध्वाशु निहंति कासं श्वासं च तद्वत् सवलं वलासम् ॥ ३ ॥

शिअत्रावलेहमाह अजस्येति । अजाया इदमाजं अजासंबंधि मूत्रं प्रस्राव-कुस्तस्य पलानां शतं शतपलपरिमितं कलिद्रुमो विभीतकः सोपि शतपल-परिमितो ग्राह्यः । एतदुभयं मधुना सह पक्वं अवलेहीभूतमवलीढं सत् आ-शु त्वरितम् सबलं कासं बलासं च नितरां हंति सबलमिति त्रयाणां वि-शेषणं । उक्तं च । प्रस्थं विभीतकानामस्थिविना साधयेदजामूत्रे । अयमवलेहो लीढो मधुसहितः श्वासकासघ्न इति ॥ ३ ॥

भाषार्थ–बकरीके मूत्रके १०० सौपल ( चारतोलेका एक पल होताहै ) और बहे-डेकीछाल सौपल इनको सहत डालकर पकावैतो यह चटनी खांसी श्वांस और कफ प्रबलभी इन सबको नष्ट करतीहै ॥ ३ ॥

आर्द्रादर्धतुला गुडादपि तथार्द्धांशं च कुस्तुंबरीदी-
प्यायोजरणात्रिजातजलदाद्दार्व्या पचेद्युक्तितः ॥
लेहो रत्नकले तवैव कथितः प्राणप्रियाया मया का-
सार्शोज्वरपीनसश्वयथुरुग्गुल्मक्षयध्वंसनः ॥ ४ ॥

अत्रार्द्रकपाकमाह । आर्द्रादिति । आर्द्रात् आर्द्रकरसात् अर्द्धतुला पं-चाशत्पलानि तथा तेन प्रकारेण गुडादपि इक्षुसाराच्च पंचाशत्पलानि कुस्तुं-बरी धान्याकं दीप्या यवानी अयो लोहचूर्णं जरणा कृष्णजीरकः त्रिजातं समानि त्वगेलापत्राणि जलदो मुस्ता येभ्योष्टभ्यश्च अर्द्धांशं यथा सर्वेषाम-ष्टानां मानं पंचविंशतिपलानि भवंति तथेत्यर्द्धांशस्य व्याख्या एतत्सर्वं दार्व्या गोजिह्वया सह युक्तितो लेहवत् पचेत् पाकं कुर्यात् हे रत्नकले र-त्नेषु कला अंशमात्रं यस्याः सा तत्संबोधने । रत्नकला लोलिंबराजपत्नीति प्रसिद्धं । कासार्शोज्वरपीनसश्वयथुरुग्गुल्मक्षयध्वंसनः कासः क्षवथुः अर्शो दुर्नामकम् ज्वरो महागदः पीनसो नासारोगः प्रतिश्यायः श्वयथुरुक् शोथरोगः गुल्मो वातगुल्मः क्षयः कासरोगविशेषो यक्ष्मा एतेषां रोगाणां ध्वंसनो ना-शकर्ता एतादृशोयमवलेहो जिह्वया भोजनं प्राणप्रियायाः प्राणेभ्योऽपि प्रीति-विषयायाः तवैव संबंधे मया कथितः उक्तः अन्येभ्यो गोपित इति शेषः ॥ ४ ॥

भाषार्थ-हे रत्नकले ( उत्तमरत्नरूप ) स्त्रि अदरखका रस और गुडके पचासपच सपल और धनिया अजमायन सार कालाजीरा दालचीनी इलायचीमोथा इन सब पच्चीसपल इन सबको करछीसे इसप्रकार पकावे जिससे चटनी बनजाय खासी बव सीर ज्वर पीनस सूजन वायगोला राजयक्ष्मा इन सबके नष्ट करनेवाला यह अवले ( चटनी ) तुझ प्राणप्यारीके आगेही कहाहै अन्य सबसे छिपाररखाथा ॥ ४ ॥

रास्नाबलापद्मकदेवदारुफलत्रिकत्र्यूपणवेल्लचूर्णम्॥ चिंतामणिक्षौद्रघृतोपपन्नं श्वासं च कासं च निराकरोति

अत्र चिंतामणिनामचूर्णमाह । रास्नेति । रास्नाद्येकादशभिश्चिंतामणि नाम चूर्णं भवति । तच्चासमाशाभ्यां क्षौद्रघृताभ्यां उपपन्नं युक्तं लीढं सत् श्वासं कासं च निराकरोति दूरीकरोतीत्यर्थः।तत्र रास्ना भुजंगाक्षी बला वा ट्यालकः पद्मकं पद्मकाष्ठं देवदारु फलत्रिकं त्रिफला त्र्यूपणं त्रिकटु वे विडंग । भजतो विषरूपत्व तुल्यांशे मधुसर्पिषी ॥ ५ ॥

भाषार्थ-रायसन जैतकेबीज खरैटी पद्माख देवदारु त्रिफला सूंठ मिरच पीप वायविडंग इनके समान भागोका जो चूर्ण है उसको चिंतामणि कहतेहै इस चूर्णको असमान सहत घीके संग खाय तो श्वास और खासी दोनोंको दूर करताहै ॥ ५ ॥

वासाहरिद्रामगधागुडूचीभार्ङ्गीघनानागरधावनीना-म्॥ क्वाथेन मारीचरजोन्वितेन श्वासः शमं याति न कस्य पुंसः ॥ ६ ॥

अत्र क्वाथमाह । वासेति । मारीचरजोन्वितेन मरीचचूर्णयुक्तेन वासाद्यष्टानां क्वाथेन कस्य पुंसः श्वासः शमं न याति अपि तु सर्वस्यैव शमं यातीत्यर्थः । अत्र वासादयः स्पष्टार्था घना रुद्रजटा ॥ ६ ॥

भाषार्थ-वासा ( अडूसा ) हल्दी पीपल गिलोय भार्ङ्गी रुद्रजटा सूंठ कटेहली की जड इन आठ औषधियोंके क्वाथमें काली मिरचका चूर्ण मिलाकर पीवे तो कर किसीका श्वास शांत नहो अर्थात् अवश्यही हो ॥ ६ ॥

तुल्या लवंगमरिचाक्षफलत्वचः स्युः सर्वैः समो निगदितः खदिरस्य सारः ॥ बब्बूलवृक्षजकषाययुतं च चूर्णं कासान्निहंति गुटिका घटिकाष्टकांते ॥ ७ ॥

लवंगादिगुटिकामाह । तुल्या इति । लवंगमरीचाक्षफलत्वचः लवंगं देवकुसुमं मरीचं वेल्लजं अक्षफलत्वक् वल्कलं एते लवंगादयस्तुल्याः स्युः समांशा अपेक्षिताः खदिरस्य सारो दंतधावनस्य निर्यासः खादिरः सर्वैः समः समानो निगदित उक्तः एतेषां चूर्णं बब्बूलवृक्षजकषाययुक्तं बब्बूलवृक्षः कफांतकतरुः तस्य त्वचः कषायेण युतं युक्तं कृत्वा वटिका कार्या सा गुटिका खादिता घटिकाष्टकांते अष्टघटिकापरिमितकालानंतरं कासान् पंचप्रकारान् निहंति नाशयति । ते यथा । पंचकासाः स्मृता वातपित्तश्लेष्मक्षतक्षयैः । क्षयायोपेक्षिताः सर्वे बलिनश्चोत्तरोत्तरमिति ॥ ७ ॥

भाषार्थ–लोंग मिरच वहेडाका वक्कल इन तीनोंको समान ले और इन तीनोंके समान कत्थेका सार ले और इन सबकी बबूरकी छालके क्वाथमें गोली चनेके समान बांधले यह गोली आठ घडीके पीछेही खांसीको नष्ट करतीहै ॥ ७ ॥

रूपं कीदृक् कमलवदने नुः परे सौ गिरेः स्यात् संबु-
द्धिः का मधुरवचने काग्निबीजस्य षष्ठी॥कस्य क्वाथः
श्वसनशमनो वल्लभेनेति पृष्टा विद्वद्वंद्याद्रुतमिदमदा-
त्सोत्तरं नागरस्य ॥ ८ ॥

अथ लोलिंबराजः स्वकान्तायाः वैयाकरणीत्वं द्योतयन् शुंठीक्वाथमाह । रूपेति । हे कमलवदने कमलमिव वदनं यस्याः तत्संबोधने भोः तामरसास्ये नुर्नृशब्दस्य सौ परे प्रथमैकवचने परतः कीदृक् रूपं । भवतीति शेषः । पुनः हे मधुरवचने भो माधुर्यविशेषभाषिणि गिरेर्गोत्रस्य संबुद्धिः संबोधने प्रथमैकवचनं का किंप्रकारा । तथाग्निबीजस्य रेफस्य षष्ठीविभक्तिः का श्वशनशमनः शमयतीति शमनः श्वसनस्य श्वासरोगस्य शमनो नाशकर्ता तादृशः क्वाथः कस्य भवतीत्थं वल्लभेन कांतेन पृष्टा कृतप्रश्ना विद्वद्वंद्या विद्वद्भिर्दक्षैर्वंद्या वंदनीया सा रत्नकला इदं नागरस्येति उत्तरं प्रतिवाक्यं द्रुतं तूर्णमदात् । तत्र ना. अग रस्य नागरस्य इत्यन्तलोपिकायां व्यस्तजातिरूपमुत्तरं दत्तवतीत्यर्थः ।

यथाह । वातं निर्दलयन् कफं कवलयन् उन्मूलयन् पीनसं दृष्टिं निर्मलयन् प्रभा प्रबलयन् हृद्रोगमुत्सारयन् । निःशेषं जठरामयं प्रशमयन्नुद्दीपयन् पावकं कासश्वासनिरासाधनमसौ विश्वाकषायः कृतः ॥ ८ ॥

भाषार्थ–लोलिंबराज कवि अपनी रत्नकला स्त्रीको व्याकरण शास्त्रमें कुशल जताते हुये सूठके क्वाथको कहतेहैं कि हे कमलके समान मुखवाली स्त्री नृ शब्दका सुविभक्ति परे होनसते कैसा रूप बनताहै ( ना ) गिरि पर्वतके वाचक अगशब्दकी सवृद्धि क्या हो है ( अग ) अग्निके बीज रअक्षरकी षष्ठी कौन होतीहै (रस्य) और किस औषधिका क्वाथ श्वासको शात करताहै पतिने इसप्रकार पूछाहै जिसको ऐसी विद्वानोंकोभी नमस्कार करनेयोग्य यह स्त्री शीघ्रही नागरस्य ( ना अग रस्य ) अर्थात् सूठका यह उत्तर देतीभयी ॥ ८ ॥

अयि रत्नकले नीलनलिनच्छदवीक्षणे ॥
सिंहीकषायः सकणः कासग्रासकरः क्षणात् ॥ ९ ॥

क्वाथान्तरमाह । अयीति । अयीत्यामन्त्रणे हे रत्नकले हे नीलनलिनच्छदवीक्षणे नील नीलवर्णविशिष्ट यन्नलिनमरविंद तस्य य छद पत्र तद्वीक्षणे नेत्रे यस्याः तत्सम्बोधने सकणः पिप्पलीचूर्णयुक्त. सिंहीकषायः कण्टकार्याः क्वाथः स पीतः क्षणाद्दशपलपरिमितात्कालात् कासग्रासकरः कासस्य कासरोगस्य ग्रास कवल करोतीत्येतादृशो भवति । यथोक्तं । कण्टकारीकृतः क्वाथः सकृष्णः सर्वकासहेति ॥ ९ ॥

भाषार्थ–हेरत्नकले हे नीलकमलके पत्तोंके समान नेत्रवाली स्त्री पीपलका चूर्ण मिलाहै जिसमें ऐसा कटेहलीकी जडका क्वाथ क्षणभरमेंही खासीको नष्ट करदेताहै ॥९॥

पिप्पलीपिप्पलीमूलबिभीतकमहौषधैः ॥
मधुना सेवितैः कासः प्रशाम्यति कुतूहलम् ॥ १० ॥

अत्र चूर्णमाह । पिप्पलीति । मधुना माक्षिकेण सह सेवितैरुपभुक्तैः पिप्पल्यादिचतुर्णां चूर्णैः कास कासरोग शाम्यति शातो भवतीति कुतूहलं स्वल्पोपायेन महद्गुणं भवतीत्यद्भुतम् ॥ १० ॥

भाषार्थ–यह आश्चर्य हैकि पीपल पीपलामूल बहेडा सूंठ इन सबका शहतके संग सेवन करै तो खासी शात ( नष्ट ) होजातीहै ॥ १० ॥

कटुतैलेन संयुक्तो गुडो यावन्न सेवितः ॥
तावन्नश्यति किं श्वासः पीयूषमधुराधरे ॥ ११ ॥

अवलेहांतरमाह । कुटुतैलेनेति । हे पीयूषमधुराधरे पीयूषममृतमिव मधुरो मिष्टोधरोष्ठो यस्याः तत्सम्बोधने यावत् यावत्कालपर्यंतं कटुतैलेन सर्षपस्नेहेन संयुक्तः सम्यक्प्रकारेण मिलितः गुडः इक्षुपाकः न सेवितो नोपयुक्तः तावत् तावत्कालपर्यंतं किमिति प्रश्ने श्वासः श्वासरोगो नश्यति अपि तु न नश्यतत्यिर्थः ॥ ११ ॥

भाषार्थ–हे अमृतसेभी अधिक मीठे ओष्ठवाली स्त्री जबतक मनुष्य कटुतेल मिलाकर गुडका सेवन करै तबतक क्या श्वास नष्ट होसकताहै अर्थात् नही होसकताहै॥ ११॥

रावणस्य सुतो हन्यात् मुखवारिजधारितः ॥
श्वसनं कसनं चापि तमिवानिलनंदनः ॥ १२ ॥

रावणस्येति । मुखवारिजधारितः मुखवारिजे वदनारविन्दे धारितः धृतः रावणस्य सुतोऽक्षः अक्षशब्देनात्र बहेडकफलं श्वसनं श्वासरोगं कसनं कासरोगं चापि हन्यात् हिंस्यात् । कः कमिव अनिलनन्दनो मारुतिः तमिव अक्षं रावणिमिव । कपीशमक्षहंतारं वंदे लंकाभयंकरमित्यतिप्रसिद्धेः ॥ १२ ॥

भाषार्थ–रावणका पुत्र अक्ष ( बहेडा ) मुखकमलमें धारणकरनेसे श्वास और खांसीको इसप्रकार नष्ट करताहै जैसे हनुमानने अक्षको नष्टकियाथा ॥ १२ ॥

अयि प्राणप्रिये जातिफललोहितलोचने ॥
शुंठीभार्ङ्गीकृतः क्राथः कसनश्वसनाहिराट् ॥ १३ ॥

अयीति । अयीति मृदुसंलापे भोःप्राणप्रिये प्राणात् हन्मारुतात् प्रिया प्रीतिविषया तत्संबोधने हे जातिफललोहितलोचने जातेः कांपिल्लवृक्षस्य फलं सस्यं तद्वत् लोहिते रक्तवर्णे नेत्रे यस्याः तत्संबोधने । जातिः सामान्यगोत्रयोः । मालत्यामामलक्यां च चुल्ल्यां कांपिल्लजन्मनोः । जाती फले छंदसि चेति हेमचंद्रः । शुंठीभार्ङ्गीभ्यां प्रसिद्धाभ्यां रचितः कषायः स पीतः सन् कसनश्वसनाहिराट् कसनं कासः श्वसनं श्वासरोगः तयोरहिराट् भवतीति शेषः ॥ १३ ॥

भाषार्थ-हे प्राणोंसे प्यारी हे जातिफलके समान लालनेत्रोंवाली स्त्री सूंठ और भार्ङ्गी इन दोनोका क्वाथ खासी और श्वासके लिये सर्पोंका राजाहै अर्थात् दोनोंको नष्टकरताहै ॥ १३ ॥

संयुक्तो गुडसर्पिर्भ्यां चूर्णस्त्रिकटुसंभवः ॥
निहंति तरसा श्वासं त्रासानिव सतां हरिः ॥ १४ ॥

अत्र चूर्णमाह। सयुक्त इति। त्रिकटुजनितः त्र्यूषणजनितश्चूर्णो गुडसर्पिर्भ्यां संयुक्तः कर्तव्यः स भक्षितः सन् तरसा झटिति श्वासरोगं निहंति। तत्र दृष्टांतः हरिर्नारायणः सता नित्यानित्यवस्तुविवेकसाधनसंपन्नाना मुमुक्षूणां साधूना त्रासान् मृषाऽज्ञानजनितान् ससारहेतून् दुःखानीव ॥ १४ ॥

भाषार्थ-गुड और सहत जिसमे मिलेहों ऐसा सूंठ मिरच और पीपलका चूर्ण इस-प्रकार श्वासको शीघ्र नष्ट करताहै जैसे हरि सत्पुरुषोंके दुःखको नष्ट करताहै ॥१४॥

शृंगवेररसो येन मधुना सह सेवितः ॥
श्वासकासभयं तस्य न कदाचित्कृशोदरि ॥ १५ ॥

कासश्वासप्रतीकारांतरमाह। शृंगवेररसइति। मधुना सह माक्षिकेण सार्धं शृंग-वेररसः शृंगमिव वेर शरीरमस्येति शृंगवेरमार्द्रक तस्य रसो जल स येन मनुजेन सेवितः उपभुक्तः भो कृशोदरि हे तनुमध्ये तस्य मानवस्य श्वासकासयोर्भयं कदाचित् कस्मिंश्चिदपि काले न भवतीति शेषः ॥ १५ ॥

भाषार्थ-हे कृशउदरवाली स्त्री जिस मनुष्यने सहतकेसंग अदरखके रसका सेवन कियाहै उसको श्वास और खासीका भय कदाचित्भी नहीं होता ॥ १५ ॥

पुलोमजावल्लभसूनुपत्नीतातात्मभूशेखरवाहनस्य ॥
सौंदर्यदूरीकृतरामरामे कषायकःकाससमीरसर्पः॥१६॥

कषायान्तरमाह। पुलोमजेत्यादिना। भो. सौंदर्यदूरीकृतरामरामे सौंदर्येण सुन्दरत्वेन दूरीकृता महदन्तरेण त्यक्ता रामस्य दाशरथेः रामा सीता यया सा तत्सम्बोधने पुलोमजावल्लभसूनुपत्नीतातात्मभूशेखरवाहनस्य पुलोमजा शची तस्याः वल्लभः पतिरिंद्रः तस्य सूनुः पुत्रोऽर्जुनः तस्य पत्नी सहधर्मिणी द्रौपदी तस्याः तातो जनको द्रुपदः तस्यात्मभूः पुत्रः शिखण्डी। शिखण्डोवर्हेचूड-

योरितिमेदिनीकारः । शिखण्डश्चूडास्यास्तीति शिखण्डी सर्पः स एव शेखरः शिखाविन्यस्तमाल्यं यस्य सः शिवः तस्य वाहनं यानं वृषः वृषशब्देनात्र वासकः । वृषो धर्मे बलीवर्दे शृङ्ग्यां पुं राशिभेदयोः । श्रेष्ठे स्यादुत्तरस्थश्च वासमूषिकशुक्रले । तथा वास्तुस्थानभेदे पुमानेष प्रकीर्तितः इति मेदिनी-कोशः । यद्वा पुलोमजा इन्द्राणी । पुलोमजाशचीन्द्राणीत्यमरः । तस्य भर्ता इन्द्रः तस्य सूनुरनुजः उपेंद्रः । सूनुः पुत्रेऽनुजे रवौ इत्यमरः । तस्य पत्नी लक्ष्मीः । पत्नी पाणिगृहीती चेत्यमरः । तस्य तातः पिता । तातस्तु जनकः पितेत्यमरः । समुद्रः तस्य आत्मभूः पुत्रः । आत्मजस्तनयः सूनुःसुतः पुत्र इत्य-रमः।चन्द्रः स शेखरे यस्य स महादेवः तस्य वाहनं वृषः।वृषोटरूषः सिंहास्य इत्यमरः । वृषोत्र नाम्नाऽऽटरूषः तस्य कषायः क्वाथः काससमीरसर्पः कास एव समीरः पवनः तस्य सर्पः पवनाशनः । अत्रानुक्तस्यापि मधुनः प्रक्षेपः क-र्तव्यः तथाचारदर्शनात् ॥ १६ ॥

भाषार्थ–हे अपनी सुंदरतासे सीताजीकेभी तिरस्कार करनेवाली स्त्री वांसेका जो काथहै सो खांसीरूप पवनकेलिये सर्प है अर्थात् जैसे सर्प पवनको भक्षण करताहै ऐसे ही यह क्वाथभी खांसीको भक्षण करैहै ॥ १६ ॥

**फलत्रयं छिन्नरुहा सचित्रा रास्नाक्रिमिघ्नं सकटुत्रयं च॥चूर्णं समांशं सितया समेतं कासं जयेन्नात्र विचारणीयम्॥ १७॥**

फलत्रयमिति । फलत्रयं फलानां पथ्याधात्रीबिभीतानां त्रयं छिन्नरुहा अमृता । कथंभूता छिन्नरुहा सचित्रा चित्रेण चित्रकेण सहिता रास्ना क्रिमिघ्नो विडङ्गः कटुत्रयं त्रिकटु एतेषां समांशं समभागं चूर्णं सितया शर्करया समेतं संयुक्तं भक्षितं कासं जयेत् । अत्र किमपि न विचारणीयं । चूर्णाद्द्वि-गुणा मतेति । इति कासश्वासप्रतीकारः ॥ १७ ॥

भाषार्थ–त्रिफला गिलोह चीता रायसन वायविडंग सूंठ मिरच पीपल समभाग इन-सबके चूर्णको मिसरी समेत खाय तो खांसीको जीतताहै इसमें विचार करना वृथाहै १७

**दशमूलकषायमिश्रितं वा ललने विश्वकषायमिश्र-**

**तं वा ॥ प्रपिबेत्कटिकुक्षिबस्तिशूले ध्रुवमेरंडजमेक-मेव तैलम् ॥ १८ ॥**

अथामवातप्रतीकाराय एरण्डस्नेहयुक्तदशमूलशुंठीकाथावाह । दशमूलेति । अस्य सम्प्राप्तिर्यथा । विरुद्धाहारचेष्टस्य मन्दाग्नेर्निश्चलस्य च । स्निग्धं भुक्तवतो ह्यन्नं व्यायाम कुर्वतस्तथा । वायुना प्रेरितो ह्यामः श्लेष्मस्थानं प्रधावति । तेनात्यर्थमपक्वोऽसो धमनीभिः प्रपद्यते । वातपित्तकफैर्भूयो दूषितः सोन्नजो रसः । स्रोतांस्यभिस्यन्दयति नानावर्णोतिपिच्छिलः । जनयत्यग्निदौर्बल्यं हृदयस्य च गौरवं । व्याधीनामाश्रयो ह्येष आमसज्ञोतिदारुणः । युगपत्कुपितावेतौ त्रिकसंधिप्रवेशकौ । स्तब्धं च कुरुते गात्रमामवातः स उच्यते।तस्य रूपं । अंगमर्दोऽरुचिस्तृष्णाप्यालस्य गौरवं ज्वरः । अपाकः शून्यतागानामामवातस्य लक्षण । स त्रिधा । पित्तात्सदाहरोग च सशूल पवनात्मक । स्तिमितं गुरुकंडू च कफजुष्टं तमादिशेदिति निदानम् । विरुद्धाहारचेष्टस्य विरुद्धाहारः क्षीरमत्स्यादिः विरुद्धा चेष्टा भुक्त्वा व्यायामादिः । तद्युक्तस्य । निश्चलस्य निर्व्यापारस्य । स्निग्ध भुक्तवतो ह्यन्नं व्यायामं च प्रकुर्वत इति मिलितो हेतुः । श्लेष्मस्थानमामाशयसंध्यादि तेन श्लेष्मस्थानगतेन अत्यर्थमपक्वः पित्तस्थानगमनेन तु पक्वो भविष्यतीत्यभिप्रायः असौ आमः धमनीभिः प्रपद्यते धमनीमार्गेश्चलति भूयो दूषितोऽतिशयेन दूषितः सोऽन्नजो रसः आमः स्रोतांस्यभिष्यन्दयति सस्तब्ध रसवहशिरावरोध कृत्वा स्रोतांसि गुरूणि करोति नानावर्णः वातादिजनितवर्णभेदान्नानावर्णः । आमस्वरूप तु । अजीर्णाद्यो रसो जातः सचितो हि क्रमेण वै । आमसंज्ञा स लभते शिरोगात्र रुजाकरः । अजीर्णात् भुक्तादजीर्णात् । अस्य लक्षणानि गौरवभिया न लिखितानि । अस्य चिकित्सार्थं दशमूलेत्यादिः श्लोकः । हे ललने अहो कामिनि ललते इच्छति रतु । लल् ईप्सायां चुरादीनां वा णिजिनि पक्षे ल्युर्युज्वा । आमकृते कटिकुक्षिबस्तिशूले दशमूलकषायमिश्रितं दशमूलस्य । बिल्वश्योनाकगंभारीपाटलागणिकारिकाः । शालपर्णी पृश्निपर्णी

बृहतीद्वयगोक्षुरं । पंचमूलाभ्यां उभाभ्यां दशमूलमुदाहृतमित्युक्तस्य कषायेण क्वाथेन मिश्रितं मिलितमथवा विश्वकषायेण शुंठीनिर्यासेन मिश्रितं युक्तं ध्रुवं निश्चितं एरंडजमुरुबूकसंभूतमेकं केवलं तैलं स्नेहमेव प्रपिबेत् । तथाहि चक्रपाणिदत्तः । दशमूलीकषायेण पिबेद्वा नागरांभसा । कुक्षिबस्तिकटीशूले तैलमेरंडसंभवमिति ॥ १८ ॥

भाषार्थ–हेललने स्त्री कमर कुक्षि और बस्तिमें शूल होयतो दशमूलके क्वाथको अथवा सूंठके क्वाथको मिलाकर अरंडके तेलको ही निश्चय करके पीवे ॥ १८ ॥

रास्नामृतानागरदेवदारुपंचांघ्रियुग्मेंद्रयवैः कषायः ॥
रुबूकतैलेन समन्वितोऽयं हर्ता भवेदामसमीरणस्य १९

कषायांतरमाह । रास्नेति । रास्नादिपंचदशाभिः कृतः कषायः रुबूकतैलेन समन्वितः एरंडस्नेहेन सह सेवितः आमसमीरणस्यामवातस्य हर्ता नाशको भवेत् । रास्नादयः उक्तार्थाः ॥ १९ ॥

भाषार्थ–रायसन गिलोह सूंठ देवदारु दशमूल इंद्रजव इनके क्वाथमें अरंडका तेल मिलाकर पीवे तो आमवातको नष्ट करताहै ॥ १९ ॥

विलासिनीविलासेन विलासिहृदयं यथा ॥
तथा गुडूची विश्वेन हरेदामसमीरणम् ॥ २० ॥

विश्वागुडूच्योः क्वाथमाह।विलासिनीति। विश्वेन शुंठ्या सह गुडूचीक्वाथः आमसमीरणमामवातं हरेत् । का किं केनेवेति दृष्टांतमाह । विलासिनी विलासयुक्ता पूर्वोक्ता स्त्री विलासिहृदयं विलासिनो भोगिनः कामिजनस्य चित्तं विलासेन हावभावप्रभेदेन यथा हरेत्तथेत्यर्थः । दधिमत्स्यं गुडं क्षीरं पोदकीं माषपिष्टकम् । वर्जयेदामवातार्तो दुष्टनीरमनूपजम् ॥ २० ॥
इत्यामवातः ॥

भाषार्थ–जैसे विलासिनी ( स्त्री ) के विलास ( हावभावभेद ) से विलासी पुरुषका हृदय हरा जाताहै इसप्रकार सूंठके मिलानेसे गिलोहका क्वाथभी आमवातको हरताहै अर्थात् नष्ट करताहै ॥ २० ॥

सम्यक्स्विन्नाश्छगलजरसे काननोत्थाः कुलत्थाश्चैले बद्धाः परिहृततुषाः प्रौढसीमंतिनीभिः॥ सूक्ष्मं पिष्टाः पटुरसनिशाचूर्णपूर्णाः क्षपायां चक्षुःक्षिप्ताः सकलरुधिरं संहरंति त्र्यहेण॥ २१॥

अथ चक्षूरोगस्य चिकित्सामाह। सम्यगिति। काननोत्थाः वनोत्पन्नाः कुलत्थाः दृक्प्रसादाः चैले वस्त्रे बद्धाः कीलिताः पुनश्च दोलायत्रेण छगलजरसे अजामूत्रे सम्यक् स्विन्नाः शोभनप्रकारेण पाचिताः पुनः प्रौढसीमंतिनीभिः निपुणस्त्रीभिः परिहृततुषाः निस्तुषीकृताः पुनस्ताभिरेव सूक्ष्मं यथा तथा पिष्टाश्चूर्णीकृताः पुनश्च पटुरसनिशाचूर्णपूर्णाः पटु लवणं सैंधव। लवणं नेत्रयोर्द्वेपि प्रायशः सैंधवं विनेत्युक्तेः। रसो गंधरसो बोलमितियावत्। निशा हरिद्रा एतासां चूर्णेन रजसा पूर्णाः पूरिताः युक्ताः कार्याः ते च चतुरमहिलया क्षपाया निशाया चक्षुःक्षिप्ताः नेत्रन्यस्ताः त्र्यहेण दिवसत्रयेण सकलरुधिरं समस्तरक्तकृताभिष्यंदं संहरंति नाशयंति॥ २१॥

भाषार्थ–वनमें पैदाहुयी कुलथीको वस्त्रमें बांधकर दोलायत्रसे अजाकेमूत्रमें भली प्रकार पकावे फिर चतुर स्त्री उसके तुषनिकासकर सूक्ष्म ( मिहिन ) पीसें फिर उसमें सीधालवण गंधरस ( बोल ) और हलदी इनके चूर्णको मिला दे इस अंजनको रात्रिके समय नेत्रमे गेरै तो तीनदिनमें नेत्रोंके रुधिरविकारको नष्ट करताहै॥ २१॥

लोलिंबराजकविना वनितावतंसे शिग्रोरमुष्य कथितोस्ति किमुपयोगः॥ एतस्य पल्लवरसात्समधोःकिमन्यत् दृग्व्याधिमात्रहरणे महिलाग्रगण्ये॥ २२॥

काचित्सखी सखीं प्रत्याह। लोलिंबराजेति। हे वनितावतंसे वनितानां शिरोभूषणे लोलिंबराजकविना ग्रंथकर्त्रा अमुष्य शिग्रोः सोभांजनस्य किमु किमर्थमुपयोग आचरणं कथितोऽभिहितोस्तीति चेदिति शेषः। अन्या सखी तदुत्तरं दत्तवती। हे महिलाग्रगण्ये महिलासु यौवनमदमत्तासु अग्रे पुरस्तात्प्राधान्येन गणयितुं योग्ये दृग्व्याधिमात्रहरणे दृशोर्व्याधिर्नेत्रयो रोगः तन्मा-

त्रस्य हरणे नाशकरणे एतस्य शिग्रोः पल्लवरसात् पत्रस्वरसात् समधोर्मा-क्षिकयुक्तात् अन्यत् भेषजांतरं किमस्ति नास्तीत्यर्थः ॥ २२ ॥

भाषार्थ-कोई सखीके प्रति पूछतीहै कि हे स्त्रियोंके भूषण ( उत्तम ) लोलिंबराज कविने क्या इस सोहोंजनेकाभी कोई उपयोग ( नकसा ) कहा है सखी उत्तर देतीहै कि हे यौवनके मदसे उन्मत्तोंमे मुख्य सखी सोहोंजनेके पत्ते और सहत मिलेहुये इनदोनोंसे अन्य नेत्रोंकी संपूर्ण व्याधियोंके हरनेमें औषधि नही है ॥ २२ ॥

कुवलयनयनेर्जुनं कफोब्धेःसह सितया सुनिराचरीकरोति ॥ प्रियकरमिव कामिनी नवोढा लघुकुचशालिनि वक्षसि प्रयुक्तम् ॥ २३ ॥

कुवलयनयने इति । हे कुवलयनयने कुवलयमिंदीवरं तद्दलवन्नीले नयने नेत्रे यस्याः तत्संबोधने । सितया सह अब्धेः कफो डिण्डीरः फेन इत्यर्थः अर्जुनं चक्षूरोगविशेषं । तथोक्तं । एको यः शशरुधिरोपमस्तु बिंदुः शुक्लस्थो भवति तदर्जुनं वदंतीति । तमाशु त्वरितं निराचरीकरोति दूरीकरोति । तत्र दृष्टांतः का कमिव । नवोढा नववधूर्नूतनविवाहिता कामिनी मनसातिशयकामवती लघुकुचशालिनि लघू ह्रस्वौ यौ कुचौ स्तनौ ताभ्यां शोभायमाने वक्षसि उरसि प्रियकरमिव प्रियस्य पत्युः करं हस्तं यथा दूरीकरोति तथेत्यर्थः ॥ २३ ॥

भाषार्थ-हे कमलके समान नेत्रोंवाली स्त्री समुद्रको झागमें मिश्री मिलाकर आंजे तो यह अंजन अर्जुन ( नेत्रकी सपेदीमें लाललकीर ) को इस प्रकार दूर करती है जैसे नवीन विवाही कामिनी छोटी २ कुचावाली अपनी छातीपरसे पतिके हाथको दूर करती है ॥ २३ ॥

इति निगदितमार्ये नेत्ररोगातुराणां निशि समधुघृताढ्या सेव्यमाना सुखाय ॥ अयि नवशिशुलीलालोलदृष्टे त्वमग्र्या जनयसि बत कस्माद्वैपरीत्यं परं तु२४॥

इतीति । हे आर्ये हे लसत्कुचे नेत्ररोगातुराणां सम्बन्धे समधुघृताढ्या मधुघृताभ्यां माक्षिकगव्याज्याभ्यां सहिता अग्र्या त्रिफला निशि रात्रौ सेव्-

माना कृतसेवना भक्षिता सती सुखाय शर्मणे भवतीति निगदितं वैद्यैरिति शेषः । त्रिफला मधुसर्पिर्भ्यां निशि नेत्रबलाय चेति वाग्भटः । अयीत्यभिपुखीकरोति हे नवशिशुलीलालोलदृष्टे नवो नव्यो यः शिशुः शावकोतिबालकः तस्य या लीला करचरणादिचालनस्वरूपा केलिस्तद्वल्लोला अस्थिरा दृष्टिर्लोचनं यस्यास्तत्संबोधने त्वमपि अग्र्या श्रेष्ठा परंतु चल इति खेदे नेत्ररोगातुराणा निशि कस्मात् हेतोर्वैपरीत्य विपरीतभावं जनयसि यतो नेत्ररोगिणो मैथुनं सर्वथा निषिद्धं मधुघृताभ्यामित्यत्र मधुनो मद्यस्याप्यनिष्टकरत्वाद्वैपरीत्यम् ॥ २४ ॥

भाषार्थ–हे आर्ये पत्नी वैद्यजन यह कहते हे कि सहत और घृत मिलाकर अग्र्या (त्रिफला) के रात्रिमें खानेसे नेत्ररोगवाले रोगियोंको सुख होताहै परन्तु हे नवीन बालकोंकी लीलाके समान चचल दृष्टिवाली स्त्री तू भी अग्र्या (मुख्या) ही है तथापि नेत्ररोगवालोंको वैपरीत्य (दुःख) क्यो पैदा करती है अर्थात् नेत्ररोगीको स्त्रीका सग मने है ॥ २४ ॥

निराकरोति नक्तांध्यं सगोमयरसा कणा ॥
यथा रतेन रमणी रमणस्य महाबलम् ॥ २५ ॥

रात्र्यधतोपायमाह । निराकरोतीति । सगोमयरसा कणा गोमयरसेन सह घृष्टा पिप्पली नक्तान्ध्यं रात्र्यंधतां निराकरोति दूरीकरोति । तत्रोदाहरणं यथेति । यथा रमणी रमयति नरमिति रमणी विशेषागना रतेन सुरतेन रमणस्य रमयति कामिनीमिति रमणः पतिस्तस्य महाबलं महत्सामर्थ्यं निराकरोतीत्यर्थः ॥ २५ ॥

भाषार्थ–गोबरके रसमे पीसकर छोटी पीपलकी नेत्रोंमे आजे तो नक्तान्ध्य (रतोंध) को इस प्रकार नष्ट करतीहै जैसे स्त्री मैथुनसे पुरुषके महान् बलको नष्ट करदेतीहै ॥ २५ ॥

श्यामेऽश्यामे प्रियश्यामे श्यामबोधितमानसे ॥
शुक्रं शमयति क्षिप्रं माक्षिकं माक्षिकान्वितम् ॥ २६ ॥

श्यामे इति । हे श्यामे षोडशवर्षवयस्के अप्रसूतागना श्यामा तत्संबोधने

पुनः हे अश्यामे श्यामो वर्णो यस्याः सा श्यामा न श्यामा अश्यामा गौरवर्णा तत्संबोधने पुनश्च हे प्रियश्यामे प्रियो भर्ता श्यामो वर्णतः कृष्णो यस्याः यद्वा प्रिया हृद्या हृत्प्रिया श्यामा कालिका यस्याः तत्संबोधने हे श्यामा-बोधितमानसे श्यामा अप्रसूतांगना षोडशवार्षिकी सखी तया बोधितं स-म्यक् ज्ञापितं मानसं मनो यस्याः तत्संबोधने माक्षिकान्वितं मधुयुक्तं मा-क्षिकं स्वर्णमाक्षिकं घृष्ट्वा नेत्रे न्यस्तं सत् शुक्रं शुक्राभिधं तारकापिंडिकानि-भं नेत्ररोगं क्षिप्रमरं शमयति नाशयति । इति नेत्ररोगप्रतीकारः ॥ २६ ॥

भाषार्थ–हे श्यामे ( १६ वर्षकी ) हे अश्यामे ( गौरांगी ) हे काले पतिवाली हे श्यामा जिसके मनको समझावें ऐसी स्त्री सहतमें घिसकर सोनामक्खीको नेत्रमें आंजे तो शुक्र ( फूला ) शीघ्र नष्ट हो जाताहै ॥ २६ ॥

**त्रिफला वृषभूनिंबनिंबतिक्तामृताकृतः ॥**
**क्राथो मधुयुतः पीतः कामलापांडुरोगजित् ॥ २७ ॥**

अथ कामलाप्रतीकारमाह । त्रिफलेति । तत्र पांडुरोगभेदस्य कामलायाः निदानपूर्विकां संप्राप्तिमाह भावमिश्रः स्वप्रकाशे । पांडुरोगी तु योत्यर्थं पित्त-लानि निषेवते । तस्य पित्तमसृङ्मांसं दग्ध्वा रोगाय कल्पते । पित्तं कर्तृ दग्ध्वा संदूष्य रोगाय कामलारूपाय पांडुरोगिण एवातिशयितपित्तलसेवया कामला भवतीति नायं नियमः किंतु कामला स्वतंत्रापि भवति । यथा राजयक्ष्मा कासादुपेक्षिताद्भवति नायं नियमः किंतु राजयक्ष्मा स्वतं-त्रोपि भवति तद्वदेषापि । कामलाया लक्षणमप्याह स एव। हारिद्रनेत्रः सुभृ-शं हारिद्रत्वङ्नखाननः । पीतवर्णशकृन्मूत्रो भेकवर्णो हतेंद्रियः । दाहाविपाक-दौर्बल्यसदनारुचि कर्षितः । हारिद्रं हरिद्रावर्णं पीतरक्तशकृन्मूत्रः पीते रक्ते वा शकृन्मूत्रे यस्य सः भेकवर्णः बृहद्भेकवर्ण इति त्रिफलाद्यष्टद्रव्यैः कृतो र-चितः क्राथः कषायः मधुयुतो माक्षिकसहितः पीतः सन् कामलापांडुरोगजि-त् कामलाकृतो यः पांडुरोगः तस्य नाशको भवति यद्वा कामलारोगं पांडु-रोगं च जयतीत्यर्थः । यथाह चक्रपाणिदत्तः । फलत्रिकामृतावासातिक्ताभू-निंबजैः कृतः । क्राथः क्षौद्रयुतो हन्यात्पांडुरोगं सकामलमिति ॥ २७ ॥

भाषार्थ-त्रिफला वासा चिरायता नीवकी छाल कुटकी गिलोह सहत मिलाहुआ इनका काथ कामला ( कमलवायु ) और पाडुरोगको जीतता है ॥ २७ ॥

देवदालीफलरसो नस्यतो हंति कामलाम् ॥
संदेहो नात्र संफुल्लनीलोत्पलविलोचने ॥ २८ ॥

देवदालीति । देवदालीफलरसः देवदाल्याः कटकफलायाः फलं तस्य रसो वस्त्रनिष्पीडितजलं स नस्यतः नासिकाया प्रदानात् कामलां स्वनाम्ना ख्यातं रोग इति नाशयति । हे सफुल्लनीलोत्पलविलोचने सफुल्ल विकसितं यन्नीलोत्पलमिंदीवर तद्वद्विलोचने नेत्रे यस्याः तत्संबोधने अत्रास्मिन्नुपचारे संदेहो वापरस्त्वया न कार्य इति शेषः ॥ २८ ॥

भाषार्थ-हे भली प्रकार खिलेहुये नील कमलके समान नेत्रोवाली स्त्री देवदाली ( कटकफला ) के फलके रसको सूघे तो इसमे सदेह नही कामला रोग नष्ट हो जाता है ॥ २८ ॥

गिरिमृद्रात्रिधात्रीणामंजनं कामलापहम् ॥
इदं नहि भवेन्मिथ्या शपथस्तु तवांगने ॥ २९ ॥

अत्राजनमाह । गिरिमृदिति । गिरिमृत् गैरिक रात्रिर्हरिद्रा धात्री आमलकी एषा चूर्णस्य अंजनं कामलापहं भवति । हे अंगने इदमंजन मिथ्या नैव भवेदत्र तव शपथः शपनं मया क्रियत इति शेष. ॥ २९ ॥

भाषार्थ-गेरु हलदी आवला इन तीनोंका अंजन कामलारोगको नष्टकरताहै हे अंगने स्त्री तेरी सौगध यह मिथ्या नहीहै ॥ २९ ॥

अये मनोज्ञकुंडले स्फुरन्मुखेंदुमंडले ॥
गवां पयः सनागरं निहंति कामलाभरम् ॥ ३० ॥

अयेइति । अये मनोज्ञकुंडले मनोज्ञे शोभने कुंडले कर्णवेष्टने यस्याः तत्संबोधने हे स्फुरन्मुखेंदुमडले इंदोर्मंडलं वर्हिर्वेष्टन मुखमिंदुमडलमिवेति मुखेंदुमंडलं स्फुरद्दीप्यमान मुखेंदुमंडलं यस्याः तत्संबोधने गवा पयो गोमूत्र शुठ्या सहपीतं सत् कामलाभर कामलातिशयं निहति। इति कामलाप्रतीकारः॥ ३० ॥

भाषार्थ-हे शोभन कुंडलवाली हे चंद्रमंडलके समान प्रकाशमान मुखवाली स्त्री सोंठ मिलीहै जिसमें ऐसा गौओंका दूध कामलाकी अधिकताको नष्टकरताहै॥ ३०॥

**पिचुमंदरसेन मिश्रितैः पिचुमंदानिलशत्रुबीजकैः ॥**
**घटितां वटिकां भगांतरे भगशूलप्रशमाय धारयेत् ३१॥**

अथ योनिशूलप्रतीकारमाह । पिचुमंदरसेनेति । पिचुमंदो निंबः अनिलशत्रुः एरंडः तयोः पिष्टैर्बीजैः पिचुमंदरसेन मिश्रितैः पिचुमंदस्य निंबस्य रसेन मिश्रितैः संमर्द्य एकीकृतैस्तैर्घटितां रचितां वटिकां गुटिकां भगशूलप्रशमाय भगे जन्मवर्त्मनि शूलो रोगविशेषस्तस्य प्रशमाय नाशाय भवति भगांतरे संसारमार्गस्यांतर्धारयेत् ॥ ३१ ॥

भाषार्थ-नींब और अरंडके बीजोंको नीमके रसमें पीसकर आवलेके समान गोली बनाकर भग ( योनि ) के भीतर धारण करनेसे भगका शूल ( दरद ) शान्त होजाताहै ॥ ३१ ॥

**तरुण्युत्तरणीमूलं छागीसर्पिः सनागरम् ॥**
**शिवशस्त्राभिधां बाधां योनिस्थां हंति सत्वरम् ॥३२॥**

तरुणीति । हे तरुणि हे युवति उत्तरणीमूलमिंद्रवारुणीमूलं सनागरं शुंठ्या सह अजाज्येन युक्तं कार्यं तस्य लेपात् योनिस्थां शिवशस्त्राभिधां शिवस्य शस्त्रं शूलं तदेव अभिधा नाम यस्याः सा तां व्यथां बाधां सत्वरं तूर्णं हंति नाशयति ॥ ३२ ॥

भाषार्थ-हे तरुणि ( जवान ) इंद्रायणकी जड और सोंठ इन दोनोंको बकरीके घीमें घीसकर योनिमें लेप करै तो शीघ्रही योनिके शूलकी पीडाको नष्ट करताहै ॥ ३२ ॥

**गोपीवृकीदारुकिरातमूर्वातिक्तामृताविश्वघनेंद्रजानाम् ॥ क्वाथोऽयमुक्तो मृगलोचनानां दुष्टस्य दुग्धस्य विशोधनाय ॥ ३३ ॥**

अथ प्रसूतानां योषितां स्तन्यशोधनाय कषायमाह । गोपीति । गोपी सारिवा वृकी पाठा दारु देवदारु किरातो भूनिंबः मूर्वा पीलुपर्णी लता तिक्ता कटुकी अमृता गुडूची विश्वं शुंठी घनो मुस्तकः इंद्रजः एतासामौषधीनामयं

काथो मृगलोचनानामेणीनयनानां दुष्टस्य दोषयुक्तस्य दुग्धस्य बालजीवनस्य विशोधनाय निर्दोषीकरणाय उक्तोभिहितः ॥ ३३ ॥

भाषार्थ-सिरवाई पाठा देवदारु चिरायता मोरवेल कुटकी गिलोह सूंठ नागरमोथा इंद्रजव इन दश औषधियोंका क्वाथ स्त्रियोंके दुष्ट ( जिससे बालक रोगी होजाय ) दूधका शुद्धकरनेवाला कहा है ॥ ३३ ॥

कटंकटेरीरसजाब्दवासाभूनिंबभल्लीतिलजःकषायः ॥ क्षौद्रान्वितश्चंचललोचनानां नानाविधानिप्रदराणि हन्यात् ॥ ३४ ॥

अथ प्रदरप्रतीकारमाह । कटंकटेरीति । कटंकटेरी । दारुहरिद्रा रसजं रसाजनं अब्दो मुस्तकः वासा अटरूषः भूनिबश्चिरतिक्तः भल्ली भल्लातकः तिलो होमधान्य कटंकटेर्यादिभ्यः उत्पन्नः कषायः क्षौद्रान्वितो माक्षिकयुक्तः पीतः सन् चंचललोचनानां तरलेक्षणानां नारीणा नानाविधानि चतुःप्रकाराणि प्रदराणि हन्यात् । चातुर्विध्यमुक्तं भावेन स्वप्रकाशे । तं श्लेष्मपित्तानिलसन्निपातैश्चतुःप्रकार प्रवदंति वृद्धा इति ॥ ३४ ॥

भाषार्थ-दारुहलदी रसोत नागरमोथा वासा चिरायता भिलावा कालेतिल इन सात औषधियोंका क्वाथ सहत मिलाकर पीनेसे स्त्रियोंके अनेक प्रकारके प्रदररोगोंको नष्ट करताहै ॥ ३४ ॥

कुवलयदलनेत्रे तंदुलीयस्य मूलं रसजमपि समांशं भेषजद्वंद्वमेतत् ॥ हिमकरमुखि युक्तं तंदुलांभोमधुभ्यां प्रदरदरमुदीर्णं सुंदरीणां निहंति ॥ ३५ ॥

कुवलयदलनेत्रे इति । हे कुवलयदलनेत्रे कुवलयस्येंदीवरस्य दलं पत्रं तद्वन्नेत्रे यस्याः तत्संबोधने हे हिमकरमुखि हिमाः शीतलाः कराः किरणा यस्यैतादृशो हिमांशुः तद्वन्मुखमास्यं यस्याः तत्संबोधने तंदुलीयस्य अल्पमारिषस्य मूलं बुध्नः रजसमपि रसांजनं च एतद्द्वंद्वं मिथुन समांशं तुल्यभागं भेषजमौषध तंदुलांभोमधुभ्यां धान्यसाराणां क्षालितजलं मधु माक्षिकं च ताभ्यां

गुक्तं पीतं सत् सुंदरीणां स्त्रीणामुदीर्णं महत्तरं प्रदररोगं प्रदरस्यासृग्दरस्य दरं
ाध्वसं निहंति । तदुक्तं भावप्रकाशे । रसांजनं तंदुलकस्य मूलं क्षौद्रान्वितं
ंदुलतोयपीतम् । असृग्दरं सर्वभवं निहंतीति ॥ ३५ ॥

भाषार्थ–हे कमलके पत्तोंके समान नेत्रोंवाली हे चंद्रमुखी स्त्री चौलाईकी जड र-
ोत इन दोनोंको समान ले कूट पीसकर और चावलोंके पानीमें सहत डालकर पी-
तो स्त्रियोंके अत्यंतभी प्रदर रोगको नष्ट करताहै ॥ ३५ ॥

**मूलं गवाक्ष्याः स्मरमंदिरस्थं पुष्पावरोधस्य वधं करोति॥**
**अभर्तृकाणां व्यभिचारिणीनां योगोयमेवद्रुतगर्भपाते ३६**

अथ स्त्रीणां रजःप्रवृत्त्यवरोधस्य कुलटानां भ्रूणपातनस्य चोपायमाह ।
लमिति । स्मरमंदिरस्थमुपस्थे स्थापितं गवाक्ष्याः विशालायाः मूलं बुध्नः
ष्पावरोधस्य रजसस्तिरोधानस्य वधं करोति पुष्पप्रदं भवतीत्यर्थः । पुनः
भर्तृकाणां विश्वस्तानां व्यभिचारिणीनां कुलटानां च द्रुतगर्भपाते शीघ्रं
णस्याधःपातने चायमेव योग उपायोस्तीति शेषः ॥ ३६ ॥

भाषार्थ–जिन स्त्रियोंके तरुण अवस्थामें ही पुष्प नष्ट हो जांय वे इंद्रायणकी जडको
ती बनाकर भगके भीतर रक्खें तो खुलके रज होजातीहै और जो विधवा स्त्री व्यभि-
ारिणीहैं उनके गर्भ गिरानेके लियेभी यही योग श्रेष्ठहै ॥ ३६ ॥

**मध्वाज्ययष्टीमधुलुंगमूलं निपीय सूते सुमुखी सुखे-**
**न ॥ सुतंडुलांभःसितधान्यकल्कपानाद्वमिर्गच्छति**
**गर्भिणीनाम् ॥ ३७ ॥**

मध्वाज्येति । सुमुखी शोभनं मुखं यस्याः सा । स्वांगादिति ङीप् ।
ु माक्षिकं आज्यं सर्पिः यष्टी मधुयष्टिः लुंगमूलं बीजपूरस्य जटा
ेषां कल्कं कृत्वा पीत्वा च गर्भिणी सुखेन अक्लेशेन सूते प्रसूते । यथाह
क्रपाणिदत्तः । मातुलुंगस्य मूलानि मधुकं मधुसंयुतं । घृतेन सह पातव्यं
वं नारी प्रसूयते । इति सुखप्रसवमंत्रोपि पठनीयः स यथा । अस्ति गोदा-
ीतीरे जंभला नाम राक्षसी । तस्याः स्मरणमात्रेण विशल्या गर्भिणी भवे-
ति । अत्र मध्वाज्ये विषमे ग्राह्ये अन्यत् समं । अथ गर्भिणीनां सुतंडु-

लाभः सितधान्यकल्कपानात् शोभनतडुलजलेन सह सितधान्ययोः शर्करा-धान्याकयोः कल्कस्य पानात् पीतेः वमिर्वांतिर्गच्छति ॥ ३७ ॥

भाषार्थ-जिस स्त्रीके जननके समय अधिकपीडा होतीहो उसको मुलहटी विजौरे-की जड इनदोनोको पीस पानीमे मिलाकर गरमकरके पिलावे तो सुखसे बालक पैदा-होजाताहै और जिसगर्भवाली स्त्रीको छर्द अधिक आती होयतो वह धनियाका चूर्ण खा-कर मिश्री मिलाकर चावलोके पानीको पीवे तो वमन दूर होजातीहै ॥ ३७ ॥

धान्याब्दांबुद्वयारलुवमृतविषबलारेणुदुःस्पर्शशीतं ग-र्भिण्याः सूतिकाया अपि रुधिररुगामातिसारज्वरघ्नम्॥ मुस्ताशृंगीविषाणां प्रशमयति रजः सेवितं क्षौद्रयुक्तं बालानां वांतिकासज्वरमतिविषजं क्षौद्रयुक्तं रजो वा॥३८

धान्याब्देति । धान्या धान्याकं अब्दो मुस्ता अंबुद्वयमुशीरह्रीबेरे अर-लुः स्योनाकः अमृता गुडूची विषा अतिविषा बला वाट्यालकः रेणुः पर्प-टः दुःस्पर्शो यवासः शीत चदन एतेषां समाहारेण गर्भिण्याः स्त्रियः पुनः सूतिकायाः नवसूतिकाया अपि योषाया रुधिररुगामातिसारज्वरघ्नं रुधिर-रुक् च रक्तामातिसारश्च ज्वरश्च तान् हंत्येतादृशं । एतदुक्तं चक्रपाणिदत्त-मिश्रेण । ह्रीबेरारलुरक्तचंदनवराधान्याकवत्सादनीमुस्तोशीरयवासपर्पटविषा काथं पिबेद्गर्भिणी । नानावर्णरुजातिसारकगदे गर्भाश्रिते वा ज्वरे रोगोऽय मुनिभिः पुरा निगदितः सूत्यामयेपूत्तम इति । मुस्ता शृंगीविषाणां चूर्णीकृता ना रजः चूर्णं क्षौद्रयुत मधुसहितमवलेहतया सेवितं सत् बालानां स्तनधया-ना वातिकासज्वर प्रशमयति वा पक्षातरे क्षौद्रयुक्तमिति विषज रजः अति-विषाचूर्णं सेवित तादृश भवति । भावमिश्रस्तु । घनकृष्णारुणाशृगी चूर्णं क्षौ-द्रेण सयुतम् । शिशोर्ज्वरातिसारेऽन्विति विशेषमाह ॥ ३८ ॥

भाषार्थ-धनिया नागरमोथा खस सुगधवाला स्योनाक गिलोह अतीस वडियाला पित्तपापडा जवासा और लालचदन इन ग्यारह ओषधियोके काथको गर्भिणी या प्रसूतिका स्त्री पीवेतो रुधिरविकार रक्तातिसार आमातिसार और ज्वरको नष्ट करताहै और नागरमोथा काकडासिगी अतीस इन तीनोंके चूर्णको सहतमिलाकर दूधपीनेवाले

वालकको सेवन करावे तो छर्दी खांसी ज्वर इनको नष्ट करताहै अथवा एक अतीसका चूर्णही सहतमें मिलाकर चटानेसे वालकोंके सब रोगोंको दूर करताहै ॥ ३८ ॥

कुमारातिसारे कषायः समंगामदाशारिवारोध्रजःक्षौद्रयुक्तः ॥ मदारोध्रबिल्वाब्दमंजिष्ठवालाकषायोवलेहोऽथवा क्षौद्रयुक्तः ॥ ३९ ॥

## इतिश्रीदिवाकरसूनुलोलिंवराजविरचिते तृतीयोविलासः

शिशोरतिसारे क्वाथमाह । कुमारातिसार इति । समङ्गा मञ्जिष्ठा मदा धातकी सारिवा गोपी रोध्रः लोध्रः एषां चतुर्णां कषायः क्वाथः क्षौद्रयुक्तो माक्षिकमिश्रितः कुमारातिसारे देयः। उक्तं च । समङ्गाधातकीलोध्रसारिवाभिः शृतं जलम् । दुर्धरेऽपि शिशोर्देयमतिसारे समाक्षिकमिति । अपि च मदा धातकी रोध्रो लोध्रः विल्वं बिल्वफलमामम् अब्दो मुस्ता मञ्जिष्ठा समङ्गा वाला ह्रीवेरं मदादीनां कषायः अथवा एषामवलेहः क्षौद्रेण युक्तः कषायोवलेहो वा कुमारस्यातिसारे हितोऽभिहितः प्रसंगादत्र बालरोगाणां ग्रन्थान्तरोपलब्धं निदानादिकमुपपाद्यते । धात्र्यास्तु गुरुभिर्भोज्यैर्विषमैर्दोषजैस्तथा । दोषा देहे प्रकुप्यन्ति ततः स्तन्यं प्रदुष्यति १ मिथ्याहारविहारिण्या दुष्टा वातादयः स्त्रियः । दूषयन्ति पयस्तेन जायन्ते व्याधयः शिशोः २ वातदुष्टं शिशुःस्तन्यं पिबन् वातगदातुरः।क्षामस्वरः कृशाङ्गः स्याद्बद्धविण्मूत्रमारुतः ३ स्विन्नो भिन्नमलो बालः कामलापित्तरोगवान् । तृष्णालुरुष्णसर्वाङ्गः पित्तदुष्टं पयः पिबन् ४ श्लेष्मदुष्टं पिबन् क्षीरं लालालुः श्लेष्मरोगवान् । निद्रार्दितो जडः शूनो वक्राक्षश्छर्दवः शिशुः ५ ज्वराद्या व्याधयः सर्वे कथिता महतां तु ये । बालानामपि ते तद्वद्बोद्धव्या भिषगुत्तमैरिति ॥ ३९ ॥

इति श्रीकुलावधूतश्रीपरमहंसपरिव्राजकाचार्यश्रीमद्धरिहरानन्दनाथभारतिशिष्यब्रह्मावधूतश्रीसुखानन्दनाथविरचितायां सुखानन्दिन्यां वैद्यजीवनदीपिकायां तृतीयविलासस्य प्रकाशार्थः ॥ ३ ॥

भाषार्थ-मंजीठ धायके फूल सिरवाली पठानीलोद इनचार औषधियोंके क्वाथमे सहत मिलाकर पिलावे तो बालकका अतीसार नष्ट होजाताहै अथवा धायके फूल लोद बेलगिरी नागरमोथा मजीठ नेत्रवाला इन छः औषधियोंके क्वाथके पिलानेसे अथवा सहतमें इनकी चटनी चटानेसे बालकोंका अतीसार नष्ट होजाताहै ॥ ३९ ॥

इति श्रीपंडितमिहिरचंद्रकृते लोलिंबराजभाषाप्रदीपे

तृतीयो विलासः ॥ ३ ॥

---

विद्वल्ललामलोलिम्बनृपतेर्वाग्विलासतः ॥
तृप्तिर्न जायते स्वामिन् पुनः किञ्चिन्निरूपय ॥ १ ॥

अथ क्षयादिगदाना चिकित्सा श्रोतुं रत्नकलोपक्रमते । विद्वल्ललामेति । विदन्तीति विद्वासः आयुर्वेदज्ञाः तेषा ललामं प्रधानमुत्तमो यो लोलिम्बनृपतिस्तस्य लोलिम्बराजस्य वाचो वाण्या विलासः तस्याः श्रवणात्तृप्तिः अलंप्रत्ययः श्रवणेच्छानिवृत्तिर्न जायते अतः हे स्वामिन् पुनः किञ्चिन्निरूपय कथय ॥ १ ॥

भाषार्थ-हे स्वामिन् पडितोंके बीचमे भूषण जो आप लोलिंबराज है तुह्मारी वाणीके विलाससे तृप्ति नही होती इससे फिरभी कुछ कहो ॥ १ ॥

क्षयोत्पत्तिविनाशाय सिंहास्यः सेव्यतां सदा ॥
बहूनामस्य विश्वासो जातः कमललोचने ॥ २ ॥

लोलिम्बराज आह । क्षयेति । हेकमललोचने हेपद्मेक्षणे क्षयोत्पत्तिविनाशाय अदर्शनाय सिंहास्यो वैद्यमाता सदा सेव्यतां सर्वदा सेवनीयः सदाशब्देन अन्योपायेष्वपि वासकस्य त्यागो न कार्य इत्यभिप्रायः । उक्तं च वासाया विद्यमानायामाशाया जीवितस्य च । रक्तपित्ती क्षयी कासी किमर्थमवसीदतीति । अस्य सेवनस्य बहुतराणा विश्वासो निश्चयो जात उत्पन्नः ॥ २ ॥

भाषार्थ-हे कमलके समान नेत्रोंवाली स्त्री क्षयरोगकी उत्पत्तिके नाशार्थ सदैव वासाका सेवन करना क्योंकि इसका विश्वास बहुतसे मनुष्योंको होगयाहै ॥ २ ॥

बालकको सेवन करावे तो छर्दी खांसी ज्वर इनको नष्ट करताहै अथवा एक अतीसका चूर्णही सहतमें मिलाकर चटानेसे बालकोंके सब रोगोंको दूर करताहै ॥ ३८ ॥

कुमारातिसारे कषायः समंगामदाशारिवारोध्रजःक्षौद्रयुक्तः ॥ मदारोध्रबिल्वाब्दमंजिष्ठबालाकषायोवलेहोऽथवा क्षौद्रयुक्तः ॥ ३९ ॥

## इतिश्रीदिवाकरसूनुलोलिंबराजविरचिते तृतीयोविलासः

शिशोरातिसारे क्राथमाह । कुमारातिसार इति । समङ्गा मञ्जिष्ठा मदा धातकी सारिवा गोपी रोध्रः लोध्रः एषां चतुर्णां कषायः क्राथः क्षौद्रयुक्तो माक्षिकमिश्रितः कुमारातिसारे देयः। उक्तं च । समङ्गाधातकीलोध्रसारिवाभिः शृतं जलम् । दुर्धरेऽपि शिशोर्देयमतिसारे समाक्षिकमिति । अपि च मदा धातकी रोध्रो लोध्रः बिल्वं बिल्वफलमामम् अब्दो मुस्ता मञ्जिष्ठा समङ्गा बाला ह्रीबेरं मदादीनां कषायः अथवा एषामवलेहः क्षौद्रेण युक्तः कषायोवलेहो वा कुमारस्यातिसारे हितोऽभिहितः प्रसंगादत्र बालरोगाणां ग्रन्थान्तरोपलब्धं निदानादिकमुपपाद्यते । धात्र्यास्तु गुरुभिर्भोज्यैर्विषमैर्दोषजैस्तथा । दोषा देहे प्रकुप्यन्ति ततः स्तन्यं प्रदुष्यति १ मिथ्याहारविहारिण्या दुष्टा वातादयः स्त्रियः । दूषयन्ति पयस्तेन जायन्ते व्याधयः शिशोः २ वातदुष्टं शिशुःस्तन्यं पिबन् वातगदातुरः।क्षामस्वरः कृशाङ्गः स्याद्बद्धविण्मूत्रमारुतः ३ स्विन्नो भिन्नमलो बालः कामलापित्तरोगवान् । तृष्णालुरुष्णसर्वाङ्गः पित्तदुष्टं पयः पिबन् ४ श्लेष्मदुष्टं पिबन् क्षीरं लालालुः श्लेष्मरोगवान् । निद्रार्दितो जडः शूनो वक्राक्षश्छर्दवः शिशुः ५ ज्वराद्या व्याधयः सर्वे कथिता महतां तु ये । बालानामपि ते तद्वद्बोद्धव्या भिषगुत्तमैरिति ॥ ३९ ॥

इति श्रीकुलावधूतश्रीपरमहंसपरिव्राजकाचार्यश्रीमद्धरिहरानन्दनाथभारतिशिष्यब्रह्मावधूतश्रीसुखानन्दनाथविरचितायां सुखानन्दिन्यां वैद्यजीवनदीपिकायां तृतीयविलासस्य प्रकाशार्थः ॥ ३ ॥

भाषार्थ-मंजीठ धायके फूल सिरवाली पठानीलोद इनचार औषधियोंके क्वाथमें शहत मिलाकर पिलावे तो बालकका अतीसार नष्ट होजाताहै अथवा धायके फूल लोद बेलगिरी नागरमोथा मजीठ नेत्रवाला इन छः औषधियोंके क्वाथके पिलानेसे अथवा शहतमें इनकी चटनी चटानेसे बालकोंका अतीसार नष्ट होजाताहै ॥ ३९ ॥

इति श्रीपंडितमिहिरचंद्रकृते लोलिंबराजभाषाप्रदीपे

तृतीयो विलासः ॥ ३ ॥

---

विद्वल्ललामलोलिम्बनृपतेर्वाग्विलासतः ॥
तृप्तिर्न जायते स्वामिन् पुनः किञ्चिन्निरूपय ॥ १ ॥

अथ क्षयादिरोगाणां चिकित्सां श्रोतुं रत्नकलोपक्रमते । विद्वल्ललामेति । विदन्तीति विद्वांसः आयुर्वेदज्ञाः तेषां ललामं प्रधानमुत्तमो यो लोलिम्बनृपतिस्तस्य लोलिम्बराजस्य वाचो वाण्या विलासः तस्याः श्रवणात्तृप्तिः अलंप्रत्ययः श्रवणेच्छानिवृत्तिर्न जायते अतः हे स्वामिन् पुनः किञ्चिन्निरूपय कथय ॥ १ ॥

भाषार्थ-हे स्वामिन् पडितोंके बीचमें भूषण जो आप लोलिंबराज हैं तुह्मारी बाणीके विलाससे तृप्ति नहीं होती इससे फिरभी कुछ कहो ॥ १ ॥

क्षयोत्पत्तिविनाशाय सिंहास्यः सेव्यतां सदा ॥
बहूनामस्य विश्वासो जातः कमललोचने ॥ २ ॥

लोलिम्बराज आह । क्षयेति । हेकमललोचने हेपद्मेक्षणे क्षयोत्पत्तिविनाशाय अदर्शनाय सिंहास्यो वैद्यमाता सदा सेव्यता सर्वदा सेवनीयः सदाशब्देन अन्योपायेष्वपि वासकस्य त्यागो न कार्य इत्यभिप्रायः । उक्तं च वासायां विद्यमानायामाशाया जीवितस्य च । रक्तपित्ती क्षयी कासी किमर्थमवसीदतीति । अस्य सेवनस्य बहुतराणां विश्वासो निश्चयो जात उत्पन्नः ॥ २ ॥

भाषार्थ-हे कमलके समान नेत्रोंवाली स्त्री क्षयरोगकी उत्पत्तिके नाशार्थ सदैव वासाका सेवन करना क्योंकि इसका विश्वास बहुतसे मनुष्योंको होगयाहै ॥ २ ॥

अयि सुन्दरानने रुचिरापाङ्गतरङ्गलोचने ॥
नवनीतमधूपलाशनादुडुराजोपि भवेत्क्षयक्षयः ॥ ३ ॥

अयि सुन्दरि हे सुन्दरि हे सुन्दरानने सुंदरं शोभनमाननं यस्यास्तत्सम्बोधने हे रुचिरापाङ्गतरङ्गलोचने रुचिरौ शोभनौ यौ अपाङ्गौ नेत्रान्तौ तयोस्तरङ्गा लहर्यो ययोस्तादृशे लोचने नेत्रे यस्यास्तत्सम्बोधने नवनीतमक्तता ग्निसंयोगं नवोद्धृतं च मधु माक्षिकं च उपला शर्करा च त्रयाणामशनात् भक्षणात् उडुराजोऽपि उडुषु नक्षत्रेषु राजते । राजृदीप्तौ क्विप् । तस्यापि नक्षत्रेशस्यापि क्षयो यक्ष्मरोगः तस्य क्षयो भवेत् नष्टो भवेत् ॥ ३ ॥ इति क्षयप्रतीकारः ॥

भाषार्थ–हे सुंदरि हे सुन्दरमुखी हे शोभायमान नेत्रोंके प्रांतभागोंमे चंचल नेत्रवाली स्त्री नौनी सहत और मिश्री इनके भक्षणसे चंद्रमाकेभी क्षयरोगका नाश होताहै ॥ ३ ॥

अयि कोमलकुन्तलावलीविलसत्पल्लवमल्लिकाभरे ॥
त्रिफलाजनितः कषायकः सहितो गुग्गुलुना व्रणं जयेत् ॥ ४ ॥

अथ व्रणोपचर्यामाह । अयीति । अयीति मृदुलभाषणे सम्बोधनम् हे कोमलकुन्तलावलीविलसत्पल्लवमल्लिकाभरे कोमलानां मृदुलानां कुन्तलानां वालानामावली पङ्क्तिः अलकपरम्परा वा तया विलसन्ती विलाससहिता पल्लवयुक्ता मल्लिका पुष्पविशेषजातिर्वा तस्या भर उत्कर्षो यस्यास्तत्सम्बोधने । विलसन्मालतिकामनोहरे इति पाठान्तरं वा । गुग्गुलुना सहितः कुम्भोलूखलकेन युक्तस्त्रिफलाजनितः कषायकः व्रणमीर्मं जयेत् ॥ ४ ॥

भाषार्थ–अयि यह कोमलसंवोधनका वाचकहै हे कोमलकेशोंकी पंक्तिसे शोभायमान जो पत्तोंवाली चमेली तिससे उत्कर्ष ( वढाई ) वाली स्त्री त्रिफलाका काथ गुग्गुलखाकर पीनेसे व्रण ( घाव ) को जीतताहै ॥ ४ ॥

मदनज्वरकारिनामधेये रसिके रत्नकले प्रभातकाले ॥
शिशिराम्बु पिबन्मधुप्रयुक्तं गणनाथोपि भवेत्किलास्थिशेषः ॥ ५ ॥

अथ मेदःप्रतीकारमाह । मदनज्वरेत्यादिना । हे मदनज्वरकारिनामधेये मदनज्वरं कामज्वरं करोति तच्छील नामधेयं यस्यास्तत्सम्बोधने हे रसिके रसो रागः स्नेहोस्ति अस्याः । ठन् । तत्सम्बोधने हेरत्नकले प्रभातकाले अहर्मुखसमये मधुप्रयुक्तं माक्षिकसहितं शिशिराम्बु सुषीम पानीयं पिबन् गणनाथोपि लम्बोदरोऽपि किल निश्चयेन अस्थिशेषो भवेत् मेदसः क्षयात् । उक्तं च । प्रातर्मधुयुतं वारि सेवितं स्थौल्यनाशनमिति मेदःप्रतीकारः ॥ ५ ॥

भाषार्थ-हे कामदेवकोभी ज्वरकरनेवाले नामवाली हे रसिके हेरत्नकले स्त्री प्रातःकालके समय सहत मिलाकर शीतल जल पीनेसे लंबोदरभी पुरुषमें अस्थिही शेष रहजातेहै अर्थात् उसका मेदरोग नष्ट हो जाता है ॥ ५ ॥

त्रिकटुत्रिफलाकलिङ्गनिम्बत्रिवृदुग्राखदिरोद्भवः कषायः ॥ पशुमूत्रसमन्वितो निपीतः क्रिमिकोटीरपि हन्ति वेगतोऽयम् ॥ ६ ॥

अथ क्रमिरोगस्य प्रतीकारमाह । त्रिकट्विति । त्रिकटु त्र्यूषण त्रिफला प्रसिद्धा कलिङ्गमिन्द्रयव निम्बो हिङ्गुनिर्यासः त्रिवृत् रोचनी उग्रा वचा खदिर. खदिरसारः एभ्यः उद्भवो यस्य एतादृशोयम् कषायः क्वाथः पशुमूत्रसमन्वित. गोमूत्रसंयुक्तो निपीतः कृतपानः क्रमिकोटीरपि बहून् क्रमीन् वेगतो जवेन हन्ति नाशयति कोटिशब्दो बहूनां बोधकः ॥६॥ इति क्रमिप्रतीकारः॥

भाषार्थ-सोंठ मिरच पीपल त्रिफला इंद्रजौ नींबकी छाल निसोत वच और खैरसार इन ग्यारह औषधियोंका यह क्वाथ गोमूत्र मिलाकर पीनेसे क्रमि ( कीडे ) योंकी कोटीकोभी वेगसे नष्टकरताहै ॥ ६ ॥

जातीप्रवालत्रिफलायवासदार्वीत्रियामामृतगोस्तनीनाम् ॥ कषायकः क्षौद्रयुतो निहन्ति मुखस्यपाकं मुखपङ्कजस्यम् ॥ ७ ॥

अथ मुखपाकप्रतीकारमाह । जातीप्रवालेति । जातीप्रवालानि मालतीपत्राणि च त्रिफलापथ्याबिभीतधात्रीणा समाहारः यवासा यासः दार्वी त्रियामा

पचम्पचा अमृता गुडूची गोस्तनी मृद्वीका जातीप्रवालादीनामष्टानां कषायकः क्वाथः क्षौद्रयुतो मधुसंयुक्तः मुखपंकजस्थं मुखस्य पाकं गण्डूषकरणात् निहन्ति । उक्तं च चक्रपाणिदत्तेन । जातीपत्रामृताद्राक्षायासदार्वीफलत्रिकैः । क्वाथः क्षौद्रयुतः शीतो गण्डूषो मुखपाकनुदिति ॥७॥ इति मुखपाकोपचारः ॥

भाषार्थ-चमेलीकेपत्ते त्रिफला जवासा दारुहलदी गिलोह मुनक्का इन नौ औषधियोंका क्वाथ सहतमिलाकर पीनेसे मुखकमलमें जातेही मुखके पकनेको नष्ट करताहै॥७॥

**भूनिम्बनिम्बत्रिफलापटोलीवासामृतापर्पटभृङ्गराजैः॥**
**क्वाथो हरेत्क्षौद्रयुतोऽम्लपित्तं चित्तं यथा वारवधूविलासः**

अथाम्लपित्तस्य चिकित्सामाह । भूनिम्बेति । भूनिम्बादिदशभिः कृतः क्वाथः सः क्षौद्रयुतः पीतः सन् अम्लपित्ताभिधं रोगं हरेत् । तत्र दृष्टांतः यथा वारवधूः वारस्य जनसमूहस्य वधूः स्त्री तस्या विलासः कामिनश्चित्तं यथा हरेत् तथेत्यर्थः ॥ ८ ॥ इति अम्लपित्तप्रतीकारः ॥

भाषार्थ-चिरायता नींबकीछाल त्रिफला पलवलके पत्ते वांसा गिलोह पित्तपापडा भृंगराज इन दश औषधियोंका क्वाथ सहत मिलाकर पीनेसे इसप्रकार अम्लपित्तरोगको नष्ट करताहै जैसे वेश्याओंका विलास चित्तको हरलेताहै ॥ ८ ॥

**स्फुरत्सुन्दरोदारमन्दारदामप्रकामाभिरामस्तनद्व-**
**न्द्वरम्ये ॥ हरिद्रारजोमाक्षिकाभ्यां विमिश्रः शिवायाः**
**कषायः प्रमेहापहारी ॥ ९ ॥**

अथ प्रमेहस्य चिकित्सामाह । स्फुरदिति । उदारो महांश्चासौ मन्दारश्च तथा तस्य दाम माला स्फुरत् प्रकाशमानं च तत्सुन्दरं शोभनं च तथा स्फुरत्सुन्दरं यत् उदारमन्दारदाम तेन प्रकामं यथेप्सितमभिरामं मनोज्ञम् ईदृशं यत् स्तनयोर्द्वन्द्वं तेन रम्या रमते मनो यत्र । रमेः पोरदुपधादिति यत् । मनोहरा तत्संबोधने हे स्फुरत्सुन्दरोदारमन्दारदामप्रकामाभिरामस्तनद्वन्द्वरम्ये शिवाया धात्र्याः कषायः क्वाथः स च हरिद्रारजसा निशाचूर्णेन माक्षिकेण मधुना च विमिश्रो युक्तः पीतः सन् प्रमेहापहारी मूत्रदोषापहर्ता भवतीति ९ ॥

भाषार्थ-हे प्रकाशमान और सुंदर जो उदार मदारके पुष्पोंकी माला उससे यथेच्छ मनोहर और रमणीय दोनोस्तन जिसके ऐसी स्त्री आवलेके काढेमें हलदी और सहत मिलाकर पीवे तो प्रमेहको हरताहै ॥ ९ ॥

समधुश्छिन्नास्वरसो नानामेहनिवारणः ॥
वदन्ति भिषजः सर्वे शरदिन्दुनिभानने ॥ १० ॥

अपिच । समधुरिति । हेशरदिन्दुनिभानने शारदशशिसमानास्ये समधुर्मधुसहितः छिन्नाया गुडूच्याः स्वरसः वस्त्रनिष्पीडितो रसः । स्वरसलक्षणं यथा । अहतात्तत्क्षणाकृष्टात् द्रव्यात् क्षुण्णात् समुद्भवेत् । वस्त्रान्निष्पीडितो यश्च स्वरसो रस उच्यत इति । स च पीतः सन् नानामेहनिवारणः सर्वमेहनिराकर्ता भवतीति सर्वे विश्वे भिषजो गदहर्तारो वदन्ति व्यक्तं कथयन्ति । तदुक्तम् । गुडूच्याः स्वरसः पेयो मधुना सर्वमेहजिदिति । अपि च । हरिद्रामधुसंयुक्तं रसो धात्र्याः समाक्षिक इति । सर्वमेहजिदिति पूर्वेण सम्बन्धः ॥ १० ॥

भाषार्थ-हे शरदऋतुके चंद्रमाके समान मुखवाली स्त्री गिलोहको कूट और उसके निचोडेहुये रसमें सहत मिलाकर पीवे तो सब प्रकारके प्रमेह रोगोंको नष्ट करता यह बात सब वैद्य कहते हे ॥ १० ॥

रतिकेलिकलाकुशले विलसद्वलये मलयेन समानकुचे।
अमृताव्रतती रुबुतैलवती दलयेदऽनिलास्रमुदारतरम्।

अथ वातरक्तस्यौषधमाह । रतिकेलीत्यादिना । हे रतिकेलिकलाकुशले रतो सुरते याः केलयः परीहासाः तासु सुरतक्रीडासु याः कलाः कपटरूपा तासु कुशला शिक्षिता तत्सम्बोधने हे विलसद्वलये विलसती विलासयुक्ते वलये कङ्कणे यस्याः तत्संबोधने मलयेन चन्दनाद्रिणा समानौ स्थूलत्वेन कठिनत्वेन च तुल्यौ कुचौ स्तनौ यस्याः तत्सम्बोधने । अमृताव्रततिः तन्त्रिकावल्ली रुबुतैलवती एरण्डस्नेहयुक्ता उदारं महत् अनिलास्रं वातरक्तरोगं दलयेत् नाशयेत् पञ्चाङ्गुलतैलेनामृतायाः कायः पेय इति भावः ॥ ११ ॥

भाषार्थ-हे रति ( भोग ) को हसीकी कलाओंमें कुशल हे प्रकाशमान कङ्कणवाली हे मलयपर्वतके समान कुचाओंवाली स्त्री गिलोहके क्वाथमें अरंडका तेल डालकर पीवे तो अत्यतभी वातरक्त रोगको नष्ट करताहै ॥ ११ ॥

**मधूकारुणागोपिकादेवधूपैः शृतं वातरक्तापहं पिण्ड-तैलम्॥ कषायः सहैरण्डतैलेन पीतस्तथैरण्डसिंहा-स्यवत्सादनीनाम् ॥ १२ ॥**

अपि च । मधुकेति । मधुकायष्टी अरुणा माञ्जिष्ठा गोपिका श्यामा देव-धूपो रालः एतैः शृतं पक्वं पिण्डतैलसंज्ञकं वातरक्तापहं भवति । अपि च । कषायइति । एरण्डो गन्धर्वहस्तकः सिंहास्यो वाजिदन्तकः वत्सादनी छिन्न-रुहा त्रयाणां कषायः एरण्डतैलेन सह पीतः सन् तथा वातरक्तापहो भवति। अत्र चक्रपाणिदत्तेन एरण्डस्थाने चतुरङ्गुल उक्तः । यथा वासागुडूचीचतु-रङ्गुलानामेरण्डतैलेन पिबेत् कषायम् । क्रमेण सर्वाङ्गजमप्यशेषं जयेदसृ-ग्वातभवं विकारमिति ॥ १२ ॥ इति वातरक्तचिकित्सा ॥

भाषार्थ–मुलहटी मंजीठ शिरवायी और राल इन चार औषधियोंसे पकाया हुआ तैल वातरक्तको नष्ट करताहै अथवा अरंडकीजड वांसा गिलोह इन तीन औषधियोंके क्काथमें अरंडका तेल मिलाकर पीवे तो वातरक्त जाता रहता है ॥ १२ ॥

**लशुनजीरकसैन्धवगन्धकत्रिकटुरामठचूर्णमिदं स-मम्॥ सपदि निम्बुरसेन विषूचिकां हरति भो रति भोगविचक्षणे ॥ १३ ॥**

अथ विषूचिकोपायमाह । लशुनेत्यादिना । लशुनो रसोनः जीरकोऽजा-जी सैन्धवो माणिमन्थं गन्धकः सौगन्धिकः त्रिकटु विश्वोपकुल्यामरीचात्म-कं त्र्यूषणं रामठं हिंगु । लशुनादीनां समाहारः समाहारे नपुंसकम् । रसोना-दीनां चूर्णं रजः इदं सर्वं समानभागं ग्राह्यं तदिदं निम्बुरसेन निम्बुकजलेन सह पीतं वा निम्बुकजलेन वटिकां कृत्वा भक्षितं सत् भो रतिभोगविचक्षणे सुरतसम्भोगप्रवीणे सपदि शीघ्रं विषूचिकां विषूचिं हरति नाशयति । अस्या निरुक्तिलक्षणे तु । सूचीभिरिव गात्राणि तुदन्संतिष्ठतेऽनिलः । यत्राजीर्णें च सा वैद्यैर्विषूचीति निगद्यत इति । न तां परिमिताहारा लभन्ते विदितागमाः । मूढास्तामजितात्मानो लभन्तेऽशनलोलुपाः ॥ १३ ॥

भाषार्थ-हे रतिके भोगनेमे चतुर स्त्री लहसन जीरा सेंधानमक गंधक सोंठ मिरच पीपल और हींग इन आठ औषधियोंको कूट छान और नीबुके अर्कमें खरल करके चनेके समान गोली बाधले यह गोली क्षणभरमें विसूचिका (हैजा) रोगको नष्ट करतीहै ॥ १३ ॥

रुग्लाजाब्जवटप्ररोहमधुकैर्मध्वन्वितैःकल्पिता उग्रा माशु तृषां भृशं प्रशमयेदास्यान्तरस्था वटी ॥ एला-लाजलवङ्गनागचपलास्त्रीकोलमज्जाम्बुदश्रीखण्डं मधुखण्डयुक्प्रशमयेद्वान्ति त्रिदोषोद्भवाम् ॥ १४ ॥

अथ पूर्वार्धेन पिपासायाः परार्धेन वमथोश्चोपचारमाह । रुगिति । रुक् कुष्ठौषधम् लाजा भृष्टाः सतुषतण्डुला अब्ज पद्मफलम् वटप्ररोहो न्यग्रोधाङ्कुरो यक्षावासः स्कन्धजटेति यावत् मधुकं क्लीतकम् एतैर्मध्वन्वितैर्माक्षिकयुक्तैः कल्पिता कृता वटी गुटिका सा च आस्यान्तरस्था मुखाभ्यन्तरे धृता सती उग्रा तीव्रा तृषामाशु शीघ्रं भृशं प्रकर्षेण प्रशमयेत् शान्तिं नयेत् । एलाः स्थूलैलाः लाजाः लवङ्ग देवकुसुमं नागो नागकेशरः चपला कणा स्त्री प्रियङ्गुः कोलमज्जा बदरी बजिसारः अम्बुदो मुस्तकः श्रीखण्ड चन्दनम् । एलादीनां समाहारस्तेन क्लीबता । एतेषां चूर्णं मधुखण्डयुक् क्षौद्रसिताभ्यामालोड्यावलीढं सत् त्रिदोषोद्भवा वान्तिं छर्दिं प्रशमयेत् शान्तिं नयेत् ॥ १४ ॥

भाषार्थ-कूट धानकी खील कमलगटा बडकीगोम और मुलहटी इन पाच औषधियों को कूट छान और सहत डालकर बनायी गोली मुखमें रखनेसे अत्यंत तृषाकोभी भली प्रकार शात करती है और बडी इलायची धानकी खील लौंग नागकेशर पीपल महदी बेरकी गुठलीकी गिरी नागरमोथा सपेदचदन इन नौ औषधियोंको समान ले और मिश्री मिले इनके चूर्णको सहतमें चाटे तो त्रिदोषसे पैदा हुयी वमनभी नष्ट हो जाती है ॥ १४ ॥

रमारम्याकारे चतुरवचने चारुचिकुरे
विमूल्यालंकारे करतललसन्नीलनलिने ॥

**निदाघः संजातस्तव किमु सरोजन्मकदली-**
**दलैः क्लृप्ते तल्पे लघु स्वपिहि साहित्यनिपुणे ॥ १५ ॥**

श्लोकेनैकेन निदाघोपचारमाह रमेत्यादिना । हे रमारम्याकारे रमा लक्ष्मीस्तद्वद्रम्यः स्वभावसुन्दरः आकार आकृतिर्यस्यास्तत्सम्बोधने पुनः भोश्चतुरवचने चतुराणि सूत्थानानि वचनानि भाषणानि यस्यास्तत्सम्बोधने हेचारुचिकुरे चारवश्चिकुराः कुन्तलाः यस्यास्तत्सम्बोधने । पुनश्च अहो विमूल्यालङ्कारे विमूल्या महार्घा अलङ्कारा आभरणानि यस्यास्तत्सम्बोधने अपि च करतललसन्नीलनलिने करस्य तलोऽनूर्ध्वभागस्तस्मिन् लसत् शोभमानं नीलं सुराज्वालेवाद्भुतवर्णविशिष्टं नलिनमरविन्दं यस्यास्तत्सम्बोधने तव निदाघो घर्मः संजातः किमु इति प्रश्ने यदि घर्मः संजातस्तर्हि साहित्यनिपुणे हेकाव्यप्रबन्धप्रवीणे । सरोजन्मनः पङ्कजस्य कदल्याः रम्भायाश्च दलानि पर्णानि तैः क्लृप्ते कल्पिते तल्पे शय्यायां लघु क्षिप्रं स्वपिहि शयनं कुरु ॥ १५ ॥

भाषार्थ-हे लक्ष्मीके समान आकार और हे चतुर वचन और हे सुंदर केशों और अमोल भूषणोंवाली और हे करतलपर प्रकाशमान नील कमलकी रेखावाली और हे काव्यके प्रबंधमें चतुर स्त्री क्या तेरेको गरमी होगयीहै तो कमलके अथवा केलेके पत्तोंकी शय्या बनाकर उसपर शीघ्र शयन कर ॥ १५ ॥

**रसद्विजीरद्विनिशामरीचसिन्दूरदैत्येन्द्रमनःशिलानाम् ॥**
**चूर्णीकृतानां घृतमिश्रितानां त्रिभिः प्रलेपैरपयाति पामा १६**

अथ पामोपचारमाह रसेत्यादिना । रसः शिववीजं द्विजीरौ शुक्लकृष्णभेदात् द्वौ जीरकौ द्विनिशे हरिद्रादारुहरिद्रेति भेदात् द्वे पीते मरीचं भूषणं सिन्दूरं नागसम्भवं दैत्येन्द्रो गन्धकः मनःशिला कुनटी चूर्णीकृतानां सम्यक्पिष्टानां पुनश्च घृतमिश्रितानां माहिषनवनीतसहितानामेतेषां त्रिभिः प्रलेपैः पामा कच्छूः अपयाति नश्यति ॥ १६ ॥

भाषार्थ-पारा सपेदजीरा स्याहजीरा हलदी मिरच दारुहलदी सिंदूर गंधक और मनसिल इन नौ औषधियोंको खूब पीस घीमें खरलकरै तो तीन दिनकेही लेपप्रामा ( खुजली ) नष्ट होजातीहै ॥ १६ ॥

मदनसैन्धवगुग्गुलगैरिकाज्यमधुवालकपङ्कविलेपनात् ॥
स्फुटितमप्यखिलं चरणद्वयं विकचतामरसप्रतिमंभवेत् १७

अथ विपादिकानिग्रहमाह । मदनेत्यादिना । मदनः सिक्थकं सैन्धवं मणिमन्थनं गुग्गुलुर्देवधूपः गैरिकं गवेधुकं आज्यं घृतं मधु क्षौद्रं वालकं ह्रीबेरं एषां पङ्कस्य निपद्वरस्य विलेपनाल्लेपात् स्फुटितमपि विकसितमपि चरणद्वयं मङ्घ्रियुग्मं विकच प्रस्फुटितं यत् तामरसं पद्मं तस्य प्रतिमं सदृशं भवेदित्यर्थः । स्युरुत्तरपदे प्रख्यः प्रकारः प्रतिमो निभ इति हेमचन्द्रः ॥ १७ ॥

भाषार्थ–मोम सेंधालवण गुगल गेरु घी सहत और खस इन दवाओंको खूब खरल करके चरणोंपर लेप करै तो बिवाईयोंसे फटेहुयेभी चरण खिलेहुये कमलके समान होजातेहै ॥ १७ ॥

पथ्यातिलारुष्करकैःसमांशैर्गुडेन युक्तैःखलुमोदकःस्यात् ।
दुर्नामपाण्डुज्वरकुष्ठकासश्वासं जयेत् प्लीहरुजं च तद्वत् १८

अथ दुर्नामादिरोगाणां निग्रहमाह । पथ्येत्यादिना । पथ्या हरीतकी तिलाः स्वनाम्ना प्रसिद्धाः पितृतर्पणाः अरुर्व्रणं करोति । दिवाविभेति टः । अरुष्करको भल्लातक एतैः समांशैः समानभागैर्गुडेन द्विगुणेन युक्तैः खलु निश्चये मोदको लड्डुकः स्यात् । स खादितः सन् दुर्नामपाण्डुज्वरकुष्ठकासश्वास तद्वत् प्लीहरुजं च जयेत् ॥ १८ ॥

भाषार्थ–हरड तिल और शुद्धभिलावा इन तीनोंको समान लेकर सबसे दूने पुराने गुडमें एक २ तोला भरकी गोली बनाकर खायतो यह मोदक ( लड्डु ) बवासीर पाडु ज्वर कुष्ठ कास श्वास तापतिल्लि तिल्ली इन सबको जीतताहै ॥ १८ ।

भल्लातकासीसहुताशदन्तीमूलैर्गुडस्नुग्रविदुग्धदिग्धैः ॥
लेपोचितैर्गच्छति गण्डमाला समीरवेगादिवमेघमाला १९

अथ गण्डमालोपचारमाह भल्लातेति । भल्लातो वीरवृक्षः कासीस गौडभाषया हीराकसीति ख्यातः उपधातुविशेषः हुताशश्चित्रकः दन्तीमूलं एरण्डपत्रिका अभः एतैश्चतुर्भिः । कथम्भूतैः गुडशिग्रविदुग्धदिग्धैः गुडेन स्नुहीदुग्धे

अर्कदुग्धेन च दिग्धैः लिप्तैर्युक्तैरिति यावत् पुनश्च लेपोचितैः लेपक्रियायोग्यैः कृतलेपा गण्डमाला समीरवेगान्मेघमालेव गच्छति ॥ १९ ॥

भाषार्थ–भिलावा कसीस चीता अजैपालकी जड इन चार औषधियोंको खूब पीस और इनमें गुड और थोहर और आकका दूध मिलाकर लेप करै तो गंडमाला इस प्रकार नष्ट होजाती है जैसे पवनके वेगसे मेघमाला ॥ १९ ॥

गोमूत्रेण कृतः कलिङ्गकटुकापाठावृषाब्दामरक्वाथः
क्षौद्रयुतो निहन्ति सकलान् कण्ठामयानुत्कटान् ॥
पाठातेजवतीरसाञ्जनयवक्षारोपकुल्यानिशादेवानां
मधुना कृता मुखधृता तद्वद्वटी वर्तते ॥ २० ॥

अथ कण्ठामयस्य प्रतीकारमाह । गोमूत्रेणेति । कलिङ्गमिन्द्रयवं कटुका कट्वी पाठा वृकी वृषोटरूपः अब्दो मुस्तकः अमरो देवदारु एषां क्वाथो गोमूत्रेण साधितः पुनः क्षौद्रयुतो मधुसहितः पीतः सन् उत्कटान् दुःसहान् सकलान् कण्ठामयान् निहन्ति । पाठा वृकी तेजवती गजपिप्पली रसाञ्जनं तार्क्ष्यं शैलम् यवक्षारो यवाग्रजः उपकुल्या वैदेही निशा हरिद्रा देवो देवदारुः चूर्णीकृतानामेषां मधुना कृता वटी गुटिका मुखे धृता सती तद्वद्वर्तते पूर्वोक्तक्वाथवत् कण्ठामयघ्नी भवति ॥ इति कण्ठरोगप्रतीकारः ॥ २० ॥

भाषार्थ–इंद्रजव कुटकी पाठा वांसा नागरमोथा और देवदारु-इन छैः औषधियोंका गोमूत्रमें बनाकर क्वाथको सहत डालकर पीवे तो सब कंठरोगोंको और पाठा पीपल रसोत जवाखार इनका सहतमें गोली बनाकर मुखमें रखै तो संपूर्ण मुखके रोगोंको नष्ट कर देतीहै ॥ २० ॥

प्राणेश्वर प्रियतमे वद किं वदामि तत्कान्त तात्किमु
मृगाक्षि यदग्निकारि॥सम्यक् शृणु प्रणयिनि प्रणयिन् शृणोमि खादेत्सनिम्बुरससैन्धवशृङ्गवेरम् ॥ २१ ॥

मन्दाग्नेश्चिकित्सामाह । प्राणेश्वरेति । उत्तरप्रत्युत्तरेणास्य श्लोकस्य व्याख्या । हे प्राणेश्वर हे प्राणनाथ तद्वद हे प्रियतमे हेप्रेष्ठे तत्किं वदामि हे का-

न्त हे पते यदग्निकारि तत् किमु हे मृगाक्षि हे प्रणयिनि हे जाये तत् सम्यक् सन्देह विहाय शृणु हे प्रणयिन् हे स्वामिन् शृणोमि सनिम्बुरससैन्धवं शृङ्गवेरमार्द्रकमाग्निकारि भवतीत्युक्तम् ॥ २१ ॥

भाषार्थ–अब लोलिंबराज और रत्नकलाके प्रश्नोत्तरसे मदाग्निकी चिकित्सा कहतेहैं कि हे प्राणोके ईश्वर कुछ कहो हे अत्यंत प्यारी क्या कहुं हेकान्त जो अग्निको बढावे वह कहो हे मृगनयनि हे प्रीतिवाली स्त्री तू भली प्रकार और संदेहको छोडकर सुन हे प्रीतिवाले स्वामी सुनतीहू नींबुका रस और सीधालवण मिलाहै जिसमें ऐसे अदरकको खाय तो जठराग्नि बढजाती है ॥ २१ ॥

हिङ्गुक्षारद्वयसैन्धवसौवर्चलविडपिप्पलीग्रन्थिक-
चित्रकचव्यमरिचकुस्तुम्बरीबर्बरीतिन्तिडीषड्ग्रन्था-
जमोदाम्लवेतसपुष्करमूलनागरकरञ्जजीरकहरी-
तकीवृकीवपुषाभिः ॥ विरचितं चूर्णमिदमश्मरीहृ-
दयगलरोगविबन्धाध्मानहिक्कावर्ध्मगुदजगुल्मस-
कलशूलप्लीहपाण्डुश्वसनकसनदहनसदनवदनवि-
रसताविरतये समर्थतरम् ॥ २२ ॥

अश्मर्यादिरोगाणा भेषजमाह । हिङ्ग्वित्यादिना । हिङ्गु बाल्हीक क्षा द्वयं सर्जिकायवक्षारौ सैन्धवं सौवर्चलमक्षं चित्रको वह्निसञ्ज्ञकः चव्य चवि का मरिच कोलक कुस्तुम्बरी धान्याक बर्बरी अजगन्धा तिन्तिडी बीज म्लम् षड्ग्रन्था वचा अजमोदा अम्लवेतसः फलाम्ल. पुष्करमूल श्वासारि नागरं शुण्ठी करञ्जश्चिरविल्वः जीरको जरणः हरीतकी वृकी पाठा वपु हिङ्ग्वादिभिर्विरचित चूर्णमेतेषा पेषणेनोद्भूत रज. अश्मर्यादीनां विरत निवृत्तये समर्थतरम् अतिशयशक्तियुक्त भवतीत्यन्वयः । तत्राश्मरी मूत्रकृच्छ्र रोगः हृदयरोगो हृद्रोग मलरोगो मलाङ्कुरः विबन्धो मूत्रपुरीषरोधक आ नाहरोग. आध्मान. साटोपमत्युग्ररुजमाध्मातमुदरंभृशम् । आध्मानमिति जा नीयाद् घोर वातनिरोधजमिति लक्षितो वातव्याधिः हिक्का ऊर्ध्ववातात्मकं

रोगविशेषः वर्ध्म वंक्षणःसन्धिजशोफः गुदजमर्शगुल्मः कोष्ठान्तर्ग्रन्थिरूपी रोगविशेषः सकलशूलाः दोषैः पृथक्समस्तामद्वन्द्वैः शूलोऽष्टधा भवेदित्युक्ताः सर्वे शूलाः प्लीहा कुक्षिवामपार्श्वस्थो मांसखण्डः पाण्डू रोगविशेषः दहनसदनमग्निमान्द्यं वदनविरसतास्यवैरस्यम् ॥ २२ ॥

भाषार्थ–हींग सज्जीखार जवाखार सेंधा काला मनियारी ३ नमक पीपल पीपलामूल चीता चव मिरच धनिया वरवरा ईमली वच अजमोद अम्लवेत पोहकरमूल सोंठ करंजवा जीरा हरडे पाठा हौवेर इन सब औषधियोंकी समानले कूट छानकर लियाकरे तो पथरी हृदयरोग गलरोग बंधा अफरा हुचकी वद ववासीर गुल्मरोग और सब प्रकारके शूल तिल्ली पांडुरोग खांस कास अग्निकी मंदता मुखका बद जायका इन सब रोगोंके नष्ट करनेमें यह चूर्ण समर्थ है ॥ २२ ॥

हिङ्गुव्योषाजमोदाद्विजरणलवणं प्राग्भजेत्साज्यभुक्तं
कुर्याज्जाज्वल्यमानं ज्वलनमनिलजं गुल्ममेतन्निहन्ति ॥
वृक्षाम्लाम्लाग्निपथ्यात्रिकटुपटुविडंजन्तुजिज्जीरयुग्मं
दीप्यौसौवर्चलंचाऽचलमपिसकलं भस्मसाच्चकरोति २३

हिङ्गु रामठम् व्योषं त्रिकटु अजमोदा यवानिका द्विजीर्णं जीरकद्वयम् लवणं सैन्धवम् एतदुक्तं हिङ्ग्वष्टकाख्यं चूर्णं साज्यं घृतमिश्रितं प्राग् भजेत् भोजनात् प्रथमं स्वीकुर्यात् । तदेतत् भुक्तं सत् ज्वलनं जाठराग्निं जाज्वल्यमानं देदीप्यमानं कुर्यात् । अनिलजं वातात्मकं गुल्मं च निहन्ति । अपि च वृक्षाम्लेति । वृक्षाम्लं तिन्तिडीकम् अम्लोऽम्लवेतसः अग्निश्चित्रकः पथ्या हरीतकी त्रिकटु त्र्यूषणं पटु माणिमन्थं विडं कृत्रिमलवणं जन्तुजित् जन्तुघ्नं जीरयुग्मं कृष्णशुक्लभेदाज्जीरकद्वयं दीप्यावजमोदायवान्यौ सौवर्चलं सुष्ठुवर्च्यते वर्चदीप्तौ वलच् अण् । सौवर्चलं कृष्णलवणम् चशब्दादेषां चूर्णं सकलमखिलमभ्यवहृतमचलमपि अहार्यमपि भस्मसाच्चकरोति भस्माधीनमतिशयेन करोति सर्वं पाचयतीत्यर्थः ॥ २३ ॥

भाषार्थ–अब हिंगाष्टकचूर्ण लिखतेहैं हिंग सोंठ मिरच पीपल अजमायन सपेद और स्याहजीरा और सेंधानमक इन आठ औषधियोंमें सात औ-

षधि समानभाग लेनी और एक औषधिके आठवे भाग हींगको डाले इस चूर्णको घीमें मिलाकर प्रातःकाल भोजनसे पहिले खानेसे जठराग्निको तेज और वायगोलेको नष्ट करताहै अथवा इमली अमलवेत चीता हरडे सोंठ मिरच पीपल सैंधा और काला आर मनियारी तीनों लवण वायविडग सपेद स्याह दोनो जीरे अजमोद अजमायन इन सब औषधियोंको कूट छान चूर्ण बनाकर लिया करे तो पत्थरके समान अजीर्णकाभी भस्म करदेताहै ॥ २३ ॥

शुण्ठी बाणमिता कणार्णवमिता दीप्यायवान्योः क्रमा-
द्भागानां त्रितयं द्वयं च लवणाद्भागः शिवैतत्समा ॥
कोष्ठाटोपरुगामगुल्ममलहृल्लोलिम्बराजोदित-
श्चूर्णोद्रीनपि भस्मसात्प्रकुरुते किं भोजनं भो जनाः॥२४॥

अथ लोलिम्बराजाभिधं चूर्णमाह । शुण्ठीति । शुण्ठी बाणमिता शुण्ठ्याः पञ्चभागा ग्राह्याः कणार्णवमिता पिपल्याश्चत्वारः दीप्या अजमोदा तस्य भागत्रितय यवान्या भागद्वय लवणादेको भागो ग्राह्यः एतत्समा एतैः पञ्चदशभिर्भागैः समा समाना शिवा हरीतकी ग्राह्या । भो जनाः हे लोकाः कोष्ठटोपरुगामगुल्ममलहृत् कोष्ठे कुक्षौ आटोप आनाहो निबन्ध इति यावत् यद्वा आटोपो वायुजनितो गुडगुडाशब्दः रुक् कोष्ठे शूलम् आम पट्प्रकाराजीर्णरोगमध्ये रोगविशेषः गुल्मो वायुजनित उदरे वर्तुलाकारो रोगः मलो विड्रोगः एतान् रोगान् हरतीति हृत् एतादृशोयं लोलिम्बराजोदितश्चूर्णो भुक्तः सन् अद्रीन् गिरीनपि भस्मसात् भसितार्धीनान् प्रकुरुते । अन्नरूपं भोजनं भस्मसात्करोतीति किं वक्तव्यम् ॥ २४ ॥

भापार्थ-सोंठके ५ भाग पीपल ४ भाग अजमोद ३ भाग अजमायन २ भाग लवण १ भाग और इन १५ भागोंके समान हरडे लेकर कूट छान चूर्ण बनाकर खाया करेतो लोलिंबराजका कहा यह चूर्ण पेटकी गुडगुड और शूल आमरोग गोला विड्रोगको नष्ट करताहै और पत्थरकोभी भस्म करदेताहै भोजनकी तो क्या बातहै ॥ २४ ॥

शिग्रुदीप्यवरुणद्वियामिनीकुञ्जराशनकृतः कषायकः ॥
बोलचूर्णसहितोन्तरस्थितं विद्रधिंप्रशमयेदसंशयम्२५॥

हृद्व्रणस्य प्रतीकारमाह । शिग्रिवति । शिग्रुः शोभाञ्जनः दीप्यो यवानी ॰रुणस्तमालः द्वियामिनी हरिद्राद्वयं कुञ्जराशनः पिप्पलः एतैः कृतः कषाय- कः बोलचूर्णसहितः पूते क्वाथे चूर्णः प्रक्षेप्तव्यः अयं चूर्णेन भक्षितः सन् अन्तरस्थितं विद्रधिं हृद्व्रणम् असंशयं निःसन्देहं प्रशमयेत् अन्तर्गतं विद्रधिं ॰त्का स्फोटयेदित्यर्थः ॥ २५ ॥

भाषार्थ–सोहोंजनेकी छाल अजमायन वरणाकी छाल दारुहलदी हलदी पीपलके ॰ृक्षकी छाल इन छः औषधियोंके क्राथमें रक्तबोलके चूर्णको डालकर पीवे तो भीत- की विद्रधि ( अंदरका फोडा ) को नष्ट करदेताहै ॥ २५ ॥

**कमलकुड्मलकल्पपयोधरद्वयसमाहितहारमनोहरे ॥**
**हृदयरुक्षु हितं घृतमर्जुनस्वरसकल्कसुसाधितमङ्गने२६॥**

अथ हृद्रोगस्य चिकित्सामाह । कमलेत्यादिना । हे कमलकुड्मल ॰पपयोधरद्वयसमाहितहारमनोहरे कमलस्य कुड्मलः मुकुलः तादृशयोः ॰धरयोर्द्वयं तत्र समाहितः सम्यक्प्रकारेण विन्यस्तो यो हारस्तेन मनोहरे अङ्गने प्रशस्तान्यङ्गान्यस्याः । अङ्गात्कल्याण इति नः । तत्संबोधने हृद- ॰क्षु हृद्रोगेषु अर्जुनस्य ककुभतरोः स्वरसकल्काभ्यां साधितं सिद्धं घृतं हितं ॰ति । उक्तं च । पार्थेन कल्केन रसेन सिद्धं शस्तं घृतं सर्वहृदामयेष्विति । ॰्मलो मुकुलोऽस्त्रियामित्यमरः ॥ २६ ॥

भाषार्थ–हे कमलके मुकुलतुल्य दोनों स्तनोंपर रक्खाहै मनोहर हार जिसके ॰ स्त्री अर्जुन ( कोह ) के वृक्षकी छालका गुद्दा और उसीका रसमें सिद्धकिया- ॰ घी खानेसे हृदयके रोगमें हितकारी होताहै ॥ २६ ॥

**सोयं सुगन्धिमुकुलो बकुलो विभाति वृक्षाग्रणीः प्रि-**
**यतमे मदनैकबन्धुः॥यस्य त्वचैव चिरचर्वितया नि-**
**तान्तं दन्ता भवन्ति चपला अपि वज्रतुल्याः ॥ २७ ॥**

अथ दन्तरोगस्यौषधमाह । सोयमिति । हे प्रियतमे स प्रसिद्धः वृक्षाग्र- ॰ः तरुश्रेष्ठः सुगन्धिमुकुलः सुगन्धीनि मुकुलानि ईषद्विकासोन्मुखाः कलिका ॰स्य तादृशः अथ च मदनैकबन्धुः कामस्याद्वितीयः सुहृत् बकुलः शीधुग-

न्धः अथ ते पुरोवर्ती विभाति शोभते । स कः यस्य चिरचर्वितया त्वचा बहुकालं भक्षितेन वल्कलेन नितान्तमत्यन्तं चपला अपि दन्ताः वज्रतुल्या भवन्ति ॥ २७ ॥

भाषार्थ-अब दांत हलनेकी औषधि कहतेहैं हे अत्यंत प्यारी स्त्री यह जो तेरे संमुख सुगंधित कलियोंवाला और कामदेवका एकही बधु बकुल ( मोरसरी ) का वृक्ष शोभित होरहाहै इसके वक्कलके चिरकालतक चाबनेसे हिलनेपरभी वज्रके समान दांत होजातेहैं ॥ २७ ॥

द्राक्षापथ्याकृतः क्वाथः शर्करामधुमिश्रितः ॥
श्वासकासहरो देयो रक्तपित्तप्रशान्तये ॥ २८ ॥

अथ रक्तपित्तप्रतीकारमाह । द्राक्षेत्यादिना । सामान्येनास्य लक्षणं तु । ततः प्रवर्तते रक्तमूर्ध्वं चाधो द्विधापि वा । रक्तमित्युपलक्षणम् तत्संसर्गि पित्तं च अतएव रक्तं च पित्तं च रक्तपित्तमिति द्वन्द्व इति सुश्रुतः । रक्तं च तत् पित्तं चेति रक्तपित्तं रागप्राप्तमिति कर्मधारय इति चरकः । मार्गानाह । ऊर्ध्वं नासाक्षिकर्णास्यैर्मेढ्रयोनिगुदैरधः । कुपितं रोमकूपैश्च समस्तैस्तत्प्रवर्तते । कुपितमतिकुपितमिति भावमिश्रः । हे प्रियतमे रक्तपित्तप्रशान्तये श्वासकासहरः श्वासकासौ हरति एवंभूतो द्राक्षापथ्याभ्यां निर्मितः कषायः सिद्धे पूते च तत्र शर्करामधुनी निक्षिप्य त्वया देयः ॥ २८ ॥

भाषार्थ-मुनक्का हरडे इनके क्वाथमें मिश्री और सहत मिलाकर पीवे तो श्वास खांसी और रक्तपित्त ये तीनों शांत होजातेहैं ॥ २८ ॥

भिन्दन्ति के कुञ्जरकर्णपालिं किमव्ययं वक्ति रते नवोढा ॥
संबोधनं नुः किमु रक्तपित्तं निहन्ति वामोरु वद त्वमेव २९

अपिच । भिन्दन्तीति । सिंहाननं इति बहिर्लापनेनोत्तरम् । प्रश्नोत्तराभ्यामस्य व्याख्या । वामौ वल्गू ऊरू जानूपरिभागौ यस्याः । संहितशफलक्षणवामादेश्चेत्यूङ् । तत्सम्बोधने हेवामोरु ॥ कुञ्जराणां दन्तिनां कर्णपालीः कर्णान्दूः के भिन्दन्ति के विदारयन्ति सिंहाः । पुनः नवोढा नूतनविवाहिता रते प्रथमसुरते किमव्ययं अव्ययपदं किं वक्ति न । नुः नृशब्दस्य संबोधनं किम् नः ।

रक्तपित्तं रागप्रातं पित्तम् उ इति विस्मये मम विस्मयोऽस्ति किं निहन्तीति । अतो हे वामोरु एतदुत्तरं त्वमेव वद स्पष्टतया कथय । सिंहाननः । सिंहाननसमपुष्पत्वात् सिंहाननो वासकः व्यस्तसमस्तजातिः ॥ २९ ॥

भाषार्थ–हाथियोंके गंडस्थलोंको भेदन कौन करतेहैं ( सिंहाः ) नवीन विवाही स्त्री रतिके समय कौनसे अव्ययको कहतीहै ( न ) और नृशब्दका संबोधन विभक्तिमें कौनसा रूप बनताहै ( नः ) और रक्तपित्तको कौनसी औषधि नष्ट करतीहै हे सुंदर-जंघाओंवाली स्त्री इनचार प्रश्नोंका उत्तर तूही कह स्त्रीने उत्तरदिया कि ( सिंहाननः ) सिंहानन अर्थात् वांसाका क्वाथ रक्तपित्तको नष्ट करताहै ॥ २९ ॥

**विश्वाकणाशिवाचूर्णः ससितः समधुः स्मृतः ॥**
**नस्यवद्विश्वगुडयोर्हिक्काधिक्कारकारकः ॥ ३० ॥**

अथ हिक्काप्रतीकारमाह । विश्वेति हिक्कायाः सामान्यलक्षणं यथा । मुहुर्मुहुर्वायुरुदेति सस्वनो यकृत्प्लिहान्त्राणि मुखादिवाक्षिपन् । सदोषवानाशु हिनस्त्यसून्यतस्ततस्तु हिक्केत्यभिधीयते बुधैरिति । हे वामोरु विश्वा शुण्ठी कणा पिप्पली शिवा धात्री त्रयाणां चूर्णः सितामधुभ्यां सहितो हिक्काधिक्कारकर्ता भवति । किंवत् विश्वगुडयोर्नस्यवत् यथा गुडशुंठ्योर्नस्यं हिक्कातिरस्कारं करोति तद्वत् । अनेन योगद्वयमुक्तम् ॥ ३० ॥

भाषार्थ–सोंठ पीपल आवला इन तीन औषधियोंको समान ले कूटकर सबकी बराबर मिश्री मिलाकर सहतमें चाटै तो यह चूर्ण इसप्रकार हुचकीका तिरस्कार करताहै जैसे सूंठ और गुड मिलाकर सूंघनेसे हुचकी जाती रहतीहै ॥ ३० ॥

**दुरालभाकषायस्य घृतयुक्तस्य सेवनात् ॥**
**भ्रमः शाम्यति गोविन्दचरणस्मरणादिव ॥ ३१ ॥**

अथ भ्रमप्रतीकारमाह । दुरालभेति । दुरालभाया यवासस्य क्वाथः कर्तव्यः घृतयुक्तस्य तस्य सेवनात् तत्पानाभ्यासात् भ्रमो मिथ्यामतिः शाम्यति । तत्र दृष्टान्तः कस्मात् क इव गोविन्दचरणस्मरणात् गोभिर्वाणीभिर्वेदान्तवाक्यैर्विन्दते प्राप्यते इति गोविन्दः परमात्मा । गोभिरेव यतो वेद्यो गोविन्दः समुदाहृत इति विष्णुतिलकोक्तिः । तस्य चरणं पदं तस्य स्मरणात् ध्यानात् अविद्याकल्पितो भ्रम इवेत्यर्थः ॥ ३१ ॥

भाषार्थ-धमासाके क्वाथमें घी डालकर पीनेसे चित्तका भ्रम इसप्रकार शांत होजाताहै जैसे गोविंदके स्मरणसे संसारका भ्रम नष्ट होजाताहै ॥ ३१ ॥

अयि रत्नकले कुरु मा कलहं कलहंसकलत्रसलीलगते ॥ शृणु मद्वचनं वद वैद्यमणे मदिरा मदिराक्षि शुचं शमयेत् ॥ ३२ ॥

शोकप्रतीकारमाह । अयीति । अयि रत्नकले कलहं युद्धं मा कुरु तर्हि मया किं कर्तव्यमतआह हे कलहंसकलत्रसलीलगते कलो मधुरवाग्घंसः कादम्बः तस्य कलत्रं स्त्री तद्वत् सलीलगते लीलया विलासेन सहिता गतिर्गमनं यस्यास्तत्संबोधने मद्वचन शृणु हे वैद्यमणे तद्वद हे मदिराक्षि मदिरामत्तस्य अक्षिणी इव घूर्णायमाने अक्षिणी यस्यास्तत्संबोधने मदिरा रामप्रिया प्रसन्ना निपीता सती शुचं शोकं हरेत् दुःखविस्मारकत्वात् ॥ ३२ ॥

भाषार्थ-हे रत्नकले हे कलहंसकी स्त्रीके समान गमन करनेवाली स्त्री कलह मत करै मेरे वचनको सुन हे वैद्योंके मणि ( श्रेष्ठ ) कहो हे मदिरासे उन्मत्त नेत्रोंवाली मदिराही शोकको शांत करतीहै ॥ ३२ ॥

पुनर्नवानागरदारुपथ्याभल्लातकच्छिन्नरुहाकषायः ॥ दशाङ्घ्रिमिश्रः परिपेयऊरुस्तंभेऽथवा मूत्रपुरप्रयोगः ३३

अथोरुस्तम्भप्रतीकारमाह । पुनर्नवेति । पुनर्नवा शोथघ्नी नागरं शुण्ठी दारु देवदारु पथ्या हरीतकी भल्लातको अग्निमुखी छिन्नरुहा गुडूची दशाङ्घ्रिमिश्रः पूर्वोक्तदशमूलेन सहितः षोडशानामेतेषां कषायः ऊरुस्तम्भे परिपेयः पातुं योग्यः । यथाह चक्रपाणिदत्तः । भल्लातकामृताशुण्ठीदारुपथ्यापुनर्नवाः। पञ्चमूलीद्वयोन्मिश्राः ऊरुस्तम्भनिवारणा इति । अथवा पक्षान्तरे मूत्रपुरप्रयोगः गोमूत्रगुग्गुल्वोः साधनं कर्तव्यम् । यथोक्तं । ऊरुस्तम्भविनाशाय पुरं मूत्रेण वा पिबेदिति ॥ ३३ ॥

भाषार्थ-साठी सोंठ देवदारु हरडै भिलावा गिलोय और दशमूल इनका क्वाथ अथवा गुग्गुल खाकर गोमूत्र ऊरुस्तंभ (जघाओंका जडपना) में पीनाचाहिये ॥३३॥

सक्षौद्रं कुशकाशगोक्षुरशिवाशम्याकपाषाणभिद्दुस्पर्शं परिसेवितं परिहरेत्सद्योऽश्मरीं दुस्तराम् ॥ एलापर्वतभिच्छिलाजतुकणाचूर्णं गुडेनान्वितं यद्वा तण्डुलधावनोदकयुतं स्यान्मूत्रकृच्छ्रापहम् ॥ ३४ ॥

अथ मूत्रकृच्छ्रस्य चिकित्सामाह । सक्षौद्रमिति । कुशो दर्भः काशः पोटः अनयोर्मूलं ग्राह्यं गोक्षुरो गोक्षुरकः शिवा हरीतकी शम्याक आरग्वधः पाषाणभित् पाषाणभेदनः दुस्पर्शो यवासः एषां समाहारे द्वन्द्वैक्यं क्लीबत्वं एतत्सक्षौद्रं माक्षिकमिश्रितं परिसेवितं पीतं सत् दुस्तरां तर्तुमशक्यामश्वमूत्रकृच्छ्रं परिहरेत् । उक्तं च । त्रिकण्टकारग्वधदर्भकाशदुरालभापर्वतभेदयाः । निघ्नन्ति पीता मधुनाश्मरीं च सम्प्राप्तमृत्योरपि मूत्रकृच्छ्रमिति । पि च एला सूक्ष्मैला पर्वतभित् शिलाभेदः शिलाजतु गैरेयम् कणा चपला र्णं चूर्णं गुडेन गुडरसेन पीतं यद्वा तण्डुलधावनोदकयुतं तेन सार्धं पीतं मूत्रकृच्छ्रापहं स्यात् ॥ ३४ ॥

भाषार्थ–कुशाकी और काशकी जड गोखरु हरडे अमलतास पाषाणभेद जवासा सात औषधियोंके क्वाथमे सहत डालकर पीवे तो पथरी उसी समय नष्ट होजाहै और छोटी इलायची पाषाणभेद शिलाजित पीपल इनचार औषधियोंके को गुडके सर्बत चावलोंके धोवनके संग खानेसे मूत्रकृच्छ्र रोग नष्ट होजाताहै॥ ३४॥

वासैलामधुकाश्मभेदचपलाकौन्तीक्षुरैरण्डजः क्वाथः साश्मजतुर्जयत्यातितरां कृच्छ्राश्मरीशर्कराः ॥ कृच्छ्रे दाहरुजाविबन्धसहिते क्वाथोऽश्मभिद्गोक्षुरानन्तारग्वधचेतकीविरचितो मध्वन्वितः शस्यते ॥ ३५ ॥

अपि च । वासेति । वासा वासकः एला उपकुञ्चिका मधुकं क्लीतकं अश्मभेदः चपला कणा कौन्ती रेणुका इक्षुरसः कोकिलाक्षः एरण्ड उरूबूक एषां क्वाथः साश्मजतुः शिलाजतुयुक्तोऽतितरामतिशयेन कृच्छ्राश्मरीशर्कराः जयति। कृच्छ्रं मूत्रकृच्छ्रं अश्मरी [illegible] दः । यथा । वातपित्तकफैस्तिस्रश्चतुर्थी

शुक्रजा मता । प्रायःश्लेष्माश्रयाः सर्वा अश्मर्यः स्युर्यमोपमा इति । शर्करा तु । अश्मरी शर्करा चैव तुल्यसंभवलक्षणे । विशेषणं शर्करायाः शृणु कीर्तयतो मम । सम्भवः कारणम् । पच्यमानाश्मरी पित्ताच्छोष्यमाणा च वायुना । विमुक्तकफसन्धाना क्षरन्ती शर्करा मता । पित्तेन पच्यमाना मूत्रशुक्रश्लेष्मसंहतिः प्रथमं पित्तेन रञ्जनकर्मणा पच्यमाना पश्चाद्वातेन शोषिता कफेन श्लिष्टा अश्मरी सैव विमुक्तकफसन्धाना त्यक्तकफश्लेष्मा सती शर्करारूपा मूत्रमार्गात् क्षरन्ती शर्करा मता एतावता किञ्चिदेव भेदः । अपि च दाहरुजाविबन्धसहिते कृच्छ्रे दाहेन दहनेन रुजया रोगेण विबन्धेन मूत्रादिरोधेन युक्ते कृच्छ्रे अश्मभिदादिभिर्विरचितः क्वाथः पुनर्मध्वन्वितः माक्षिकयुक्तः शस्यते स्तूयते ॥ उक्तं च । हरीतकीगोक्षुरराजवृक्षपाषाणभिद्धन्वयवासकानाम् । क्वाथं पिबेन्माक्षिकसंप्रयुक्तं कृच्छ्रे सदाहे सरुजे विबन्धे इति ॥ ३५ ॥

भाषार्थ—वासा छोटी इलायची मुलहटी पाषाणभेद पीपल रेणुक जीत तालमखाना अरडकी जड इन आठ औषधियोंके काथमें शिलाजीत डालकर पीवे तो मूत्रकृच्छ्र, पथरी शर्करा इन रोगोंको नष्ट करताहै और पाषाणभेद गोखरु जवासा अमलतास हरडै इन पाच औषधियोंके क्वाथमें सहत डालकर पीवे तो उस मूत्रकृच्छ्र रोगकोभी न करताहै जिसमें जलन पीडा और मूत्रबध हों ॥ ३५ ॥

न्यग्रोधाङ्कुरकुष्ठरोध्रविकसाश्यामामसूरारुणश्री-
खण्डैः पयसान्वितैर्विरचितं व्यङ्गघ्नमुद्वर्तनम् ॥
लिप्तं सप्तदिनं मसूररजसा सर्पिः पयः श्यामतावक्त्रं
शारदचन्द्रसुन्दरतरं व्यङ्गस्य व्यङ्गाद्भवेत् ॥ ३६ ॥

अथ मुखरोगविशेषस्य व्यङ्गस्य चिकित्सामाह न्यग्रोधाङ्कुरेत्यादिना तल्लक्षणं यथा । क्रोधायासप्रकुपितो वायु पित्तेन संयुतः । मुखमागम्य सहसा मण्डलं विसृजत्यतः । नीरुजं तनुकं यावं मुखे व्यङ्गं तमादिशेदिति मा.नि. न्यग्रोधाङ्कुरो वटाभिनवोद्भित् कुष्ठं पारिभाव्यं रोध्रो लोध्रः विकसा जिङ्गी श्यामा प्रियङ्गुः मसूरो मङ्गल्यकः अरुणं श्रीखण्डं ताम्रसारं पयसा क्षीरेण

अन्वितैरेतैर्विरचितमुद्वर्तनमुत्सादनं तत् व्यङ्ग्यं भवति । मसूररजसा मसू-
रस्य व्रीहिकाञ्चनस्य रजसा धूल्या युक्तं सर्पिः पयः सर्पिश्च पयश्च अनयोर्द्व
द्वैक्यम् सप्तदिनं सप्तदिनावधि लिप्तं दिग्धं तेन व्यङ्गस्य भङ्गात् श्यामता-
ङ्कं श्यामता कृष्णवर्णता तया युक्तं मुखं शारदचन्द्रवत् सुन्दरतरमतिशो-
तं भवेत् ॥ ३६ ॥

भाषार्थ–वडकीगोभ कूठ लोद मजीठ मंहदी मसूर लालचंदन इन सात औषधि-
योंको कूट छान चूर्ण बनाकर और उसमें दूध मिलाकर मुखपर उवटना करनेसे मु-
खकी झाईं नष्ट होजाती हैं और मसूरके ओटमें घी और दूध मिलायकर सातदिन ले-
प करे तो कालाभी मुख शरद पूनोके चंद्रमाकी तुल्य होजाताहै ॥ ३६ ॥

इङ्गुद्याःफलमज्जको जलयुतो लेपो मुखे कान्तिदो
लोध्रोग्राधनिकं निहन्ति पिटकांस्तारुण्यजाँल्लेपनात्॥
हार्यं रक्तमरुंषिकारुजि हितो मूत्रेण लेपोथ वा पिण्या-
कस्य नवेतरस्य शकृतः पादायुधस्य ध्रुवम् ॥ ३७ ॥

अपि च इङ्गुद्या इति । इङ्गुदी तापसतरुः इङ्गुद्याः फलस्य मज्जको म-
ज्जैव स जलेन युतः कर्तव्यस्तस्य लेपः व्यङ्गास्यभङ्गात् मुखे कान्तिदो
दीप्तिप्रदो भवतीति शेषः १ । लोध्रो गालवः उग्रा वचा धनिको धन्याकम्
एषां समाहारः एतल्लेपनात् लेपकरणात् तारुण्यजान् पिटकान् यौवनाव-
स्थोद्भवान्मुखे विस्फोटान् निहन्ति २ । लोध्रोग्राधनिकं निहन्ति पिटिका-
तारुण्यजा लेपनात् इति वा पाठः । अरुंषिका रुजि शिरो व्रणरोगे रुधिरं
रक्तं हार्यं जलौकया हर्तुं योग्यम् ३ अथवा पक्षान्तरे नवेतरस्य पिण्याक-
स्य पुराणस्य तिलकल्कस्य मूत्रेण गोजलेन कृते लेपो हितोनुकूलो भवति
४ यद्वा पादायुधस्य कृकवाकोः शकृतो विष्ठाया लेपो हितः ५ इति क्रमेण
रोगपञ्चकम् ॥ ३७ ॥

भाषार्थ–हिंगोट वृक्षके फलकी मींगीको जलमें रगडकर लेप करै तो मुखपर कांति
होजातीहै और लोद वच धनियां इन तीनोंको पानीमें पीसकर लेपकरै तो वे फुनसी
नष्ट होजातीहैं जो यौवन अवस्थामें मुखपर पिडिकासी होजातीहैं और यदि बालकके

शिरपर फुनसी ( अरुंसिका ) होजाय तो जोख लगवाकर रुधिर निकसवायदे अथवा पुरानी तिलोकी खलको गोमूत्रमें पीसकर लेपकरै वा मुरगेकी बीटका लेपभी हितकारी होताहै ॥ ३७ ॥

तैलं शोफमपारमप्यपहरेद्वृश्चीररास्नामहाभैषज्याम-रशुष्कमूलकयुतं बिम्बीरसे साधितम् ॥ तद्वद्विश्वकि-राततिक्तमथ वा पाठानिशाधावनीमुस्ताजीरकपञ्च-कोलजरजः संमिश्रमुष्णाम्बुना ॥ ३८ ॥

अथ शोथस्य चिकित्सामाह । तैलमिति । वृश्चीरः श्वेतमूला पुनर्नवा रास्ना नाकुली महाभैषज्यं शुण्ठी अमरो देवदारुः शुष्कमूलकं निर्जलं हस्तिदन्तकम् एतैर्युतं तैलं तिलानां स्नेहः मर्दनादपारमुत्तरावधिरहितमपि शोफं श्वयथुमपहरेत् दूरीकुर्यात् । यथोक्तम् । शुष्कमूलकवर्षाभूदारुरास्नामहौषधैः । पक्वमभ्यञ्जनात् तैलं सशूलं श्वयथुं हरेदिति । बिम्बीरसे बिम्बीकायाः स्वरसे साधितं सिद्धं विश्वकिराततिक्तं शुण्ठीचिरातिक्तम् तद्वत् अपारशोफमपहरेत् अथवा पाठा अम्बष्ठा निशा हरिद्रा धावनी कण्टकारी मुस्ता जीरकोऽजाजी पञ्चकोलं । कणामूलकृष्णाचव्याग्निनागरैरित्युक्तं पञ्चोषणम् । एषां रजश्चूर्णमुष्णाम्बुना सह तद्वच्छोथनाशनं भवति ॥ ३८ ॥

भाषार्थ–सपेद साठी रायसन सोंठ देवदारु और मुकीमूली इन पांचोंके कल्क ( गूदा ) को डालकर तिलोंका तेल पकावे उसकी मालिस करनेसे अत्यतभी सूजन जाती रहतीहै अथवा कदूरीके रसमें पीसकर सोंठ और चिरायतेको मले और पाटा हलदी कटेहरी मोथा जीरा पीपलामूल पीपल चव चीता और सोंठ इन दश औषधियोंके चूर्णको गरमपानीके संग खानेसे या इनको गरम पानीमें रगडकर लेप करनेसे सूजन जाती रहती है ॥ ३८ ॥

उग्रापाठापटोलौषधरुबुकजटाशिग्रुदद्रुघ्नकुष्ठैर्धान्याम्लेन प्रपिष्टैः प्रशमयति महामूर्धरोगानशेषान् ॥ पक्वं पत्रं घृताक्तं रविभवमनले तापितं पीडितं तत् तोयं कर्णे च सिक्तं दलयति सकलं कर्णशूलं समूलम् ॥ ३९ ॥

क्वाथः कफाद् कफापहर्ता भवति । कफमत्तीति कफाद् यद्वा अत्तीति अद् अत्ता । अदभक्षणे क्विप् । कफस्य अद् कफाद् । हेतन्वङ्गि तव मध्यवत् अस्यायमर्थो नैव लक्ष्यते यथा वस्त्राच्छन्नस्तव कटिदेशः कटिवस्त्रापनयनेन ममैवाधिकारिणः प्रत्यक्षः तथाधिकारिणः पण्डितस्याप्यस्यार्थः प्रत्यक्ष इति भावः ॥ ४३ ॥

इतिश्रीकुलावधूतश्रीपरमहंसपरिव्राजकाचार्यश्रीमद्धरिहरानन्दनाथभारती-शिष्यब्रह्मावधूतश्रीसुखानन्दनाथविरचितायां सुखानन्दिन्यां वैद्यजीवनदीपिकायां क्षयादिरोगनिग्रहनाम्नश्चतुर्थविलासस्य प्रकाशार्थः ॥ ४ ॥

भाषार्थ–हे भीरु हेतन्वंगी ( सूक्ष्म अंगवाली ) स्त्री सहत मिलाहै जिसमें ऐसा गिलोहका क्वाथ कफात् ( कफनाशक ) होताहै इसका अर्थ पंडितोंको इस प्रकार नही प्रतीत होताहै जैसें वस्त्रसे ढका तेरा मध्यभाग अर्थात् कफाद् यह प्रथमाहै पंचमी नही ॥ ४३ ॥

इति श्रीपं० मिहिरचंद्रकृते लोलिंबराज भाषाप्रदीपे

चतुर्थो विलासः ॥ ४ ॥

---

ताम्बूलं मधु कुसुमस्रजो विचित्राः कान्तारं सुरतरु नवा विलासवत्यः ॥ गीतानि श्रवणहराणि मिष्टमन्नं क्लीबानामपि जनयन्ति पञ्चबाणम् ॥ १ ॥

अथ वाजीकरणमाह । अस्य निरुक्तिमाह । यद्द्रव्यं पुरुषं कुर्याद्वाजिव-त्सुरतक्षमम् । तद्वाजिकरमाख्यातं मुनिभिर्भिषजां वरैरिति । अस्य विधिरपि । नरो वाजीकरान् योगान् सम्यक् शुद्धो निरामयः । सप्तत्यन्तं प्रकुर्वीत वर्षा-दूर्ध्वं तु षोडशात् । नच वै षोडशादर्वाक्सप्तत्याः परतो न च । आयुष्कामो नरः स्त्रीभिःसंयोगं कर्तुमर्हति । क्षयवृद्ध्युपदंशाद्या रोगाश्चातीव दुर्जयाः । अ-कालमरणं च स्याद्भजतः स्त्रियमन्यथा । विलासिनामर्थवतां रूपयौवनशालि-

नाम् । नराणां बहुभार्याणा विधिर्वाजिकरो हितः । स्थविराणां रिरंसूनां स्त्रीणा वाल्लभ्यमिच्छताम् । योषित्प्रसंगात्क्षीणाना क्लीबानामल्परेतसाम् । हिता वाजिकरा योगाः प्रीत्यपत्यबलप्रदा । एतेपि पुष्टदेहानां सेव्याः कालाद्यपेक्षयेति । तत्रादौ कामोद्दीपनमाह । ताम्बूलमिति । ताम्बूलं पर्णं मधु मद्यं विचित्रा नानाविधाः कुसुमस्रजः सुगन्धिपुष्पाणां मालाः । कान्तारं महद्वनम् । महारण्ये दुर्गपथे कान्तारः पुन्नपुंसकमित्यमरः । कथभूतं कांतार सुरतरु सुराणा प्रियास्तरवो मन्दारादयश्चूतचम्पकबकुलादयो वा यस्मिंस्तत् नवा विलासवत्यः नवा नूतना विलासवत्यो विलासयुक्ताः श्यामा भीरवः श्रवणहराणि शृङ्गाररससूचनेन श्रवणेन्द्रियाकर्षणानि गीतानि गानानि मिष्टमन्नं मधुरमदनीयं द्रव्यम् एतान्युक्तानि वस्तूनि क्लीबाना नपुंसकानामपि पञ्चबाणं काम जनयन्ति कामाग्निं प्रचण्डं कुर्वन्तीत्यर्थः ॥ १ ॥

भाषार्थ-अब उस वाजीकरणको कहतेहैं जिस औषधिके खानेसे पुरुष अश्वके समान स्त्रीके सग रति करसके और वाजीकरण तब भक्षण करे जब प्रथम जुलाब लेचुके और सोलह वर्षसे पहिले और सत्तर ७०से ऊपरकी अवस्थामें न खाय क्योंकि बाल्य और वृद्ध अवस्थामें वीर्य नही रहताहै पानका खाना मदिराका पीना विचित्र२ पुष्पोंकी माला धारण करना देवताओंको प्यारेहे वृक्ष जिनमे ऐसे बन नवीन २ स्त्री सुननेमें मनोहर गीत मधुर अन्न ये सब नपुंसकोंको भी कामदेव पैदा करतेहैं ॥ १ ॥

**सहितेन घृतेन मधुना मधुकं परिसेचितं पिबतियोऽनु पयः॥**
**नवसुभ्रुवां सुखकरः सततं बहुवीर्यपूरपूरितो भवति ॥ २॥**

अत्रौषधान्याह । सहितेनेति । यो नरः आदौ घृतेन सहितेन मधुना परिसेचितं सासिक्त मधुक क्लीतक यष्टीमधुकमिति लाढ़ी अनु पश्चात् पयो दुग्धं पिबति स पुरुषो नवसुभ्रुवा नूतनवयःसंपन्नानां कामिनीनां सुखकरः ग्राम्यधर्मातिशयसामर्थ्यात् सुखदायको भवति पुनः बहुवीर्यपूरपूरितः भूयसा रेतसा पूर्णश्च भवतीति ॥ २ ॥

भाषार्थ-जो मनुष्य घीमें मिलाकर मुलहटीको खाकर पीछेसे दूधको पीताहै वह नवीन ( जवान ) स्त्रियोंको रतिमें सुखका कर्ता और निरतर बहुतसे वीर्यसे पूर्ण होताहै ॥ २ ॥

**अमृतामलकत्रिकण्टकानां हविषा शर्करया निषेवणेन ॥ अजरा अमरा अपारवीर्या अलकेशा अदितेः सुता बभूवुः ३॥**

अन्यमाह । अमृतेति । अमृता गुडूची आमलकं धात्रीफलं त्रिकण्टको गोकण्टकः एषां चूर्णस्य हविषा शर्करया च सहितस्य घृतसिताभ्यां युक्तस्यावलेहस्य निषेवणात् अभ्यासात् कृताभ्यासाः नरा अजरा जरावस्थारहिता अमरा मरणरहिता अपारवीर्या बहुवीर्यवन्तः अलकेशा अलका धनदपुरी तस्या ईशाश्च ईदृशा ये अदितेः सुताः आदितेयास्तथा ते बभूवुः संजाताः । इयमुक्तिर्बालकार्थे निम्बलड्डुकवत् स्तुतिर्न सत्यार्था । रोचनार्था फलश्रुतिरितिवत् ॥ ३ ॥

भाषार्थ–गिलोह आंवला गोखरु इन तीन औषधियोंके चूर्णको घीमें भून और मिश्रीमें अवलेह बनाकर जो मनुष्य खातेहैं वे वृद्धअवस्थाके रोगसे और मृत्युसे रहित और अधिक वीर्यवाले और कुबेर और देवताओंके समान पराक्रमी होजातेहैं यह स्तुति है सत्यनहीं जैसे बालकको नींब भक्षणके लिये लड्डु देतेहैं ऐसेही अधिक फलका सुनाना रुचिकेलिये होताहै हां इनसे कुछपराक्रम अवश्य बढताहै ॥ ३ ॥

**उच्चटामर्कटीगोक्षुरैश्चूर्णितैः शर्करा दुग्धसंमिश्रितैः पाचितैः॥ सेवितैर्वार्धके मानवो मानिनीमानमुच्छेदयेत् किं पुनर्यौवने ॥ ४ ॥**

अपिच । उच्चटेति । उच्चटा गुञ्जा मर्कटी कपिकच्छुः गोक्षुरो गोकण्टकः चूर्णितैः कृतचूर्णैरेतैः शर्करादुग्धसंमिश्रितैः सितागोदुग्धाभ्यां युक्तैः पुनः पाचितैः कृतपाकैः पुनश्च वार्धकयौवनात्परावस्थायां सेवितैरुपयुक्तैरुच्चटादिचूर्णैः मानवो मानिनीमानमुच्छेदयेत् यौवने पुनः सेवितैः सद्भिः किं पुनर्वक्तव्यं भवति ॥ ४ ॥

भाषार्थ–उच्चटा सपेद चिरमटी वा उटंगनके बीज कोचकेबीज गोखरु इनतीन औषधियोंके चूर्णको दूधके खोआमें सेक और चीनी डालकर पाक बनाकर खानेसे अथवा इनके चूर्णमें बराबर मिश्री मिलाकर दूधके संग सेवन करनेसे पुरुष वृद्ध अवस्यामें यौवनके अभिमानवाली स्त्रियोंके अभिमानका खंडन करताहै और यौवन अवस्यामें खाय तो क्या बातहै ॥ ४ ॥

भुक्तोच्चटां क्षीरयुतां विलासी भुंक्ते शतं सुन्दरि सुन्दरीणाम्॥
त्वं तावदेकासि मया तु साद्य भुक्ता रतौ पश्य कुतूहलं मे५॥

अपि च । भुक्तेति । हेसुन्दरि । रूपलावण्ययुक्ता स्त्री सुन्दरीति निगद्यते। विलासी भोगी पुरुषः क्षीरेण युता उच्चटा श्वेतगुञ्जां भुक्त्वा सुन्दरीणां शतं भुङ्क्ते । सोच्चटा अद्य मया भुक्ता त्वं तु तावदेकासि मया तु शतवारं रन्तव्यमतो मे रतौ सुरतविषये कुतूहलं कौतुकं पश्य अवलोकयेति । भुक्तावरीमिति वा पाठः ॥ ५ ॥

भाषार्थ–हे सुंदरि स्त्री विलासी ( भोगी ) पुरुष दूधके संग उटंगन या सपेद चिरमटीको खाकर सौ १०० सुदरियोंको भोगकरसकता है और वही उच्चटा आज मैंने खायी है और तू एकही है इससे आज मेरे कौतुक ( आश्चर्य ) को रतिमे तू देख अर्थात् सौवार भोग करूंगा लोलिंबराज कविने अपनी स्त्रीके सग यह विनोद किया॥५॥

चूर्णो घृतक्षौद्रयुतोरसैःस्वैर्विभाविताया बहुधाविदार्याः॥
निषेव्यमाणोनुदिनं विलासी दशाङ्गनाभिःसह रंरमीति६॥

चूर्णइति । स्वैः स्वकीयै रसैर्जलैर्बहुधा बहुकृत्वा विभाविताया विमिश्रितायाः विदार्या इक्षुगन्धायाः घृतक्षौद्रयुतो मध्वाज्याभ्यां संयुक्तश्चूर्णः अनुदिनं प्रत्यहं निषेव्यमाणः कृतसेवनः विलासी स्त्रीणां हावभावज्ञो भोगी पुरुषः दशाङ्गनाभिः सह रंरमीति अतिशयेन रमते इति ॥ ६ ॥

भाषार्थ–विदारीकंदके स्वरसमें विदारी कंदको अनेक भावना ( पीसना ) देकर और घी सहत मिलाकर उक्त चूर्णका प्रतिदिन सेवन करेतो विलासी ( कामी ) पुरुष दश स्त्रियोंके सग रति कर सकता है ॥ ६ ॥

सहितं घृतदुग्धाभ्यां विदारिप्रभवं रजः ॥
उदुम्बरमितं भुक्त्वा वृद्धोपि तरुणायते ॥ ७॥

सहितमिति । वृद्धोपि स्थविरोपि मनुजः विदार्याः शृगालिकायाश्चूर्णं घृतदुग्धाभ्यां सहितं उदुंबरमितं कर्षपरिच्छिन्नं भुक्त्वा तरुणायते युवेवाचरणं करोति ॥ ७ ॥

भाषार्थ-घी और दूधमें मिलाकर विदारीकंदके चूर्णको गूलरके फलकी तुल्य
वाय तो वृद्धभी मनुष्य तरुण ( जवान ) के समान हो जाता है ॥ ७ ॥

सौभाग्यपुष्टिबलशुक्रविवर्धनानि किं सन्ति नो भुवि बहूनि रसायनानि ॥ कन्दर्पवर्धिनि परंतु सिताज्ययुक्ताद्दुग्धादृते न मम कोपि मतः प्रयोगः ॥ ८ ॥

अपिच । सौभाग्येति । हे कन्दर्पवर्धिनि भुवि भूमौ सौभाग्यं सुभगत्वं च-
क्षुष्यमिति यावत् पुष्टिः कामस्य पोषणं बलं पराक्रमःशुक्रं रेतः सौभाग्यादी-
नां विवर्धनानि बहूनि भूयांसि रसायनानि जराव्याधिजिदौषधानि । तल्लक्ष-
णमुक्तं भावप्रकाशे । यज्जराव्याधिविध्वंसिसवयस्तम्भकं तथा । चक्षुष्यं
बृंहणं वृष्यं भेषजं तद्रसायनम् । दीर्घमायुः स्मृतिं मेधामारोग्यं तरुणं वयः ।
देहेन्द्रियबलंकान्तिं नरोविन्देद्रसायनादिति । किं नो सन्ति अपि तु विद्यन्ते
एव परंतु किन्तु सिताज्याभ्यां युक्ताद्दुग्धात् ऋते विना मम कोपि प्रयोगः
उत्कृष्टो योगः उपायो न मतः न पूजितः ॥ ८ ॥ इतिवाजीकरणम् ॥

भाषार्थ-हे कामदेवके बढानेवाली स्त्री सुंदरता पुष्टिबल वीर्य इनके बढानेवाले रसा-
यन ( जराव्याधिके नाशक ) औषधि पृथिवीमें बहुत हैं किंतु मिश्री और घी मिला-
ये जिसमे ऐसे दूधसे अन्य कोई प्रयोग ( नुकसा ) मेरे मतमें नही है अर्थात्
यही सर्वोत्तमहै ॥ ८ ॥

अधुना ब्रूमहे सद्यश्चमत्कारकरान् रसान् ॥ यतो न नीरसा भाति कविताकुलकामिनी ॥ ९ ॥

अथ रसान् वक्तुमुपक्रमते । अधुनेत्यादिना । हेकन्दर्पवर्धिनि अधुनेदानीं
सद्यः शीघ्रं चमत्कारकरान् आश्चर्यकर्तॄन् रसान् पारदप्रधानान् भेषजान्
वयं ब्रूमहे कथयामः । रसायनार्थिभिर्लोकैः पारदःशस्यते यतः । ततो रस
इति प्रोक्तः स च धातुरपि स्मृत इति निरुक्तेः । रसः पारदः यतो यस्मात्
कविताकुलकामिनी काव्यरूपा कुलस्त्री नीरसा शृङ्गारादिरसरहिता न भाति
शोभते । आह च । तथा कवितया किं वै किंवा वनितया तथा । पद-
न्यासमात्रेण यया नापहृतं मन इति ॥ ९ ॥

भाषार्थ-अब शीघ्र चमत्कार करनेवाले रसोंको कहते हैं क्योंकि कविता रूप कुलकी स्त्री शृंगार आदि रसके विनाशोभाको प्राप्त नहीं होती क्योंकि यह लिखाहै कि उस कविता वा स्त्रीसे क्या है जो पदविन्याससे मनको न हरे ॥ ९ ॥

पथ्याकणार्कविषतिन्दुकदन्तिबीजतिक्तात्रिवृद्रसबलीन्सदृशान्विमर्द्य॥धूर्ताम्बुना सकलवासरमेप सूतः स्याद्विश्वतापहरणोभिनवज्वरघ्नः॥ १० ॥

अथ विश्वतापहरणरसमाह । पथ्येति । पथ्या हरीतकी कणा चपल अर्को मारितः ताम्रः विषतिन्दुकः कुपीलुः दन्तीबीज जयपालः तिक्ता कटुकी त्रिवृत् सर्वानुभूतिः रसः पारदः बलिर्गन्धकः एतान् पथ्यादीन् सदृशान् समभागान् सचूर्ण्य पश्चात् धूर्ताम्बुना धत्तूरस्वरसेन सकलवासरमेकं दिनं विमर्द्य खल्वेन मर्दित्वा । स्थापयेदितिशेष. । विश्वतापहरणनामा एष सूतो रसः अभिनवज्वरघ्नो नवज्वरहरश्च स्यात् । अस्य वल्लद्वयमार्द्रकरसेन देयम् । मुद्गयूपः पथ्यमत्र ॥ १० ॥

भाषार्थ- हरडे पीपल तांबेकी भस्म कुचला शुद्ध जमालगोटा कुटकी निसोत पारा और गंधक इन नौ ९ औषधियोंको धतूरेके रसमें एकदिन खरल करके गोली बनावे विश्वतापहरण नामका यह रस सब प्रकारके नवीन ज्वरोंको नष्ट करता है ॥ १० ॥

शुल्वं टङ्कणगन्धकौ च गरलं तुत्थं रसं खर्परं तालं तुल्यमिदं विमर्द्य घटिकामात्रं सुषेव्यारसैः ॥ सूतः स्यात्त्रिपुरारिणा विरचितः शीतारिरित्थं स्मृतोऽजाजीशर्करया युतः प्रशमयेदेकाहिकादिज्वरम्॥ ११ ॥

अथ शीतारिनामरसमाह । शुल्बमिति । शुल्बं ताम्रभस्म टङ्कणो मालतीरजः गन्धकः गन्धपाषाण. गरल विष तुत्थं शिखिग्रीव रसः पारदः खर्पर खर्परी ताल हरितालं । गन्धकादिकं शुद्धं ग्राह्यम् । इद सर्वं तुल्य समांशं सुषेव्यारसैः कारवेल्या. स्वरसैः घटिकामात्र नाडीपरिमितकालं यावत् तावत् विमर्द्य मर्दयित्वा त्रिपुरारिणा महादेवेनेत्थमनेन प्रकारेण विरचितो

नेर्मितो नाम्ना शीतारिसूतः स्यात् सोयं स्मृतः कृतस्मरणः शीतारिः गुंजा-
रिमितः अजाजीशर्करया युतः सिताजीरकाभ्यां संयुतः सेवितः सन् एका-
हेकादिसर्वज्वरान् प्रशमयेत् शान्तिं नयेदित्यर्थः ॥ ११ ॥

भाषार्थ–तांबेकी भस्म टंकणखार ( मालतीरज ) शुद्धगंधक शुद्धतेलिया ( विष )
शुद्ध नीलाथोथा शुद्ध पारा शुद्ध खपरिया शुद्ध हरताल इन आठ औषधियोंको समान
कर करेलाके रसमें एक घटीतक खरल करें यह शिवजीका बनाया शीतारि
मका रस जीरा और चिनीकेसाथ खानेसे एकाहिक ( जो एक दिनमें एकवार आवे )
आदि सब ज्वरोंको नष्ट करता है ॥ ११ ॥

मरीचबलिहिङ्गुलैर्गरलपिप्पलीटङ्कणैः सुवर्णभव-
बीजकैःसमलवैर्दिनार्धावधि॥जयास्वरसमर्दितैः क-
नकसुन्दरः सुन्दरि स्मृतो ग्रहणिकाज्वरातिसृतिव-
न्हिमान्द्यापहः ॥ १२ ॥

अथ कनकसुन्दररसमाह । मरीचबलिहिङ्गुलैरिति । मरीचःभूषणं बलि-
र्गन्धकः हिङ्गुलो दरदः गरलं विषं पिप्पली कणा टङ्कणः पाचनकः सुवर्ण-
बीजानि कनकाङ्कुरकारणानि एतैः समलवैः समांशैः हे सुन्दरि पुनश्च
दिनार्धावधि प्रहरद्वयं यावत् तावत् जयास्वरसमर्दितैः विजयाया रसेन मर्दितैः
खल्वे निक्षिप्य सम्यक् पिष्टैरेतैर्नाम्ना कनकसुन्दरो रसो भवति । स च ग्रह-
णिकाज्वरातिसृतिवह्निमान्द्यापहः स्मृतः ॥ १२ ॥

भाषार्थ–हे सुंदरी स्त्री मिरच गंधक हिंगुल ( दाद ) तेलिया मीठा पीपल भुना-
सुहागा धतूरेके बीज इन सात औषधियोंको समान ले भांगके रसमे दोपहरतक ख-
रल करिके रत्ती २ की गोली बनाले यह कनकसुंदरनामरस ग्रहणी ज्वरातीसार
अग्निकी मंदता इन सबको नष्ट करताहै ॥ १२ ॥

लोहाभ्रार्करसं समं द्विगुणितं गन्धं पचेत्कोलिकाका-
ष्ठाग्नौ मृदुले निधाय सकलं लोहस्य पात्रे भिषक् ॥
सर्वं गोमयमण्डले विनिहिते रम्भादले विन्यसेत्त-
स्योर्ध्वं कदलीदलं द्रुततरं वैद्येश्वरो निक्षिपेत् ॥

स्यात्पञ्चामृतपर्पटीग्रहणिकायक्ष्मातिसारज्वरस्त्री-
रुक्पाण्डुगराम्लपित्तगुदजक्षुन्मान्द्यविध्वंसिनी ॥ १३॥
ग्रहण्यामनुपानं च हिङ्गुसैन्धवजीरकम् ॥
जीरकं पाण्डुगरयोरितरेषु स्वयुक्तितः ॥ १४ ॥

अथ सार्द्धाभ्यां पञ्चामृतपर्पटीरसमाह । लोहेत्यादिना । लोह लोहस्य भस्म अभ्र तस्यापि भस्म अर्कस्ताम्रभस्म रसः शुद्धः सूत लोहादीना समाहारद्वन्द्वैक्यम् । एतत् समं तुल्यमान ग्राह्यम् । गन्ध गन्धक द्विगुणितं द्विगुणं ग्राह्यम् । भिषग् वैद्यः सकलं सर्वं लोहस्य पात्रे निधाय स्थापयित्वा मृदुलेऽनीक्ष्णे कोलिकाकाष्ठाग्नौ बदरीदार्वग्नौ पचेत् । पक्का च गोमयमण्डले गोपुरीषेण लिप्ताया भूमौ विनिहिते स्थापिते रम्भादले कदलीपत्रे तत्र विन्यसेत् स्थापयेत् । पुनः वैद्येश्वरो भिषजा राजा तस्योर्ध्वं तस्योपरि द्रुततरं शीघ्र कदलीदलं मोचायाश्छदन निक्षिपेत् न्यसेत् । एवं कृते सति ग्रहणिकायक्ष्मातिसारज्वरस्त्रीरुक्पाण्डुगराम्लपित्तगुदजक्षुन्मान्द्यविध्वंसिनी पंचामृतपर्पटी स्यात् ॥ १३ ॥ अस्याः सेवनेऽनुपानमाह । ग्रहण्यामिति । भर्जितयोर्हिंगुजीरकयोः ससैन्धवयोश्चूर्णेन ग्रहण्यामनुपानम् । पाण्डुरोगे विषरोगे च जीरक जरणमनुपानम् । अन्यरोगेषु स्वयुक्त्या अनुपानं देयम्॥१४॥

भाषार्थ-अब पचामृत पर्पटीरसको कहतेहैं सार अभ्रक तांबेकी भस्म शुद्ध पारा इन चारोको बराबरले और दूनीगधक लेकर बडीबेरीके काठकी अग्निसे तवेपर सबको पकावे फिर गोवरसे लिपीहुई पृथिवीपर केलेके पत्ता बिछाकर उसके ऊपर रखकर ऊपरसे बहुतशीघ्र दूसरे केलेके पत्तेसे ढकदे इसप्रकार बनायाहुआ यह पचामृतपर्पटीरस शुभ मुहूर्त्तमें रोगीको खिलावे तो यह राजयक्ष्मा ग्रहणी अतिसार ज्वर और प्रदर आदि स्त्रियोंके सब रोग पाण्डुरोग और विषरोग और अम्लपित्त बवासीर अग्निकी मंदता इन सबको नष्ट करताहै ॥ १३ ॥

भाषार्थ-इसके अनुपान यह है कि सग्रहणीमें भुनेहुये हींग और जीरा और सेंधानिमक मिलाके और पाण्डुरोग और विषरोगमें भुनेजीरेके संग देना चाहिये और अन्यरोगोंमें वैद्य अपनी युक्तिके अनुपानके संगदे ॥ १४ ॥

वचाविश्वाजीरोषणगरलबाल्हीकदहनत्वचांकार्या व
टच्यश्चणकतुलिता मार्कवरसैः ॥ यथा भानोर्भास-
स्तिमिरनिकरंयामिनिभवं हरन्त्येताः शूलान्यनिल-
मनलग्लानिमपि च ॥ १५ ॥

अथ शूलादीनां भेषजमाह। वचेत्यादि । वचा गोलोमी विश्वा कफारिः जीरोऽजाजी ऊषणं मरीचं गरलं वत्सनाभाख्यं विषं बाह्लीकं हिङ्गु दहनश्चित्रकः त्वक् चोचं चूर्णीकृतानामेषां मार्कवरसैर्भृङ्गराजरसैः चणकतुलिता हकारिमन्थप्रमाणाःवट्यो गुटिकाः कार्याः भानोर्हंसस्य भासश्छवयो यथा यामिनिभवं निशोत्पन्नं तिमिरनिकरं तमोवृन्दं हरन्ति तथा एताः वट्यः शूलानि अनिलं वातरोगं अनलग्लानिमपि अग्निमान्द्यं च हरन्ति निघ्नन्तीत्यर्थः॥ १५॥

भाषार्थ—वच सोंठ जीरा मिरच वत्सनाभ (विषभेद) हींग चीता दालचिनी इन आंठ-औषधियोंको समानले कूटपीसकर भांगरेके रसमें खरल करके चनेकी बराबर गोली बनाकर खायतो शूल बादी और अग्निकी मंदता इन सबको यह आदित्यवटिका नाम की गोली इस प्रकार नष्ट करतीहै जैसे रात्रिके अंधकारको सूर्यकी किरण ॥ १५ ॥

समानभागेबलिशूलिबीजे तयोः समानं कनकस्य बीजम्॥
धत्तूरतैलेन विमर्द्यसम्यग्विलासिनीवल्लभनामधेयः ॥ १६ ॥
सूतोभवेद्वल्लयुगप्रमाणः सितायुतोमेहसमूहहारी ॥ वीर्य
स्य बन्धं कुरुते नराणां निहन्ति दर्पं च सुलोचनानाम्॥ १७

अथ द्वाभ्यां विलासिनीवल्लभाख्यं सूतमाह । समानभाग इति । बलिशूलिबीजे बलिर्गन्धकः शूलिबीजं शूलिनो महेश्वरस्य बीजं वीर्यं रसेन्द्रः। यथाहुः ।हरितालं हरेर्वीर्यं लक्ष्मीवीर्यं मनःशिला । पारदं शिववीर्यं स्याद्गन्धकं पार्वतीरज इति । एते समानभागे समप्रमाणे ग्राह्ये तयोर्बलिशूलिवीर्ययोः समानं समं न्यूनाधिकवर्जितं कनकस्य काञ्चनाह्वयस्य बीजमंकुरहेतुं च गृहीत्वा सर्वं धत्तूरतैलेनोन्मत्तस्नेहेन सम्यक् अतिशयेन विमर्द्य मर्दयित्वा विलासिनीवल्लभनाम सूतो भवेत् सोयं वल्लयुगप्रमाणः षड्गुञ्जापरिमितः सितायुतः

शर्करया संयुतो भक्षितो नराणां मेहसमूहहारी नानाविधप्रमेहानां हर्ता वीर्यस्य शुक्रस्य बन्ध बधनं स्तम्भ करोति सुलोचनानां शोभननेत्राणा वामलोचनानां दर्पमहंकृतिं च निहन्ति । तुल्यायवाभ्यां कथितात्र गुञ्जा वल्लस्त्रिगुञ्जा इति लीलावती ॥ १६ ॥ १७ ॥

भाषार्थ–अब दो श्लोकोंसे विलासिनीवल्लभरसको कहते है गंधक और पारा इन दोनोंको बराबरले और दोनोंकी बराबर शुद्ध किये हुये धतूरेकेबीज लेकर फिर धतूरेके तेलमे खूब खरल करै छरत्ती इस रसको मिश्रीके सग खायतो वीस प्रकारके प्रमेहोंका नाश वीर्यका बधना और स्त्रियोंके अभिमानका खडन करताहै ॥१६॥१७॥

शूले हिङ्गुघृतान्वितं मधुयुता कृष्णा पुराणज्वरे वा-
त साज्यरसोनकः श्वसनके क्षौद्रान्वितं त्र्यूषणम् ॥
शीते व्याललतादलं समरिचं मेहे वरा सोपला दो-
षाणां त्रितयेनुपानमुचितं सक्षौद्रमार्द्रोदकम् ॥ १८ ॥

अथ कतिपयरोगेष्वनुपानान्याह । शूले इति द्वाभ्याम् । शूले शूलरोगे घृतान्वितमाज्यमिलितं हिङ्गु रामठमनुपानमुचित योग्यम् । पुराणज्वरे एकविंशतिघस्रातीते महागदे मधुयुता कृष्णा अजादुग्धव्युषिता पृथग्भूतोपकुल्या वाते पवनामये साज्यरसोनकः सर्पिःसयुक्तो यवनेष्टः । श्वसनके श्वासरोगे क्षौद्रान्वितं मधुयुक्तं त्र्यूषणं त्रिकटु । शीते शीताङ्गे समरिच सोपण व्याललतादल ताम्बूलम् । मेहे प्रमेहे सोपला उपलया शर्करया सहिता वरा त्रिफला दोषाणा वातपित्तकफाना त्रितये त्रये सन्निपाते सक्षौद्रं समधु आर्द्रोदक शृङ्गवेरामृतम् ॥ १८ ॥

भाषार्थ–अब बहुतसे रोगोंमें अनुपान कहतेहै शूलरोगमे घी और हीगमे दे और जीर्णज्वरमें पीपल और सहतमें, वातव्याधिमें घी और लहसनमे, श्वास रोगमें त्रिकुटा और सहतमें, शीताङ्गमें मिरच और नागरपान, प्रमेहमे मिश्री और त्रिफलाके साथ, सनिपातमें अदरख और सहतमें रसको देनाचाहिये ॥ १८ ॥

घनपर्पटकं ज्वरे ग्रहण्यां मथितं हेम गरे वमीपु ला-

जाः ॥ कुटजोऽतिसृतौ वृषोस्रपित्ते गुदकीलेष्वनलः कृमौ कृमिघ्नः ॥ १९ ॥

ज्वरेपुराणे वा तस्मिन्नातङ्के घनपर्पटकं मुस्तासमेतो रेणुः । ग्रहण्यां मथितं रसरहितं निरंबु विलोडितं दधि । गरे विषरोगे हेम स्वर्णपत्रम् । वमीषु वांतिरोगेषु लाजाः भृष्टा व्रीहयः । अतिसृतावतिसारे कुटजो गिरिमल्लिका । अस्रपित्ते वृषः आटरूषः । गुदकीलेषु दुर्नामरोगेषु अनलश्चित्रकः । कृमौ कृमिरोगे कृमिघ्नो विडङ्गः ॥ १९ ॥

भाषार्थ—ज्वरमें नागरमोथा, और पित्तपापडेकेसंग संग्रहणीमें तंत्रके विषरोगमें धतूरेके पत्तेकेसाथ वमनमें धानकी खीलोंके पानीकेसाथ, अतिसारमें कूडाकी छालके साथ रक्तपित्तमें वांसाके अर्ककेसाथ बवासीरमें चीतेके साथ कृमिरोगमें वायविडंगके साथ रसको देना चाहिये ॥ १९ ॥

नारायणं भजत रे जठरेण युक्तं नारायणं भजत रे पवनेन युक्ताः ॥ नारायणं भजत रे भवभीतियुक्ता नारायणात्परतरं नहि किञ्चिदस्ति ॥ २० ॥

अथ प्रामाणिकव्यवहारप्रमाणकं ग्रन्थान्ते वस्तुनिर्देशात्मकं मङ्गलमाचन् कुक्षिवातभवभयरोगातुराणां भेषजान्याह । नारायणमिति । रे इति सबोधनम् । सम्बोधनेङ्गभोःपाट्प्याट्हेहैहंहोऽरेरेपिचेतिहेमचन्द्रात् । रे जठरेण युक्ताः हे उदररोगिणो नराः यूयं नारायणं नारायणाभिधं चूर्णं भजत सेध्वम् । तच्चोक्तं भावप्रकाशे । यवानी हबुषा धान्यं त्रिफला चोपकुञ्चिका । कारवी पिप्पलीमूलमजगन्धा शठी वचा । शताह्वा जीरको व्योषं स्वर्णक्षीरी च चित्रकम् । द्वौ क्षारौ पौष्करं मूलं कुष्ठं लवणपञ्चकम् । विडङ्गं च समांशानि दन्त्या भागत्रयं भवेत् । त्रिवृद्विशाले द्विगुणे शातला स्याच्चतुर्गुणा । एष नारायणो नाम्ना चूर्णो रोगगणापहः । एनं प्राप्य निवर्तन्ते रोगा विष्णुं यथा ऽसुराः । तक्रेणोदरिभिः पेयं गुल्मिभिर्बदराम्बुना । आनद्धवाते सुरया वातरोगे प्रसन्नया । दधिमण्डेन विड्बन्धे दाडिमाम्बुभिरर्शसि । परिकर्तेषु वृ-

क्षाम्लैरुष्णाम्बुभिरजीर्णके । भगन्दरे पाण्डुरोगे कासे श्वासे गलग्रहे। हृद्रोगे ग्रहणीरोगे कुष्ठे मन्दानले ज्वरे । दंष्ट्राविषे मूळविषे सगरे कृत्रिमे विषे । यथार्हं स्निग्धकोष्णेन पेयमेतद्विरेचनम् । अस्यार्थः उपकुञ्चिका कारवी च वृहज्जीरको यस्य मगरेला इति नाम लोके । विशाला इन्द्रवारुणी । शातला सीहुण्डभेदः शातलेत्येवप्रसिद्धा । परिकर्ता गुदे परिकर्तनवत् पीडेत्यर्थः । इति नारायणचूर्णम् । रे पवनेन युक्ताः हे वातरोगिणो लोकाः यूय नारायणं नारायणाख्य तैलं भजत तच्च त्रिविधम् । स्वल्प बृहन्महच्चेति भेदात् । यथा। बिल्वाग्निमन्थश्योनाकपाटलापारिभद्रकाः । प्रसारिण्यश्वगन्धा च बृहती कण्टकारिका । बला चातिबला चैव श्वदंष्ट्रा सपुनर्नवा । एषा दशपलान् भागान् चतुर्द्रोणाम्भसा पचेत् । पादशेष परिस्राव्य तैलपात्रे प्रदापयेत् । शतपुष्पा देवदारु मासी शैलेयक वचा । चन्दनं तगर कुष्ठमेलापर्णीचतुष्टयम् । रास्ना तुरगगन्धा च सैन्धव सपुनर्नवम् । एषा द्विपलिकान्भागान्पेषयित्वा निनि-क्षिपेत् । शतावरीरस चैव तैलतुल्य प्रदापयेत् । आज वा यदि वा गव्य क्षीर दत्वा चतुर्गुणम् । पाने वस्तौ तथाभ्यङ्गे भोज्ये नस्ये प्रयोजयेत् । अश्वो वा वातभग्नो वा गजो वा यदि वा नरः । पङ्गुर्वा वातभग्नो वा भग्नपादोथ वा नरः । अधोभागे च ये वाताः शिरामध्यगताश्च ये । दन्तशूले हनुस्तम्भे मन्यास्तम्भेऽपतन्त्रके । एकाङ्गग्रहणे वापि सर्वाङ्गग्रहणे तथा। क्षीणेन्द्रिया नष्टशुक्रा ज्वरक्षीणाश्च ये नराः । लालाजिह्वाश्च बधिरा विस्वरा मन्दवेधसः । मन्दप्रजा च या नारी या च गर्भं न विन्दति । वातार्तौ वृषणौ येषामन्त्रवृद्धिश्च दारुणा । एतत्तैलवरं तेषा नाम्ना नारायण स्मृतमिति । स्वल्पनारायणं तैलम् । शतावरी चाशुमती पृश्निपर्णी शठी बला । एरण्डस्य च मूलानि बृहत्योः पूतिकस्य च । गवेधुकस्य मूलानि तथा सहचरस्य च। एषा दशपलान् भागान् जलद्रोणे विपाचयेत् । पादशेषे रसे पूते गर्भे चैतान्समावपेत् । पुनर्नवा वचा दारु शताह्वा चन्दनागुरुः । शैलेयं तगरं कुष्ठ मुरा मासी स्थिरा बला । अश्वाह्वा सैन्धव रास्ना मञ्जिष्ठानखचारकम् । कान्ति

प्रियङ्गुस्थौणेयं पलार्धं कल्पयेत् पृथक् । गव्याजपयसोः प्रस्थौ द्वौ द्वावत्र प्रयोजयेत् । शतावरीरसप्रस्थं तैलप्रस्थं भिषक्पचेत् । अस्य तैलस्य सिद्धस्य शृणु वीर्यमतःपरम् । अश्वानां वातभग्नानां कुंजराणां तथा नृणाम् । तैलमेतत्प्रयोक्तव्यं सर्ववातनिवारणम् । आयुष्मांश्च नरः पीत्वा निश्चयेन दृढो भवेत् । गर्भमश्वतरी विन्द्यात् किं पुनर्मानुषी तथा । हृच्छूलं पार्श्वशूलं च तथैवार्धावभेदकम् । अपचीं गण्डमालां च वातरक्तं हनुग्रहम् । कामलां पाण्डुरोगं च अश्मरीं चापि नाशयेत् । तैलमेतद्भगवता विष्णुना परिकीर्तितम् । नारायणमिति ख्यातं वातान्तकरणं शुभमिति बृहन्नारायणं तैलम् ॥ बिल्वाश्वगन्धाबृहतीश्वदंष्ट्रा स्योनाकवाट्यालकपारिभद्रम् । क्षुद्राकटिल्लातिबलाग्निमन्थं मूलानि चैषां सरलायुतानाम् । मूलं विदध्यादथ पाटलीनां प्रत्येकमेषां वदन्ति तज्ज्ञाः । सपादप्रस्थं विधिनोद्धृतं च द्रोणैरपामष्टभिरेव पक्त्वा । पादावशेषेण रसेन तेन तैलाढकाभ्यां सममेव दुग्धम् । छागस्यमांसद्रवमेव तुल्यमेकत्र सम्यग्विपचेत् सुबुद्धिः । दद्याद्रसं चैव शतावरीणां तैलेन तुल्यं पुनरेव तत्र । रास्नाश्वगन्धाद्रुमदारुकाष्ठं पर्णी चतुष्कागुरुकेसराणि । सिन्धूत्थमांसी रजनीद्वयं च शैलेयकं चन्दनपुष्कराणि । एलासयष्टी तगराब्दपत्रं भृङ्गाष्टवर्गास्तु वचा पलाशम् । स्थौणेयवृश्चीरकचोरकाख्यमेभिः समस्तैर्द्विपलप्रमाणैः । कर्पूरकाश्मीरमृगाण्डजानां दद्यात् सुगन्धाय वदन्ति केचित् । प्रस्वेददौर्गन्ध्य निवारणार्थं चूर्णीकृतानां द्विपलप्रमाणम् । आलोड्य सम्यग्विधिवद्विपक्वं नारायणं नाम महच्च तैलम् । सर्वैः प्रकारैर्विधिवत् प्रयोज्यमश्वस्य पुंसां पवनार्दितानाम् । ये पङ्गवः पीठविसर्पणाश्च मन्याहनुस्तम्भशिरोगदार्ताः । मुक्ता नरास्ते बलवीर्ययुक्ताः संसेव्य तैलं सहसा भवन्ति ॥ वन्ध्या च नारी लभते च पुत्रं वीरोपमं सर्वगुणोपपन्नम् । शाखाश्रिते कोष्ठगते च वाते वृद्धैर्विधेयं पवनार्दितानाम् । जिह्वानले दन्तगते च शूले औन्मादकौब्जे ज्वरकर्षितानाम् । प्राप्नोति लक्ष्मीं प्रमदाप्रियत्वं जीवेच्चिरं चापि भवेद्युवेव । देवासुरे युद्धवरे समीक्ष्य स्रग्ग्वस्थिभग्नानसुरान् सुरांश्च । नारायणेनापि स्वबृंहणार्थं स्वनामतैलं

विहितं तु तेषाम् ॥ इति महन्नारायणतैलमितिसुखबोधः॥ रे भवभीति युक्ताः। भवनं भवो जन्म स्वदृष्टोपनिबद्धानन्तशरीरपरिग्रहः तेनोपलक्षिताः जायते अस्ति वर्धते विपरिणमते नश्यतीति यास्कपठिताः षड्भावविकाराः बहुजन्मार्जितैः पुण्यैरुद्भूता या तेभ्यो भीतिः साध्वसम् तया युक्तास्तद्वन्तो हे साधवः । भवति सततमविच्छेदेन दृश्याद्याकारतयेति संसारो वा भवः स चाव्यक्तादिस्थावरान्तश्चक्षुष्मता दुःखरूप एव भातीति शिवोक्तेश्च । तथाहि । दुःखमूलं हि संसारः स यस्यास्ति स दुःखितः । तस्य त्यागः कृतो येन स सुखी नापरः प्रिये । प्रभवं सर्वदुःखानामालयं सकलापदाम् । आश्रयं सर्वपापानां संसारं वर्जयेत्प्रिये । अवन्नवन्नन घोरमस्वीकृतमहाविषम् । अशश्वसखहन देवि संसारः सक्तचेतसामित्यादि कुलार्णवे । कृच्छ्रेणामेध्यमध्ये नियमिततनुभिः स्थीयते गर्भवासे कान्ताविश्लेषदुःखव्यतिकरविषये यौवने चोपभोगः। वामाक्षीणामवज्ञाविहसितवसतिर्वृद्धभावोऽप्यसाधुः संसारे रे मनुष्या वदत यदि सुखं स्वल्पमप्यस्तिकिञ्चिदित्यागमोक्तेश्च । एवंदुःखरूपं भवं दृष्ट्वोत्पन्नभीतयः पलाय्यगन्तुं स्थानान्तरमपश्यन्तोऽतिदरसयुक्ताः यूयं नारायणं भजत । नारायणमखिलकल्पनाधिष्ठानम् । तथाहि । यच्च किञ्चिज्जगत्सर्वं दृश्यते श्रूयतेपि वा।अन्तर्बहिश्च तत्सर्वं व्याप्य नारायणः स्थित इति मन्त्रवर्णः।आपोनारा इति प्रोक्ता आपो वै नरसूनवः।ता यदस्यायनं पूर्वं तेन नारायणः स्मृत इति मनुः। नारायणाय नम इत्यमुमेव सत्यं संसारघोरविषसंहरणाय मन्त्रम् । शृण्वन्तु भव्यमतयो यतयोऽस्तरागा उच्चैस्तरामुपदिशाम्यहमूर्ध्वबाहुरिति नृसिंहपुराणम् । इति स्थूलदृशा नारायणशब्दार्थः । सूक्ष्मदर्शिनः पुनराचक्षते । नरशब्देन चराचरात्मकं शरीरजातमुच्यते तत्र नित्यसन्निहिताश्चिदाभासा जीवा नाराः तेषामयनमाश्रयो नियामकोऽन्तर्यामीति नारायण इत्यधिकृत्यान्तर्यामिब्राह्मणं। बृहदारण्यके श्रीनारायणाख्यनाम्नाय चाधीयते तमेवाभिन्ननिमित्तोपादानं वेदान्तवेद्यमन्तर्यामिणं गुरूपदिष्टमार्गविधिना स्वरूपतस्तटस्थलक्षणेन वागमोपदिष्टेनायनेन भजत तदुपासनं विना विशेषतः कलियुगेऽन्य उपायो नास्ति ।

कलौ पापयुगे घोरे तपोहीनेतिदुस्तरे । निस्तारबीजमेतावद्ब्रह्ममन्त्रस्य साधनमिति महेश्वरोक्तेः । यतो नारायणादन्तर्यामिणःपरतरमुत्कृष्टं शाश्वतं किञ्चिन्नास्ति हि । अव्यक्तादयो हि कल्पिताः कल्पिताश्चाधिष्ठानावशेषाः नहि कल्पिताद्रज्जूरगात् कश्चिन्मृतो दृष्टः श्रुतो वा । अभयं वै जनक प्राप्तोसीति श्रुतिः भयं द्वितीयाभिनिवेशतः स्यादिति भागवतं चात्र मानम् । अतोऽशेषभयनिवृत्तिसाधनं ब्रह्मोपासनमेवेति ॥ २० ॥

भाषार्थ–हे उदररोगवाले पुरुषो तुम नारायणचूर्णका सेवनकरो हेवातव्याधिवाले पुरुषो तुम नारायण तेलका सेवनकरो हे संसारके जन्म मरणसे डरतेहुये पुरुषो तुम नारायणका भजनकरो क्योंकि नारायणसे परे कुछ नहींहै ॥ २० ॥

आयुर्वेदवचोविचारसमये धन्वन्तरिः केवलं सीमा
गानविदां दिवाकरसुधाम्भोधित्रियामापतिः॥ उत्तंसः
कवितावतां मतिमतां भूभृत्सभाभूषणं कान्तोक्त्याऽ
कृत वैद्यजीवनमिदं लोलिम्बराजः कविः ॥ २१ ॥

इति श्रीलोलिम्बराजकृतौ वैद्यजीवने पंचमो विलासः ५॥

अथ कविर्निजपरिचयादिकं कथयति । आयुरित्यादिना । लोलिम्बराजः कविः वैद्यजीवनं नामेदं काव्यमकृत चकार । कया कान्तोक्त्या । सर्वाङ्गसुन्दरी नारी कान्ता काव्येषु कथ्यते । कान्ताया विशेषाङ्गनाया उक्त्या तद्वचनद्वारेण । कथंभूतो लोलिम्बराजः आयुर्वेदवचोविचारसमये आयुः शरीरेन्द्रियसत्त्वात्मसंयोगः तदस्मिन् विद्यते इति अथवा आयुरनेन विन्दति लभते इत्यायुर्वेदोऽष्टादशविद्यान्तर्गतधन्वन्तरिभणीतोऽथर्ववेदस्योपाङ्गं वैद्यशास्त्रं तस्य वचांसि वाक्यानि तेषां विचारोऽनेकवादिवृन्दमतमुद्धूय स्वमतस्थापनं तत्समये तत्कार्यकाले केवलं धन्वन्तरिर्नारायणांशो दिवोदासो विक्रमादित्यसभास्थरत्नं वा । धन्वं शिल्पशास्त्रं तस्यान्तं पारमियर्ति गच्छति । ऋगतौ अच इः । पुनश्च गानविदां सङ्गीतशास्त्रज्ञानां सीमाऽवधिः । पुनर्दिवाकरसुधा-

म्भोधिरमृतार्णवस्तस्य त्रियामापतिरिन्दुः । पुनर्मतिमतां कवितावतामुत्तंसः शिरोभूषणम् । पूनर्भूभृत्सभायाः भूषणमलंकार इत्यर्थः ॥ २१ ॥

खपक्षाङ्कधरायुक्ते १९२० वत्सरे युवनामनि । फाल्गुनार्जुनपक्षस्य भूतायां मङ्गलेऽहनि ॥ १ ॥ श्रीसुखानन्दावधूतो वैद्यजीवनदीपिकाम् । कृत्वा समर्पयामास श्रीनाथचरणाम्बुजे ॥ २ ॥

इतिश्रीकुलावधूतश्रीपरमहंसपरिव्राजकाचार्यश्रीमद्धरिहरानन्दनाथभारतीशिष्यब्रह्मावधूतश्रीसुखानन्दनाथविरचिताया सुखानन्द्या वैद्यजीवनदीपिकाया पचमविलासस्य प्रकाशार्थः ॥ ५ ॥

भाषार्थ–आयुर्वेद ( वैद्यशास्त्र ) के वाक्योंके विचार समयमे धन्वंतरिके समान और गानविद्याके ज्ञाताओंकी अवधिरूप और दिवाकर ( लोलिम्वराजका पिता ) रूप अमृतके समुद्रका चद्रमा और बडे २ बुद्धिमान् कवियोंका शिरोभूषण (मुकुट) और राजाओंकी सभाका भूषण जो लोलिम्वराज कविहै उसने अपनी स्त्रीके कहनेसे यह वैद्यजीवन ग्रंथ रचा ॥ २१ ॥

इतिश्रीपडितमिहिरचद्रकृते लोलिम्वराजभाषाप्रदीपे

पंचमो विलासः ॥ ५ ॥

---

## समाप्तमिदं सटीकं पं० मिहिरचंद्रकृत भाषाप्रदीपसमेतं च वैद्यजीवनम् ।

नत्वार्यं मिहिरादिचंद्रविदुषा श्रीकृष्णचन्द्रं तिथौ भाषायां विवृतस्तथैव बहुशः संशोधितः संस्कृते ॥ पूर्णोऽकारि रसाब्धिनन्दवसुधामाने मधौ वत्सरे रौद्यामिन्दुदिने सितेतरदले लोलिम्वराजो मया ॥ १ ॥

इतिश्रीलोलिम्वराज कृतं वैद्यजीवनं समाप्तम् ।

---